

बि दे ह बिदेह Videha बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई
पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका
'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



मानवमिह

I SSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)



बि दे ह बिदेह Vi deha
बिदेह <http://www.videha.co.in> बिदेह प्रथम मैथिली
पत्रिका ई पत्रिका Vi deha Ist Maithili
Fortnightly ejournal नर अंक देखरौक लेन गुंश
सबके बिदेह कए देखे। Always refresh the
pages for viewing new issue of
VI DEHA. Read in your own script
Roman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gur mukhi T
el ugu Tami I Kannada Malayalam Hindi

ए अकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य



२.१. जगदीश अग्रवाल सा-कथा



२.२.१. सुजित अग्रवाल सा-कथा २
सत्यावासी सा



—



२.३. बाजुदेव सा-कथा उग्रास- हयव ठेव

—



२.४. जगदीश सा मय



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



२.३. अतुलेश्वर- मोचरै आरथक जे.....



२.३.१. डा. आनंदधर सा-दु-गल : एक बिदेहा २ डा.
नेमिधर कमर "बिदेह"- पौखी समीक्षा - अग्रवा



२.१. दुर्गमिन्द माडव- ठैलौब साहित्य
प्रवसतावक रैल्ल



२.१. टंदा कयाव सा १. बिदेह-कथा - ठकुरि-आलेख-
बिदेह रैल्ल भुवनेश्वर



मानवीमिह

३. गद्य



३.१. जगदीश प्रसाद माडन



३.२. डा. गेनिश्वर कमर "बिदेह"



३.३. जगदीश चन्द्र ठाकुर अमिन २.
सूरी कामत





'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



३.४ शिरक्याव सा 'छैल्ल'-मिथिला-पत्र



३.३.१

किशोर कावीगवर



सावाग्या सा-



सम्पादन

श्रीमान स्वयं



३.६

छैल्ल क्याव सा



३.१

जगदीश्वर सा मन्त्र



३.१. संस्थापक अध्यक्ष श्री- अतिलसहस्र अतिलस



४. मिथिला कवि-संगीत, रणीता कर्मावी ३. राजेश्वर श्री



(चित्रमय मिथिला) ४. उमेश महान (मिथिलाक
रसपति/ मिथिलाक जीव-जन्तु/ मिथिलाक जिनगी)



राजेश्वर महान- डा. नैशिवर कर्मा "बिदेह"

भाषागत बच्चा-लेखन -मापक मैथिली, बिदेहक मैथिली-
अलेखी आ अलेखी मैथिली लेख (अलेखक-पत्र पत्रिका लेख सट-
चित्रलेखी) एम.एस. एस.कृष्ण. सर्वर आधारित -Based on



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ms-sql server Maithili-English and
English-Maithili Dictionary.]

बिदेह ई-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक (ब्रैल, तिरहुता आ
देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंकपव
उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e
journal (in Braille, Tirhuta and
Devanagari versions) are available for
pdf download at the following link .

बिदेह ई-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ
देवनागरी कगमे Videha e journal's all old
issues in Braille Tirhuta and Devanagari
versions

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आर.एस.एस.सीड ।



"बिदेह" ई-पत्रिका ई-पत्रिसँ प्राप्त कक ।



अपन मित्रकेँ बिदेहक बियगमे सूचित कक ।



↑ बिदेह आब.एस.एस.एच.डी एनीमेटेडके अंगन सागठ/
बैंगनगव नगाडु ।



बैंगन "जेआउठ" पब "एड गाडजेठ" मे "हरीड" सेलेक्ट
कए "हरीड यू.आर.एन." मे
<http://www.videha.co.in/index.xml> ठीगन केनसँ
सेले बिदेह हरीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडरमे पठरा
जेन <http://reader.google.com/> पब जा कए Add a
Subscription रैषन दिनक कर आ खानि स्थानमे
<http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कर आ
Add रैषन दराड ।



[Join official Videha facebook group.](#)



[Join Videha google groups](#)



बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिन
पोडकास्ट सागठ

<http://videha123radio.wordpress.com/>



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवी

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



Vi deha Radi o

मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल
छी, (cannot see/write Maithili in
Devanagari / Mithilakshara follow links
below or contact at ggajendra@videha.com)
तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाउँ । संगहि बिदेहक सुँत
मैथिली भाषागक/ बच्चा लेखक नर-पुवास अंक पढ़ू ।
<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँअमे
ऑनलाइन देवनागरी ठाँग कक, रीँअसँ कापी कक आ रडि
डाकुमेन्टमे पोस्ट कए रडि फाँगलकँ सेर कक । विशेष
ज्ञाकारीक लेन ggajendra@videha.com पब संपर्क
कक ।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM
)/ Opera/ Safari / Internet Explorer 8.0/
Flock 2.0/ Google Chrome for best view of
'Vi deha' Maithili e-journal at
<http://www.videha.co.in/> .)

Go to the link below for download of old
issues of VIDEHA Maithili e magazine in
.pdf format and Maithili Audio/ Video/
Book/ paintings/ photo files. बिदेहक पुवास अंक
आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाँगल



सभ (उच्चा, रैड स्व माव आ दूरस्थित मत्र सहित) डाउनलोड
कबरीक हेतु नीचाँक लिंक पब जाउँ ।

VI DEHA ARCHI VE विदेह आर्काइव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी करि, नाष्टककार आ
धर्माश्रमी विद्यापतिक स्थाप । भारत आ लगानक माष्टमे
पसबन मिथिलाक धरती प्राप्ति कानहिँ महान प्रकय ओ महिना
लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकय ओ महिना
लोकनिक छि मिथिला बने मे देखु ।



शैली-शैलिक पानरमे कानक मुर्ति, एहिमे
मिथिलाकबने (१२०० रर्य प्ररक) अभिलेख अकित अछि ।
मिथिलाक भारत आ लगानक माष्टमे पसबन एहि तबहक अग्रग
प्राप्ति आ नर स्थाप, छि, अभिलेख आ मुर्तिकनक हेतु देखु
मिथिलाक खोज



मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, संपर्क, अध्ययन
संगति बिदेहक सर्त-गजल आ युज सर्जिस आ मिथिला, मैथिल आ
मैथिलीसँ सम्बन्धित रेखांक सभक संग्रह सँकलनक लेल देखू
बिदेह सूचना संपर्क अध्ययन

बिदेह जानकारीक डिस्कमन होबसपर जाइत ।

"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानकारीक) पब
जाइत ।

ए लेब मूल प्रबन्ध(२०१२) साहित्य अकादेमी, दिल्लीक लेल अहाँक
सजबिसे कोन मूल मैथिली पोथी उपहार अछि ?

Thank you for voting !



मानवीय

श्री बाजुदेव मंडलक “अर्धवा” (कविता-संग्रह) 12.88 %

श्री रौचन ठाकुरक “रौचनीक अंगमान आ डीनवदेरी”(दूठा नष्टक)
10.43 %

श्रीमती आशा मिश्रक “उच्छ्र” (उपन्यास) 6.13 %

श्रीमती गंगा साक “अर्धभूति” (कथा संग्रह) 4.91 %

श्री उदय नारायण सिंह “नटकेत”क “सा एन्द्रीया प्रविने
(नष्टक) 5.83 %

श्री सुभाष चन्द्र गान्धक “रौचनीक रिंगडित” (कथा-संग्रह)
5.21 %

श्रीमती रीणा कर्ण- भारणाक अर्धिर्गजव (कविता संग्रह)
5.83 %

श्रीमती शैलालिका रमिक “किन्तु-किन्तु जीवण (आमेकथा)
8.59 %

श्रीमती रिता बाणीक “भाग रौ आ रौचनदा” (दूठा नष्टक)
7.06 %

श्री महाप्रकाश-संग समय के (कविता संग्रह) 5.52 %

श्री ताराबन्ध रियोगी- प्रलय बन्ध (कविता-संग्रह) 5.21 %

श्री महेश्वर गणेशायक “भूतना घौन” (नष्टक) 7.98 %

श्रीमती नीता साक “देशे-कान” (कथा-संग्रह) 6.13 %

श्री सियाबाय सा “सबस”क थोड़ आलि थोड़ पाणि (गजल संग्रह) 7.06 %

Other : 1.23 %

ए रैव रौन साहिब प्रकाश(२०१२) [साहिब अकादेमी, दिल्ली]क लेन
अहाँक नज्बिमे कोन मुन मैथिली पोथी उग्याउ अछि ?
(Poll Closed)

श्री जगदीश प्रसाद मन्त्र जीक “तरेगन”(रौन-प्रेमक कथा संग्रह) 47.3 %

श्री जीरकांत - थिथिबक रिश्ता 27.03 %

श्री नूबनीधर साक “पिनपिनहा गाछ 24.32 %

Other : 1.35 %

ए रैव हारा प्रकाश(२०१२)[साहिब अकादेमी, दिल्ली]क लेन अहाँक
नज्बिमे कोन कोन लेखक उग्याउ अछि ?



मानवीय

श्रीमती ज्ञाति स्वीत टोपरीक “अर्चिस” (कविता संग्रह)
22.12 %

श्री रिनीत उंगेनक “रुम प्रदेित डी” (कविता संग्रह) 7.96 %

श्रीमती कान्तिनिक “समयसँ सम्राद करैत”, (कविता संग्रह)
6.19 %

श्री प्ररीण काष्ठनक “रिषदन्ती रवमान कानक बति” (कविता संग्रह) 4.42 %

श्री आनीय अनटिहावक “अनटिहाव आथव”(गज्जन संग्रह)
23.89 %

श्री अकशोत सौवतक “एतरेँ ठी नहि” (कविता संग्रह)
6.19 %

श्री दिनीग रुवार सा “कृष्ण”क जगल बहरै (कविता संग्रह)
7.96 %

श्री आदि यागारवक “बोथव पैमिनसँ निखन” (कथा संग्रह)
5.31 %

श्री उमेश मन्डनक “निस्तुकी” (कविता संग्रह) 14.16 %

Other : 1.77 %



मानवीय

এ রেঁব ঞ্জরাদ পূবফাব (২০১২) [সাহিত্য ঞ্জকাদেশী, দিল্লী]ক জেন
ঞ্জক ঞ্জজবিসে কে ঞ্জগাঞ্জ ভথি ?

Thank you for voting !

শ্রী ঞ্জবিশে ঞ্জমাব ঞ্জিকঞ্জ "যযাতি" (মাবাঞ্জ ঞ্জগাঞ্জ শ্রী ঞ্জিঞ্জ
সখাবাঞ্জ খাঞ্জকব) 33.7 %

শ্রী মলেন্দ্র ঞ্জাবাঞ্জ বাঞ্জ "কামেঞ্জিঞ্জ" (কোঁকশী ঞ্জগাঞ্জ শ্রী
দামোদব মাবজো) 13.04 %

শ্রী দেবেন্দ্র ঞ্জা "ঞ্জবভব" (বোঁগা ঞ্জগাঞ্জ শ্রী দিবান্দু পালিত)
11.96 %

শ্রীমতী মেনকা মল্লিক "দেশে ঞ্জা ঞ্জব কবিতা সভ" (লপালীক
ঞ্জবরাদ মুন- লেফিকা থাপা) 15.22 %

শ্রী প্রঞ্জ ঞ্জমাব কঞ্জপ ঞ্জা শ্রীমতী ঞ্জেশিবোঞ্জা- মৈথিলী গীতগোবিন্দ
(জযদেব সঁস্কৃত) 13.04 %

শ্রী বাঞ্জাবাঞ্জ ঞ্জিঞ্জ "মলহিঞ্জ" (শ্রী তকযী ঞ্জিবশেঁকব ঞ্জিঞ্জ
মলযালী ঞ্জগাঞ্জ) 11.96 %

Ot her : 1.09 %



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बिदेह प्रवक्ता-संग्रह योगदान २०१२-१३ : समावाप्तुव माहिल
अकादेमी, दिल्ली

Thank you for voting !
श्री राजनन्दन नान दाम 54.05 %

श्री डा. अमरेश्वर 25.68 %

श्री लक्ष्मण सिंह 18.92 %

Other : 1.35 %

1.संग्रहालय

१

१

बिदेह भाषा संग्रह २०१२-१३ (ऐकिक माहिल अकादेमी प्रवक्ता
कर्ण प्रसिद्ध)

- **बाव माहिल लेख बिदेह संग्रह २०१२-** श्री जगदीश प्रसाद
मन्त्र जी के हृदयक बाव-प्रवक्ता बिहारी कथा संग्रह "तरेगण"
लेखन आ प्रवक्ता देव ज्ञा बहन अछि । आ प्रवक्ता बिदेह नाछ
ऊँस २०१३ क समावाहमे देव ज्ञात । "तरेगण" केँ सतर्ष
रैनी लोठ भेटैले । तीसठा पोथी १.जगदीश प्रसाद मन्त्रक
तरेगण, २. जीरकाभक्त "थिथिवक रीअवि" आ ३.रुवनीधर मा क



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“पिनपिनहा गाढ” कै रिदेह www.videha.co.in गव भ२
बहन आँखाँगल रोष्टिगमे बाखन गेन छन । विशेषतः
मताश्रमाव “पिनपिनहा गाढ”मे रहित बाम कथा अछि जकरा रौन
कथा ले कहन जा सकैए, तग दुआले ए पोथीकेँ निशुन लैछा
देन गेन कावण ओ प्रबन्धक रौन सहित लेन अछि, उल्लिखित ए
पोथीकेँ सभसँ कम रोष्टि लेन बहे । ए पोथी सभक अतिविड
आष पोथी सभक रिदाव ले कउन गेन कावण ओ सभ पोथीक
आकावक ले रक् रूकलेक आकावक छन ।

श्री जगदीश प्रसाद मन्त्र (जन्म १९४१-) मात्र मैथिलीमे लिखे
छथि आ ओ ठेब बाम लिहनि कथा, नय कथा, दीर्घ कथा, उपन्यास,
कविता आ नष्टक लिखल छथि । हुनका मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ भूत
आ रतिमानक लेखकक कगमे जानल जागत अछि । हुनका
“गामक जिनगी” (नयकथा संग्रह) लेन रिदेह समागानुब सहित
अकादेमी प्रबन्धक २०११ आ ठेठोव सहित प्रबन्धक २०११ मेहो
देन गेन अछि ।

तरेगण (२०१०) जगदीश प्रसाद मन्त्र जी लिखित रौन-प्रेवक
लिहनि कथा संग्रह थिक ।

श्री जगदीश प्रसाद मन्त्र जी कै रौन सहित २०१२ लेन रिदेह
समाग प्रोत्तु कबरी लेन रौवग ।

समागानुब सहित अकादेमी प्रबन्धक २०१२-१३

रिदेह समाग २०१२- रौन सहित लेन (लेखक सहित अकादेमी
प्रबन्धक कगमे प्रसिद्ध)

श्री जगदीश प्रसाद मन्त्र कै तरेगण (२०१०) - रौन-प्रेवक
लिहनि कथा संग्रह लेन

रिदेह मुन सहित प्रबन्धक २०१२, रिदेह हरा प्रबन्धक २०१२ आ
रिदेह अश्वराद प्रबन्धक २०१३(लेखक सहित अकादेमी प्रबन्धक
कगमे प्रसिद्ध) केव घोषणा शीघ्र कउन जाएत ।



२

प्राप्त आ पाणि:

प्राप्तसँ रैदिक संस्कृत रैव भेल आकि रैदिक संस्कृतसँ
प्राप्त ? रैदमे नागिनी नामा जल आथान यह सिद्धकरीत
अछि जे दुनु समानासुव कर्षे रैव दिन धरि चलन । आ
समानासुव पवसवा दुनुकेँ प्रभावित केनक । और भगवद देखु-
उतए दुर्लभ जेन- दुर्लभ, (भगवद ४.५.५) प्रयोग की सिद्ध
करीत अछि ? अथरैदमे पश्चात् जेन पश्चा (अथरैद
१०.४.१०) की सिद्ध करीत अछि ? गोपथ ज्ञानमे प्रतिसङ्गा
जेन प्रतिसङ्गा की सिद्ध करीत अछि ? (गोपथ ज्ञान २.४) ।
आ रैदिक आ लौकिक संस्कृतकेँ उग कानमे संस्कृत ले रवण
क्रमसँ दुन्दुभ (रैदिक संस्कृतकेँ याव आ पाणिनी दुन्दुभ कहै छथि)
आ भाषा (लौकिक संस्कृतकेँ पाणिनी भाषा कहै छथि) कहन जाग
हुन । आ जकवा आग प्राप्त कहै छिँ से पानिक बाद उग
कगमे रूमन जेन (महिल जेथन सङ्ग्रहमे) ।

तबतक नागिनीमे १ ठी आ रवकटि ४ ठी प्राप्तक चर्चा करै
छथि ।

उना तँ महारीवक रचन अर्थ-यागधी प्राप्त आ रूचक रचन
यागधी-प्राप्तमे देन जेन ह्दा आ दुनु मुनतः जलभाषा
बहए ।

ह्दा जल रितिल्ल क्षेत्रक लोक जमाना तँ रूच सतकेँ अण
क्षेत्रक भाषामे रूचरचन सिखरी जेन कहनहि: अणजाना
तिबखने, सकासिकतिरारूचरचन परिवर्णित- माले तिस्रु
लोकनि, अण-अण भाषामे रूचरचन सिखरीक अणमति दै
छी । आ रूचरचनमे प्रमाण तल जलभाषा यागधीक बहन ह्दा
आन आन भाषाक तल सेहो जेठएन; आ से भाषा पानि भ२



'विदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गणन ।

पानिमे:

“मृ”, “नृ”, “ऋ”, “ॠ” आ “अः” ले होगए आ “अ” स्वर ले
राजण होगए ।

तानरा शि आ मुर्धन्य य सेहो ले होगए मात्र दन्त स होगए ।

संयुतक “ळ” राजण होगए ।

संयुतक संयुक्त राजण “क्क”, “व्र” आ “ऊ” ले होगए ।

“मृ” रैदलि क “अ”, “ग”, “अ,ग”, “ग,उ” भ २ जागए ।

“नृ” रैदलि क “क” भ २ जागए ।

“ऋ” रैदलि क “उ” भ २ जागए ।

“ॠ” रैदलि क “ग” रा “ए” भ २ जागए ।

“उ” रैदलि क “उ” आ “उ” भ २ जागए ।

संयुतक दन्तक दीर्घ भेलाग: मिहः = सीहो

संयुतक दीर्घक दन्त भेलाग: ऋणीन्द्रः = ऋनिन्द्रा

निकटकस्वर: निष्ठाः = निमिष्ठा

रैनायात: मध्याः = मज्जिनयो

प्रभाव: जयति=जेति

स्वरभोग: गति= ति

पानिमे ड आ ठ सेहो ले होगत अछि । तानरा शि आ मुर्धन्य
य जेन “स” रा “ड” प्रयुक्त होगए; ड जेन “ळ” आ ठ जेन
“ळ” प्रयोग होगए ।

क रैदले “य” मे: जेला लौकिकः = लौकियो रा “र” मे

जेला शुकः = सुरो

आगाँ-पाडाँ सेहो होगए: जेला मशिकः = मकसोः,

करेणुः = कशेक

करआ चरआमे रैदले: क्रन्दः = दृन्दा

तरआ ठरआमे रैदले: प्रथमः = पठमो

“थ” उच्चारण भ २ “ह” मे रैदले: प्रथवः = पहरो



“क” योयौघत भ२ “ग” भ२ जा०ऽ: मुकः=मुणो
“ग” अयोयौघत भ२ “क” रैनि जा०ऽ: तडागम् = तळ ाक
“म” अण्प्रणीत भ२ “ज” रैनि जा०ऽ: मल्लिका = जल्लिका
“प” महाप्रणीत भ२ “फ” रैनि जा०ऽ: पवनेः= फवन्
राज्यक लोप सेहो लो०ऽ: परिसिंयासि= परिसिंयासि
दूर्जन सहाय राजक लोपः ऋत्रियः= खत्रियो
ध्वजः= ध्वजो
आरं सवतारक संधान देथो’ गर्हा= गवहा; वनेम् = वतर्न
पानिमे तीक्ष्ण सन्धि अङ्गिः स्व, राजक आ अण्प्रणीत (निष्पत्ति)
सन्धि ।
स्व सन्धिः स्वक रौद स्वमे पुरुरती/ पवरती स्वक लोप रा
ककरो लोप ले लो०ऽ: अङ्गि ।
राजक सन्धिः द्रव्य रा दीर्घ स्वक रौद राजक एनापव ओ स्वफेम्
दीर्घ आ द्रव्य भ२ जा०ऽ: ।
निष्पत्ति सन्धिः अण्प्रणीत (निष्पत्ति)क कतो आगमन तँ कतो
लोप भ२ जा०ऽ: । जेना- त+थने= तथने ;आ स+वालो=
मावालो
पानिमे दृग्येष्टी रचन लो०ऽ: अङ्गि- एकरचन आ रैरुचन; आ
मात ए रितञ्जिः पठ्या, दुतिया, ततिया, दतुथी, पथ्या, ज्यु,
सतुथी, आनपन । ३.०० सँ ५.०० धरि धातु लो गये आठ नकाव
(आमीर्जिओ आ अष्ट नकाव ले लो०ऽ: अङ्गि) लो०ऽ: अङ्गि ।
पानिमे समास संस्कृत सन लो०ऽ: अङ्गि ।
प्रोत्तमे:
ओना मून रौत यएह अङ्गि जे सभ प्रोत्त शिष्टक संस्कृत कप ले
अङ्गि ।
साहित्यिक प्रोत्तक कएक प्रकार लो०ऽ: अङ्गि ।
पैनीनी प्रोत्तमे “ए” जेन “त” आ “न” जेन “ळ”
अर्धमागरी प्रोत्तमे मध्यक स्वतंत्र “क” रैदनि जा०ऽ: “ग”, “त”



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवी

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रा “य” ये । दु णी स्वरक रीट “ग” रँदनि जागँ “र” ये ।
शौबसेनी प्राप्तरमे दु णी स्वरक रीटक स्वरतँ “त” रँदनि जागँ
“द” ये आ “थ” रँदनि जागँ “ह” रा थ” ये ।
मागरी प्राप्तरमे “व” क स्थापन “न”, “य” केव स्थापन “य्य”
रा “ञ्ज”, “स” आ “य” क स्थापन “नि” क प्रयोग होगत
अछि ।
प्राप्तर मे ज्ञस्व आ दीर्घ “भ”, “वृ”, “ऋ” आ “ॠ” ले होगत
अछि । न केव रँदना “न” होगत अछि ।
भ रँदनि जागँ: अ, आ, इ, उ, रि
वृ रँदनि जागँ: गनि
ऋ रँदनि जागँ: ए
ॠ रँदनि जागँ: ऊ
दु स्वरक रीट क, ग, ट, ज, त, द, य, र केव जोप होगत
अछि जेना: लोक=लोअ, वारण्य=वाअ
थ परिवर्तित भऽ जागँ ह मे: मोथा=मोहा
प्रावस्तक य भऽ जागँ ज, जेना: यम=जम
ने आ य भऽ जागँ स; ऋ भऽ जागँ थ रा ङ रा न; त्र
भऽ जागँ ण; द्र भऽ जागँ ट; ध्र भऽ जागँ ङ, द्र भऽ
जागँ ज; ध्र भऽ जागँ न ।
सन्धि संयुत सन अछि । रचन दु- एकरचन आ रँहुरचन, रिभञ्जि
मात । संयुत जेकाँ धातु दस गण मे बँहैत अछि, तुदादिगणक
कणक जोप भऽ जागत अछि । भूत आ भविष्य मे एक-एक
ठी कण होगत अछि ।
प्राप्तरमे समास संयुत सन होगत अछि ।



साहित्य अकादेमीक ठेगोव निष्ठलेचव अराडि २०११ मैथिली लेन श्री
जगदीश प्रसाद मण्डन के हूकव नयूकथा संग्रह "गामक जिनगी"
लेन देन गेन । कार्यक्रम कोटिमे १२ जून २०१२के लेन ।

मैथिली लेन बिरादक अस्तुक कोला समारण ले देखबोमे आरि
बहन अछि । ए प्रवक्तवक ग्रांडिस्ट निष्ठ रेलरी लेन एकठा
तथाकथित साहित्यकारके लेन लेन जे प्रान्त मूलाक अनुसार
जातिक आ सकीर्णताक आधारपर पोथीक नाम देनहि जागेमे
नहिये नटिकेताक पोथी बहए, नहिये सुभाष चन्द्र यादवक आ
नहिये जगदीश प्रसाद मण्डनक; संगहि ३ ग्रांडिस्टनिष्ठ रेलरीनिहार
तथाकथित साहित्यकार बिदेहक महाक सम्पादक झुल्लोजीके
कहनहि जे जगदीश प्रसाद मण्डनके ए जिनगीमे ठेगोव साहित्य
प्रवक्तव ले देन जेतहि ! । बेहरी जखन १ ठा पोथीक नाम
पठेनहि तखन उगेमे चन्द्रनाथ मिश्र "अमर"क अतीत मथन
सेहो बहए जखन कि उ पोथी निर्धारित अरवि २००१-२००६ मे
हुगले ले अछि, तँ की बिब देखले पोथी अनुमिति कएन
लेन ? ए तबहक ग्रांडिस्ट निष्ठ रेलरीनिहार आ बिब गठले पोथी
अनुमिति केनिहार बेहरीके साहित्य अकादेमी टिहित कबए, आ
नाम सारिजनिक क२ सुगी कपस प्रतिरक्षित कबए, से आग्रह;
तखन मैथिलीक प्रतिष्ठा रीटन बहि सकत । एतए गेलो तथा
अछि जे साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक संयोजक श्री
बिद्यानाथ सा रिदित अखन धरि ले प्रवक्तव लेठरीक मूलाक आ
ले प्रवक्तव लेन रेलरीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डनजी के
देनहि अछि जखनकि मण्डन जी प्रवक्तव न२ क२ घुबि क२
आरियो लेन दुधि; संगहि ठेगोव साहित्य प्रवक्तव मैथिली लेन
पहिल रेल श्री जगदीश प्रसाद मण्डन जीके देन जखन संस्कृतमे
दवतंगा आकाशवाणी कोला प्रकाशक मूलाक प्रसारित ले केनक आ
दवतंगा, मधुबनी आदिक हिन्दी समाचार-पत्र सेहो ए संस्कृतमे
कोला समाचार प्रकाशित ले केनक जखनकि देशेक सब बाह्यीय



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अंग्रेजी पत्र (

<http://esamaad.blogspot.in/2012/06/lit-agore-literature-awards-national-media.html>)

एकव मुद्रणा विषय कोणा अपराधक प्रकाशित केनक । सहिब
अकादेमिक मैथिली विभागक, आकाशवाणी दरभंगाक आ दरभंगा-
मधुबनीक हिन्दी समाचार पत्रक पत्रकाव लोकनिक मकीर्ण जातिरादी
चेहवा नीक जेकाँ सोनाँ आनि गेल । ह्रदीक आ तँ मात्र प्राबल्य
अछि । सहिब अकादेमिक मैथिली विभागक अमली चेहवा तखन
सोनाँ आउत जखन ए रीतिक मूल सहिब अकादेमी प्रबन्धक
घोषणा रहत ।

श्री जगदीश प्रसाद मन्दन जीक "गामक जिनगी" मैथिली सहिबक
ऐतिहासिक सरश्रेष्ठ नव्य कथा संग्रह अछि । जगदीश प्रसाद
मन्दन जीकेँ रीति ।

मुद्रणा (स्रोत समीक्षा): छैगोब सहिब प्रबन्धक दक्षिण कोरियाक
एनिसी (स्पासब सेमरग गडिया निगिठेड) क आग्रहप्रब सहिब
अकादेमी द्वारा प्रक कएल गेल अछि । छैगोब सहिब प्रबन्धक
प्रबन्धक वरीन्द्र नाथ ठाकुरक १३.०५ जगन्तीक उगनस्रमे प्रक
भेल छल । सब सान + छी भाषा आ तीन सानमे सहिब
अकादेमी द्वारा मागता प्राप्त सत्रेछी २४ भाषाकेँ एमे प्रबन्धक
कएल जागत अछि । मैथिली लेल आ प्रबन्धक पहिल लेब देल
जा रहल अछि ।

प्रबन्धक वरीन्द्रनाथ ठाकुरक १३.०५ जगन्तीक उगनस्रमे सहिब
अकादेमी आ सेमरग गडिया (सेमरग लेग प्राजेक्ट) द्वारा २००६
आ मे स्थापित कएल गेल छल छैगोब सहिब प्रबन्धक । २४
भाषाक श्रेष्ठ पोथीकेँ तीन सानमे प्रबन्धक (सब सान आठ-आठ
भाषाक सरश्रेष्ठ पोथीकेँ एक सानमे प्रबन्धक) देल जाएत ।
प्रबन्धकमे प्रत्येककेँ ६५ हजार छीका आ प्रशिक्ष-पत्र देल



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जागत अछि । चारिम सान पहिने सानक आठ भाषाक समूहक
फेब्रुअरी २०१२ । छैछोस जगतीक नगाति अरुमवगव ३
प्रवकाव देन जागत अछि ।

छैछोस साहित्य प्रवकाव २००९ राँगा, गुजराती, हिन्दी, कन्नड,
काशीमी, पंजाबी, तेलुगु आ रौडो भाषामे २००३ सँ २००९ मरा
प्रकाशित पोथीपव देन गेल ।

- राँगा (आलोक सबकाव, अगापडुमि करिता)
- गुजराती (भगवान दास पठेन, मारी लोकवाला)
- हिन्दी (बाजी मेठ, गमे हयात ल मारी, कथा संग्रह)
- कन्नड (चन्द्रशेखर करिव, शिकावा सूर्य, उपास)
- काशीमी (ममीय सहाग, ना थमे ना आकास, करिता)
- पंजाबी (जमरनु सिंह करन, गुण्य दा टाण, आमेकथा)
- तेलुगु (कोरेना सुप्रसन्नाचार्य, अतवगम, निरंकर)
- रौडो (बैजेंद्र फमाव बैला, बैलाग हाना, निरंकर)

छैछोस साहित्य प्रवकाव २०१० असमी, डोगरी, मराठी, उर्दू या,
बाजस्थानी, मथानी, तमिल आ उर्दू भाषामे २००३ सँ २००९ मरा
प्रकाशित पोथीपव देन गेल ।

- असमी (देवरत दास, निरिचित गल्प)
- डोगरी (मैतय खजुरिया, रौडोलनदियन रौडोवा)
- मराठी (आव. जी. जाधव, निरादक समीक्षा)
- उर्दू या (बैजनाथ बथ, सामान्य असामान्य)
- बाजस्थानी (विजय दास देखा, रौता वी हूनरावी)
- मथानी (मोसाग किशु, कमलिया)
- तमिल (एस. वामनप्रसाद, वामन)
- उर्दू (चन्द्र बास खान, सुबह-ए-मशिक-की अज्ञान)



टैगोब साहित्य प्रवकाव २०११ मैथिली, अंग्रेजी, कोंकणी, मनयानम,
मगीपुर्वी, लपानी आ मिथी जेन २००१ सँ २००९ मया प्रकाशित
सोथीपव देन गेल । संयुक्त जेन प्रवकाव ले देन जा
सकल ।

-मैथिली (जगदीश प्रसाद मल्ल, "गामक जिनगी")

-अंग्रेजी (अमितार घोष, "मी ऑफ पाँगीज")

-कोंकणी (मीना कोनाय्कर, "गीवा")

-मनयानम (अकितम अदुतम नयूदवी, "अतिमहकनम")

-मगीपुर्वी (एन. रंजामोहन सिंह, "एना केणे केनरी नष्ट")

-लपानी (गजेंद्रमणि दबवान, "प्रश्ना-प्रश्ना")

-संयुक्त-

-मिथी (अर्जुन हमीद, "ना एन ना")



गजेंद्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html

२. गद्य



२.१. छगदीने समाद फाउन्ड-कथा



२.२.१. स्रजित कमाव सा-कथा २.
सल्लावायण सा



—



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



२.३. राजदेव माडक उगवास- रुमव ठेव

—



२.४. जगदानन्द सा मल्ल



२.५. अतुलेश्वर- मोटर और एक जे.....



२.६.१. डा. अमर सा-पत्र : एक विद्या २ डा.
नेमिष्वर कर्म "बिदेह"- पौरी समीक्षा - अमर



२.१. दुर्गानन्द यादव- टैलोर संहिता
प्रसक्तवक रैल



२.२. टैलर कथाव सा १. विहति-कथा - ठकुरकि-आलय-
जिहतिव रैल



जगदीश प्रसाद यादव

जगदीश प्रसाद यादवक गाँछी कथा-



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

वहक सांग न्याय छै, पनियाल दुख कर्ज, तिवलोकक तकथा

आ

शरीरी

वहक सांग

गाममे खेतीक छट उठि ते मानकाकीक वहक सांगक छट उठिये
जागत अछि । ओना छबलोक एम अछि, दूदा मानकाकीक अलग
पहिला बहल उगजाम उठेत छटक संग रयाकतित्रक छट
उठि ते बागागा-महाभावतक प्रदूख पदक छट जका हूको
होगत छुह । छबलोक भिन्न-भिन्न एममे एना होगत जे
कतो-कतो खानी गहमेक छट छलैत त कतो अगरे धाक ।
कतो खगलक संग दललोक छट छलैत त कतो खगल,
दललक, तेललोक उठि जागत । कतो अलक संग तीमला-
तबकावीक उठेत त कतो तीम-तबकावीक संग हलो-
हललक । कतो एलला होगत जे खेतीक संग माडो आ
दूधक छट उठि जागत । भणडावाक भजमे जल्ला कतो
साथीस भज शुक होगत त कतो भजक रीट-रीटमे, त
कतो साथीस रिसर्जला होगत ।

तल्ला मानकाकीक सेहो छुह । वह सांगक संग मानकाकीक
मिलह खानी मिलह ले जलगी सेहो ओह छुह जेह
रौराक रीध होगत । जल्ला कलाह-खोवस न२ क२ दिरड ।
तीडमे रिसर्जक संग एकसँ एक देरसुवनि अगल जलगी समर्पित



क२ अग्न कन-खनदाक सग समाजक पाग झरेठा सम्वारि
बथेत तहिला नानका कियो छथिये ।

जग दिन नानकाकी मान्सुव एनी तही दिनसँ नह माग सेहो
सगे-सग एवनि । द्वागमन भेनागव जखन नानकाकी मान्सुव
रिदा कृष्ण नगरी तँ सतबिया धान थोछिये दगले जे बाखन
बहनि तहीमे नह मागक रीखा छिपा क२ ओही धानमे ३ मोटि
मिना लेननि जे जँ कागजक पृष्ठि यामे रा नतामे रौनहि बाखर
तँ थोछि भवनिहवि देखिये जेतीह, जखन देखती तँ थोमर
कवती । जखन थोनती आ मागक रीखा देखती तँ हो-ल-हो
डागन-जोगिनक फसाद ल कही उठि जाय । निछोहिये कनी
समये ल नगत झुदा कियो रुमत तँ ले । सएह केननि ।
मागक रीखा लैहवसँ मान्सुव अलैक कावशो बहनि । जहिला
हज्जारोक तीड़मे थैगीक नज्जवि थैगिकागव बहत तहिला
नानकाकीक थैगी माग तँ सग ले छोछ छहथि । ओना मममे
अहो होगत बहनि जे अलले किअ मागक रीखा न२ जाएर,
जग गाम जहरे तोछ गामे तँ नह माग होगते हेते, झुदा
मल ले मागनकनि । मलोक मलर तँ साधार बहिये अछि ।
तनहि साधारशो रीत रा काज कहि मला जेर, ३ अग्न अछि ।
नानकाकीक मल ३ दूखले ले मागनकनि जे गाम-गाममे जहिला
धानक थैती होगतो एकवंगहो धान होगत आ बहियो
होगत । तहिला ल मागोक अछि, कतो मतौला, ठेकी माग
होगत तँ कतो पावक-ठठि या । कतो ननका ठठि या तँ
कतो हविश्वका । कतो उज्ज १ तनो होगत तँ कतो



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सतर्वागा मेहो होगत । तै जह्ला गाग-गागक पाणि, तह्ला
राणि, तह्ला थोती तह्ला रौड १ तह्ला माड १, तह्ला
हुनराड १ तह्ला ल आला-आल होगत । तै कोला जकवी
ले अडि जे नह माग ओहू गामे होगते हेते । जै ले
होगत हेते तै नलो-रिहलो भ२ जाएँ । नगे जगमे
की मागत बुनर जे धाल अडि । यह सर मोटि नानका
जह्ला तीरन्थानक गात्री पनपीरा रैतनक संग मिदलो-सगव संगे
न२ छेत तह्ला नह मागक रीखा मेहो न२ जेननि ।

नह मागक गा नानकाकीले बुनन बहनि । किक तै लेहोमे
रेनी कान थोरौ कवधि आ उपजेरौ कवधि । थेतियो
हनलक । जखन मागक गाड जूआ जागत तखन ओगे हडन
रीखा मेहो बसे-बसे पाकि जागत । जह्ला रूठ-रूठ नुनक
रिटाव रीख पुढलो हुँ-हुँ नडए नलोत तह्ला मागोक रीखा
गाडक आलो डोडा थापडा क नारा जकाँ चनकि-चनकि रहवा
जागत । कतरौ पाणि-पाथव रैवसो आकि ठनका थसो पृथ्वीक
कोवामे डख मसिया रैछा जकाँ मागक छातीमे सुति बहत
तह्ला मागोक रीखा सुति बहत । हृदा अचेतन बहिनो चेतन
भ२ ओग दिा हुँहुँ । क२ उँठ जागत जग दिा उँठैक
सम होगत । तै कियो रीखा जोगा समेपव थेतले तहि-
कोरि राग करेत तै नहियो राग केल ओग थेतमे अगला
उँठि जागत जगमे पडिना मान भेल बहक ।



नहक मागमे मानकाकी जहनि क बाबा डुहने जे ओ जले डुहि
जे जगठाम लोक नून-भात आकि नून-बाँधी खा ज़ीरन रसब
करीत अडि तगठाम ज़ै चारिषी नह मागक पत्राकेँ एकलौठी
पाणिमे कनी नून द२ मेवटागक हावेनसँ हावेना देरै तै
तेहेन मिलाही त२ भात-बाँधीमे सँष्ट ओहन गति पकड़ि लेत
जेना खाली सड़कमे राहण धड़ैत । चारिये पातक मेज्जनक
संग अ धा किलो मीठव समावि निश्च ।

जिखगी संग प्रवनिहाव माग अगण कथा-रैखा ननकावी छोटि
केकवा नग रोज़त । जे ओकरा दिस घूमियो क२ ल तकेँ
तेकवा कहिये क२ की लेते । थेतक आरि पव पहुँचते
तथाएन लेक-पड़ि जकाँ नानोकाकीकेँ माग कहैत-

“काकी, आग नग हज्जारो रैथमँ गेनहावी रैथुआ-लानी गतयादि
संगे-संग चलेत एतौ कियो हराग जहाजपव भोज-भात
करीए दूदा हमागव किअ ल ककरो नज्जवि पड़ले । ज़ै
नज्जवि पड़न बहिले तै एलिा धवती पेल बहिले ।”

मागक दुखनाम सुनि नानकाकी रिहल त२ कहनथि-

“रैलीन, कियो अगना भागे-कवमे ज़ीरै-मले । तगले अलले
किअ दुख करै डुह । जग दिस उगष्टि जेरैत तग दिस
बूमिहक जे या तै अ धवती ले बहए दिअ छलै रा अ धवती
बहै जोकव नगए ।”



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

साग रौजल- “नालकाकी, लोक रौड फुलेना कले। ले तँ कछु
जे मिष्टीक अ । गन-घब रौना क२ वहे। ओ हमारो जँ अखारमे
कनी माष्टि डिडा या मिष्टीक अगलामे आकि डजजियोगव नगा
देत तँ कि अ मीन-कातिक तक भाँज नड पवरो। म्हा
आल साग जकाँ जे फुँटा देत जे अ गवरीक डी तँ अ
जाडक । भदराबिमे साग थेलोक ले चली से कछु जे अ
होग ? ”

माण्डूना दैत नालकाकी कहनथि-

“अगले किअ दुख कले डह, तोहव तँ मान-मवजान एते डह
जे रिष तोले अगल मागयो-रौगक डुछाव ले क२ सके।
कवह दहक जेते फुलेना कवतह से कवह । ”

मिथिलादेवक भोज जलिया अदोसँ आग धरि भोजनक गतिहास
अगला पेटमे समेटल अछि तलिया गायो ल समेटल अछि ।
एक दिस भात दानिक संग तबकारी, तग संग संग पानिमे रँगन
अदोवी, तँ तेनमे रँगन रँव-रँवीक संग, दली-टिलीक संग
रिसर्जन होगत । जे भोजनक गतिहास प्रदर्शित कलेत
तलिया रौधक रँगन वखरौवक थोपड़क संग रँहुजिना मकानक
रीट आदिक मसखसँ न२ क२ सत्रय -आधुनिक- मसख तक
गतिहासक समकी सेहो दैत अछि ।



जग दिन मानकाकी मान्त्र एनी तग दिन उ पनवहे-मोनहे
रैर्यक बहथि । आल-आल जकाँ दुगये रैर्यक पछाति पतिकै
झगल रिधरा भ२ गेली । झदा दुगये रैर्यक अतिगन्तव
मानभोजी, मानकाकी, मानदादीक माना समाज पहिवा देनकनि ।
एकेष्टी मताल ले भेल छननि । जग दिन पति झगलनि तग
दिन एहेन ओसवीमे मानकाकी ओसवा गेली जे तनि पोथ
कानियो ले सकलीह । ओसवी नगननि जे जग समाजमे रैधर्य
रौनह एते सकल अछि जे ता-जिनगी रैधर्य धाका केल
बैत । तगपव अन्तक उपाग उपाक । झदा कि समाज ३
भाव नगए जे ओकव जिनगी गज्जतक मग केल चनटे । जे
समाज केकरो जीरन ले दसकेए कि उग समाजके केकरो
उगरी रैतरेक अधिकार छै ? रिधराक मग जे-जे किवदानी
समाज करैत आएन अछि आ कगयो बहन अछि कि उ समाज
सामाजिक रैधर्य रैनरेक अधिकार बनेए ? नावी जागवक लेन
ओकव स्वक्काक पक्का रैरस्था सेहो हेराक चाली जै से ले त
ल उ परिवारक मग अपन प्रतिष्ठा रैत सकैए आ ल रौनह
रैत सकैए ।

पतिक पबोछ भेनापव मागयो-रौग आ मो-समाज मानकाकीके
कतरौ हिलोनथि-डोलोनथि, झदा मानकाकी अछि गेलथि
जे समाजमे हमरा मग रैहूतो छथि, जलिा हूका सरहक
जिनगी कठतनि तलिा हमरो कठत । जते भोग-पावमे छन
तते भोगलौ आ माँ मिथिनाक हूनरावी छारै कतौ ल
जाएँ । जखन अपन हँसुआ, खूबगी कोदवि चनरेक नुनि अछि,



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तखन कतौ बहि ज़ीरन-यागन क२ सले डी । अगल मान-यादा
अगल ले रिगाडर ।

असुमी रैथ पाव केनापव नावकाकीक नजबि उग दिस गेननि
जे-जे नजबिसँ देखल बहनि । नजबिसँ नजबि गिनाएँ,
ठकवाएँ दुनु होगत तहिना नावकाकीक मसमे सेहो उठवनि ।
एहेन निचेसँ जिनगीमे करियो रैसरो ल कएन बहनि जे
बुझरो कबितथि आ सोचरो कबितथि । जग जिन्गीमे बुझि-
रिटाव जँ जिनगीक संग ले जनत उ जिनगिये केहेन ?
अनधुनमे पड़न एकठा मल कहनकनि-

“हमरा मन-मन लोकक जेन जे रैरहाव छनि बहन अछि उकर
निमज्जना के कबत ? ”

दोसर मल उतब देनकनि-

“जे निमज्जना करैरना छथि उ अगल जानिये गुंघवाएन छथि
तखन अलका कि देखिनि । पछिम झुँक गाड़ि पकड़ि पूर
झुँक जाए छनि छथि, से केना हेतग । ”

मलक घाटे घोज देखि नावकाकी कालिये जे उवाँहजे रैदम
अगल बहनि, उवाँहजे रिदा तेनीह ।

~



न्याय छले

सुनाएन धान जकाँ पचासी रथक शैतकाकालेँ ओझाएन डोड़-सँ
पल्लिहि मसमे उठैनि जे आरै तँ छन-छाली छी मे ले तँ
जिहगीक अपन हिमरै-कितारै दगये दिअनि, मएह नीक । ले
तँ शोसक कोन रिसराम केकरो दोथ गावा मर्छि सजा केकरो
भैठै छैक । ह्रदा सोमामे एते तँ जकब छत जे अपन
रात अपन बथि सके छी । तगएव जँ ले मागत तँ ह्रदँ ले
मानरै । नछि मरी कि मछि, शेषे कि रँछन अछि । जहिया
महब काजमे मगयो अधिक नछीत अछि आ छोट काजमे
पौव ह्रदा काज तँ दुनु कहलैत अछि । कियो काछ मगन
कियो काछ मगन, मगन तँ सब अछिये । गतीव प्रममे
ओमबएन शैतकाका, तँए मग-छित-देह एकरै छे भेल बहनि ।

पलौ ह्रदलीक मसमे उठैनि जे तबिसक सुतले तँ ले बहि
जेतार । नगमे पहुँचि छाती डोललैत रँजनीह-

“अखन धरि किअए रिछान पकड़ल छी ? ”

पलौक स्रबनहरीमे नहबागत शैतकाका हनसि रँजनीह-

“अखन धरि यएह रूँते डोलौ जे अपन केनहाक भागी कियो
रँलैए, ह्रदा.... ? ”



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवी

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रैजैत शैतुकाका उछागनपरसँ उठै जहिना उछैत मूर्जक दर्शन
लोक दुनु हाथ जोड़ि प्रणाम करैत करैत तहिना दुनु हाथ
जोड़ि गनौ-फरदलीक आगुमे ठाठ होगत रैजनाह-

“माहली मलौ डी । गन्ती भेल अछि फूदा दोसबाक गन्ती डुंगर
मठन गेल अछि । ”

अकटागत फरदली, रिश्व किछ मोचनहि रौजि उठनीह-

“मे की, मे की, एना किअए भोले-भोव पाप चढ़ै डी । ”

“पाप ले चढ़ै डी जिनगीक जे घटन-घटना अछि, तग निमित्त
माणि बहन डी । ”

“जखन एते कहै केनौ तखन किअए ल मला पाड़ि देरै ।
अहाँ तँ रूमिने छि जे रूमिना भौत खेमिहवि रिसबाह होगए
फूदा बतुका उगड़न अन्न हेलि देरै नीक हएत । ”

गतनसँ अरैत रैबुआन पाणि जहिना डल-डलागत परिव्र भ२
अरैत अछि तहिना फरदलीक रिटाव सुनि प्राहमसव शैतुकाकारै
भेलनि, रैजनाह-

“अपना दुनु गोठैक एक जिनगी ए धवतीपर बहन अछि । आकि
ले ? ”

“हँ मे तँ बहने अछि । तँए ल अछिनि डी । ”



“हमब देहक अछाँसिनी छी आकि जिनगीक ? ”

“अ रात अहाँ बूमेलौ कहिया जे पछि छी । ”

पगलक प्रश्न सुनि आहमसब शैलिकका सकदम भऽ गेलह । अदा
नगल मसमे उठननि जे छैलको घटना रसिया जाग छै आ
रसियो घटना छैलका भऽ जाग छै । अ शिर्षक कए
काबिगवगव । जेहेन काबिगव बहत तेहेन छैलकाले रसिया आ
रसियाके छैलका रसिलेत बहत । खएब जे होड । पगलके
प्रश्ननि-

“अपना दुनु गोठे एकठाँस केना भेलि ? ”

“एना अवथा-अवथा किअ पछि छी । जे कहिक अछि से सोम
डाबिये कइ । एना जे हवसीका दीवसीका नगा-नगा रजै छी
से ले रोजू । जेकवा नीक बूमेलै तेकवा नीक कहै आ
जेकवा अधना बूमेलै तेकवा अधना कहै । अहाँ नग जे कनी
दरौ-डनाव भऽ जाएत तँ हवि मारि लेह । मएह ल हएत
आकि डाँडव-गोरव जकाँ छिष्टामे उठा राध दऽ आएह । ”

जहिया पौखरिक पत्रि जनमे म्हाण कऽ पूजाक मुर्ति पढ़ि
मए पढ़ेत दास कएन जागत तहिया शैलिकका रडरड १
नगलह-



'विदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“जखन हम टोरीस रैथक बही तखन अहाँ टोदह रैथक छोटो।
दम रैथक अतब। आग धरि कहाँ कतौ देखि गेलौ जे
प्रकय-नावीक रीट उँयाक रिताजल भेल। जँ से ले तँ.... ?
जँ एको ठुंकरे दुनु गोठे जीरे तैयो तँ अहाँ दम रैथ रिबरे
रैनि बहरै। ए बिबराक मर्जक के ? समाजमे कर्नकक मोठेवी
देमिहाव के ? की ए रात मुठ जे जग घबसे जते कम
रसुत बहे छै आनि नगनापव ठुतरे कम जले छै ह्दा जग
घबसे अधिक रसुत बहे छै, आनि नगनापव जबरौ रैमी कले
छै। पदाम रैथक तगन-तपाएन जिणगीक अत केना
हएत।”

दुनु हाथ जोड़ि गेलौ माथी मंगनि। ह्दा जलिा रैट्टाकेँ
नर दाँत बहल अधिक-सँ-अधिक काज निअए छहित, नर ठुंजाव
हाथमे एल अधिक-सँ-अधिक काजो आ अधिक-सँ-अधिक समेठ
मंग गिनि रितरे छहित तलिा अह्दसीक सिनेह आरो
जगनि। रैजनीह-

“माथी-ताथी नग माथर ? पति छी तँ प्रुठे छी। एहन
गन्ती भेल किअए, से जारे ले कहरे तारे किछ ल माथर।”

पणोिक प्रम सुनि शैलकाका म्तरै भ२ गेलाह। मल कहुमछुए
नगनि। मत् रैड कटु होगत अछि। ह्दा जँ पणियो नग
मलक उँद्वष्टन ले क२ सकरे तँ दुनियाँमे देसवठाग कगये कतए
मके छी। शैलकाका साँप-डडनविक म्थितिमे पड़ि गेलाह।
एहेन कोला रिटाव मलमे ठुठरे ल कबनि जगसँ मल माथि
नगतनि जे एम् पणो माथि जेतीह। अम-रैम किछ रैट्टाकेँ
कहन जाग दे, एक तँ सियाल कि सियालाक अगिना खाड़ि मे



पहुँचन छथि दोसर अछूनि सैहो छथि । कोनो रिटारकै
रैगजोरी थोपि ले सकै छियनि, जँ थोपियो दैरैनि तँ मानिये
लेतीह सैहो ले कहन जा सकैए । जेत दुरैर द२ क२
रैजराक अधिकार हमरा अछि तत तँ हुनको छुनहिये । जँ किछ
ले कहैनि तखन तँ आवो स्थिति रिगछि जाएत । जहिया
हुनका मस्ये गैठी जकाँ जग्यागाँठ पछि जेतनि तहिया तँ
अगला मस्ये रहिये रैछत । जँ से ले रैछत तँ आँधि उठा
देखि केना पेरैनि । जँ से ले देखि पाएर तँ पति कथिक ।
मि सर्फ बगे-बतस ठाँ तँ पगौक सरैध ले छी । जँ ओतरे मानि
बूमरैनि तँ पति-पगौक सरैध बूमरै थोछे लएत । पति-
पगौक सरैध तँ ओ छी, जहिया जगकक एक हाथ हरन-रुँडमे
आ दोसर पगौक कलेजपव बहेत छनि, तहिया ह्रदा जहिया
नर जीरनक दिना निपतिक अतिम अरस्थामे भेटैत अछि
तहिया शैतुकाकारै भेटैनि । थाममे गछन मोती जहिया
जहूरी हाथमे देखिते नयन कमनयन रैनि जागत तहिया
कक्काक नजबिकेँ भेनि । मस्ये ह्रस्किएनि । पतिक ह्रस्की
देखि ह्रस्की मस्ये-मस्ये नयन केनकनि । जित्नासु डाँठ जकाँ
पगौक जित्नासु नजबिकेँ देखि आँ शैतु कहनिथि-

“देखु, प्रेम एकेठाँ ले चलबो अछि, जँ एक-एक प्रेमक उतबो
दिअए नगरै तँ प्रेम छुटि जाएत । जँ प्रेम छुटि जाएत तखन
उतबे केना दैर । किछ ले, रूठि या फुसि ।”

पतिक रिटार सुनि ह्रस्की अधिनिनु ह्रस्की जकाँ जग
अरस्थामे तौवा फिछि तँ देखेत ह्रदा अधिनिनु कपाँस
निकलि ले पुरैत तहिया ह्रस्की असमयमे पछि गेलीह ।



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पनौकेँ अमराजसमे पडैत देवी प्री. शैलक मसमे उठननि जे
जल्मि माष्टिक ठेगा, गोवा, टेका जोडा-जोडा पौघसँ पौघ
राँह राँह जाग तल्लि जँ राँहि दिअनि तँ जकब ठमकि
जेतीह । आदा मस ले माननकनि । पनौक रातमे तँ अथल
धरि ओसबाएन बहलौ । जकब माए-रांपक काज मानन जाएत ।
आदा कि हमले छी परिवारमे एना भेल आकि दोसरो-तेसरो
परिवारमे ? जँ एक समाज ले, एक गाम ले अलक समाज आ
अलक गाममे होगत अछि तँ जकब दोयक जडा कते
अनते छै । अन्तए कतए छै से कहि देरनि, मानती तँ
मानती ले आगु कहनि लति-लति ।

जल्मि उठौत गज्जब, उठौत कनशेकेँ कहैत जे दू गोठे
संगे-संग बहि दुनियाँ देखर । तल्लि प्री. शैल कहनिथि-

“सुनु, मभ रात सँहक नजबिगब सदिथल ले बहै छै, भ२
सकेए जे जे रात दस-बीस रँथ पहिल कहि देरौक छै डन,
से ले कहलौ । अगला मियाणमे ले बहन । जल्मि अमगले
धाष तौलिनिहार गनि-गनि तौलरौ कबत आ उठि-उठि निथरौ
कबत तँ पिता-पितामे सगड । हेरौ कबैत, जे जोवगब
बहैत ओ मस बहैत जे अरैरन बहैत ओ हवा जाएत । तल्लि
ले अगला दू गोठेक रीट अछि ।”

“दू गोठे” सुनि अहदानी कहुमहेनीह । पाछु उषष्टि-उषष्टि
देखै नगनी । प्री. शैल बुनि गेलाह जे शिकावीक राग सँकी
लैसन । जल्मि राँन-रौधक उषष्टि-गुषष्टि काज देख मियाणकेँ



हँसी-मल्लोत तल्लिा थोहमेव शीतकेँ हँसी नगननि । ह्रदा नगले
मनमे उठननि जे अगला पछिना कएन काज मन पड़ल तँ से
होए । एकाएक ह्रद रैन भऽ गेलनि । आल-आन प्रकथ
जकाँ अगल प्रकथ देखाएत थो. शीत रैननाह-

“आग धरि, अख धरि कहियो हमरा ह्रदमे फुटल जे हम
न्यायानयन दण्डित भेल जिनगी जीरे बहन छी । कियो एको
दिन पुछाई यो कए अएन जे केना जीरे छी । समाजमे
जाधरि रूठ-रूठ भ्रमक पुछ ले हएत, ताधरि समाजक पछिना
पीठ १ नागरि पकड़ि रेतवशी पाव केना हएत । हँ ए जकब
जे माँगकेँ छोरी ले कली, ह्रदा रिटाव तँ हेराकेँ चाली । ”

घबमे टोकन रेतनक ठगनी जकाँ ह्रदनी ठगनागत
रैननीह-

“जखन अहाँ दुनियाँक नजरिमे दण्डित छी तखन.... ? ”

पनीक चिन्तासँ चिन्तित भऽ थो. शीत कहनथि-

“अख धरि तँ डिपेल बहनो जे अगल दोथ अहाँकेँ किअ
दी । ”

पतिक रैथामँ रैथित भऽ ह्रदनी रैननीह-

“कनी ह्रदिछा कऽ कछ ? ”



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रा. शैल- “मेरा-ई नरुत होऊँ डूब मास पहिल प्रसिगत
रैनाउत होऊँ । कामेजक भाव रैऊन । पवीका रिताग मेहो
छै । सुलसि हेरै जे कते हो-हना भेल । मामा
न्यायानय छि गेल । गोन-मान जकर भेल बहए, जानकावीमे
ले बहए । दूदा तेयो जरौरदेहक कपमे हसलौ । ”

अरुदशी- “अहाँक किछ दोष ले बहए ? ”

प्रा. शैल- “एकदम ले । ”

अरुदशी- “होसना केना भेल ? ”

प्रा. शैल- “मेरा ई नरुत नग देखि न्यायानय दोषी रैना
छोड़ि देलक । ”

अरुदशी- “तुनका सभके ? ”

प्रा. शैल- “कसो दोखरना रैसी सजा पौलक आ रैसियो
दोखरना कम सजा पौलक । ”

अरुदशी- “एना किअए भेल ? ”

प्रा. शैल- “जै पहिल रूमिती तँ ए भाव जेरौ ल कबितो
दूदा मे ले भेल । जाधवि लिखित-मौखिक कपमे रैरस्था
छलत ताधवि एहिना हएत । ”



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

~

पनिवारो दुध

आंगन रैहारि, रौठनि धोय पडुरैविया दारा नगा बाथि, स्नानयना
दवरैज्जा दिस तकननि तँ रूमि पडननि जे मासुठैव मनाएरै
(पति) तबिसक स्वतले छथि उठा देरै उठित हएत ह्रदा मल
ठमकि गोननि । आठमे दिस गाम आएन बहथ तँ टायि रैजे
भोकेसँ हवरिडि । केल बहे डनार जे घबमे कोठि याक रौठि
आरि गोन अछि, जे काजक रौवमे सुतन बहत ओकरा कहियो
भातनस हेतग ? ह्रदा आठे िदसक दूरीमे एना किअए देखे
छी । हेब मल घुमि कहनकनि उमेवोक दोथ होग छै, ओना
मठिया तँ गेल हेतार । तह-माह करैत स्नानयना दवरैज्जा
आंगनक रीच ठहका कइ ठाठ भइ गेली, ल आगु डेग उठनि
आ ल पाछु ।

ओना ज़ीराणन्दक नील समेयेगव धूँष्ट गोन बहनि, एक तँ ओहूना
उमेव रैदले खुला पनिया नली छै आ नीला पतवा जाग छै ।
नील धूँष्टे ज़ीराणन्दक मलमे उठननि जे उठिये कइ की
कवरै ? काजे कोन अछि जग पाछु नागरै । आथि रैन केल
सोटेत बहथि । ज़िला टिन्तक टिन्तन अरस्थामे निस्तेज



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भ२ जागत तहिला बहनि । उना आँथियो खुजेक आ रैन
होगक ठेवो कावण अछि ह्रदा ह्रका से ले बहनि । मसमे
कतेको वंगक रिटाव ठकवागत बहनि, तँए अगिला वास्ता
देथेमे एकदिनोह भ२ गेन बहनि । आनमावीक कितरौं जकाँ
वंग-वंगक रियगक एकेठाम सँतन बहनि, असन रिटाव परिवारमे
गडन बहनि । ह्रदा परिवारसँ पहिल जे अगलागब नजबि
पडनि ततए गडि गेनाह । मेरा-निरुत भ२ गेलो, ज़ीरेक
उगाय भनकि जे ह्रए ह्रदा काज तँ हवा गेन । काजे की
अछि जग अगमेशामे समए गदम कवर । जखन काजे हवा
गेन तखन ज़िगगी केशा चनत । ज़ ज़िगगी चनत ले तँ
ज़ीरित-मृत्युमे अन्तले की भेन ? मसमे नधने बहनि आकि
दोसब उठि गेन जे कवरौं केकवा जे कवर ? पौडना
(गुरिज) कियो छथिये ले अगिलो उठि ये गेन । रीटमे
अगलकै पारि मस दहनि गेन । मेरा-निरुतिक तँ एक अर्थ
अहो ह्येत ल जे काज करे जोगब ले बहलौं । ह्येव मस
उमवा गेन । अथेव नगरी टोपठ बाजा ठके मेव भाजी
ठके मेव खज्जाक पगब भ२ गेन । काजो तँ दु वंगक
होगत अछि, एक शिवीवक शक्तिसँ कएन जागत अछि दोसब
रौहिक शक्तिसँ । हम तँ शिवीवक शक्तिसँ ले रौहिक शक्तिसँ
करेत भनौं तखन किअए ले करैरना बहलौं । आगक आँठी
जहिला कोगनीसँ धीले-धीले सकत रनि मृज्ज शक्ति प्राप्त
करेत, से कहाँ भेन ? ज़ रौहिक शक्तिसे शिवीवक शक्तिक
सीमाकन कएन जाएत तँ केहेन हएत ? थैव जे होड, ठनका
ठनके छै तँ कियो अगला माथगब हाथ दगए । ह्रदा सेनो तँ
ले भ२ बहन अछि । जे ठनका शिवीवक के कहए जे घरो-
दुआव आ गाढो-रिवीडके तौडि-फाडि दगए ओही ठनकाके
हाथ कते कान रँटा सकैए ।



खेब मल ठामकननि । ऋगल धाव जकाँ परिवारो भ२ गेल अछि,
कि हमरा रेटोल रँचत । रँचरो केषा कबत ? ल पडिना घुमि
ठुतल आ ल अगिला आरँच टाहत । न२ द२ क२ दु प्राणी
भेलो, तहुमे तेहेन पाकन आम जकाँ भ२ गेल छी जे कथन
तुरि खसल तेकब केल ठेकाष अछि । खेब जे होड, जारै
आथि तले छी तारै तँ जिरँ पडत आ जारै जिरँ तारै
जिरँक उँपाए करै पडत । अगल जिल जिलगी आ अगल
ऋगल मृत्य ।

गुण-धूममे पडल जिराणदक मल समाज दिस रँठननि । समाजे
ले की केनिँ जे हमरा ले कबत । जहिला देरस्थान दस
गोष्टेक सहयोगसँ ठाठ । लोगत आ टनरो करैत तहिला तँ
समाजो अछि । ऋदा मे तँ किछ ल केनिँ । थकथकाएल मल
कहनकनि-

“कि उँडागल धेल बहरँ आकि उँठरो कबर ? ” ऋदा नगले
दोसब मल कहनकनि-

“उँठये क२ की कबर ? ”

मल आगु रँठि शिक्षक समाज दिस रँठननि । सत मेरा-मिबृति
लोग छथि । ऋदा कि हमले जकाँ सबकेँ हेतनि । भनहि



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सभकेँ होएहि रा ले किछ गोठेकेँ तँ हेरै कबतनि । जखन
सरेहक जिनगी एक वृत्तमे रीतन तखन किअए सभकेँ सभ वंग
हेतनि । परिवारो आ सगाजो तँ सरेहक सभ वंग छनि । से
तँ छनिहिये । दीनाथा राबूकेँ देखे छिन जे मेरा-मिबृत्तिक
उपवासो म्हायन जोड़ि ले बहनसिहै । जखन कि सुखदेर
राबू मेरा-मिबृत्ति होगई पुरिहि जे तीन रथ ओछाएन देनि से
अखला देखि छथि । परिवारमे जँ केकरो किछ अछरे छथि
तँ झूठ दुमि कहे छनि जे तबि दिन कोआ जकाँ काँग-काँग
कलैत बहे छथि । मयकथकेँ जँ कोआ मनि जेन जाए तँ
रौनकेँ की कहलै ? जीराणन्दक मन आवो घुबिया गेननि ।
होए मनमे उठनि जे अखले ओनाग छी । जतरे बहए ततरे
छाँग पमावी ले तँ पओन जाएँ । स्वतन्त्र-सुतन पनेकेँ मोव
पाड़नथि-

“कनी एमहव आउ ? ”

आँगन-दबरेज्जाक रीच जे सुनयना ठाठ छनीह से आगु डेग
रौनोनि । केराड़ नग ठाठ भ२ हिया-हिया देखे नगनीह ।
पहिलका (मेरा-मिबृत्ति पुरिक) अपेक्षा रौदन-रौदन कग रूमि
पड़नि । एना केना भेननि, अखन धरि तँ किछ कहरो ले
केनसिहै । तखन किअए पानि उतवन रूमि पड़ छनि ।
केराड़क एकठा पछी थोनि देल बहथि आ दोसर ओलि नगन
बहे । तनी रीच जीराणन्दक मनमे उठनि जे जारे लाकरी
कले छनो तारे रौनक कमा क२ आनि पनेक हाथमे दैत
छनिनि, आ अगले अगले गावज रूनेत छनो । से तँ



आरं ले हएत । जूँ से ले हएत तँ परिवार आगु झूँते केना
समबत ? पाहुन जकाँ आठ दिनपव अरैँ डलौँ आ कमासुत रैन
जाग डलौँ ।

पतिक रँदमन कग देखि सुनयनाक मनमे उठननि जे अखन धरि
किछ कवरौँ ले केननिहँ आ तरे-तब हठ बहन छथि ।
नरकरिवयाक छूँकीक अराज जकाँ सुनयनाक आगमन रूमितो
जीराणन्दकेँ उठैक दुरी देहमे ले बहननि । मलाक रौम तँ
माथकेँ ओहना भयिना दैत जहिना कोना रसुतक रौम
भविष्यरेत । मलकेँ जिनगीक रामे ए कपे दरल जेना सरावी
कमन घोड़ । रा खनीया होगत । जारैँ धरि रौहवसँ कमा घब
अलेत डलौँ, जग रँले परिवार समबैत डन ओ तँ छूँछ गेन ।
ओहीपव ले अगला डहव-महव आ घबो-परिवारक डन । दूदा
से ले तेले तँ ओहना तँ जाग छै जहिना माथिक रँनन
बासुतकेँ पानिक धाव काष्टि अरकछ क२ दैत अछि । की
कमागयेपव गावजनी डन ? पनियेकेँ की सुख हमरासँ
तेननि ? घब-गिवहसुती समहारैमे दिन-वाति एकछैँ केले बँह
छथि । एक तँ मिथिलाजनक किमान परिवारक अजीर गठनि अछि,
जगठाम एनापव देरियो-देरता भेयिना गेनाह । सौँसे
जलकथवमे जलकेक दवराव जकाँ रूमि पडननि । नागहिँठा रात
पोछे छी । गाम-गाम ब्यास भागरत रँटे छथि, गाम-गाम
कीर्तन-भजन, भोज-भजडावा होगत बँहत अछि, तगठाम
समाज रिपवीत दिनामे रँहि गेन, दूदा देखननि कोण ले ।
दवराजक सौभाग्य डन नीक-नीक रात-रिटाव कवरै । तगठाम



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दबरेज्जा ठूँठि आंगन घबक कोठरी रैनि गेन अछि, जगठाम
कम-सँ-कम लोकक पैठ बहे, जगठाम आनक सुख-दुख सुलैक
आ सुख-दुखक दरौग रूँमेक अरुमर ले भेटैत तगठाम गति-
पलैक सरंधक आभाव कि रैनि सके। देखा-देखीक दुनियाँमे
टिन्ता टिन्तन किअए बहत। जूँ मे ले बहत तँ मलक सुखक
दिमाक धावा किअए ल रँदनत। जीरित-मृत्युक निर्णय ले
कवत ? केना हएत ? कोना हसवा गाढ होग आकि
नतिआएन नतीक होग, ओकर रौद्र ताधरि समीप होगत
जाधरि ओकरा अशुकुन रातारका भेटैत बहत। ओना नाथो
कीड़-मकोड़-कोमान किमनयकेँ नष्ट करैरना अछि ह्रदा
प्रपुत्रक तँ गजरे गठनि अछि, एक-दोसराक नष्ट करैरना
सेहो योजुद अछि। बिस्व ह्रतक गाढ रा नतीक दगो तँ ओहल
होग छै जेहेन साँपक ह्रत थरुनोक पछाति होग छै।

जीरणन्दकेँ एहनास भेननि जे हमराग ले गलैगब घब-ठाठ
अछि। जूँए घब ठाठ अछि तँए समाजक परिवार कहलैक नानी
अछि। ह्रदा समाज तँ ओह्लि ले केकरो महत दैत ?
सेराक अशुकुन केकरो महत दैत अछि। मे हमरा मे की
भेलै ? जखन किछ ल भेलै तखन कते महत हेरौक
चाही ? ह्रदा जकवा घब-परिवार गाम रूँमे जी, तेकवा
जोड़ि ये केना देर। ह्रदा ३ प्रम तँ गामक छिअ, अंगन
ले। परिवारमे जे छहव-महव भेल ३गमे हमरा कमागसँ की
भेल ? यएह ल भेल जे रैठीक रिआह केजौ, रैठाकेँ
पट्ट जौ-लिथेजौ। अतिम अरुमथामे अंगन घब रँलजौ। ह्रदा
रैठीक रिआह, पठ १३-लिथाग एते भावी किअए अछि जे



जिनगी भविक कमागसँ लोकसँ पावो ल गेलो छै । जँ
एतरेमे सब ओसबा जाए तँ समाजक गति केहेन रहए ? जँ
समाज दुवगतिक चालि पकड़ि जनत तँ मनुष्यक पैदागम
केहेन रहए । जगत्यामक जेहेन मनुष्य तगत्याम तेहेन
दुनियाँ ।

करोष्टे हेबते ज़ीराणन्दक मसमे उठननि जे हारि मागी मगड़ ।
पड़ि आए । पनोसँ मसमा मागि जेर । जँ से ले मगड़ तँ
हुनकर रिटाव छियनि जे घबमे बहए दधि रा ले । समाजक
मग तँ रहए बहनीह । पनोसँ प्रति जे धेस हेरौक चाली से
कहाँ कहियो भेन । मस-पनक मरिध बहन ज़ीराण-नीनाक मरिध
कहाँ बहन । हुनकर दुनियाँ हमवासँ भिन्न बहननि । ह्रदा आग
तँ ओही दुनियाँक ज़कबति हमरो भऽ गेन अछि । थड
रिक्मिन्त देमिमे ज़हिला ज़गता-सबकावक रीट मरिध बहेत,
तहिला ल भऽ गेन अछि । जेना पति कपमे ओ मेरो केननि
तेना कहाँ केनियनि । जँ से कवितियनि तँ ओ ओहिला ओते
अष्टकन बहितिथि, ज़तए नाउ-गारो ले सीथि पेनीह । ज़तरौ
मस गाममे रितेरौ, हुनकर कमाग थेलियनि ततरौ तँ हुनका
ले कऽ सकलियनि ।

ततरौ ले, दवरैज्जापव जे मान अछि, हुनका (पनो) देखि
बुख-पियाम कहए गेलो छहनि ह्रदा हमरा देखि घिबनी ज़काँ
नाटि भगए छहए । अठरौलेयो जँ अठरौत बहलौ तेयो तँ
अपन रूमि थाग-पीरै जे किछ ल केनि । कोना कि मनुष्य



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

झी जे घड़ १-मोरांगन देखि गिण्ट-मेकेण्ड रूमत, ओकवा जेन
तँ अछारैओ सछने-दिन भेल । तहिना तँ गाछियो-रिबडीक
अछि । जूबशीतन दिसँ ओकवा जेनटाव हेराक चाली, से अणका
तँ कहनि, ऊदा... ?

.....किअए ओ अणन रूमत ?

जहिना मासबमे जमाए मास-मासबक आगु नाड-माड करैत जे
ए ले अछि ओ ले अछि । तहिना जीराणन्द ओछाणसँ डर्ट,
रैसत गेली दिस देखि रैजनाह-

“एते दिक जिणगीमे कहयो निरुव दुव ले खेजौ ? आर
अहँक दवरौवमे डी, जेना बाखी ।”

पतिक रात स्रनि स्रनयना बिरह भऽ गेलीह । अणन कर्तव्यक
रौध भेलनि । पतिक मेरा गेलीक पहिन दागितर । कष्टावह
करैत रैजनीह-

“एना संस्रतमे ले कछ, भविष्यमे कछ जे कि कहै डी ?”

गेलीक रात स्रनि जीराणन्दक मन हवा गेलनि । जगठाम
स्रगंगा-मेना संस्रत पाठ करैत डन तगठाम स्रनयनक दुरी एते
किअए भेल ? प्रथमे ओमवागते रूकोव ननि गेलनि । रौनी
ले हूँननि ।



आजूक शिक्षक जकाँ जीराणन्दक जिनगी ले बहनि । शिक्षक समाजक प्रति समर्पित दुनाह । ओग समाजक रीट पढ़ १०-
निशाग प्रतिस्थाक मूल सिद्धि दुन । ओ सभ मालेत छथि जे
जग विषयक जकबति विद्यार्थीकेँ ठगुमेल पढ़ाक लोग छै ओग
विषयक पढ़ १०मे कमी छै । विद्यार्थीक जेन किछु सहज विषय
लोगत छै किछु कठिन । ऊदा जग विषयक जे शिक्षक लोग
छथि हुनका जेन तँ ओ समस्या ले भेल । जँ हुनकामे शिक्षा-
कनाक पूर्णता हेतनि तँ विद्यार्थीकेँ किछु समस्या ग्रस्त बह
देनि । की रजह छै जे अगला एंगाम अदोसँ नः कः
अथन धरि शिक्षा-संस्थानमे छै १०८ क छथि ले बहन ऊदा तँ
कि कियो पढ़ा-लिखि विद्वान ले भेलाह । भेलाह ।

जग हाग मुनमे जीराणन्द शिक्षा कार्य करैत दुनाह ओग
विद्यार्थीकेँ अगल छात्रावास सेहो छै । जगमे पढासँ दुंग
छात्रा आ आवास रेंसी शिक्षको बहैत छथि । मेसमे भोजन रेंसी
छै आ जेह विद्यार्थीक जेन सहै शिक्षको जेन लोगत
छै । ओग शिक्षक सभ अनगसँ दूर कीनि बातिमे स्वते रेंव
पीरै छथि । जीराणन्दो पीरै छथि ।



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जहिया राँठमे हवाएन राँठेली दोसबलेँ पुँडित, ह्रदा उँतव
देमिहायो राँठेली तँ वँग-रिवँगक होगत अछि । कियो एहला
होगत जे अगल हलैरौक छट करैत तँ कियो हवाएन
डिगलैत आबो दोसबलेँ हवाएन राँठ देखा दैत आ कियो
एहला होगत जे कहैत जे मँगो दनु । ए आशोक मँग छलैक
रात कहैत जे जँ किछु ले कहलै तँ गौग कहत, ह्रदा कि
बुँमनमे कि जराँरौ देन जा सकैए । ओ मँग केल ताववि
छलैत बहै जाववि आँखिगव ले भेटै जागत अछि । अछाँसिक
कगमे सुनयना पुँडनथि-

“कि सुछा दुध कहिअ ? ”

जीराणन्द- “गौतीम मानक लाकबीमे कहियो सुछा दुध ले पीर
सकलौ । पीलौ जकव ह्रदा एकवा आधामँ रैसी थाएँ पोड
कहन जेतैक । ”

जहिया मृतानुसंगव छठन वालीकेँ सब-समाज आ ह्रदुम-परिवारक
लोक आरि-आरि जितना करैत जे तैया, कि काका, आकि
राँरा की थैरौ-पीरौक मल होगए तहिया सुनयना पुँडनथि-

“एते म्हा जतए अहाँ डेलौ डेलौ, हम डेलौ डेलौ । ह्रदा
आर तँ ओतए अहूँ बहरँ जतए हम डी । ”

पणौक रिटावक गाम्गीरमँ जीराणन्द आँखि पडन अजगव साँक
सोममँ पड । ले पारि, रँजनाह-



“कहलौं तँ रौस रौत झुदा मय्यय तँ मय्ययक रीट किछु रौस
निर्धारित कर बहत अछि । डोबी-पगहाक जकबति तँ पशुक
लेन लोगत । झुदा रौस तँ एकझुडा या ले भऽ सकैए ।
ओकरा लेन तँ जाधरि दु-झुडा या ले लैपछैल जाएत, ताधरि
गीबह केना पछैत । जाधरि रुशियावक गाछ जकाँ गीबह ले
रौसत ताधरि बस-जन केना सगछाएन बहत ।”

पलौक प्रेम सुनि जिराणन्द जिराणिक ओमरी देखए नगनाह जे
३ रौस छुटन कहिया । तँसत मस पलौक कलेजमे
पहुँचनि । जलिा निशान लोक अगल अछ-दछ रौजैत तलिा
जिराणन्द रौजए नगनाह-

“कालिा, मेरिकाक कप छोडा संगी कहिया रूमनयनि । ३
दोथ केकर । झुदा दोथ तँ दुनु दिस देखए पछत । पलौ
कोन कप देखनि । सब दिस ओ पति रूमि मेरा कलेत
एनी । कहियो किछु ले मँगनि । अगल परिवारक स्तव रूमि
अगलकै सहायि बखनीह ।”

रौडरौड १गत पतिकै देखि सुनयना रौजनीह-

“हयि मानी सगड १ हडि आए । एके रौव रौजि जाड जे जे
दुसन से हवाएन । जे जिराण से खेन हवाए ।”

मलेत बोगी जकाँ जिराणन्द रौजनाह-



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“सूदा दुध आरौ ले गीर सके छी ? ”

“गीर सके छी । जखन गध पौसिक बुरि अछि तखन किअए ले
गीर सके छी । आदा जगठाम दिन-वाति बूटनिहार बूटि बहन
अछि तगठाम खनक दुधक कंठ नग पहुँचत कि ले, तेकर कोन
रिसवास अछि । ”

पौसिक प्रेम सुनि जीराणन्द जी-जी कऽ उठिआह । रिसबन रात
मन पड़नागब जहिला ओकर कपो-लेखा मोममे अ रिए नलीत
तहिला भेगनि । रैजनाह-

“सूछ-असूछ दुध ले एक परिवारक समस्या छी आ ले एक
गामक । दुधमे पानि देरै चननि भऽ गेल अछि । ओना जे
अगल गध-महीस पौसि दुध खाग छथि तिनकर संख्या कम
हुनि । जे रैटिनिहार छथि ओ दुध रैटि चाँड-दालि, तबकारी
गत्यादि कीले छथि, खाली दुधेष्टामे पानि ले देथे छथि ।
आला-आला तहिला, तखन कएन कि जअ । हन-मिना कऽ
देखनागब यए ले देखि पड़ैत जे ताड़ १ पीयाक गाँजा
पीयाकरै गानि पठि कहैत जे हलकष्टया अछि । एहिला एक-
दोसबमे मठन मरिअ अछि । सबकेँ सब गानि पठैत आ
मरिअक सब सुनैत अछि । तहसँ छेनि अगल आँहे गबिया
अगल मेहो सुनैत अछि । ”



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बिदेह भन्तः स्वयम्भूतः प्रकृतम्-

“तथैव उपायः ?”

“उपाय एतर्हि जे जते परिवारमे थर्हि हएत कम-सँ-कम तते
उपायजन कऽ जे तथैव परिवारक पाड़ नहि जाएत । गाममे
जते थर्हि थर्हि ओते जेथी गिनि उपायजन कऽ जेतारु तै
गामक पाड़ नहि जाएत । समाजक कल्याण ले देशक कल्याण
ही ।”

कई

जमीन निगामीक लोभमे पाँरि रबीसमानक सत आशि ओहिना सङ्ग
नगन जहिना रमन्तसँ पूर्ण गाढक पतनव होगत रा रहसँ
पहिल हुन सङ्ग नलीत थर्हि । हनमेत जिनगीक आशि देखि
रबीसमान थोती जेन, रबीसँ कई नऽ रबीस-दमकन करौनक ।
रुदा समेगव कई अदा ले कए पाँरि, जगतक कई जेनक सएत
हाथसँ निकलैत देखि मोगसँ मोगएत अथरु टोकीगव पेटकान
दऽ मल-मल मोटेत जे की करैत की जेन । माओनक मेघ
जकाँ दूनु आँधि लावसँ रौमिन ।



बीसम शताब्दीक आठम दशकमे हवित-आधुनिक हरा घुमकेत-
घुमकेत गाम धरि पहुँचन । नर हराक सुगंध नाके-नाक खेत-
खरिहाणमे पहुँचन । गामक किसानक सीमाकन शुक भेल । ओना
सीमाक नाम-मात्रेक भेल ह्रदा भेल तँ । नाम-मात्र एत जेन
जे सैद्धान्तिक रूपमे तँ सीमाकनक रूप लेखा । तैयार भेल
ह्रदा जमीनक ओसरी कँठहा रौस जकाँ ओसवाएन । कछुसँ रौस
कँठ । एक-एक कछुसँ सगयो कँठ । मोवगव-मोठगव
पाकन देखि भनहि आबिसँ जड़ि काँठि दियो ह्रदा मोमसँ
निकारन तँ अमान ले । जगसँ रौरहारिक पक्ष कमजोव
पड़न ।

चाबि श्रेणीक अतृप्त किसानकेँ बाखन गेलनि । ठाग एकड़सँ
निछा एक श्रेणी, चाबि एकड़सँ निछा दोसव श्रेणी, दससँ निछा
तेसव आ तगसँ ढुंगव चरिया । निछा किसानक जेन सबकारी
खजाना खूजन । बँग-बँगक प्रातःसाहसक घोषणा भेल । सबकारी
घोषणा तँए सभले भेल । ह्रदा रौकक माध्यामसँ भेल । जग
माध्यामसँ भेल सएह नगण्य । एक दिन ह्योज जकाँ किसान
दोसव दिन जगठामसँ भेल, सएह ले । ह्रदा तैयो गोष्टि
पगवा तँ दलेहे । सबकारी सुरिषा सर्वमिडीक रूपमे भेल ।
तेकव कार्यालय भिन्न रँगन । किसानक रीच प्रातःसाहसक घोषणासँ
नर जागवणक सँटाव भेल । गाम-गाममे बी.एन. डब्ल्यूक
माध्यामसँ काजक सूत्र तैयार भेल । आल किसान जकाँ पाँचम
श्रेणीक किसान रँविमालोक डेग रँडन । एक-तिहाग सर्वमिडी



सुनि केना ले रैठेत । जखल किमानक हाथ पाणि आत
तखल टोमनिया थोती राबहमनिया रैनि जाएत । जखल
राबहमनिया रैणत तखल ले किमान डावि-डावि सुना नगा
राबहमामा गाओत । ले तँ छह मासे, टोमामे ले गाओत । जे
टोमाम किमानक रैवारैवी छी, तेहीमे ले भाँग-धुवूँ उगजेए ।

रसुतगत काज तँ ले ह्मदा टोबीस टोमाम धरिक, टावि गुणा
उगजाक नकुमी तँ किमानक मसमे रैणरै कएन । रीया-एकड़क
हिमारै तनहि अखला धरि ले ह्मदा आएन ह्मदा-एकड़-हेक्ठेयव
तँ आरिसे गेल । किछ एणए किछ उणए क२ किमान हिमारै तँ
रैसागय जेनक ।

अखल धरिक जे छोट आ मध्यम किमान महाजनक कर्जमे डुरैल
हुन उगमे पूँजीगतिक प्रलेनिक दुखार खुजन । कम मुदिक रीत
तँ आएन ह्मदा छुअ मास गढाति मुद मुद रैनि जागत से एरै
ले कएन । अखल धरि मुदिक-मुदि प्रथा ले हुन से आएन ।
तनहि कतौ महाजन सप्पात था केकरो घवाड़ ी न२ जेल होग
आकि कतौ सप्पात था कर्जा दुमन होग ३ अलग रीत ।
आजुक दहेज ओते भावी ले हुन जते माए-रौपक सबाध ।
उना दहेजोक जर्जा मजगुत रैनि बहन हुन, किएक तँ शिहबक
आमदनी गाम दिस आरैए नगन हुन ।



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गायमे छोटै -सोमान्त-साधयम- पौघ नगा किमालाक संध्या रैसी
झुदा रौमिहावक संध्यासँ कम अछि । ओना सत गायक कपो-
लेखा एक वंग नहिये अछि । कोना गाय एहेन जगमे पाँच
प्रतिमेतसँ कम जलसंध्या नरे-पलछानरौ प्रतिमेत जमीन पकडल,
तँ कोना गाय एहेन जगमे दम पलबह-प्रतिमेतक अंतव ।
एहना किमान जिलका अगल जमीनक अता-पता ले रूमन तँ
एहना किमान जे अगल सरतुव मिनि खेती करैत । तग संग
एहना जे खेतक आर्ज पव पहुँचि झुति-ताँति तँ नगरैत
झुदा अगल हाथे किछ ले करैत । गाडी-खबहोवि, रँसरौडा ,
घवाड ी नगा रँसमानकै पाँच रीया जमीन । दु रीया रँथ-
रूमिनादिये हँसन रौकी तीन रीया जेतसीम । एकठा रँझ
बखल । सफाँटैती क२ खेती करैत । ओछ तीन रीया जेतसीम
जमीनमे तीन मेन । पलबह कष्टा टोबीमे मनगुजारीक संग
नगतो माने-मान दुयेत । झुदा छोटि यो केना देत, आथिब
खेत तँ खेत डी । लोदी भेल ओहीमे ल उगजा होग छै ।
रौकी सरा दु रीया सधयसँ तीठ धरि । दमो कष्टा तीठमे
मकआ, भदैं-गदैवक संग कवथी-तेरँखा होगत । गहुँमक
खेती तँ आरि तोन झुदा खेतीक जेन पाणि चाली । पछैरैक
साधन पोथयि, जगसँ कवीनसँ किछ अगल-रंगनक खेती
होगत । लोकक रीच ल पठरै-निखरैक जित्नासा बहे आ ल
स्वविधा । पलन-गुथन रिद्यानय-महारिद्यानय । रँवीसनाजो दू
रौठाकै गायक सकुन धरि पठ । खेतिअक काजमे नगौल ।
मिथिनाक किमान खेतक ओल प्रेमी रँनन बहना जेहन पतिव्रता
नारी जे रौन रिधर होगतो प्रतियुठाकै कमनक माना रँना
गवदमिये नष्टका हँमि बहनी अछि तहिना किमाला । जँ मे ले
बहन डुथि तँ भागि-पड । अथमिस्त्री रँमि किअए अगल खेत-
पथावक अर्थ ले रूमि प्रतियुठाक रसतु रूमि बहन डुथि । की



ठलिा खेतीकेँ उँतम आ लोकरीकेँ मर्यादक रिटाव देननि । जँ
एकरा फलरवा-करारत रँगा देखरै तँ मिथिलाक चिन्तनधावा धरि
ले पहुँचि पाएरै । जगठाम खेतकेँ अगल अरिकावक रसतु रूमि
अगला हाथक हथिहार रँगा अगल मरुतवताकेँ अक्षुण्य बथेक
रिटाव मेहो देननि । आ तँ अगल-अगल रिटाव होग छै जे
कियो हथिहारकेँ रंग-रौकद रूनेत तँ कियो हाथक याव माल
थेगै रूमि रिटावक राँठ रंगरौक रिटाव रूकत करैत अछि ।
तलिा अमरु शैल मेहो अछि ।

मर्याद किमान वा नयु किमानक जौरैक जिनगी रँजोष्टिग गेगव
मदृगे रँगि गेग छलहि जेकराये नालो रोगिणाग मौरैक शक्ति
छै आ करियो रोगिणागक । रौठि-रौदी एकेमग शैतारदीक
उँगज ले अदोसँ बहन अछि । भवहि कहि सकै छी जे धाव-
धुड़क रौगल-छाहल दुखले हूअ नगल अछि, भ२ सकै छै
कतौ-होगत हेतै, फदा प्रम धालेक पानिक ले अछि ।
तलिा रौदियो बहन अछि । धालेक कठली-थोष्टिनी कम ले
अछि । मिथिलाचनकेँ कोसी-कमला तेखाव क२ दूररँवसँ रोगिगव
धरि अछि । पानिक एक साधन भेल, दोसव रँवथा भेल ।
उल्ल-उल्ल रँवथा होगत बहन अछि जे गलबल दिस हथियाक
रँवथाक उरिगल क२ क२ पर्रज बथेत छलह । हथिया मात्र
एक ले जेकरा रँवथा मृतक अतिम लक्षत्र कहि ठारि देरै ।
उला पानिक कोला ठेकाण ले, माघोमे पाख थमि उँगजल
उँगजालेँ नशि करैत बहन अछि । अतिमक जन्म ताधरि ले
होगत जाधरि आदि ले होगत रँवथा मृतक आदि आदि छी ।



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

तँए “आदि आदि अत हस्त” अ भेन रँवथाक अष्ट-पष्ट ।
पूरिज सत सग्यष्ट रिटाव देल छथि जे रँवथाक कोला रिसरास
ले, कते हएत । 1971 अ.मे रँगना देशेक नड १०क नगभग
साला भवि रँवथा होगत बहन, ठुल-ठुल रँवथा होगत बहन
अछि जगमे सएक-सए घब खसत बहन अछि । घबमे दरँन-
रौन-रूह, धान-सग्यति नयष्ट होगत बहन अछि ह्दा तेयो
रँलोष्टिग पेंगव जकाँ मोथि किअ जौलैक रँष्ट धेल आरि
बहन अछि । दुनियाँमे ले सा धकक कमी आ ले साधना भूमिक,
ह्दा मिथिनाचन श्रेष्ठ किअ ? कतोक जाडक साधना तँ
कतोक तापक तप, जगमे तपि तपस्या करैत, तँ कतौ
पासिक सौतरी भूमि रँनि करैत । ह्दा मिथिनाचन साधना कि
हुनराड १ नगा बथल अछि । ओ ग हुनरावीक हुन सजुरै भनीह
साता ।

ले मिथिनाक भूमि रँदन, आ ले रँदन भूत भूतवाज रँदनि
बहन अछि खाली रौतनक बस । घबक समस्या कहाँ ? समस्या
तँ तथन उठैत जखन बहक घबसँ घब भाड । अस्त्रलैक रिटाव
जलैत । गान्धक निछा सात-हाथ लौ हाथक घबमे जौरन-
यागन क२ रेंद-पुवाँ सिबजननि । की दुनियाँ देखिनिहाव
मिथिनाचन जोडि देखि बहना अछि, जँ मे ले तँ समस्याकै
कोल कपे देखनि । यएह ले सबकावी योजना जहिया
कागजपव गुंथानय रँना साले-सान मक्यातक नमपव योजना
बुष्टेगत बहैत आ पाँन मानक रौद माष्टिगव खसा मनरौ हष्टलैक
थरि होगत । थेतसँ उगजन थर, रौंस सारैक घब रँना
समस्याक समाधान करैत जनाह । ओ सत अपन रिटावकै मरतँव
बधि मरतँव जौरन रगतीत करैत जनाह । गठ-निथेक ओते



समस्या ले, जेहन जिनगी बहत ततरोँ बुझिक ले जकबत ।
रोसी बेगामँ तँ लोक डुडपि-डुडपि अलको गाढक आम रोडए
गलेत अछि । भवहि अपन पुरिजक घवाड़ ीपव नट्टा या किअए
ले भुक्तए, हृदा दुनियाँकेँ माहृभूमि कहि मेरावत बहेत छी ।
उली कपक फुसघव रँगा जिनगीक गाँधी लेल दुनाह । अखुनका
जकाँ ले जे एक दिस नगणी नगा भाँषी रोडक राँष्ट्र लेल छी
आ दोसव दिस हज्जव-दस हज्जव ज़ोरैरँगा भूमि-हृदिक दूहाग
देत छी । एकेसम सदीमे कियो अपनकेँ अगिला पीठिक
नज्जविक पतनी रँगा बहन छी । जहिला रँवथा, तहिला ज़ाड
तहिला लोद-ताप, रौन ज़ीरनसँ न२ क२ बृह् तकक अश्वतर क२
अपन जिनगीकेँ असथिव रँगा नीक-नीक उमेव पल्लैत बहना
अछि ।

पन्न उल्लैत जे की एहेन रिटार मवि गेन आकि ज़ीरित
अछि ? ले मवन आ ले मरुस्थ भ२ ज़ीरित अछि । गाम-
समाजमे लैपल्लैत ज़ीरित जकब अछि हृदा..... । ज़ीरित
ए कपे अछि जे अखला खेतीकेँ उत्तम मानन जागत अछि ।
ज़िज जिनगीकेँ ख़्वाहि चनलैत अछि । तह्ये सामाजिक
सुतवपव तँ आलो थाहन अछि । ज़ै जिनगीमे दोसवक जकबत
ले हृद तँ ए सँ नीक ज़ीरन ककरा कहलै । आजुक हरा
भवहि ज़ते ज़ोव मावए हृदा हरा असथिव रसुतकेँ कल किड
रिगाडि पल्लैत अछि । अश्वत्थाव धावमे ले नमहव-नमहव
जमदवक भय बहे छै किअक तँ धुमेत धावमे जे गहीव-गहीव
मोक्षण खुला जाग छै तगमे ले धुमेक डव, ज़ै मे ले तँ
धुमेक डव कतए । तहिला ले धवतियोक रीट अछि । जहिला
पानिमे गोहि, नकाव आदि बहेत तहिला ले धवतियोपव रौघ



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मिह, नाग रौम करै। थारन जिनगीक अर्थ ३ जे जे तीन
रीया रा दु रीया जमीनकेँ जेँ सद्गति रैरस्था क२ खेती कएन
जाएँ तँ हागाबुकन मय्या रैनर रैड भावी ले। जिनगी तखन
भावी रैलैत अछि जखन गवथाहमे जिनगी पछि जागत
अछि। किमानक जिनगीकेँ पंगु रैना देन गेन अछि। जेँ मे
लेँ तँ सबकाबी रैरस्था कोन - किमान हितैयी- जिनगीक कोन
जकबतिकेँ पुवा ले क२ पारि सकेँ, दूदा नीको-नीको -दम
रीयामँ हुँपरैना किमान- परिवार ले अपना रैठाकेँ नीक शिक्षा
द२ पारि बहन अछि आ ले जलमावा रैमाविक गनाज क२ पारि
बहन अछि। जहिया स्रुति उँट मीता-वाम बाधा-प्रयण रा
सतनामक नाम लेन जागत तहिया ले आरि ठैठा-पापा लेत
उँटै छी। दूदा कि हम सत नठवा मकेँक सद्गति जिनगी ले
जौले छी जे भोगाव गाढ बहिनो अल्लक कतौ पता ले। प्रयि
तँ आमक रैगीटा रा थीवाक नती सद्गति अछि। जहिया गाढक
पननरक दूहमँ गिवहे-गिवहे पननर निकालि डारि रैलैत बहे,
थीवा नतीक दूहमँ नती रैनि हुँनागत-हडँत बहे तहिया ले
जिनगियो छी जे धवतीमँ जलमि हुँनागत-हडँत रिसबजन
कवत। खेत तँ ओहन सम्पति छी जे जिनगीकेँ आगु-रैठरैक
शक्ति बखै। कतरौ शक्तिशाली किअए ले आगि हूअए दूदा
जेँ ओगमे नर जलनशील रसतुक समागम ले हेते, तँ कते
कान ओ ठिक सकेँ। जाधवि धाव ठगमिहार रा सरोरबमे सलान
केमिहारकेँ पामिक थाह ले नगि जाएत ताधवि धाव ठगर रा
सलान कवर तँ अथाहे अछि। जाधवि अथाह बहत ताधवि
अर्मका बहरै कवत। जाधवि आशिका बहत ताधवि रिचाव
प्रभावित हेरै कवत। दूदा एतेकक रौरजुद हम किअए..... ?
की हम ले जले छी जे जाधवि प्रयिकेँ सर्गिण रिकामक प्रफिया



ले अगलोन जाएत तापरि नटारी-मोहन कते कान मोहनगव
हएत । हव आदमी हव परिवारकेँ ठाढ़ भऽ चलैक प्रश्न अछि,
ले कि एक दोसबाकेँ छिटकी मरि खसलैक ।

पाँछठा किसानक संग रबीमनान सेहो रौबिग-दमाकनक रिटावकेँ
आगु रैठ लोक । प्रथण्ड कार्यालयसँ हार्म नऽ रैकमे आरक्षण
केनक । संगीक जकबति तँ पड़रै केले कि एक तँ जिनगीमे
पहिन थपे प्रथण्ड कार्यालय आ रैक पहुँचैक अरुमर भेटैले ।
नर योजनाक काज रैकमे अएन । उना गायक आ गायक
किसानक हिसारै रैकक मर्यादा दूधक डार्ढा ये डन, दूदा डन
तँ । रबीमनानक आरक्षण सृष्टि कलैत जमीनक रौण्ड रैना
मागनव एबीगेशनकेँ काज कलैक भाव देनक । रैक-कर्मक
सुद शुक भेल ।

मागनव एबीगेशनक अष्ट-पेष्ट छैले । एकाएक काजमे रैठ भूरी
भेल । ल काज कलैक उज्जव अधिक आ ल कलैरैना । तँ
ठीकेदारीक चलन । तद्विषयमे एक अग्रगण्यक रीट एकठा
कार्यालय । जेहिहाव हज्जव हाथ देनिहाव एक । दूदा तैयो
रबीमनानक आदेशे पत्रकेँ हागनमे नगा देन गेल । एक-
तिहास सर्मिडीक जेल सर्मिडी कार्यालयक जकबत । सर्मिडी
कार्यालय जिनैक अन्तर्गत । दोड़-रैवना कलैत रबीमनानकेँ
थरक संग-संग मान रीत गेल । रैवनातमे एक तँ धमना धमक
डव दोसव लोक थोती कहिया कवत । रौबिगक काज छोड़ि



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रबीसमान थोतीमे गणि गेन । मान रीतन दोसब मान शुक्र
भेन । तथवि रौकक कर्जक छहृछि रीयाजक दबस एते मोछा
गेन जे सरसिडी उधिया गेन ।

दोसब मान शुक्रहेसँ रबीसमान काजक -रौबिग-दमाकनक- पाछु
पछा गेन । आग-काहि करैत मागबो-गवीशेनिक काज आ
सरसिडीयो आहिसक काज छैकने बहलै । छठ-त रैमाथ -
दोसब मान- रबीसमान बघुषन्दनकेँ कहनक-

“रौआ, छोछा दहक । रौबिग नग भेन तँ कबजो तँ नहिये
भेन । रूमरै जे एते दिन घुमरै-हिवरै केलौ ।”

रौकक थुफिया बघुषन्दनकेँ रूमन । रबीसमानक रौत सुनि अराक
भेन । मन कनषि उठलै रौग ले, मुदि-मुड नदा गेलै,
कोठ-कचहरीक दूदा रैनि गेलै । दोथ केकवा नगते । कोन
दूह नर कऽ समाजमे बहरै । गनारिसँ मन रिसागन भेन
गेलै । माहम रैठेनि बघुषन्दन रौजन-

“काका, जँए एते दिन तँए दु मास आबो । रैमाथ-जेठ रौत
अछि । काहि छवु या तँ अगन काज रागन लेरै रा हाथ
पकछि काज कबधरै । तगने जे तेते मे देखन जेते ।”



बघुणन्दक रात सुनि रैबिसनान ठमकि गेन । रौजन-

“रौआ, हम तौ तौलेगव डी, आगिमे जागले कहह आकि
पानिमे तौवामँ रौहव थोड़े रहै ।”

रैबिसनानक रिटाव सुनि बघुणन्दक मलमे उतसाह जगन ।
दोसब दिन दूनु गोठे -रैबिसनान, बघुणन्द- मागव
एगबिगेशिक कार्यालयमँ रौबिग गाड़िक सामान लेल आएन ।
गाड़िक दिन तकरो गेन तौ आगुमे भदरौ पड़ित बहए ।
जोड़-घण्टा करैत आठ दिन पड़ाति रौव कवरै शुक भेल ।
सिर्फ ठीकेदाले ठी आएन रौकी सब काज गामेक मजदूर
कबत । उना रौबिगक काजमे गामक मजदूर अनाड़ी ये डन
रुदा अनाड़ी यो तौ कते बगक होग छै । जते काज तते
जीरणी तते अनाड़ी । जखन काजक बुरि भे गेन तखन
जीरणी, जाधवि ले भेल ताधवि अनाड़ी । ततरो ले एक
काजक जीरणी दोसब काजक अनाड़ी सेहो होगत । तौए
जीरणी-अनाड़ीक भेद कवरै कठिन अछि । उना काजक
भीतरो जीरणी-अनाड़ी होगत । जहिना एकगव सए थड़ ।
अछि । कहने तौ एक पहिन सीमा भेल आ सए दोसब सीमा
रुदा दूनुक रीट अतब ओते अछि जते एक प्रतिशत आ सए
प्रतिशत । तहिना काजक अछि । एके काजक भीतब सगयो
बगक काजक अशि होएत । किछ अशिक रादे जीरणी मानन
जाए नलोत रुदा जीरणी -बुरिगव- होगतो पूर्ण बुरिगव ले
मानन जाएत । पूर्ण बुरिगव तखन मानन जाएत जखन काज



'বিদেহ' ১০৮ স অংক ১৭ জুন ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৪ অংক ১০৮)

মানুষবিদ

সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

সমগ্র সীমাক ভীতব হোগত। ওলা কাজোক সীমাক শিখাশিকা
র্যাস গছতিক ঋষুকুন হোগত। জঁ মে লৈ হোগত তঁ কিছু
এহলা কাজ কেনিহাব হোগত জে সময়ো-সীমাসঁ পল্লিহি ক২
লৈত আ কিছু এহলা হোগত জে কাজ তঁ ক২ লৈত হুদা সমগ্র
সীমা ঠশি ক২ ক২বৈত। তঁএ কি ওকবা ঋষাড়া কহন
জেতৈক।

গহাড়া মাঠি বহল সরা সাএ ফীঠে রৌব আঠে দিম্যে ভ২
গেন। জেয়বো রঁঠা যাঁ। ঢালীস ফীঠে জেয়ব। ওলা জঁ শীক
জেয়ব হোগত তঁ পশবহো ফীঠেমে পাঁচ হার্ম পারবক গঁজন পূর্ণ
পানি দৈত, হুদা জেয়বোক তঁ ঠেকাশ লৈ। শীক-ঋধনা সঁগে
হোগত। কোলা রাঁঝ -সৌতরী- এহেন হোগত জগমে পানিক
মাত্রা পশবহ প্রতিশেতক আস-পাস হোগত আ কোলা এহেন
হোগত জগমে ঋস্মী প্রতিশেত ধরি পানি বহৈত। হুদা
রঁবীসমানক রৌবক জেয়বক স্মিতি কিছু ভিন্ন ভন। মিচঢাক
তীস ফীঠে জেয়বমে ঋস্মী প্রতিশেত পানি ভন আ ঙুপবকামে
কম। তঁএ ঠীকেদাব রাঁজন-

“রঁবীসমানরৌব, ঋহাঁক তকদীব শীক ঋছি। কহিয়ো রৌবগ
ভথল লৈ হুত। কিএক তঁ তেহেন মিচনা রাঁঝ ঋছি জে সত
দিস পানি দশদশাগতে বহত। তঁএ শীক হুত জে জলিা ভীত
ঘবমে ঠেমা-ঠেমা বদা পড়াএ তলিা কিছু দিস জে রৌব ঠেমা
জাএত তঁ ধঁসনা ধসিক সঁভারনা সমাগত ভ২ জাএত। ওলা
ফেসিং-পাগপসঁ রৌব কএন ঋছি, পাগপ মোড ক২বৈমে কোলা
দিক্ত হেরে ল কবত, হুদা ঋহী হিতমে কহে জী।”



ठीकेदावक झूहसँ तकदीव सुनि रबीसमानक मस उरिया गेल।
ठीकेदावक अगिला रात नीक नहाँति सुनरौ ल केनक। अतिम
हितक टट सुनि रबीसमान राजन-

“ठीकेदाव सहएर, अहाँ कि कियो रीवाष पोडै छी जे अधना
कबर। अहाँ तँ मनु: गण्डू भगवान छी, जेमहव ताकि दैरैग
तेमहव तार्छि देखै। जेना-जेना अहाँ कहै तेना-तेना
कलैले तैयाव छी।”

ठीकेदाव- “हमरो गाम जेना रहुत दिन भऽ गेल। अथन
आँखिमक डुष्टीक काजो ल अछि। किएक तँ रौव कलैक सीमा
जते अछि तग पुर्वेमे एकरोव गामसँ घुमि आएर। अछूक काज
नीक हएत आ अगला काज भऽ जाएत।” कहि ठीकेदाव गाम
टलि गेल।

पनवह दिन रीत गेल। जेठ चनए नगन। लोहनि नम्रवक
आगमन भऽ गेल। सँयोगो नीक बहन जे अगते बिरहिया
हल सेहो भऽ गेल। जहिला भक्त भगवानक मिन लोगत
तहिला रबीसमानक मसमे लेल। अगला हाथ पाँचि आरि गेल,
हुँगवसँ भगवानो देताह। पाँचि धनिक रँमि जाएर। जहिला
ष्टिकनी अगल पाँचि होनि केले रिना हरामे उमिआगत उतए
गहुँछए नगन जतए ओकव पाँचि लेकारु भऽ छुँष्टि जागत।



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मार्गिष्ठे चक्षुषी रा गाढक घोड़नकेँ पाँथि होगत मेलिक दिन
नगिछा जागत, झुदा रूमि ले पलैत तल्ला रबीमनाओकेँ ह्वा
नगन ।

बोहनीया हात जहिला धवतीक शक्तिमे भर उर्जा दैत तल्ला
रबीमनाओक मनमे आएन । पनियो आ दुनु रैठेकेँ शोव
पाड़नक । तेन रिहीन रैछाक झूठ नानी धरैत श्रवणलरा जकाँ
हविश्वरूपी तान होगत जागत देखनक । तल्ला पनियोक ओ
दिन मन पड़लै जग दिन हाथ पकड़ि जिनगीक भाव उठौल
बहए । झुदा, किश्रुए ले लोक भाव उठाउत ? एकठा भर शेरद
-word- ताधरि संग पलैत जा धरि ओकर मथन होगत । ले
तँ कश्रुए बहत । रैछीछा दुनियाँ छै कतौ रौक जाएत ।
पलौक भर कप देखि रैछाकेँ समुद्रोधित करैत रबीमना
राज्य-

“रौआ, तौवा सभकेँ जहिला लोवा-काँथमे खेजलियह तल्ला
हँसी-धुँसी जलैक ओगिषाण मेहो क२ देलियह ।”

पतिक रात सुनि पलौ सुशीलानक मन पहाड़क सबलसँ सड़ैत
पनिक चमकेत बेत जकाँ चमकए नगननि । रैजनीह-

“सोमे दीक्षा देल ले हाएत । एक-एक दिन, एक-एक क्षणक
काजक रात रूमि दिओ तथन हएत ?”



अथन धरि रबीसमान कोठ-कटहरी करैत रहुत किछु सीथ लल
ढन । गाम-गामक खेती-पथारी, गाम-गामक मान-जान पोसरै,
गाम-गाम हन-हनहरी, तीमन-तबकारीक खेती, माछ पोसरै
गत्यादि सुनि दुकन ढन । जहिया मिछन सकुनक रैछा हाग
सकुनमे प्रेमने नर-नर पोथी देखि नमाए नलैत तहिया
रबीसमानक दुनु रैछाक जितना जगन । जितना देखि
रबीसमान राजन-

“रौआ, माछमे धन छिछि आएन छै, रीझिहारि चली ।”

अथन धरि दुनु भाँग आगक छिछिनासँ नः कः गोकन आग धरि
रीझि दुकन ढन तँ रीझिक रात सुनि जेठका रैछा मरारि
पुछनक-

“केना रिछि रै रौ ?”

रबीसमान रैछाक प्रेम सुनि खुशिया लोन । आजुक रैछा जकाँ ली
जे लोकबियो करैत आ लोकरो बथैत । जथन अगल काज
अछि तथन अगलसँ जे समय रैछत सहए ल दोसबलै देर ।
राजन-

“रौआ, अथन तँ सभ भारी काज करै जेकर ली भेलहै ।
ओना कनी-कनी कः हेल्लिन मावरी सीथ हनेरह तँ दमकनो
छनाएन भग्ये जेतह । ह्रदा जँ दम कष्टमे मानो भवि
तबकारीक खेती करैरह तँ ओते कोन पवदेशिया कमाएत । हँ



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

समय रैदमले लोक वंग-रिवंगक वृत्तियो रैदमि लेनकहै । जगस
किछ अनाप-सनाप सेहो भऽ बहन छै । झुदा बुझिक संग गुँजी
आ गुँजीक संग बुझि लै छनत तँ अलाले दरै-उनाड होगत
बहत । ”

जेठक पुर्णिया दिन रौरिग जोड भेल । जोड होगसँ तीस दिन
पहिले अगस ठुंया मशीन आरि गेल बहे । रौरि जोड कऽ
ठीकेदार-मजदुर मिलि माछक भोज खा, मोनह घँषा पाणि चना
काज सम्पन्न लेनक ।

अखाठ छटा ते माससुन उतर्छि गेल । पल्लिके दिन एहेन
रैवखा भेल जे खेत-पखावमे पाणि नलि गेल । नीचना खेती
बुँडक नक्षत्र धऽ लेनक । तेसले दिन रौठा चन आएन ।
पोखरि-माखरि, चब-टाँचब भवि गेल । पाणिपव पाणि आ
रौठा पव रौठा कते रैव आरि गेल । दहाव भऽ गेल ।
एहेन दहाव भेल जे नराण पारमियो लोक रिसवि गेल । झुदा
कातिक अरैत-अरैत बरैरी-बाग डीछैर शुक भेल । गहुमक
खेती लै भऽ सकन । अलमे गहुमक खेती सभसँ महंग खेती
होगत । झुदा धान लै लेल किसानक स्थिति रिगर्छि गेल ।
एक तँ आँलिया रैबीसनामक स्थिति दु मानक दोड़-रैवनामे
रिगर्छि गेल तगपव दली आलो रिगर्छि देनक । सानो भवि
रौरिग-दमकन रैसन बहि गेल ।



मानवीय

तबकावी खेतीक ठरुन दमो रैनि गेन जे रैजाव ले । कट्टा
सोदा, नयष्ट होएत ।

देथेते-देथेते सतासीक रौठि आ अष्टासीक भूमकम आरि
गेन । जब-जब रैसीसनन फड-फड करैत फड़फड़ । गेन ।
तली रीट रौकक पक्षम जमीनक निवासीक लार्थिने भेटैले ।

तिवलावक तकरा

जहना नमहब दोकानमे प्रवेशे करिते जीरलापयोगी रसुत
देखि मन उरिआव मलैत जे गेलो कीन जेर, आनो कीन
जेर । झुदा पागयो आ रिचालो तँ ओते बलै जतए पहिलसँ
रिचाव भेल अरैए । गच्छा बहिलो किशुननन डेवामे डागनिंग
ठेरुन ले नगा ओमारेणव अगला दुनु पवानी आ अतिथियो-
अभ्यागतके खुश्रैत । कम दवसाहा साधका जिनगी । शिहबमे
बहिलो गामक चानि-ठानि रैसी, कावणो म्पयष्ट जे शिहवी रैलैले
शिहवी जिनगी रैलैए पड़ैत । जे ओहना ले पागक हाथे
रैलैत । पागक काज झुहसँ पोड़ होग छै । तबहि झुहक
आगु पागक मोन जेहेन होग । खामता कटोड़ि झुहमे
नाड़ैत-चाड़ैत गब नगरैत देरकान्त रैजनाह-



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“आह, रूमनह किल किस्मनान किछु होई, दुनियाँ मात रैव
किअ ल उल्लै-पुल्लै झुदा अगला एठाँ गायक जे
तिनकाबेक तकशा अछि, ओकर तुलना कतए हएत ? ”

देरकान्त भागक रात सुनि किस्मनानक मसमे कनियो तिनकोव
ले उठलै । किअक तँ मसमे यएह नाच होगत बहे जे डेबामे
छोआँ एनाहँ तँए ग ले अजस हुअए जे खेलागयोमे ठकि
लेनक । नीक कि दरै भवि प्छै कहूना थायि । जँ मे ले
हेतनि तँ दमठाँम रँजताह जे खागयो ले भवि प्छै ले
देनक । तनी रीच मसमे उठलै जे पुछि-पुछि खुआएँ नीक ।
जे कम-सँ-कम पहिनरैव तँ कहता जे हँ गच्छागुर्पी थेलौ
आरँ कल अराम कलैक ओरिवाण करव आ तौछुँ सब था-पीअह,
काज-उदम देखहक । दैन्य दृष्टिये देखि किस्मनान राजन-

“भाय सहएँ, थेरौ जोकव रँजन छै की ले । कहाँ थाग छिअ
चरिछी आरो लल आरी ? ”

पहिलक ठकाव ठेकडँत देरकान्त उतव देनक-

“अँह लो, तँ हमा बाकस रूमौ छह जे आगुमे एत रसत
तेविया देनह हँ आ तगएव सँ पवसन नगले कहै छह ? ”

जलिआ डारिमे लागल मचकीक पहिन आस होगत तलिआ,
किस्मनानक मसमे आस जगिते राजन-



“बाय महएरै, कमिये-कमिये समान सत पवसि ले घबरानीकेँ
कहल छनि। जेना-जेना भोजन करैत जेतार तैना-तैना
पवसि-पवसि दैत जेरैनि।”

तहना जकाँ तहिआन भोजन पारि देरकात् भागक मन
गदगदाएन। किस्मनाक रात अतो ल भेल छलै आकि
रिद्धेमे देरकात् रोजि उठार-

“अए हो किस्मना, तँ अणठिया रूने छह। अण घब छी जे
खगत आकि रैसी खागक मन हएत ओ मणि कइ जेरै। तगत
तोवा मनमे किअए होग छह जे तखने उठि जाएरै। हम
ओल लोक ले ल छी जे खागउ जेरै आ दुसियो देरै।”

तखन किस्मनाकेँ पत्नी- मिहेयरी हाथक गीबामँ मोव पाछा
कहनथि-

“तिनकोवक तकथा दइ तैया की कहनथि ?”

“किअए ?” किस्मना प्रछनक।

“तिनकोवक माग आ छैनी तँ खाग छी, रैनरैयोक बुबि अछि
रूदा तकथा ले खल छी।”



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

उना मिहेश्वरी देरकाणतसँ अठ भ२ कहैत झुदा रौलीमे एहेन
ठाम देल जे देरकाणतो रूमथि। साग आ चठनी सुनिते
मसमे उठननि जे साग तँ कठ दिस थेल छी। तहुमे जखन
पेशीरक गडरुँडी बहए तँ पथामे गएह चले। झुदा चठनी
तँ ले थेल छी। नाज-सकोट तँ ओकवा ल होग छै जेकवा
रूमि गड छै जे भारी छी। झुदा लम कोण भारी छी जँ
भारी बहिनो तँ रूमले बहैत। ले रूमन अछि तँ रूमि जे
कोण अथना छएत। जँ कहियो थागयैक मस छएत, रूमले
ल काज देत। अछाव झुदमे लेत झुदक कब मयेष्ट क२
योष्टैत रज्जनाह-

“किसुन, अ की कोला गाम-घब छी जे कमियाँ एत सकोट करै
छथि। एते आरुह कल एकठाँ रातो रूमैक अछि।”

देरकाणतक रात सुनि किसुननाम तँ मसरि क२ नगमे आरि
गेल। झुदा मिहेश्वरी -गली- किछ आगु रँठा, किछ गाडु दिस
आरि क२ ठाठ भ२ गेलीह। जहिला कोला रूदोसँ कोला गप
रूमए लेबमे वंग-वंगक प्रम, पुवक प्रम पुछि मंतुष्ट होगत
अछि। तहिला देरकाणतोक मसमे होगछि जे कोला रात
रूमैले सोमा-सोमी नीक होग छै नजकेष्टव तँ रँहूत रात
छोडि ये दैत अछि आ रँहूत रिसवियो जागत अछि। दोखान
तँ दुनु भेल। अगनाकेँ निछा उठनि मिहेश्वरीकेँ डुपव चठलेत
देरकाणत कहनथि-

“कमियाँ आग ल किसुननाम दु-पाग कमाएन हँ तँ हुनपोष्टे
पहिल देथे छिँ, झुदा जखन गाममे छन तखन तँ एह
एकठाँ चबिथी गामछा छै। डाँडमे नयेष्टल बहै छन। गप-



संग करेमे कोला-नाज-पाक ले हेरौक चाली । हम जे रूने
छिं मे अछि गुड़ आ जे ले रूने छिं मे हमछिं किअए ल
गुड़ । तखने नाज-संकोटक कोल काज छै । ”

किसुनवान- “ताय सहारै, कहने तँ गाममे ले छी दूदा गामे
जकाँ एते छी । ल ओते कमाग होअ जे हेछैन घुमरै,
जरेनवी घुमरै । रैस देवासँ कावखाना आ कावखानाँ देवा
अरै-जाग छी । अठारैले -छुप्री दिस- कनी-मनी घुमि नग छी
सेहो पएले । ”

पतिक रात सुनि निहेश्वरी पाछुसँ समरि कनी आगु रैछी
तिबडिया क२ ठाठ त२ रैजनीह-

“कि कहनथि ? ”

देरकात्- “कहौ सएह जे तिनकोवक छैनी केना रैनरै
छिं ? ”

देरकात्क प्रश्न सुनि निहेश्वरी रैजनीह-

“तेया, हिसका कि कोला ले रूमन हेतनि । ”

देरकात्- “कनियाँ, कोला कि हमरा जँटेक अछि, धवसागती
कह छी, ले रूमन अछि । ”

तग रीट साजस्य करैत किसुनवान रौजन-



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“भाय सहैरै, ओना हम तकउ खेल छी, माछा खेल छी आ
छैमियो खेल छी। धीया-पुताये पाकन तिनकोवक फड सेहो
खेल छी। जारै माए जौरैत बहए तारै आन दिन तँ नहिये
झुदा जूवशीतन पारैमिये तिनकोवक तकआ अरसमे तछए।
रैड खर्चक छैज छी। ओते खर्च क२ थाएरै अमान थोछे
छै।”

गतिक सह पगिरे मिहेम्वरी रैजगीह-

“तेिया, हमर माए-रौग रैड गवीरै छनाह। भवि शेट अग्या ले
भैरैत छननि तखन जे तकआ-रैगनकआक मेहनते कबितथि
से पाव नगितनि।”

मिहेम्वरीक रात स्रनि झुड १ डोनरैत देरकान्त रैजगीह-

“है, से तँ ठीके। हमरुँ की कोला रैसी खेल छी। जहिया
कहियो घबदेथीमे कतौ जाग छी तखन थाग छी। सेहो आरै
उठारै भेल जागए। आरै तँ सहजहि लोक तेहेन टिकनिया
भ२ जेन जे अनवरुँक पाँछी पूरा नगए। नरका तूव तँ
थागक कोन गग जे रूमरौ ल करैत हेतग। पात-पुत
कहि थोछे थाएत। अछा छोडूँ ए सभकेँ, असन रात तँ
छैजे अछि।”

रिटावक सामजस्य पारि मिहेम्वरीक उत्साह जगननि, रैजगीह-



“डैया, माग तँ रूमले हेतनि जहिया कदीया पात, अछि कँचन
पातकेँ कतारँ काँठि भजव जाग डै तहिया तिनकोबो पातक
होग डै ।”

झुँहकाबी भवैत सिँहेश्वरीक रातकेँ मागि देरकान्त रँजनाह-

“हँ-हँ, तिनकोबक माग तँ केता दिस खोल छी । झुँदा छैनी
ले ।”

जहिया नर काज केले, नर जगहणव पहुँचले रा नर लोकसँ
दोस्तरी भेल मसमे खुशी होगत तहिया दस रँथ पल्लवका
खेलनक चढा करैमे सिँहेश्वरीकेँ सेहो मसमे खुशी उपकवनि ।
झुँसकवागत रँजनीह-

“डैया, अछि कँचन पातकेँ कदीया पात रा आन पातक तबमे
द२ पतौड । रँना आगिमे पकौल जाग डै, तहिया तिनकोबो
पातकेँ पकौल जाग डै । जखन उपवका पात मडकि जाग
डै तखन रूमि जागउ जे तिनकोबक पात सीम गेल हएत ।
उकवा चुल्हिसँ निकालि दाहे पागिक रतनमे द२ दिउ ले तँ
कनीकान सवागले छोडि दिउ । जखन सवा जाएत तखन
उकवा पतौड सँ निकालि सिँहेश्वरीक थरुटि क२ पीसि लिअ ।
रँहुत ममननाक काजो ले पडि डै । चसगवसँ बुन गिवाग द२
दिउ । रँस भ२ गेल । उना लोक बातोमे थागए झुँदा
रोटीक तँ रूमिउ जे जहिया भातक दानि तहिया रोटीक
तिनकोबक छैनी छी ।”



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X, VIDEHA

मिहेम्वीक रात सुनि तेसब ठकाव ठेकलेत देरकान्त लेष्टी
उठा पाणि पीरि रँजनाह-

“किसुनमान, रँहुत खेनिखह समानक आगु खेनिहाव पोछे
ठठत । रँड ओवियास केल छेनह । ”

जल्मि नीक क्रियाथी रौडि रा हनिर्मिष्टीमे ठेग केलोपव
मुडमुड ागत जे दुगयो प्रतिमेत नम्रैव आलो बहेत तँ अस्मी
प्रतिमेत पुवि जगतए । तस्मिा किसुनमान कहनकनि-

“भाय महेरै, कनिओ आव थागओ । ”

आग्रह सुनि देरकान्त रँजनाह-

“हम कि कोलो बाक्स डी जे कतरौ थाएरै तँ पोछे ल
भवत । मयथक जे भोजन छिं मे तँ खेरै केलौ । तो
ले अदाज केनहक जे लोक कते थागए । पोछेक कोल रात
जे मलो भवि गेल । अछुआ एकठी रात कह जे अगल लोखा
के सत एठास, रँम्रैगमे बहे छथि ? ”

देकाणतक प्रम सुनि किसुनमान मल-मल मोछए नगन रँम्रैग
मनक मेहबमे के कतए बहे ३ भाँज तँ मात्र दुगये गोठेके
बहे छै । पहिने जे काज ले करै, दोसब जे कोलो
कम्पनीक एजेसी करै । रौकीके कोल जकबत छै । अठरावे
छुष्टी होगए तगमे कि सत कवरै । कपड ा-नता थीटर आकि
सगताह भविक अवथड् आ नील प्रवाएरै, आकि दुनु पवानी मिला
कोलो नर जगह देखि जेरै, आकि डैठ-घष्ट कवरै । तथन तँ



ओल्हा कियो-ल-कियो दर्शनीय जगहगव भैँछै-घाँछै तगये
जाग छथि। गाम-घबक हात्ता-छान बुँसि नग छी आ सग मिति
छाहो-पास क२ नग छी। अपन मजबूतीकेँ छिगरेत किस्मनान
राजन-

“ताय महारै, अछूँक जेठजस तँ परिवारले न२ क२ बहे छथि,
हूँकामँ सब भाँज नगि जाएत। तखन हम एठ जकब करै
जे जग कबखानामे काज करै छी तगमे तीन गोठे छी।
कहेने तँ उठे काज अछि हूँदा सब दिन काजो नलेए आ
एकेठाम सात दिनक पगारो भैँछै। तगमे बरि दिनक सेहो
भैँछै।”

देरकासत- “अम्का तँ छुँछी निखए पड़न हेतह ?”

“किखए छुँछी निखए पड़त। कोला कि ओकब दबमाहारना लाकबी
करै छिँ। अम्का रैदना बरि दिन काज क२ देरै। कोला
की सकून-आँखिमे छी जे मोनहरी रँग होए। कबखाना छिँ
ल। सब दिन छनिते बहे छै।”

“परिवार किखए गामसँ न२ अननक एँठामसँ कमे खटिमे गामक
परिवार छले ?”

“ताय महारै, अछूँ अनठा क२ रैजे छी। गाम-घबक लोकक
किबदानी ले देखे छी जे ताड़ ी-दाक पीर-पीर कि सब
किबदानी करै। अपन गज्जत अपन मोसामे लीको होए
छै आ लोक रैटागयो सकै। तखन देखियौ ज मसमे तँ



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अडिये जे जखल गाममे बहे जोकब, कोला काज ठाठ करै
जोकब पुज्जी भऽ जखत चलि जाएँ । ”

“कते महीना रैटे छुह ? ”

“एते दिन तँ बुझु जे कहूँ कऽ गजब केहोँ दूदा आरँ छुह
माससँ गोठे महीना हज्जब कपेया आ गोठे पलबहो सौ रैटे
जागए । ”

“रौकमे जमा करैत जाग छुह किल ? ”

“रौक जाएँ से छुप्री होगए । एजेठ-एजेठ तँ देवी अरौए
दूदा ओकरा सरहक भाँजमे ले पड़ए-चलि छी । ”

“कयो पुज्जीसँ तँ गाममे काज चले छै । रिय पुजियोक चले
छै । ”

“हँ से तँ चले छै । जेकरा अगल कारोबार ले छै ओ
दोसबाक काज करैए । दूदा देखते छिँ जे कते रौनि दग
छै । तहमे आरँ कहूँ-कहूँ दुनु पबानीमे आठ हज्जब महीना
ठूठरौ छी, एठाग महगी अछि तँ कय रैटेए । दूदा गाममे तँ
कमसँ कम ओते कमाग हूँ जे जहूँ गजब कष्टे छी तहूँ
पुवा सकी । ”

“अगल कि अण्दाज छुह जे कते दिनमे पुवा जेरैह ? ”



“जै भगवान निकेना बखननि तँ डेठ-दु मान मे जकब पुरि
जाएत । अहाँ भाय-महाएँ सँरहक दोसरे दिस-दुनियाँ
डुहनि । ”

भाय महाएँक नाँउ सुनिते जहिना भवन प्छेक गवमी होग ते
तहिना देरकाशतकेँ हुकि देनकनि । ह्मदा अगनाकेँ सम्हारैत
रँजनाह-

“सुथनी भाय-महाएँ । मन भेल जे कनी रँमे देखी,
दबउंगामे छिकछ कछेलौं छलि एलौं । तोहर नाँउ-ठेकास नः
जेल बहिरह । तँए तोरा डेवागब छलि एलौं । भागये छिआह
तँ कि ओगसँ सतबह-रँव नीक तँ डुह । कम-सँ-कम समाज
रूमि तँ सुआगत केनह । ”

अगन प्रशिमा । सुनि किस्मनाम सिद्ध भः गेल । रँजना-

“भाय महाएँ, ओते तँ कमागये ल अछि जे अगन-हगनसँ
खटि कवरि ह्मदा समाजक जै कियो डेवागब उताह तँ अगना
जकाँ ह्मह ले घुमा जेर । ”

किस्मनामक सह पँरैत देरकाशत रँजनाह-

“किस्मनाम परिवारे सत लोकनि गेल तँ समाज केहेन हएत ।
ह्मदा तँए मोनहो आना परिवार लोकनिये गेल मेहो रँत
नगए । जारै धवतीगब धवस ले छै तारै छलै केना-ए । ”



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

किस्रनान- “भाय सहायक भैठे कबरनि की ले ? ”

“मल तँ एको पाग ले अछि दूदा जखन एठास आरि गेलो
तखन नहियो भैठे कबर उँटित नहियो रहत । तौवा तँ
हूकव मोरौगल नमूँव रूमन हेतह किल ? ”

“हँ से तँ निखन अछि । दूदा मोरौगल अगला कहाँ अछि ? ”

“रूथपव सँ तौही कहि दहूँ जे देरकान्त गामसँ एना अछि ।
जँ गप कए छहता तँ अगल कहूँ ले तँ जानकारी तँ
भैठये जेतनि । ”

भायपव रिंगडन देखि सिहेग्वी देरकान्तकेँ पृढनकनि-

“भैया, एना थिसिआन किअ छथि ? ”

देरकान्त- “कनियाँ, की कहँ कहने तँ पाग-कोड़ रीना कहँ
छथि । तहिना घबक घबोरानी छथि । अगला तँ कनी-मनी
कन-खनदासक नाजो होग छथि दूदा घबोरानी जे छथि से
तँ भगवान देन छथि । ”

सिहेग्वी- “जखन अगल नीक छथि तखन हूँका घबोरानीसँ कोन
मतनरँ छथि ? ”

देरकान्त- “मतनरँ पृढे छी । की कहँ, रजितो नाज होग
जे एके परिवारक छी तखन एना किअ रजै छी । दूदा
नहियो राजरँ सेहो तँ गनतिये रहत । अगल जे भाय



सहाएँ छथि मे सबदे-ल-मोहिये, रनिगोरना छथि । जहाँ
किछ राज ए नगताह आ पलीक आँखिप नजनि पड़ति आकि
रौनिये रँदनि जाग छन्हि । ”

~

हॉमी

काहि राँवह रँजे रँनदेरकेँ हॉमी रहत, वेडियो-अथराँव काण-
काण जूना देनक अछि । जहिना रँनदेर रूँनेत तहिना जहनक
उँतबाधिकारियो रूँनेत अछि । जहिना रँनदेरक परिवार रूँनेत
अछि तहिना सब-समाज, देस-महिमा सेहो रूँनेत अछि ।
सरँहक मन राँवह रँजेपव अँकन । रएह राँवह रँजे दिस रा
बाति अपन प्रथम कगमे दिना दिस येदलक बस्ता धड़त
अछि ।

जहनक एक नँव सैन घब । जे घब उँग अपवाधीकेँ उँग रीट
भेँठेत अछि जखन न्यायानसँ हॉमीक तिथि निधायित होगत
अछि । सैनक रूँनारँष्टियो, आन सेनो आ रार्जेसँ तिन रँन
अछि । उँना सैनक रूँनारँष्टि रिटि अछि दूदा आनसँ अनग तँ
अछिये । कोठबीघसा घब, कोठबियेक अँष्ट-सेष्ट सेहो अछि ।



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

एक कोठवी ओल्ल होगत जे नमरव घबसे रैलैत आ एक कोठवी ओल्ल होगत जे घरे कहलैत अछि । एक नरैव सेना तल्लि रैलन अछि । टिमलीक एक नमरव छै, कयन-नक्खीमबागक रीचक पथवाएन रौनु, दु-एक सिटीक जोड़सँ देरौन रैलन अछि । सात एम्कुरागव हूँक घब, जे घबक कोठवीओसँ होल अछि । पौल दु हूँक आगुक दवरैज्जा, थिड़की दवरैज्जा लै, जे तीतव-रौहव अरैत-जागत अछि । लोहक रैलन केरौड़ नगन अछि । शैय कोला देरानमे ल थिड़की-थोमिया अछि आ ल पुरै-पछिम दिशा देखलैक कोला दोसव माधन अछि । एक ठँ ओल्ला जगठाम मत किछ -दिशा-रोधक-बैत अछि तछठाम दिशास नगि जाग छै । आ पुरैकै पछिम, पछिमकै पुरै कहए नछै छै । जिनगीक पुर्ण नीना रैनदेरकै ओग कोठवीसमा घबसे पलवह दिसँ होगत अछि । ओना तगसँ पुरौ -१३. दिसँ पहिल- सेहो सात नमरव सेनमे तीन मानसँ बैत आरि बहन अछि ।

ओना एक नरैव सेनमे एनागव एतेक सुनिवा जकब भैत गेल छलै जे पहिलसँ नीक भोजन, नीक ओल्ला-रिडोला भैत गेल छलैक । तनहि घबसे लहिये रिजनीक ताव आ ल रौन नागन रुदा दवरैज्जा सोमे एहन रौन नागन छलै जगसँ कोठवीसोक तीतव गजोत पहुँचैत छन । रुदा कोठवीक रौहव स्पेनिन सिगारीक रैरसथा सेहो भैत गेलै ।

रौहव रैजे वातिक घंटी ठौरवक रुदेड पव राजन । वाति-दिसक पानी रैदलैक सम्र भैत गेल । जहिला भूत-वर्तमान आ



बर्तमान बरियामे रैदलेत अछि सएह अछि अछि । बाति-
दिलक रौंठ पकड़त अछि दूत-दूत एतेक धरैत जे आबो रौंठी
उंग्र रैलैत अछि । जहिया बातिक जहान रैदछा दिलक होगत
तहिया रैनदेरक बाति सेहो दिल भं गेलै । बाति-दिल भं
गेलैक आकि निनिये देरी रिक्करादिलीक संग डले पड़ ।
गोनधिल, से ले कहि । उछागणपव पड़न रैनदेर उछि कं रैन
कोठवीक टाक देरान दिस तकनक । अण्हावमे सत हवाएन
रूमि पड़न, किअक तँ रौंठवक रिजनीक गजोत सेहो अण्हाव
छदवि उछि ओहन भं गोन जे अण्हाव तबि ले देखि
पड़ैत । देह दिस तकनक । हाथ-हाथ ले सुनेत, रैनदेर
अजमा कं घबक अह नग समरि कं पहुँचन । हाथ रैद ।
देखनक तँ रूमि पड़लै जे सएह घबक अह छी । घबक अह
देखि मणमे रिसराम जगलै जे एठाँमँ अण्हाव-गजोतक सत
किछु देखर । हिया कं रिजनी खुँठामे नैकन रौंठपव नजवि
देनक । मरियाएन गजोत तगपव अमथयो मछुब-माझी ज्ञान
गमलैले तैयाव नाटि बहन अछि । खुँठापव गिबगीठक मूँड ।
अह रौंठि खागले तैयाव आमन नगोल अछि । निछामे रौंठक
जेव अदेत । तग रौंठ मछुबक जेव गीत गरैत फछक
छपि तीतव पहुँचन । अदा रैनदेरक मियाण मछुबपव ले
गोन । जहिया शीबीवमे अल्लो रोग बहनापव रैदका रोग
छेछेकारै छपि बथेत तहिया रैनदेर रौंठवक मछुबक भोगकै
दरि देनक । केना ले दारैत, जगठाम जिनगीक खुनक कोला
महत ले तगठाम मछुब कत पीरै कवत । अदा तहँ रौंठी
रैनदेरक मणमे जाणि गोन जे जखन रौंठ रैजे अण्हाव भं



'বিদেহ' ১০৮ স অংক ১৭ জুন ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৪ অংক ১০৮)

মানবসিঁহ

সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

বহন ভী তগ রীচ জঁ কণিয়ো ঔপকাব দোসবক ভ২ জাগ ঠৈ
তঁ ওহো ধর্মো ভী কি ল ? রঁনদেরক মসমে পশপএ নগলৈ।

তখল পএব দারিঁ সিপালীক স্ফুঁড সেনক ঢাককাত ঢক্ব কষ্টএ
নগল। ঞ্হাবমে সত হবাএল। পএবক ধমকসঁ রঁনদের রুমি
গেল। জলিা গাএ-মহিস মস্বকথক সগ ক্তা-রিনাগক ঢালি
ঞ্হাবোমে পরেখি লৈত তলিা রঁনদেরো পরেখিনক। ঋদা সত
চুপ। রঁনদেরক মসমে ঔঠলৈ, জরঁ কি রাবহ রঁজেমে
ফাঁসিয়েগব চঠরঁ তখল কিঞএ এতে ওগবরাঁহিক জকবতি ঠৈ।
এক তঁ ওলিা রঁডকা ভুব-দেবানীক রীচ জেল রঁনল ঠৈ, তগ
রীচ রাডি-সেন রঁনল ঠৈ, তগ রীচ এতে ওগবরাঁহিক কোল
জকবতি ঠৈ। ঋদা নগলে বিচাব রঁদলি গোলৈ। রাডি সতক
কৈদী তঁ ঞ্হরঁত-জাগত বৈএ। সত দিা দু-চাবি এরো কলৈএ
ঞ নিকনরো কলৈএ। ঋদা হম তঁ ঞ্হরঁ নিকলি লৈ পাএরঁ।
নিকনরো লৈ কবরঁ ঞ কি জিনগিয়ে ঞত ভ২ বহন ঞছি।
ঞঁখি ঔঠা ঞ্গু তকনক তঁ রুমি গড়লৈ জে সান-মহিাাক কোল
গগ জে মএ কিছ ঘঁঠাক জেল ভী। জগ দিা ফাঁসীক ঞদেশে
ন্য়ানানয়সঁ ভেল ওহী দিা কিঞএ ল ফাঁসিয়ো ভ২ গেল।
ঞলে কোল সোগ-সন্তাপ দেথো-ভোলোলে পশবহ দিা জীঞ
ক২ বাখল গেল ঞছি। মস শোন্ত কেনক। শোন্ত হোগতে,
জলিা পোখবিক ঞগম গানিকোঁ পুরাঁ-গড়রো হরা ডোনরোত বৈএ
তলিা মস ডোনলৈ। ডোনিতে ঔঠলৈ, ফাঁসী কিঞএ হএত ?
প্রম্গব নজবি ঞঠকিতে ঔঠলৈ জে ফাঁসীগব সপুত-কপুত দ্গু
চঠএ। হেব ঔঠলৈ জে তগ সপুত-কপুতমে হম কী ভী ?



अन्तर उठैसँ पहिल जहिला हरा खसि पड़ैत अछि, राश्याडन
शान्त भऽ जागत अछि तहिला रैनदेरक मस मेहो शान्त भऽ
गेलै। कोला तबहक तबग ले। ह्मदा नगले मसमे उठलै
जे जिनगीक अंतिम सीमापव पहुँच गेल छी। जहिला गामक
सीमा छँति दौसव गाम आरि जागत अछि तहिला जिरनलोकसँ
मृत्युलोक छलि जाएँ। ह्मदा एते तँ हेरै कबत जे अखन
छैकासन जिनगी अछि पछाति रैछैकासनमे पहुँचि जाएँ। ह्मद
उठलै, जिरनलोक तँ खानी मृत्युक लोक ले छी। जिरनला तँ
लोक छी। जहिला कोला जंगमसँ पड़ैत जगमरव दौसव
जंगमक सीमापव पहुँचते टाककात नज्जि उठा कऽ देखेत जे
वै जोकव अछि रा ले, तहिला जिरन-मृत्युक सीमापव
रैनदेरक मस अछि गेलै। धवतीपव जहिला एक-दिनासँ दौसव
दिन रैहैत धाव बास्ताकेँ रौधित कऽ दैत तहिला रैनदेरकेँ
जिरन धाव रौधित कऽ देनक। आगु छँपेक आशि ले देखि
रैनदेर रौमा-दहिला दिना पकड़ैत रिटाव केनक। एक दिन
पहाडसँ निकलैत धाव धवती छँपेत सद्दमे गिलेत तँ दौसव
धवती छँपि सद्दमे गिलेत। आगु तँ किछु छँपि शेष अछि
ह्मदा पाछु तँ सौमे जिनगी पड़न अछि। कि एक रैबक ह्मदी
ह्मदी, छी आकि ह्मदी चउन जिनगीक ह्मदी ह्मदी छी। मस
छँकि गेलै। ह्मदा नगले मसमे उठलै जे गमसुम भऽ सम
काठरै नीक ले। कतकान पहिल रौवह रैजेक छँपि रैजम।
जहिला धवतीपव आएन रैछा आसते-आसते सकतए नलैत
तहिला रैनदेरक मस मेहो सकतए नगले। मस पड़लै पनवह
दिन पहिलका ह्मदीक सज्ज। मसमे थोस उठलै जखन ह्मदीक
आदेशे भेल तखन ह्मद पनवह दिन जहल किअए भेल ? कोन
अपवादक ह्मद भेलै। जौ ओही दिन ह्मदी भऽ जागत तँ



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पञ्चवह दिन जे सोग-सन्ताप भेल से तँ ले होगताए ।
ततरे ले अगला दुंगर अलले भाव किअए रँठ नोक ? हेब
मामे उठले जे अलले ओमवाग जी । मन शान्त केनक ।
शान्त होगते मममे उगकले, सगुत रँमि दुनियाँ छोड़ै आ कि
कगुत रँमि । कियो हिनसैत, प्रनसैत दुनियाँ छोड़ै आ कियो
रिमसैत, दुसैत दुनियाँ छोड़ै । ह्रदा जे हिनसैत-फुनसैत
छोड़ै ओ छोड़ैत कहाँ अछि ? ओ तँ जीरातुमकेँ एहेन
दृष्टि कइ पकड़ैत अछि जे छोड़ै लौ ले छुटैत अछि ।
ह्रदा हम तँ से ले जी । हेब मन घुमले । दुनियाँ रँडैठी
अछि... रँड छेँ अछि... ।

रँडैठी ओकवा जेन छै जे रँवी पारै छहै । ह्रदा रँवी तँ
भोजोक अतिम पवार ले, घबक मय सेहो जी । तखन किअए
ओकवा निअ छहै । हेब मन ठमकि गेलै । अलले अछाले
कफड़ झुकै नीक ले । अगला तँ संसार अछि । जगमे
अकाम-पतन, दान-सुर्ज, नदी-सरोवर सब किछ अछि । तखन
अगल छोड़ि दोसबाक देखै अगलसँ दुब हएँ हएत । अगल
कर्म, अगल धर्म मरि रूमर उचित हएत । जारै से रूमि
दुनियाँक वंगममे ले उतवै तारै कौआ कान लल जागए,
तग पाछु दोगरै हएत । अगल वंगम आ अगल अतिम वग
अरिते मन ठमकि कइ ठाढ़ भइ गेलै । ठाढ़ होगते अगलसँ
मामे उठले । अलिगयो तँ देखिहारोक जेन आ संसारोक
जेन वंग-रिवंगक, कतेक स्तवक होगत अछि । ह्रदा कहन तँ
अलिगये जाग छै । कियो जीना बढि अतिम करैत, तँ
कियो गन-गनागत अतिम करैत । कियो मुक भइ करैत
अछि तँ कियो धेसलेशे करैत अछि । केना एकवा



रिनगाथर ? एक दिन टि-रिटि रंगन अछि तँ दोसर दिन
रुटि मेहो रंगन अछि । ओसवागत मल समान भ२ समा
उठले । अलले ओसदले सम समरि जाएत । गनन रुटिया
नागन मोव जकाँ सम रँचन अछि, तेकवा जेँ ओसरोठेमे
बाथर मेहो नीक ले । राबह रँजेक घँटी कतेखन पहिल रँजि
टुकन अछि । हाथमे जेँ घड़ी बँहत तँ ठीक-ठीक समयैयोक
रोध होगत, मेहो नहिये अछि । जग दिन जेनमे प्रारंभ
केहो तेही दिन जहनक झूठपव जमा क२ जेनक । जग दिन
निकनर तग दिन देत । झुदा निकनर कहिया ? आग तँ
हामियेपव नठकि जिनगीक रिमर्जिन कवर तखन घड़ी लेना
जेरँ आ पहिब क२ सम रँचन ? झुदा तँ कि जग गाममे
झुगी ले बँह छै तग गाममे भोव ले होग छै ? पाँच-दस
मिष्ट आगु-पाछु, अगुगान तँ क२ सकै छी । झुदा काजक संग
जे सम छले ओकव अगुभर आ रिम काजक अगुभरमे तँ
अगुभव होगते अछि । काजक दोड़क अगुभर रेंनी रँटि याँ
होगत अछि । किएक तँ काजक संग सम सँ छलेत अछि ।
झुदा हमरा तँ मेहो ल अछि । रँस दू रँव खाग छी, ठेग
जकाँ ओसवागत पडन बँह छी । कथन जागन बँह छी आकि
सुतन बँह छी, से आनक कोन रात जे अगला ले रँमि पल्ल
छी । पडतेहो तँ किछ ल भेटत । हव मलमे उठले- हामी
किअ ?

किछ सम गुम बहनाक पछाति अनाम मलमे उठले जेँ
भक्ति-भारम सम कठल बहिनो तँ हँसी-खुशीम चट्टि तौ, से
ले केहो तँ हव-कनपि चट्टि । जलिा शैक्तिक स्रात ज्ञान
छी तलिा ल भक्तिक स्रात प्रेमो छी । हव मल ठमकले ।



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जौं भक्तिक सात प्रेम छी तँ हमझँ तँ प्रेमिक छिरे । जौं मे
ले बहिनो तँ एत खेन केना केजौं । अचतागत-पचतागत
झँहमँ निकलले । मे तँ जकब केजौं । एक प्रमीना पत्थव
तोड़मे छूँए, दोसव पत्थव रँनलेमे छूँए । हँ मे तँ
दुखमे छूँए । झुदा कि दुख मिठास एक बग छै ? मे तँ ले
छै । तख प्रेम -मेरा- केकवा कहलै ? हेव रँनदेरक मल
ठमकि नजबि उठा-उठा टोकला होगत टाक दिस तक नगन ।
झुदा अलवमे किछ देखलै ल कवए । मलमे उठलै, अलले
प्रेमक पाछु रौआग छी । गेल जगना हेव ले जोछै । आर
तँ जिनगीक अंतिम खाड़ि पव छनि एजौं । ल प्रेमिक छी आ ल
प्रेमक निवज्ज कर्ता । अलले अलका पाछु रौआव बहन छी ।
सभलै अपन-अपन जिनगी छै । अपन-अपन जगह छै, जे
समैयोक आ प्रगतोक प्रभारमँ प्रभारित होगत बह छै तँ
अपन रात जेना लोक अपन रूमेत अछि तेना आन पोछे
रूमत । टाक दिसमँ घुमेत-फिडेत मल अपन नग रँनदेरक
एलै । मलमे थोम उठलै । यह मल छी जेकब किबदानीमँ
कियो भगरान रँनि जागए आ कियो हत्यावा रँनि दुनियाँक
सोनामे हाँसीपव कछकि जागए । झुदा कहलै केकवा आ सुनत
के ? मल ठमकलै । हत्यावा के ? हत्या की ? आ के
पेदा करै ? जल्ला कम माछी-माछव बहल थेरौ कान आ
मुतरौ कान ओते पनेनीनी ले होगत जते अधिक बहल
होगत । रँनदेरक मल हेव ओमवा गेलै । ओमवी छुटते
अपनपव गलानि हूँए नगलै । हमझँ तँ दुनियाँक दुख
अपवाधीमे छी । जिनगी भवि अपलमे रँनान बहलौ झुदा
रँनान केना बहि गेलौ, मे कहाँ रूमि गेलौ । जल्ला



धवतीकै रौनार तेल मृज्ज शक्ति कयि जाग छै तल्लि ल
हमरा भेल । मल उहनि गेलै । टिटिआगत राजन-

“हम अपराधी छी, अपराध केल छी । डकैतीक संग हत्या
केल छी । अखल हमरा फाँसी हूअ ? ”

शितोक मामर्ग ओग रैछामँ ओही दिसँ कमल गेलै छै जग त्रि
सुगत सुगत दिस जागत देखै छै । तल्लि रैनदेरक
कमलपेत आत्मा मलमँ हष्ट बहन छै । अणधूष झूठ पछि बहन
छै । अपराधी छी, अपराध केलौं । एक अपराध ले, अल्लो,
एक दिस ले जिगगीयो भवि । रूत रिनमि क२ फाँसी भ२
बहन अछि । रूत पल्लि भ२ जागत छै छन । झुदा भेल
किअ ले ?

एकएक झूठमे पर्दा गगन हूडत मल पाछु दिस मसबलै ।
अंतिम हत्या आ डकैतीक हल फाँसी छी, झुदा आरो जे
जिगगी भवि केलौं, तेकर की भेल ?

मध्यामक स्थान जल्लि आन मामक स्थानमँ अधिक सुन्दर,
अधिक शीतल होगत तल्लि जिगगीक अपराधक रीट रैनदेरक
मल अछि गेलै । एक दिस जिगगी दोसब दिस अपराध ।
शीतल भेल शीतल मलमे उठलै, कि हमर जन्म अपराधिये
रैलैक जेन भेल छन जे अपराधीक जिगगी रितेलौं । झुदा
रूमियो कल पेलौं जे अपराध कलै छी, अपराधी रैलै छी ।
ओमवागत मलकै सोमबलै रैनदेर जिगगीक एक-एक दिस आ
एक-एक घटना मोल पाछु गगन । झूठमँ निकलै-



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“अपन जिनगीक रात जत अपना मसमे अछि ओत पोछा
दोसबाकेँ हेतग। सिर्फ हत्ये-मुठ छी तँ ले केन छी,
माए-बैरिनिक सँध मेहो तोड़ल छी।”

मस कवनि क२ रँजले-

“एकरेव ले हजार रेव फँसी हेरौक छली।”

मस रँकन कृषि नगले। केकवा ले केरौ? छी रात मसमे
उठिते मियाँ पविराव दिस रँदले। अतिम दिस पनी आ रँधौक
दर्शन हएत? ओ सभ रँधौसँ रँधै कबए जकब ओत। मस
कि जहना पविरावमे रँधै होगत छन तहना हएत? मे
केना हएत? सिपाहीक घेवारदीमे हम बहरँ आ ओ सभ हष्ट
क२ कातमे ठाढ़ बहत। मस घुमले। अलले किषि किषो
रँधै कबए ओत? कोन मस देखत आ कोन देखोत।
तगसँ नीक जे तल हमरँ हवाएन छी आ ओहो सभ हवाएन
बहए। दुनियाँक सभ तँ ले ल टिहटे-जगटे। जेँ
समाजमे लोक ओगरी देखोते तँ समाज छोड़ि दोसब
समाजमे छल जहएत। जखन एक समाजसँ दोसब समाजमे
जागए तखन पछिला समाजक रँधै ठूँठ जाग छै। रँधैक
तीतब रँधन समाज अपन हितक राँत सोटे। मस समाज तँ
समस्त छी, जगमे घोघा-घोघीसँ न२ क२ गोहि-गमाव तक
छै। रँधैक मस ठमकि गेल।



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जल्मि जल्म-जल्मगतवसँ रा कबीति-कसमए पाणि रसिक
छाँहमे जल्मगत नतामक गाछ सेहो समए पाणि कनशि जागत
तल्मि रैनदेरक मल कनमेन । अरौध रैछाक हाथसँ गिवन
अगला, माए-रागक दुख जकाँ ले हृदा तेयो धूँकड १ रीछि-
रीछि जोड़क कोशिनि करैत अछि तल्मि रैनदेरक कनमेन
मममे उगकले । तीन रैथ जहन एना भऽ गेल । बाता-बाती
घबसँ पकड । रैनदुकक हाथे जहन आँख बली । नर-नर लोक,
नर-नर जगहसँ भैँठे भेल । जल्मि दमेक मिथिलादेसक रासी
दुनियाँक कोण-कोणक रीछ रसि अगल पूर्ण परिवारक स्थापना करै
छथि तल्मि रैनदेरक मममे परिवार सेहो आँख । हृदा नगले
जहनक परिवार अगुआ गेल । एक-फाँटक ठेपि दोसबमे
घेबएन बली । तनशीक संग सब किछु घेबा गेल । राहबसँ
आगत ले अगल घेबागये गेल । हृदा तेयो नर-नर
चेहरासँ भैँठे भेल । भितर अरिते -राडिमे- घुस्सा-हृक्काक
मनसि भेल । जल्मि अखछ हागव उतरेत खनीफाकेँ पाणि
उतव नलीत तल्मि उतव । जल्मगीक पहिल रैन जहन
देखल । स्रागतक रौद मेठ नग पड्छाउन गेल । अखछ हा
रैनदल खनीफाक पाणियो रैनदि जाग छै । हृदा..... । मेठक
बजियछबमे नाँउ छटा ते छेब हूँम एक संग उठन । माडू
नगलैक झुठी, पोखामे पाणि पड्छाळैक झुठी गत्यादि-
गत्यादि । काजक भासँ मल दरागत जा बहन छल आ कि
मननगव पसबन मेठक हूँम भेल-

“एम्हव आ, पहिल जाँत तखन दोसब काज हेतग ।”



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अरग्रहमे हँसन मस हनुक भेन । मसमे खुशी उगकन जे
कनियो-कनियो काण अँटैत तँ काल उथड़ि जगतए । जान
रौचन तँ नाथ उगाग । एक करौष्ट घुमेत मेठक मेणजन
रौजन-

“गहिन दिन छिउ, आग तौरा खेलाग ले भेटैतो ।”

जहिया हनुदगिब अस्मी मसँ नरौने मस जावनि चढ़ि जाग
तहिया चढ़ि गेल । असरिमो ले क२ सकलौ । हनुद तेयो
सरुव भेल जे ले खागेल देत, सुतेक तँ जगह भेट गेल कि
ल । तग रीच मेणजनक हुकम भेल-

“कोन केसमे एलेहै ? ”

केसक नाँ सुनि मस दनदन भ२ गेल । जहिया सोग-पीड़ामे
लाव रौन केकरो माणत्रणा दैत कान होगत, तहिया ।
जहनसँ निकलैक आशिक अँकुर रौनदेरकेँ जगलै । हनुमि क२
रौजन-

“सबकाव, डकैती आ खुन संगे छै ।”

डकैतीक संग खुन सुनि मेठक मस ठामकन । अधिक दिनक संगी
हएत । तँ दौसतिये कवरौ नीक । पड़ल-पड़न हुकम
चलौनक-

“नरका कैदीकेँ खगयो आ सुतेयो ले दिहक ।”



जल्मि जलगीक सुथ, थाएरै-सुतरैमे अरै ठै तल्लिा सुतरैक
अनि देखि रैनदेरक मलमे खुशी उगकले । खुशी उगकिते मल
रौआए नगले । तली रीच फेठक झूलै फुलै-

“तेनक शीशी डेरै कलौ, कालिम् गौदामे सँ न२ न२ अनिहै ।”

गौदामक नाँ सुनिते राडिमे गन-गुन शुक भेल ।

“नरका कैदीकेँ गौदाम केना ज्ञा दैरै । अ न्याय डी ।”

एक कैदी ठीकेदावकेँ पृष्ठक-

“कि रात छिं हो ठीकेदाव तैया ? एना किअए रुडरिडि ।
केल डह ?”

ठीकेदाव राजन-

“तू अथन तड़ि-घड़ी ले रूमरिली ।”

“सै किअए हो तैया, सुनल लोक सुनरौ कलैए आ नहियो
सुनैए । रूमोले लोक रूमरौ कलैए आ नहियो रूमैए । पहिल
रैजरेक तरे ल ?”

“रौ रूडि रैक, सब गग सबठीम राजरै नीक खोडै होग
छै । नीको अधना भ२ जाग छै आ अधना नीक भ२ जाग
छै ।”



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“एकरैव अजमा क२ देखक । नवकोमे ठेगम-ठेग कले
छह । रैहवामे लोक किछ कलेए तँ भीतव -जहन- अरैए ।
एँठामसँ कतए जाएत । राजह, तौरा कि रूमि पड छह जे
हम ओहना आएन छी । आकि किछ कए क२ आएन छी ।”

ठीकेदावक रैठेत संगी देखि कठहँसी हँसि मेष्ट राजन-

“कि ते ठीकेदवरी, कथीक रँगकी धेल छै । स्वप्न.... ।”

एक दिसि ठीकेदावकेँ अगल घटैत आमादनी मसमे नटैत तँ
दोसर दिसि मेष्टक आदेशे । घुस्कि क२ ठीकेदाव नगमे आरि
घुस्घुसा क२ राजन-

“मेष्ट डेया, अहँसँ कि कोला रात छिगन बहै । रूमिमे छिं
जे दु पाग रैछा क२ गाम पठलै छी ।”

ठीकेदावक रातसँ मेष्टक मसक आगि ले ठठ एन । हृदा हराक
नहकी जकाँ जकव लागल । मसमे उठलै दस नैठ तखन ले
महँथ, जँ से ले तँ असगव रवसगतियो हुमि । जहिला गुनारी
नाम आम-अडहून रँगि जागत, रँग रैदलि अगवाजित उज्जव-
कारी रँगि जागत, दिस-वातिक थेलमे पुर्णिमा अमारस्या आ
अमारस्या गुला रँगि जागए तहिला रँगदेरक मसमे जिनगीक
जुआनि उठए नगलै । हृदा हिला जावक आगि जहिला, गियासन



रिग्न पाणि जल्मि, थेतिलव रिग्न थेत जल्मि शक्ति बलितो
हीनमेदिका रीनि जागत अछि तल्मि जिनगीकें स्वता क२ बाथरै
डी । द्वाद प्रमा तँ अजगर अछि । नीक भोजन, नीक नीन
गन्दासनक द्वाथ द्वाव डी, तथन जिनगी.... ?

जिनगीक आरम्भिक तहमे सुतरौ -नीन- तँ अनिरार्य डी ।
तथन अरना केना भेन ? द्वाद जथन दम कोठरी रैहारिक,
साह कलिक भाव बहत तथन एक कोठरी रैहारि तँ उटित
ले । मेठक मल ठमकन । ल आगुक रौठ देखे आ ल पाछु
घुमि तारै नीक रूने । मलमे पुनः उठले, कियो जोग
फियामे जोगी रीनि जोगिया जागत अछि, कियो भोगी रीनि
भोगिया जागत अछि तल्मि तँ कियो काजोमे कजिया
जागए । द्वाद कज्जी भेल तँ अरौने भगये जागए ।
जगठाम निरोगक रीनि प्रदान होगत तगठाम अरौक पुड
केतक ?

सामाजिक कलित मेठ भार-बिहान भ२ रौजन-

“रौआ ठीकेदाव, ३ दुनियाँ थेल डी । अगला सभ जहनमे
तीत-सीठ कले डी, आ कियो खून धवती-अकास रीट खुलि क२
थेलागए । तगठाम तौली कह जे कि नीक हेतग ? ”

जल्मि दोबोक भवभाव अछि, किमिग-किमिगक टावे अछि,
तल्मि ल एकवंगाले दोबक भवभाव अछि । अमती कष्टमे



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ओमवाहन जकाँ ठीकेदार ओमवा गेल । जँ छेव छेवि कए क२
आनए आ जकवतमन्द लोककेँ द२ द२ तखन ओकवा की
कहर ? छेवि तँ ओ ल होगत जे दृगदाप आनि दृगदाप
बनी । जगसँ कियो बुझबै ल कवत आ तरे-तब मथड़त
बहर । ठीकेदारकेँ गुम देखि मेठे पड़नक-

“गुम किअए डर, ठीकेदार ? तारेणव डोडा देनिगह जे जे
तुँ कहैत सएह कवर । जाधवि थेम-थेमसँ ले गिनि, आत्मा-
आत्मासँ ले गिनि, मन-मनसँ गिनि क२ ले छत तधवि भवि मन
सिलह कतए सिंगार कवत ।”

जराँरक तगोदा सुनि ठीकेदारक मनकेँ ले बहन गेलै राजन-

“मेठे भाय, जखन किलो-किलो तेन अहाँकेँ पहुँचैते डी,
तखन नरका कैदीकेँ किअए गोदाम जागने कहनि ?”

“रौआ, मानीमे तेन हथुड़त देखनि, तँए रज्जा गेल ।”

अणन रँठत पफ देखि ठीकेदारक मनमे खुशी पनपन ।
खुशियाएन मन रँजले-

“जे आदमी आगये जहन आन अछि, ओकवा सोने गोदाम
पठाएँ नीक ले । छेव अछि कि डनह अछि, से अखन नगले
केना बुझि जेरे ? जखन हमले हाथमे गोदाम अछि तखन
अहाँकेँ अतार ले छत सएह ल ?”



ठीकेदारक रात सुनिते मेठक मल तीआगर जानमे हँसन माड
जकाँ ओमवा गेल । छेब तँ छेब भेल, झुदा डुनाह कि
भेल ? झुदा मेठे भऽ गुडरौ नीक ले । जेकले हाथ सभ
किछ, सएह ले रूमो, मेठक मलकेँ घुबिअरैए नगन । एते दिससँ
जहनमे डी, ठीकेदारक हिनारै डुनाहोक संख्या कम ले अछि,
झुदा ले रूमि पोरोँ से केहेन भेल ?

शेरेदक मोड़ रँदलौत मेठे गुडनक-

“कते बगक डुनाह जहनमे हएत ठीकेदार ? ”

जहिया नाबद धवतीक बिपोरै अकाममे करैत तहिया ठीकेदार
अपनारै महसूस करैत राजन-

“बाय सहायै, तेहन घुबडी नगन सरौन अछि जे धड़फड़मे
छुष्टि जएत । तँए ब्रिहिया कऽ देखए पड़त । पाण-मात
दिसमे गुवा-गुवी कहि देरै । ”

रँदनेदरक मलमे जहनक पहिन दिस बाटए नगलै । पुनः मलमे
उठलै, मात्र किछ घंठाक लेन दुनियाँमे डी, तखन एकर दिसक
काजमे घेबाएन बहरै नीक ले । झुदा कहरौ केकवा कवरै आ
सुनरौ के कवत । आगु रँदरै ते मलमे उठलै, जिनगीमे जे
किछ जे करैए ओ आस देखौ, रूमो आकि ले देखौ-रूमो
झुदा केनिहाव तँ जकब देखरौ करैए आ रूमरौ करैए ।
मलमे गनानि उठए नगलै । जहिया रँथकि रँहैत रूमक रँग,



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मेवामे मेवा जमा ह्वाए नलेए तहिला जिनगीक चलेत एक
छानि रैनदेरैक मसमे मसए नगले। कते भारी अपवारी छी
जे धवतीक भाव रैनि गेल छी, जै हमरा मस अपवारीकेँ हाँसी
ले होग मेहो अश्रुति रहत। मस असमिब भए गेल।
मसमे ल मागरा आ दागरा रैले। दुनियाँक ए बगमचगव
कियो रीव रैनि तँ कियो कायव रैनि, पाछे अदा करै। मस
ठामले। पुनः उठले, जग धवतीक भाव उठरैए आएन छलौ
उग धवतीक भाव रैनि गेलौ, एना किअए भेल ? की जिनगी
भवि हाथ-पैव मारि बहलौ, मेहो तँ ले अछि। चलेत
अ एन छी। तखन भाव किअए रैनि गेलौ। मस अछि
गेल। आग जकव रूमि पड़ैए जे जिनगी भवि रिगरीत -
रै-पारित- दिना चलि कमाअ पकड़ि लेलौ द्वा मे उग दिन
कहाँ रूमिअ जे कमाअ छी आकि स्वाअ। काजमे कते
रिधा कहाँ उगमथित भेल ? जलिा धावक धावा सिवाँ भयँछा
दिमि धड़धड़ गत चलेए द्वा भयँछाकेँ सिवा दिमि मसमे
मागला कव पड़ै छै। केना-पानिये पानिकेँ बोकेत बहै।
द्वा रीचमे एकछी तँ होग छै सिवाक पानि आ भयँछोक पानि
एक-दोसरँ बोकागत, ठाढ़ ह्वाए नलेत अछि। तापरि ठाढ़
होगत जागत जापरि धावँ उगव उठि धवतीपव ले छिछि आए
नलेत। द्वा धवतियोपव तँ दिना अरकछ कविते अछि।
आग धवि जे ले रूमि सकलौ उ अगल केना रूमि पाएँ।
द्वा ले, जिनगीक अतिम छेवपव भनहि सर रात ले रूमि
सकिअ, द्वा किछु नर तँ जकव रूमि पारि बहन छी। जै मे
ले, तँ कहियो ले रूमि पेलौ जे हाँसी रहत ? हमरी ले
सब एहल वृत्ति करै, द्वा सबकेँ हाँसिये कहाँ होग छै।
जगठाम पुवजा-पुवजा मसखक अंग रैनन अछि, सब अंगमे



थुन-दोय छै, तगठाम केना जोड़ा क२ चनाउन जा सकैए ।
समय पारि कियो दोऊ नलैए आ कसम पारि थकथका
जागै । तगठाम सौंसे मयथ रैरै, धीया-थुताक थेलोना ले
छी । समय अयकुन रैरै-रैरैए पड़ै छै, से ले तै वगडमे
लोक वगडै छै किअ जागै ।

रिसवि गेन रैनदेर रौवह रैजेक हाँसी । मय आगु दिसि
रैछले । जगठाम अमिकमि हुन ठहल अछि जे अलको वंगक
होगै । गंध, कप, आ काव मयान बहिलो एक-दोसवाक
अयकुनो आ अतिकुनो अछि । तलिया थुनारी आ नान आलो-नान
आ गाठ । नान रैलैए तलिया तै अपवाजित कवियो रैलैए आ
उजरो । आ जै उजरोपव कविये वंग चढ़ा जाँ, जेना
एक-दोसवंग चढ़ैए । भनहि थनकमल उज्जवसँ नान भ२
जाँ हृदा सत तै थनकमल ले छी ।

जलिया हुनराड़ि हुनराड़ि रा रशिराड़ि ठहलनाक उंगवान्त
छाहरिये लैसैक मय होगै तलिया रैनदेरकेँ सेहो भेल ।
दुनियाँक दुनै देखि मय रहिअ नगले । एठाम के देत ?
केकवासँ मगले ? जै मगरो कवले तै जकवी ले अछि जे
नीके देत । अधजोकेँ नीक कहि दैत अछि ।



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

झुग-झुगसँ बग-बिबगक हुन-हनुक गाढ बहिनो अथला हवाएन
अछि आ हवागयो बहन अछि । भूमिक हवाग-जीतागक खेले
ल तँ छले । रैनदेरकेँ अगल-आगपव मैका उठले । अथन
जहनक मेनमे छी, अकनरेड मे फाँसीपव छटै, कही बुँगथे
तँ ल भगछि बहन अछि । उँगछले बुँध ल रताह कहलै छै ।
झुदा किछु उँगछलोकै तँ रताह कह छै । जहिला धान-बर्ररीक
बगछसँ हँसु झुबछि जागए तहिला रैनदेरक मल झुबछि गेलै ।
किछु समए निकनिते मलमे उठलै, अमुका राद के हमरा मल
बाखत । कोला कि हम अमगले मृत्युदंड गेलौं आकि परै
छी । कियो गाढपवसँ थमि तँ कियो पानिमे डुमि कियो
रीथहा दराग पीरै, तँ कियो रिवना सगकछीसँ.... ?

झुदा हम तँ उग सभसँ तिम्र छी ? दुनियाँक रीच अगवाधी छी,
उल अगवाधी जेकवा दुनियाँ थुक हक भगलै । मलमे
हमडँत रागक दवद बुँमि पडलै । केकवा जेन एते अगवाध
केलौं ? कि अगना जे आकि परिवार जे । आग के हमरा संग
फाँसीपव छटत ? जँ अगना जे केलौं तँ कि हाथ-पव लै
अछि । मलमे एकाएक सद्दक शीतल समीबक मठका नगलै ।
मठका नगिते झँहसँ निकनए नगलै- ओ फाँसी केहेन होगए,
जे हँसैत अगल हाथे गवदमिमे नगलै । उल्ला हँसैत झँह
लोकक नोमामे हँसैत बहै । आ ओ फाँसी केहेन जेकवा थुक
हक लोक आँखि मुनि नगए । कियो सगुत रनि फाँसीपव छटा
अमव ज्योति जवलेत अछि आ कियो कविआन गजोतमे
अनहवाएन बहैत अछि । ए धवतीपव केकरो संग कियो लै
जागत अछि । सभ अगन-अगन स्रार्थक पाछाँ बहैत अछि ।
मल ठमकलै । मलमे उठलै, केना लै जागत अछि । आत्माक



संग आत्मा जकब जागत अछि । नीकक संग नीक आ अधनाक
संग अधना तँ जागते अछि ।

बातिक अंतिम पहर । एक दिसि बाति उमरैक रैब तँ दोसर
दिसि दिस चढैक समय । अछिछेत रैनदेरक भरू तखन पुनः
खुजल जखन अन्हावमे हवाएन पककी संगीक रीट अपन
उपस्थिति दर्ज करौक जेन घुँकन, अराज देनक । अपन-
अपन आरेशी अराजमे गामसँ आ न गाम, आ एकसँ अलक
किमिक गाढपव एक जूँताक अराज देनक । यएन समय छी
जे गौतमो भूमिकेँ चन्द्रमा पोखा देनकनि । सर्वांग चाहे
गौतम जे देनखि दूदा एते तँ भेरेँ केननि जे आत्मासँ
खसि देहलोकमे उतवि गेलाह । चन्द्रमामे जखन गहन नगि
जेते तखन अन्हावमे धवतीपव केकवा के चिन्हत ?

पककी सरहक अराज स्मृति रैनदेरक मगमे जहिला तरेगन
बहिलो तबकरौ तरेगन आन-आन ज्योति धवतीपव हँसत
आरि प्रकाशित करैक परियास करैत, तहिला रैनदेरक मगमे
सेहो पतवाएन प्रकाशिक आगमन भेलै । ज्योतिक आगमन
होगते उठलै, कोला कि हमलेष्टी हँसी हएत आकि अदोसँ
होगते एलै आ भरिययोमे होगत बहलै । दूदा हमरा
जिगगीमे हँसी चढैक रौँठ पकड़ एन कहिग ?

रैनदेर पाछु उषष्टि ताकए लागल । हम तँ ओग दिस हँसीक
रौँठ पकड़ि जेहोँ जग दिस डगव छोटि डगहव पकड़ि



'विदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

लैलौ। डगवक तँ सीमा-सबहद होग छै, निश्चित जगहसँ
निश्चित जगह पहुँचै, ह्रदा डगवक तँ से ले होगत।
घुबिया-हिरडा या रौश्रित बहै। मय्याक तँ डगव होग छै,
डगवक तँ पशु लेन होग छै जे जंगलमे चलेले जागत
छैक। कि हमसँ पशु भऽ गेलौ। ह्रदा पशु तँ ज़ीरे डी
आ मय्या ज़ीरे डी। दुनुक रीट आत्माक रास होग छै।
ह्रदा आत्माक रास बहितो पशु कहाँ रूमि परै छै जे हमवा
रीट आत्माक रास अछि। ह्रदा मय्याक तँ से ले होग
छै। मय्या से ज़ीर-जन्तुसँ प्रेम करैत अछि आ प्रेम
परैत अछि। सहयोगी रूमि जिनगीमे सहयोगी करैत अछि
आ सहयोगक अपेक्षा बनेत अछि। जँ से ले तँ ओ अंगन
बहैक रूमिथा किअ ल कऽ परैत अछि। जेकवा बहैक
रूमिथा ले हेते तेकवा जिनगीक गाँधी कि भऽ सकै छै।
तनहि रौश्र-ठहना घास-पात रा अन्ध भोज्य पदार्थ तकि
पेठे तनि निअ ह्रदा मय्या जकाँ तँ जिनगी ज़ीरेक गाँधी
ले कऽ सकै। मय्या तँ पातनसँ पानि पानि पीर सकै,
धवतीसँ भोज्य पदार्थ ँगजा सकै। फेब मस ठमकले।
मोचती रूमि भेलै। मोचनशक्ति ककले।

जलिा कठन रा हूँन वामता देखि वाली ठमकि जागत जे ओग
पाव लेना जाअरै। ह्रदा कठनौ आकि हूँनौ तँ वंग-रिवंगक
होगत अछि। एक हूँन ओहन होगत अछि जगमे पानि-
थान-कीट होगत अछि आ दोसब ओहन होगत जे सुखले
बहैत अछि। जगमे सारधानीसँ निछाँ उतरि पाव कएन जागत
अछि। तलिा तँ पनिआएला-थनारमे होगत। कतौ अंगम



होगत कतौ कम होगत जगठाम कम होगत तगठाम कल
कठिल सही हूदा पाव तँ कथन जा सकैए । हूदा अगममे तँ
हुमरौक आ गडरौक सँभारना रँगले बहे छै । हाँसी नगा,
गवदनी दारि हमर प्राण लेत, हूदा हँसबियो नगा तँ लोक
मबिते अछि । एहेन-एहेन परिस्थिति पौदा कऽ दैत जे
रौरस भऽ लोक अपन गवदनीमे हँसबी नगा प्राण गमरौत
अछि । कि ओ अपवाधी छी आकि अपवाधीक सजा परैए । जखन
ओ अपवाधी ले छी, तखन अपवाधीक सजा किअए भेटैले ?

लोकक राय मिह किअए देसबाक प्राण नऽ नऽ खुन पीरैए ?
ओकर कि दोष छै ? यएह ले जे ओकरा आगु ओ अरौरन
अछि । जेव मल ठामकले । कियो गनाव-गोथबिमे दुमि मरैए,
कियो आगि, पानि-पाथर, रिडि मरैए । ततरै ले कियो
गाढपब सँ थमि मरैए, तँ कियो गाढपब चढ-ढतलैत कान
थमि मरैत अछि । प्राकृतिक तँ अद्भुत नीना अछि । झण-झण
पन-पन रौंछै पकड़ैत अछि आ धकेल-धकेल निछाटे करैत
अछि । हुँपब-निछाक थाढ़ । रँगा जीरन-मृत्युक सीगा रँगालै
अछि । एक तँ ओहिना आगिमे अगिआएन अछि, पानिमे पगिआएन
अछि, हरामे हरिआएन अछि, तखन केना पलेथि पाएँ ।
पबथेले जेहेन आँखि गजोत चाली तेहेन ले कबिआएन
बोदनामे अछि जे रँथामँ सिक्त कबत आ ले डबिआएन
धवतीमे अछि, जे धवतीक पबतकेँ तेना मिब गडाडल अछि
जे शक्तिहीन रँगा देल अछि । सुखन मागक ढातीमे दुध कहाँ
अछि जे चारियो कऽ रौंछावी दऽ सकती । अणहारो बातिमे,
जखन हाथ-हाथ ले सुनैत, जखन अपन देहो हवा जागत,
देहक सत अंग नियन्त्रिय भऽ जागत, तखना तँ किछ बहिते



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अब्धि जे हँथोबियो-हँथोबि किछु दूर धरि नगये जागत
अब्धि । ह्रदा हय तँ मोनहरी आनहवा गेलौ । जखन पीरियो
रैना पानि रैमिया गेल हका जागत, तहिना आग दुनियाँ
हका बहन छी । अगल हकागत जिनगीन नजबि पर्छ ते
रैनदेरक मन सहि गेलै । ल आगुक रैछ देखे आ ल पाछु
घुसकि पारै । जहिना जिनगीक ओहि मोड़न कियो टाक
दिनसँ दुहेलसँ घेबा, हारि-जीतक ताबतमा लै क२ गेलैत
तहिना रैनदेर सैहो घेबा गेल । हारियो मानल दुहेलक
हाथे त्राण गमेरौ कवरौ, तखन त्राणक मोह बाथि हारियो मानरौ
उँचि लै । तगसँ नीक जे सामना करैत सामनाये जतकान
ठाठ बहरौ ओतकानक जिनगीक महत तँ आरो किछु हएत ।

ह्रदा ठाठ बहि के सकेए ? जेकब शरीर पी.बी., केन्सर सन
बोगसँ जर्जर भ२ थोथना भ२ गेल बहए ओ ठाठ केना बहि
सकेए । पएवमे ओ शक्ति कहाँ छै जे ठाठ बथैत ।
रैनदेरक मन रिचनित भ२ गेलै ।

किछु क्षण रौद मनमे उठलै, हामी तँ पोथरिक जागठ सदृश
जिनगीक छी । कियो अगम पानिमे डूँरफुनियाँ काँष्ट, माँष्ट
निकालि जागठक हलेड १गव नगलैए तँ कियो किनठेले-
किनठेवमे पिछडि क२ थमि, पिछडित-पिछडित अगम
पानिमे डूँमि, सडि-सडि सडनिक गंध पसारैत अछि । ह्रदा
जिनगीक अंतिम मोड़न रूबरुहि की हूँअ ? कमसँ कम जँ
अगला जेन केन बहिरौ तँ कलैत किअ, हँसैत किअ ल
दुनियाँ छोडि तौ । जिनगीक अटुक उपाय कहाँ रूमि पेलौ ।



सूर्योदय भ२ गेल । रैनदेरक गली कारिणी आ रैथी सुनील
गुमसुय भेल अगल-अगल काजमे लागल, ह्रदा मलमे बिट्टि
सथिती रैनल बहेक । ल सुनील माथेकेँ किछ कहैत आ ल माथ
रैथीकेँ । दूनुक मलकेँ रैनदेरक हामी तीतने-तीतव थिटेत
बहए । जगसँ मलक पीड । रैठेत बहेक । मलक पीड ।
ताधयि रैठेत जाधयि ओकवा निकालि दोसबकेँ ले कहल जागत
अछि । तथल अकाममे एकठा कौआ राजल । कौआक रौनमे
कारिणीकेँ अगनिगुल रूँम पड़यि, ह्रदा सुनीलकेँ मगुल रूँम
पड़ल । गहरी तोड़ेत कारिणी राजनि-

“कौआ, कौआक रौन केहेन ओल मल भेल ।”

ओला रैनदेरक हामी दूनुकेँ रूमल, ह्रदा तैयो मलकेँ हूमलरैत
बहलरैत कारिणी रैजलीह । मागक रैथीकेँ सुनील रूँम गेल,
ह्रदा जिनगीमे एलिा मोग-पीड । अरै-जाग डेक । डेठेसँ-
डेठे पीड । होय आकि पौघसँ-पौघ होय ह्रदा समेक मग तँ
लोक समरिये जागत अछि । जगसँ धीरे-धीरे कमेत-कमेत
मेथी जागत अछि । जलिा चलैले बास्ता चाली, से तँ नीक
कि रैजाए अछिये । समाज तँ ओल सद्गुण छी जगमे
करोड़ ।-अवरौ जीर-जन्तु मरुडद भ२ जीरल-यागल करैत
बहए, भनहँ एक-दोसबक राँछे घेलैत बहै छै, पकड़ि -
पकड़ि थोरौ करै छै ह्रदा, तैयो तँ बहरै करैए । नीक कि



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अधना, मसुथ मसुथे रीट बहेत अछि । मागक पीड़ालेँ सुशीन
भाँपि गेल । मल-मल मोचनक जे एक तँ रोटावीलेँ जिनगी
तबिक संगी छुटि बहन डल्हि तगपव जँ हमजँ ओहल रात
कहरसि तँ आबो मसमे धक्का नगतनि । छेष्टपव-छेष्ट नगल
आबो अधिक रेदनाक अघुतर होग छै । दूदा जलिया कडू
नगल लोक पाणि पीर कडू कम कलेए तलिया जे दर्द
मेष्टलेँक उपाए कवरै तँ दर्द आगु लेँ रैछि या तँ ठमकन
बहतनि रा कमतनि । समाग होगत सुशीन माथेलेँ उँतव
देनक-

“माए, कोआ तँ केलेह सुमव राजन । करैकरैएन कहाँ ? ”

सुशीनक रात सुनि काफिला रैजनीह-

“आन दिस केलेह सुमव तिसुबका रौनी निकाले छले आग
केलेह सरैसरैएन रौन निकानक । ”

मागक छन्दैक रेदनालेँ सुशीन भाँपि लेनक । ओना मसुथक
छन्दैक थान लेँ छैक । एक दिस कगयाक फाहा जकाँ हिय
हलोक उँड-ए तँ दोसव दिस जूआन पति, कमागरैना जूआन
रौंठीक मृत्यु, सेहो तँ सहलै कलेए । राँष्ट्र छुँटन रा कठन होड
आकि छोटसँ नमहव खासि होड, लोकलेँ चलेले तँ राँष्ट्र चलेले
करी । एकठाम रैसनसँ तँ जिनगी बहिये चले छै । कोला-
ल-कोला उँपाए तँ करै पड- छैक । कतौ लोक कुदि क
खासि पाव करैत अछि तँ कतौ रैगनक माँष्टि काँष्टि रा डीनि क
ओकवा गहेष्टि चलेत अछि । कतौ एहला होग छै जे नमहव
छुँटन रा कठन बहे छै तँ ओकवा छोटि दोसव राँष्ट्र रैना



नगए। मागक पीड़। केँ कयेत ले देखि सुशीनक मसमे
उठन। एक-एक ठेगानेँ सेहो रैष्टक खासि भवन जागत अछि
आ खासि हिमारेसँ टेकास काँटे सेहो भवन जा सकैत अछि।

सुशीन राजन-

“माए, हमरा तँ लोखक रौनमे मरुन बुमि पड़न। जहिया
केकरो कोला रसत हलनसँ दुख होग छै तहिया ल
तेछिनिहारकेँ खुशियो होग छै। रीटक रसत तँ एकेछा बहे
छै। एकर रात रा रसत एकक लेन नीक अछि तँ दोसराक
लेन अथवा भ२ जागत अछि। जीरन बरक पतियो होगत
अछि आ रौंछे होगत अछि। दूदा एक काज बहिनो दुनूक
करैक रिधिये किछ-ल-किछ अन्तव तँ भगये जागत अछि।
रएह अन्तव तँ एक-दोसराक रीट अन्तवो पौदा करैत
अछि।”

सुशीनक रिचाव काँसिक रिचावक सोना-सोनी ठाठ भ२ गेल।
काँसिक रिचाव ठमकन। एकाएक ठाठ तेल जहिया शीबमे
मोक अरैत छैक तहिया काँसिकेँ एन। मसमे मोक
मगिते डोलन। डोलिते नजनि एक दिस पतिगव तँ दोसव
दिस पुत्रगव रिताजित हुअ नगन। जग छत्रछायामे अथन
धवि बहनो ओ तँ छुट्टि बहन अछि। मस निवशि हुअ नगन,
दूदा नगले आगुमे पुत्र देखि आशि जगन। पुत्रा तँ पतिये
जकाँ ग्रहरी होगत अछि। निवाशिक मचकीमे आशिक आनि



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

नगनमि । छदय मिहवमि । मिहमि ते पुत्रक प्रति प्रेम
जगनमि । ओ प्रेम ले जे प्रेम मागक आशिये पुत्रके
होगत । रंकि ओ प्रेम जग आशिये पुत्रक आशिये मा
जौनेत छथि । जहिना जनम जनक आ ओम ओमक रंमि
पुनः जन रा ओमक सृजन करैत छति, तहिना । निवामि मममे
खुशीक सटाव भेलमि । सटाव होगते थिलेत कनी जकाँ मम
थिनममि । जहिना खागडि मे मके रा धानक नारी एक-दुगये
हुष्ट-हुष्ट वंग रंदलेत तहिना ममक वंग रंदम नगनमि । केना
लोक कहै जे कोना रीखाक नेन अशुकुने रातारव भैलगाव
अरुव होग छै । अरुवक नेन तँ एह रातारव अशुकुन भँ
जागत छति जग मुनक ओ रीखा आ रीखाक गाढ होगत
छति । जँ से ले तँ एक दिस अगम पामिरेना समुद्रमे रीखा
अरुवि पमिगाढक जग दैत छति तँ दोसव मष्टि-पमि रीच
सेहो दैत छति । ततरे किछ ? दोखरा रौखुओ आ चख
भेल पाखवामे तँ कोना-ल-कोना गाढक रीखा तँ अरुमि ते
छति । जखन दुमिगाँक सतगम शक्ति मोजूद छति तखन
मिथिलाक भूमि किछ शक्तिहीन भँ जएत । जे रीत भविक
पेठक वद्धा ले कँ सकैत छति । जे धवती बिखारीकेँ
बिक्कु रँना सकैए, भोगीकेँ जोगी रँना सकैए, ओ जोगीकेँ
किछ ल भोगी आ बिक्कुकेँ बिखारी रँना सकैए । एक नर
शक्तिक उदय कालीक मममे भँ टुकन छममि । माँ मे
धानक नारी जकाँ मम दु हाँक भँ गेल छममि । जहिना
खागडि मे एक-हाँक, दु-हाँक, तीस-हाँक होगत नारी
खागडि सँ उड़ए छहित छति, उड़रौ करैत छति तहिना
कालीक रिटाव उड़ममि । हृदा हृदक रौन सुखा गेलमि ।
कँठक तवास रँद नगनमि । हृदा पति-पुत्रक रीच छलेत



धावमे अगनाकेँ पाँरि काँसिक द्वादस छुटैगछैननि । सुमीनक
आँथिमे आँथि गाड़ैत रँजनीह-

“राँउ सुमीन, अहाँक पिता आ अगन पतिक तँ अतिम दिसक
झग झगकि बहन तेतार । छलि क२ आग दुनु माए-रैठाँ तेँछै
क२ लिअव ? ”

मागक राँत सुनि सुमीनक मन ठमकन । केकबो मनमे हुनक
रयाँ होगत अछि तँ केकबो पाँसि-पाखर रँजन ओना-पाखर
रँजैत । झुदा जलिया मबरौ दुनु करैत तँ ज़ीरौ तँ करिते
अछि । तेँछै कबए छालेल माए कहै छथि झुदा कि ए छुटित
हएत ? हम सब जेखै कवर तँगसँ कि हुनका तेँछैतनि ? आ
हमले सबकेँ तेँछैत ? अस्ताछन गामि सूर्यक नाँव तँ ओकरे
तेँछैत छै जे उदीयमान अछि । जे उदीयमान ले अछि ओकरा
जेन तँ जेहल दिस तेहल बाति, तखन अस्ताछनक महुरे
की ? हुनका -पिता- किछु ले तेँछैतनि, तेँछैतनि एएह जे
अगना ले फाँसीप चढ़ि बहना अछि आ परिवारक जेन । जँ
परिवारक जेन तँ कि अखन काजपव परिवार छलि सकैत आ
नीक काजपव ले छलि सकैत । जँ छलि सकैत तँ ओ खुद नीक
राँछ जोड़ि अखन राँछपव छलि अतिम दर्शन देखा बहना
अछि । अतिम दर्शन की ? एएह ले जे धवतीपव कलैत एलौ
हँसैत ज़ाएँ आकि जलिया कलैत एलौ तलिया कलैत ज़ाएँ, तँ
कि एहल ज़िगगीकेँ सुतब ज़िगगी माँसलै ? कथमपि ले ?
जखन घबसँ छेग उठैत तखनसँ लोक कहलौ कबत आ थुकलौ
कबत जे थुनिया-अधवमीक रँह-रैठाँकेँ देखियौ ? निबनज



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जकाँ केहेन धमोड़ दैत जा बहन अछि । मागक प्रश्नक उत्तर
दैत सुशील राजन-

“माए, कोन झूठ देखए आ देखैए जाएँ । सोम गङ्गागव
पिता एह ल कहता जे अही सभने जा बहन छी ? झूदा
अपना सत कि पुछैनि ? ”

सुशीलक रिचाव कारिणीक मसमे अतिभारकक रुपमे जगलनि ।
जल्मि सगयो हाथक नती रीना महाबाक धवतीसँ ले उठि सकैत
अछि तल्लि ल नाबियो अछि । डाँड़मे छेष्ट गाबि ल रिचातो
बिधिक बढा केननि । रैथीक महाबा देखि कारिणीक मसमे
अगिला जिनगीक आस जगल बहनि । रिहल भ२ रँजनीह-

“रैथी, रैथी रनि जँ धवतीगव आरी तँ रैथी कहलैत छनी ।
आरँ तँ तौली ल सत किछु भेलह । रैधर्य भेल एक आरुषी
मात्र नगत । झूदा आरो जिनगी तँ संग गिलि छनलै कबरह
किल, तौहव जे रिचाव हेतह सए ल हमरो रिचाव हएत ।
कहूना भेलह तँ तू प्रकय-पात भेलह ? हम कतरौ हएँ तँ
घरे भवि हएँ । ”

मागक रात सुनि सुशीलक मस पसीज गेल । अगल दासिन्नक
ताण भेलै । झूदा नगल मस झुकल गेलै । एक दिस धवती
सदृश निश्चल माए तँ दोसर दिस हकर्म अपबाधी, धवतीक
पागामो पिता देखए नगल । पिताक प्रति मसक उफा तेज
भ२ गेलै । राजन-

“माए, परिवारक रँडका रौम उतलैक दिस..... । ”



सुशीलक रौन रँग भऽ गेलै । रिस्मिंत अरुसथामे सुशीलकेँ
देखि काँसि रौजनि-

“सोग ले कबह । जग दिक जे भरितरु डलै ओ भेलै ।
जहिया जवन-गवन धवती आदिक रँग पारि सिर्फ जिरिते ले
सृजक सेहो रँग जागत अछि । तौ तँ सहजे प्रकथ छिन्ह ।
आष के केकवा कहत आ केकव के सुगत । ह्रदा जहिया
तोरव पिता तहिया तँ हमरो पति डिये । तँ अन्तिम
घड़िमे श्रेष्ठापूरक सावण कऽ रिमवि जाह । छन्ह अंगलक
ओसावगव रँग चलो रँग पीर आ गणो-सग कवर । दुनियाँ
किछ कहह, ह्रदा तोरव ह्रद देखि एतेन खूमी भऽ बहन अछि
जे जिगगीमे कहियो ले भेन डन ।”

मागक रात सुनि सुशीलक मन ओहिया फड़फड़ । उठन ।
रौजनि-

“असगले लोक जल्म नगए आ अंगल आनि सबकेँ कलेक
छहिये ।”

रौंठाक आस भवन रात सुनि काँसिक ह्रद पसीज गेलनि ।
रौजनि-

“रौंथा, आर तू रौंथा ले रौंठा भेलह । रौंठाक काज कऽ देखि
पनेथि दुनियाँक सग चलेक एक सिगाली भेलह । परिवार-समाज



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कर्मभूमि भेनह । ल अणका पठल आणकेँ त्रान होगत आ ल
अणकव त्रान अणका ले सरेतवि उँटिते होएत । तँए अणन
समए, पविस्थितिरेँ अँकेत पविवावकेँ आगु दूँकेँ समालेक तँ
भाव माथपव आरिसे गेल छह । केहेन मयूथ रँनि धवतीक
धावण केहोँ, यएह ल जिनगीक पबीछा छी । ”

माए-रैछीक रीट जिनगी पविवावक गप-सगक रीट काम्नीक मन
कखला पतिमँ हँष्टयो जागत दूदा नगले पुनः आरि ममकेँ
पकड़ि लेत । जखन मममँ हँष्टेत तखन अणला हाथ-पएव
निहावि-निहावि देखथि आ सुशीलालेँ निहावि-निहावि देखथि ।
मममे उँठननि पाँथि तँ छँकनियोकेँ होग छै, अकाममे उँडरौ
करैए दूदा तँए ओ छिड़ तँ ले कहागत । छिड़ लेन तँ
पाँथिमे दम चली । से कहाँ छँकनीमे होग छै । कनियो
किछ होग छै कि पाँथि छँष्ट जागत छै । जगमँ अकाम उँडरौ
रँन भँ जागत छै । तलिना तँ अखन अणला पविवाव भँ गेल
अछि । हम उँमरदाव छी तँ यवमँ रँनाव किछ कवरौ ल केहोँ
आ सुशील तँ सहजे कोला भाव रँमरौ ल केनक । ले
रँहवागक कावणो भेन जे अणलालेँ यलेक सीमामे बथलौ ।
जे उँटितो भेन आ अणलालेँ भेन । अछँगिनी होगक नाते
जिनगीक सभ वृत्तिमँ पविटित हेरौक छै छन से ले भेन ।
जँ से भेन बँहैत तँ जकव नीक-अधना वृत्तिक रिटाव
करितौ । दूदा, अणमोछे केन तँ नहिये किछ हएत ।
राजनि-



“रौंछी, जूँ ए धवतीगव रौंछी रैनि आरी तँ किछु क२ देथारी ।
जूँ मे ले तँ रौंछीक मल्ल की ? ”

मागक रात सुनि सुशीलक मन भर कनकन धुँसा जकाँ भर
कगमे पनगन । मागक आँखिमे आँखि गाढ़ी रौंछन-

“माए, दुनियाँमे सब अगन-अगन भाग-तकदीव न२ जिनगी
रैलरैत अछि । जेहेन जेकव जिनगी जीरैक राँठ बहे छै
तेहेन से भाव उठा छलैत अछि । ”

सुशीलक रात सुनि काँसि रिल्लन होगत रौंछनीह-

“रौंछी, जल्मा एक रौंछी रैनन-रैनान परिवार-थनदानकेँ नाश
क२ दैत अछि तल्मा एक रौंछी रैनन-रैनान परिवारकेँ उठा
ठाढ़ । क२ दैत अछि । ”

जल्मा कनकवृक्षक निछा रैमिनिहार रौंछी गत बहेए तल्मा
हॉसीगव छठैत रैनदेरक परिवारक मन रौंछी । बहन अछि ।
असममान जागकान हृदयक पाछु कठिगारीरना ‘बाम-नाम सत् हे,
सरलको गली गत हे ।’, कहैत छलैत हृदय घुमतिथो कान जखन
कि हृदय ले बहेत, रह कहैत जे ‘बाम नाम सत् हे, सरलको
गली गत हे ।’ भवति मृत्युक आगन आरि लोह-पाथर, आगि



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

छुरि रिसवि जागत रा छोर्छा दैत । जगठाम रैछाम सिगल
धरि मत्रि जपेत तगठाम एहेन जिनगीक दमो किअक ? जहिया
बसता छलैत रैताह कथला कसतासँ हष्टि तँ कथला मष्टि
ननकाबो भवैत आ कथला अमथिब भ२ रौको रनि जागत
तहिया माए-रैठाक अर्थात् सुमीन-कामिनीक मल पिता-पतिक
हामीक किछ सम्य पुरि पुरी-पडुरी जकाँ कस्मा-कस्मी करैत ।

कामिनी- “रैठा, तीन गोलेक परिवारमे एकक अत भ२ बहन
अछि तैयो तँ दू गोले रैछौ । तोहब रिखाह होगते ह्येब
तीन गोले भगये जायँ । ”

मागक रात सुनि सुमीन राजन-

“एहिया परिवार कस-रैसी होगत एलैए आ होगत छनैते ।
तगले कत माथ धुनरँ । तखन तँ एकठा रात रूमए पडत जे
आनकै केकब परिवारक भाव उठरैए, अगल परिवारक भाव तँ
अगल उठरैए पडत । ”

कामिनी- “हँ, ए तँ रैस रैजनह । ”

सुमीन- “दूथे कि सुथे परिवारक रौम तँ परिवारक लोककै
उठरैए पडतै । ”

सुमीनक रात सुनि कामिनीक मल सहनि गेलनि । रैठा सहजहि
अनाछि ये अछि, अगल कहियो भाले ल रूमजौ । तखन..... ?



रैकाव रैम तब जेवनि । जहनि तमकमक मय धवतीक सत
किछु डोमए नलौत तहनि कामिनीक भीतव-रौनव डोमए
नगननि ।

धावक रैहैत पानिमे जहनि पएव असथिरो क२ ठेपेमे
थवथड ागत तहनि कामिनीके हूअए नगननि । सुशीलोक मम
रिचनित होगत ह्रदा ममके थीव कबैत रौजन-

“माए, प्रेम तँ छुटैये जेन अछि । उँतव कहाँ देवैह ।”

सुशीलक प्रेम मम पाछाँ कामिनी रैजनीह-

“अछिनिनी रैनि जग पृथकक संग पकड़जौ हूषका टिन्हि ले
सकनियनि । आग रूने छी जे पृथकक भीतव सेहो, पृथक
होग छै आ नारीक भीतव सेहो नारी होग छै । जूँ से
रूमल बहिनौ तँ एतेक दूरी ले रैनि पलैत । उना परिवारक
भीतव अपन भाव निगहिमे कहियो कोतारी ले केजौ
ह्रदा... । आरँ उपाई कि अछि ?”

रैजैत-रैजैत कामिनी ठामकि जेनीह । जहनि नदी-नानाक
पानिक रैग आगुमे रौनह पारि ककि जागत तहनि कामिनीके
जेवनि । सहत रैधन माछ जकाँ छुटैगए नगनीह । छुटैगएगत
मममे आरँ नगननि, एक दिन तत्ररता तद्विक टिन्त-
रिरेचमे नगन बहैत अछि तँ दोसर दिन रूकति-रूकतिक
रीट सेहो होछ नगन अछि । सत सतसँ आगु रैदए चाहित
अछि । जगसँ संगे चरै छुटै जागत अछि । समाज रिथडित



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भ२ जागत अछि । श्रैणिक अश्रैणिकक रीट दिशा-दिशातबक
अंतव रैनि जागत अछि ।

दुनु माए-रैठा थाम्पम भेल एक-दोसराक झूठ देखैत । थमपी
तोड़ि अमीन राजन-

“माए, तोरव की गच्छा डुई ? ”

रैठाक रात अमि कामिनीक मन मोहल भ२ गेलनि । पतिक
हामी मनसँ हष्टि गेलनि । मन पाड़ि रौजए नगनीह-

“रैठा, रैहूत दुनियाँ देखलौ । नाना-नानी, दादा-दादी, रौप-माए,
मामा-मामी, केत कहलैह । पाड़ु डनष्टि तलै छी तँ सब किछ
देखै छी झूदा आगु तलै छी तँ तोबा जोड़ि किछ ल देखै
छी । जहिला नमहव गाड़ खसि बस्ता बोकि दगए तहिला आगु
रूमि पड़ैए । ”

मागक रात अमि अमीन राजन-

“माए, तोरव जे गच्छा डोड़, ओकवा जहँबि भ२ सकत
पुवरैक कोशिनि करै । जे धवती जोड़ि छल गेल, ओ तँ
सहजे छल गेल । ओकवा संग किछ खोड़लै जेतग । झूदा
जे अछि ओकव तँ अमीन अछिये । ”



आशा भवन स्वीनक रिटावमे आस नगरैत माध रँजनीह-

“दुनियाँक तेन छिड़ जे एकपव सध ठाढ़ अछि आ कथला सध
सध दिस छिड़ि आएन बहै। तँ सब किछु रिसबि जाह।
रीतनाह कालि मल बाखह आ अगिला कालि जे हाथ-पव
उठाबैह।”

बअ रँजिते जहनक भीतव ओहल टनमली आरि तेन जेहल
महब रँखी तेनापव रा भूमकम तेनापव होगत अछि। किछु
गोठे - सिगाली- नहाग-खागले तेना। तँ किछु गोठे दस
रँजे जहनसँ निकलैक कागज-पतव सबियलैमे नगि तेना।
तेना अलदिससँ अँहिसोक रँग रँदमन। जेना घँटी-घँटी भवि
अँहिसवक अँभारमे छेँपव ठाढ़ भ२ प्रतिका कवए पढ़ैत
बहैत तेना लै। अँहिस समेयेपव खुजि तेन। केना लै
खुजेत, आग रँददेरकँ जहनक सजाए जे समागत भ२ बहन
अछि। हाँसी तँ जिनगीक छी। सिर्फ दुष्ट सिगाली रँददेरकँ
मेनसँ निकलि अग्लेयक गाढक निट्टामे सरँजियेपव रँसि गग-
सग्न कवए नगन। तहुमे एक गोठे टनमक भँजमे नगि
तेन आ दोसव रँददेरसँ गग-सग्न कवए नगन। ह्रदा तीनु
गोठे माल दुनु सिगाली आ रँददेरक मल तीन दिस रौआगत
ठहरागत। टनमक भँज-भुँज केनिहार -गहिन सिगाली-
तमाहनरँनापव रिगड़ि गविअरैत जे साना सब पानि छीष्ट
अधला पत्राकँ तेहेन डगडगी आनि दगए जे लेनिहारकँ रूमि
पढ़ैत जे छेँपव अछि। ह्रदा मला-पोडव नगोनहा ह्रद तँ



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

उतरो काल ल चमकेत जतेकाल ओकवा चमकेक शक्ति छै,
झुदा तँ की सब झूठ ओहल होगए जे नगल चमकत नगल
दरि जाएत, रिनिष भ२ जाएत । तमाकनक तामस सिगालीकेँ
आगु रँठ । सबकाव दिस न२ गेल । सबकावगव नजबि पछि ते
हँसी नगले । रँडरँड ।१ नगल-

“अजरीर मदावी-नाट सबकारो करैए । एक दिस तमाकन थोती
करैक नागमैस, थुँका रँनरैक नागमैस दगए आ दोसव दिस
कैसव लोगक काव कहि माली करैए । झुदा नगल मल घुमि
क२ अगलागव छनि एले । तीस रँथक लाकवीक कमाग अली-
गाँजा-भांगमे छनि गेल । जखन बिठायव कवरै, आ आधा
दवमाला भेटैत तखन कि कवरै । एक तँ देहमे किछ ल बहन
जे दोसवो काज कवरै, थोलाग-पीलागक अतार सेहो हेरै
कवत । तगव रँठ ।छि यो तँ रीमारीक जछि ये छी,
कहियो दौत छैत तँ कहियो आँथि गजोत कमत । कहियो
कासक रँनीव छैर तँ कहियो रौतवम ठेहूँमे पकड़त । झुदा
अगला रियममे अगल सोचलौ कहियो जे रूमर । सिगाली
दोसव जे रँनदेरक आगुमे रँनन बहए, ओकव मल भिन्न
रौआगत । जहिला शेरारीकेँ शेरारक रौतव आगुमे अरिते
शेरारक थुमारी आरि-आरि नाछ नलीत तहिला ल मृत्य रा
हँसीर पुरक छण होगत । हँसीर पुरि धवि ल रँनदेर
अगवाधी छी आ हम ओकव गहकदाव सिगाली झुदा किछ काव रौद
अर्थात् रौवह रँजेक पछाति के कतए बहरै तेकव कोन ठेका
अछि । से ले तँ अखन ल हम सिगाली आ ल रँनदेर
अगवाधी । कि केन रँनदेर एत पौघ अगवाधी भेल आ हम
ओकव सिगाली छी । रँनदेरक मल रीवाष होगत ए दुनियाँकेँ
देखैत जे जहिला हँसीर ब्रूषन आमक गाछ रिहाछि क मोकमे



असि पाणि जेवि दैत तहिना ल अगला आ परिवारोकेँ भ२
बहन अछि । अदा आरै तँ ल मोटे-रिचारेक सम्र बहन आ
ल ओकरा प्रबलैक । ”

तीनु गोठेँ अगल-आपमे मस्त । अदा जहिना तीर्थस्थानमे
अर्पण यात्री एक-दोसब नग रैसि अरैक कावणो पहुँचैत आ
बस्ताक तीड़-अतीड़ सेहो पहुँचैत तहिना दोसब सिपाही टुप्पी
तोड़-त रैनदेरकेँ पहुँचक-

“भाय, आग तँ हाँसियेगव चढ़ा जिनगीक अन्त कबरैह ।
अदा एकठाँ रात कह जे केना-केना करैत एलेन सजाएक
भागी भेलह ? ”

सिपाहीक प्रश्न सुनि रैनदेर मर्माहत भ२ जिनगीक सद्मदमे डूमि
गेल । जहिना सोखिये पाणि उँपवक आराज तँ पाणि
तीतरामे पहुँचैत अदा पाणि तीतरक आराज उँपव लै
अरैत तहिना रैनदेरकेँ भेलै । रैकाव रैन बह अदा कनपेत
मन किछ रैजैत जकब बह । जिनगीक सद्मदमे डूमेत
रैनदेरकेँ, जहिना दुर्घटनाक दुःख रैछाकेँ मन पड़ा जागत
ठैक तहिना जिनगीक ओग धवतीगव पहुँचि गेल जतए अरोध
लै देहा अरोध बहै । मन पड़लै ओ दिन जेग दिन दोसब
रैछाक खेलाणा जीनि ब्रका खेलौ आ मागयो मुठ राजि नाथ
क२ जेनके । मन पड़ा ते सुखक मुर्ज जकाँ, नानीसँ दग-दगी
चेहरामे आरै नगलै । अमिकियागत रैनदेर राजन-



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“सिगाली भाय, रैछाक ओ दिस मसस निकलैले छठपछाँओ तँ
पहिल रहै कहै छी ।”

रैनदेवरक रात सुनि सिगालीक मस सेहो अगस रौनगस आ
पविरावक रैछापव पड़लै । मड़क नपेत दूवरीन जकाँ कतौ-
सँ-कतौ दूनु गोठे नापव नगन । सगतवि रैछे-रैछा देखि
पड़ैत । आगुओ रैछा पाछुओ रैछा तग रीट अगला दूनु
रैछा । रैछाक रणमे दूनु गोठे हवा जेन । हवागेते दूनु
गोठे सहै कइ आबो नग आरि गगलै आगु रैठ नैक ।

जहिया दुखक निराका रौन आ लोव दूनुसँ लोगत अछि तहिया
रैनदेवर अगस दुखनाम रैजैत रौजन-

“डैयावी, रैछामे हम दोसब रैछाक खेलाँना छीन कइ दोबा
बखलौ । कलैत ओ रैछा अगस जा माएकै कहनक । रैछाक
सगे माए आरि पड़नक । नई गेलौ । ह्द बखैले माएकै दइ
देले बखि । मागयो नई जेन । तेसब दिस रहै खेलाँना
जेले ओकरे अगस खेलाँने गेलौ । दूनु माए-रैछा टिन्ह
जेन । कहनक तँ किछु लै ह्द दोबरा नाँ वाधि देनक ।”

रैनदेवरक रात सुनि ठाका मारि सिगाली अगस सगी, दोसब
सिगाली दिस गशिवा कलैत रौजन-

“डैयावी, सगी तँ गाजा पीर मसत छथि । रैछलौ दूगये
गोठे, जेकवा सभक बाज-पाछे छिँ मे सभ अगस सम्हारव ।
तगसँ हमवा की । अछ्छा तेकब रौद की जेन ?”



सिगालीक रात सुनि रैनदेर थम्हा भ२ जेन । कल काव थम्हा
बहि राजन-

“उग सिक नीक आग अथवा सुनि पडैए ।”

रैनदेरक उत्तर सुनि टोकैत सिगाली राजन-

“मे केना, मे केना डैयाबी ?”

रिससित होगत रैनदेर राजन-

“डैयाबी, रात ओतरेणव ले अँकन । आगु रँठि जेन ।”

“की आगु रँठि जेन ?”

“पानि भबैले मागयो गनावण जेन आ ओहो दूनु मागपुत
आएन । आबो गोठै सभ बहए । तग रीच ओ माएकेँ कहनक,
अहीक रँठै हमरा रँठैक थेलौना देवा जेनक । एतरेँ रँजेत,
अँएले, रँएले, पडियामे पजडन पमाली जकाँ नगि गेलै । दूनुक
रीच कहा-कही थुक भेल । कहा-कहीसँ गावा-गावी हूँ
नगन । जहिला सात थुकथारै हमर माए उँकठै नगलै तहिला
ओहो उँकठै नगन । तग रीच एक्क-दूगये आला-आन कहा-
कहीमे शीघ्रि हूँ नगन । हमरा सुनि लोकौ सभ आरैए
नगन । जे अरै मे कोला दिन सन्धिया जह । दू पाठीमे
रँठि थुँ गारि-गलौरलि चनए नगलै ।”



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रैनदेर रौत समागतो ले केल डन आकि रौटेमे दोसब सिंगाली
ठैनि देनक-

“अ त नाहकमे एठ रौत रैठन ? ”

“मे कि ओतरेंगव अठकन । आरो रैसिया गेल । दुनु दिसक
गरौली कमलसमिये माता हुअए नगनथि । कावण जे सत त
काला ल कोला दिसक गाँधी रैनि सगड़ । गारि-गलौरनिमे
नाथि बहए । ”

जल्मि हुनएन पावकेँ झूठ रैल क२ आनन्द लेन जागत अछि
तल्मि आनन्द लेत सिंगाली रौज-न-

“सूत्रिगणक रौत सगड़ । भ२ क२ बहि गेल । आकि आगु
रैठन ? ”

सिगालीक प्रश्न सुनि रैनदेर रौज-न-

“मवद सूत्रिगणमे कोला भेद अछि । ल मवद मवद जकाँ बहए
आ ल सूत्रिगण सूत्रिगण जकाँ । मवदो मोगिआली छनि पकड़ि
मोगी रैनि गेल अछि आ मोगियो मवदसगा छनि पकड़ि मवद
रैनि गेल अछि । सूत्रिगणक गारि-गलौरनि प्रकथक झूठमे छनि
आएन । जल्मि एक चनाच दली तौना भवि दूधकेँ दली रैना
दगए, जगसँ एक तौनाकेँ के कहए जे कतेको तौना दूध दली
रैनि जागए तल्मि सूत्रिगणक झूठक गारि प्रकथमे छनि
आएन । ”



सिगाली- “होतसँ होतल भऽ गेल । ”

रैनदेर- “अँए एतरोँ भेल, मलीगल ल भोवसँ साँम धरि
गाबियेक माना जगि सकैए ह्रदा पृथक्थमे तँ मे ले होगए ।
एकसँ दु गाबि ह्रदसँ निकलिते हाथ उठै नहो छै । जखन
हाथ उठैत आकि दोसबगव खसल । सएह भेल । ”

बस छुसत सिगाली राजन-

“तखन तँ मारि भऽ गेल छेत ? ”

सिगालीक जितान्त्र प्रश्न रैनदेरकेँ उत्साहित कबए नगल ।

उत्साहित होगत रैनदेर राजन-

“मारिये भेल की गधकिछनि मारि भेल । ह्रदा दुनु दिस एक
बग ले भेल । हमर दियानी नमहव, तद्धमे तेहेन डडर-डुँठ
समाग सत अछि जे देखेरोँमे बाझमे जकाँ नगरोँ करैए ।
ओकर दियानी छोट माल कम संख्याक अछि तँए रएह सत रोँसी
मारि खेनक । ”

समाजस करैत सिगाली राजन-

“एतए तँ दुगये गोले छी, तेसर हमर संगी- पहिन सिगाली
अछि, ओ तँ भरखाएने अछि । निछा धवती डुपव अकास
अछि । तँए दुगये गोलेक रीट पनटैती कक जे नीक भेल
कि अधना ? ”



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सिपाहीक रात सुनि रैनदेर आगु रैठेत राजन-

“गनटैती पढाति कबरै। अथल अगुता जालौ तैयारी। अथल
तै पेरियो ले दुखान अछि।”

रैनदेरक रात सुनि सिपाही घड़ी देखनक। साठे बखत
राजन। एक तै उल्ला प्रतीकाक समय गडगब होत छै
तगबब जहनक रीचक प्रतीका। समय पारि सिपाही राजन-

“आबो रात अछि तैयारी ?”

आबो सुनि जहिला आदि-गत्यादि लण्डन रैछाकेँ हवा दैत
अछि तहिला रैनदेर हवा गेल। राजन-

“आबो कि कसिये अछि जे धक द२ नजबि चलि जखत।
माले-अमाव नगन अछि। तग रीचमे सँ रीछै पड़त किल।
ले तै उली लण्डन रैछा जकाँ जिनगी भवि आदि-गत्यादि
करैत बहरै, दूदा ओकवा रीछि ले पएरै।”

रैनदेरक थीव रिटाव सुनि सिपाही अगुनाकेँ थीव करैत राजन-

“अछा होई। अथल दु घण्टा रैसिये समय अछि।”

दु घण्टा रैसि समय सुनि रैनदेर राजन-



“दू घंटीमे तँ बिद्याथी परीक्षा पास कइ नगए । तउसँ रैसी
समए नगल रौडि-हमिरमिठीसँ डिग्री नइ अरैए । अखन रँहूत
समए अछि । ”

समए पाँच सगली जेरीसँ समाग-सिगलेठ निकालि एकठा अगला
आग्रवसँ दरनक आ दोसब रैनदेरोकेँ देनक । समाग खवड़ा
सिगलेठ सुनगा दुनु पाँच नगल । दुनु झूठक घुआँ झूठसँ
निकलिते तेना मिलित जाए जे झूठा कइ देखरै अमंभर भइ
गेन । झूठक सिगलेठ सँठिते रैनदेरें रोजन-

“तेजावी, किछु घंटीक मेहमाँन छी, अहाँ कतए बहरें हम कतए
बहरें तेकर कोन ठेकाँ । झूदा मसमे जे अछि ओ केकवा
कहि सकरै । तँए जारै एकटीम छी तारै सुनु । जतए धरि
भइ सकत ओते तँ मस हलुक बहत । ”

रैनदेरक रीत सुनि सिगली रोजन-

“जखन सुनि नगलौ तँ सुनाई, जत सुनारै सभ सुनि जेरै ।
तहुमे रीत-रौधक गप छी, हम सभ ले सुनरै तँ के सुनते ।
आखि गवजला तँ डिग्रीहै । ”

झुसुबागत रैनदेर रोजन नगल-

“टीकसँ मस नगए । झूदा रहल सात-आठ रँथक बली । ”

रीटमे सिगली ठेकनक-



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“ल सात ल आठ, साठ सात भेल । तगेल एत ततमातग
किअ छी ।”

रौनदेर- “एते नीक नहोति मल अछि जे अलका रौंछीसँ लरौ,
माछी, नताम टोबा-टोबा खुरँ आनी । पछ मियेक लरौ
रौंछी लमबा भौगक छहँ नगौनक ।”

जिउनामा करैत सिगाली-

“मे केना, मे केना ?”

“रौंछी-माछी नगरैमे एकठा पछ मिया रौंछ माहिब । भवि
दिन ओही पाछु रौंछान । दूदा थुलो बहनि, ल केकरो रौंछी-
माछी जागसँ लोकथि आ ल सोमामे डुछे हाथे केकरो
घुम देथि । हुनके रौंछीसँ सब दिन दूठा लरौ तौछी नी,
आ टोकपव रौंछि, भागो आ पाला था नी । थुजव करै जोकव
थेत-पथाव तँ नहिये बहए दूदा तैयो सात-आठ मास थेतक
उरँजामँ थुजव छनि जाए । कष्टा दमे-राबहेक कवीरँ रौंछीगयो
थेत रौंछु करैत बहथि । तग सरँ मिना मान-मान नहि जागत
छन । ओना सामँ पलव क२ जे अलछ-सलछ काजो कवी आ
रौंछरौ कवी तगसँ रौंछु रूमि गेल बहथि जे छौछ । रौंछरौ
भेल जाए । सगति खवारँ भ२ गेल छै ।”

सिगाली- “रौंछु किछ कहथि ले ?”

रौनदेर- “कहितथि की मागसक ल दूनाक रौंछी बनी । जँ
कहियो किछ रौंछो छहथि तँ तेना क२ माए सगष्ट नहथि जे



झूते रँग भऽ जाति । आ भाँ डेयारीमे असंगरे बली तहसँ
कहियो तेना भऽ ले कहए चाहति । ”

सिगाली- “तरे की भेन ? ”

रंगदेर- “एक दिन कणी पहिले पिसुआ भांगक सोली था
जेना * तंगपर सँ पाण सौ नम्राव जवदा देन पाण कणी
पुष्टिसँ छठ । देखि । घबराव अरैत-अरैत खुर निमाँ नगि
जोन । रौरु दवरैजजेपर बहति । कहनि जे एकठाँ रौत
पुष्टियो, कहनि जे एकठाँ किअए एक हज्जव पुष्ट । हमर
हाथियेपर सराव बली । ”

हाथीपर सराव सुनि सिगालीकेँ हँसि नगि जेन । हँसिकेँ सम्हारि
राँजन-

“आ जे हाथीपर सँ थमि पडाँ तौ तखन की होगतए ? ”

रूसुवागत रंगदेर राँजन-

“हद करै छी डेयारी । से जँ रूमेत बहितिसे तँ एलिआ
कबितौ । यएह ले ले रूमनि जे केना लोक उष्टी-रैसी खेन
थेनागए । केना थमनाहा अपनकेँ छठन रूमेए । ”

सिगाली- “रौरु की पुष्टनि ? ”



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“प्रभुननि जे अन्न-पाणि तँ जेना-तेना रैठागयो-थोठाग क२
मान-मान नगिये जाग३ दूदा दुध-दहीक नमीरँ ले होग३ ।
दुध-दहीक नाँ सुनि अगला मल चमकन । कहनिनि मे कि
कहे डहक । कहनि, एकठा महीस पोसिया न२ नगैरौ । आरँ
तोछँ चबैरँ-रैमरँ जोकव भगये जेनह ।”

रीट्टेमे सिंगाली ठेगनक-

“रैड सुन्दर रात कहनि ।”

रैनदेर- “हँ-हँ । मे तँ अगला नीक नागन । मलमे उठन जे
जलिना थेतक उरँजाक अगो, तीमल-तबकारीक पहिन फडक
हकदाव आल होगत तलिना गा३-महीसरँना परिवारमे डारहीक
हकदाव तँ मिये-प्रते ल लेखत । एक तँ डारहीसँ डारही धरि,
दोसव दुधसँ दही धरिक ०रियाण रहत । तगपव सरारी रँगा
महीसगव चढाँ मौसै गामो घुमरँ । रँग किछ केनहुँ काजक
मोजव मेले हेरँ कवत । आ कनी-मनी संगतियो मँ हँ सुनि
गीहो रूनेत बहिँ जे गजेवी-तंगेवीक पथ्य दुध-दही डी ।
जँ मे ले थाएत तँ उगैठे गाजा-तांग था जेतग । जामिये
क२ तँ तांग थागैत डी । अहीमे बगन बहे डी । जे काजून
अडि ० ल काजमे बसेअ आकि जे टिन्तक अडि ०
टिन्तमे । दूदा हम तँ तग सभमे ले डी । जिनगी जँ
बगता जोगी रँहता पाणी ले रँहन तँ जिनगी सवाँटिये ल भ२
जाग३ ।”

टौकैत सिंगाली राजन-



“सवाती जिहगी केकवा के छिं ? ”

सिपाहीक रात स्रनि रैनदेरकेँ हँसी नागन । जहिना एको दावा
बुन आकि टिली अपन सुआद जना दग । तहिना रैनदेरकेँ
अपन ज्ञानक सुआद नगले । ह्मकी दैत राजन-

“जहिना धावक पाणि ताधरि छनता बहे ज्ञानि संगे-संग छलेत
बहे । ह्म जखन कोना खता-खतीमे हँसि जाग आ रैनड
ककि जाग छै तखन माष्टिक संग मड़ मले । मड़-त-मड़-त
एत मड़ जाग जे नहाग-पीलेक कोन गग जे अपन
मड़िसँ ओहन-ओहन क्रिबियाह कीड़ ी मडकेँ जगमग मले जे
हाथियो मन-मन ज्ञानरव आगेमे हँसि ज्ञान गमले । महीस
चबले जोकव भगये गेन बही । किएक तँ देखिये जे
हमराम छेष्ट-छेष्ट छेड़ । मड चबले । कहनियनि नीक
काजमे एका दिन देवी ले कवरौक चाली राव । जे देवी कले
रह गडताग । रावुकेँ गग नीक नगननि । एकठा पोसिया
महीस न अगननि । ”

महीसक नाँ स्रनि सिपाही राह-राही भलेत राजन-

“जखन कमाग-खठाग लोक कव मले तखनसँ अपन धवतीक
भाव उताव मले । ”

सिपाहीक रात रैनदेरकेँ नीक नगले । जहिना एके अग पेट
भलेक संग-संग मनमे आनन्दो दग छै तहिना रैनदेरकेँ मनमे
भले । गद-गदाएन राजन-



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“असना रात तँ कहलै ल केलौ।” कहि दूग भ२ किड मग
पाछ मगन। जहना भिस्सकबक संग झूहकाबी भवले ओकव
उत्साह उठैत बहे छै तहना रैनदेरोक उठन। बाज-काजसँ
झुमन बागी-भोगी जकाँ दोहबलैत रैनदेर राजन-

“ओह, सुखक दिन छनि जेन। आरि थोड़ देखरि आकि
भोगरि। ओ हो हो।”

दुनुक मसँ रावह रैजेक फाँसी हवाएन। एक फाँसी ओहना
होगत जगमे सकनग कपी कन्यापी मागक गोदमे रैमि
हँसैत-छटैत दोसब एहना होगत जे थपड-थपड छूँछन-
छिछि आएन मग शरीरकेँ छोटैत। झूहकाबी भवैत सिगाली
राजन-

“से की। से की?”

छानि छोकैत रैनदेर राजन-

“महीससँ दुब-दली हेरै कब। पाँच गोष्टे एहेन डुझ-डुष्ट
महीसराव बली जे महीस चवा साँसु पहव घुमती कान लोकक
थेतक जजातो चवा छिं आ धाक महीसामे धाला लाटि छिं
आ नालो राँह्ति महीसपव नादि न२ अगिये। तते अन्न घबमे
ठेविया जाए जे थोड़क दुथे हवा जेन बहए।”

सिगाली- “सभ दिन महीसे चवलैत बहछिं?”

आथि-भौ चमकलैत रैनदेर राजन-



“হৃদ করে ছি ঋতু তৈয়াবী। বৃষ্টি-রসক সগ জিনগিয়ো ল
ঘটে-রঙে ডে। ঠীকসে তে লে মল ঋতি। হৃদা এতে মল ঋতি
জে দুবাগমল ভে জেন বহু। রাঁও মল জেন বহু। জলি
খোত-গখাও রেটি লোক লোকবী কব জাও তলিা মলিও রেটি
লো। হৃদা পাঁচো মলিসরাবক সঁধ খাও রঙে জেন।
খোনাও-পীনাও কথা-হৃদ্যেতীক সগ পলটেতী সভ কব
মলো। গামেমে রঁহবরৈয়া মালিকক জমীলা ঋ কচহরিয়ো
বহু। কচহরীক রঁহবরিসে দোস্তী মেহো ভে জেন। সজোগো
লীক বহু, রঁহবরিসবীক লোকবী ভে জেন। সে রীয়া জমীলক
মালিক ভে জো।”

মালিকক লাক্ষা। স্বনি সিগালী রাজন-

“তখন তে মালা-দাশ হুঋ মলন হুত ?”

মালাদাশ স্বনি কঠ-হৃদ্যে দৈত রঁহবরৈ ঋগমোচ কবৈত রাজন-

“মোমায়ে জলিা মালা-দাশ রঁহব পবোভমে তলিা গাবিয়ো
রঙে জেন।”

“সে কিঋ ?”

কিহু মল পাড়ৈত রঁহবরৈ রাজন-

“কবরৌ তলিা কবী। জেলা গমোয়া লতা সভলৈ দেখলৈ জে
উপবকা লতাক ঋগুমে জে কিহু রাজত ঋ কবত, লোকক রীচ



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ऊँष्टि क२ झूँहो आ चालियो रँदलि जेत । तल्लिा कबए
नगलौ । मालिकक - जमीनदाव- आदमीक रीट किड आ लोकक
रीट किड कबए नगलौ । ”

ऊँष्टैत-थुनठैत पागो देखि सिगाली राजन-

“सै की ? ”

रँनदेर- “गायक लोककेँ कोला मोजव दिअ । अलले केकरो
गविया देखौ, रँनजोवी कोला टीज न२ जेलौ । तल्लिा
मलीगलौ सतकेँ, केकरो किड कहि दिअ, केकरो किड । ”

“कियो जरौर ले दिअए ? ”

“जरौर कि दगत, जल्लिा गडू, थुँष्टा देखि टुकडूँ डै तल्लिा
ले बहए । एक दिन मालिकक धाक दोसर अंगन रँनडुमकी । ”

रीटमे सिगाली राजन-

“की अंगन उन-डुमकी ? ”

“जल्लिा मेरीलेक झूँथ अंग आँथियो डी आ कोला डी । झूँदा
दुनुमे कते अन्तव डै से देखे छिअ । कोल रौंटावा एहेन
सज्जन अछि जे नीकसँ नीक आ अल्लासँ अल्ला सुनि किड ले
कबैत, झूँदा आँथि केहेन ब्रह्मा अछि जे देखिते छिअ, कथला
नलिया क२ अगिया जागत तँ कथला कथिया जागत तँ



कथला लौटिया जागए । तहिना अपला अनेन थेल-पील
सदिकान बमकी चढ़ले बहत छलए । ”

सिगालीक मसमे तबग उठले । तबगि कऽ रौजन-

“गामक पढ़न-लिखन लोक एं रातकेँ ले बूनेत ? ”

सिगालीक प्रश्न सुनि रैनदेर गनारी हँसी हँसि रौजन-

“जहिना प्रश्न एक दिन भदरिया बूमन जाग छथि तँ दोसब
पबत्रुन सेहो छथि । हृदा छथि तँ सत ले । तँ जे
जेहेन तेकवा ले तेहेन । तहिना रीणा राद्री सेहो ले
छथि । जेहेन कर्म तेहेन रोध । तही रीटमे ले समाजक
पढ़लो-लिखन लोक छथि । जखन जेहेन तखन तेहेन । ”

“से केना ? ”

सिगालीक प्रश्न सुनि अपलाकेँ सम्हारि रैनदेर रौजन-

“जहिना काजोमे लोक एलेन बगल बगि जागए जे थेलाग-
पीलागसँ नऽ कऽ अपन जिनगीक किविया-कनापक संग घबो-
परिवार रिसवि जागए तहिना दोसब दिन रौवागी सेहो ले
ब्रह्ममे नील भऽ सत किछ रिसवि जागए । बगता जोगी तँ दुनु
रैनि जागए । हृदा की दुनु एक भेल ? ”

रैनदेरक रात सिगाली ले बूमि सकन । रौजन-



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“कनी हविषा क२ कहियौ ।”

झलिा कावखानाक रैगन कपड़ ाक थागसँ दबज्जी काष्ट-काष्ट
वैग-वैगक रमूँ रैगरेत तलिा रैगदेर रैगरेत रौज्ज-

“देथियौ, सग़्ताह मास आ मासक निख । आग तावीथ एक
महीना एक डी । आ दु मासक रीटक सीमागव अछि । एकक
अंत दोसवाक आवंत डी । रौकी जते अछि से सत कटिया
अछि । जेना मासक भीतव रौगस दिसकेँ कि कहलै ? तलिा
सग़्ताहक भीतव पाँट दिसकेँ की कि कहलै ? ”

रैगदेरक रौत अरुि माग़जस करैत सिग़ाली रौज्ज-

“थैव, छोड़ू दुनियादवीकेँ । ठनका ठनके छै तँ कियो अगना
माथगव हाथ दग़ । ”

सिग़ालीक रौत अरुतो लै भेन डन कि रीटमे रैगदेर रौज्ज-

“डैयावी, आग रूमि गड़-ए जे गनती लै भेन गनतिक रौठे
गकड़ । गेन । ”

टोक क२ सिग़ाली रौज्ज-

“से की ! से की ? ”

उद्दास होगत रैगदेर रैज्ज नगन-



“डैगवारी, कहल जे तँ जते दूह तते रौष्ट अछि । जँ से ले
बहेत तँ छदैनँ निकलि दोसब छदैनै मथैत केन अछि । दूदा
उते कहक अखन सम्य षण । तँ ए एतरे कहै जे मय्यक
रीट दु वास्ता रैन अछि । एक वास्ताकेँ लोक मय्यक वास्ता
बूमि केकरो कियो छलैनँ लोकैत ले अछि आ दोसब अछि जे
अपना छोडा दोसबकेँ मय्यक बूमि ते ल अछि । वास्ताँ हष्ट
जलिा जंगन-माड़मे छलैत-छलैत डगव रैन जाग छै, तलिा
डगव बड । देल अछि ।”

जलिा लोक कोला उज्जव जखन तोतिया नलैत तखन
कावीगव ओकवा आगिमे धीपा, पीष्ट पागिमे पगिया दैत, जकवा
पागि छठर कहन जाग छै । तलिा या तँ पाखवगव पागि द
द वगडा माग छठरै ए तलिा सिगालीक कावीगव सिगलेष्ट
पीरौक गछ्छा जगोनकनि । जेरीसँ सिगलेष्ट निकलि एकठा
अपला संगी -जे गाछा पीर मत्त भ २ सुलैत डन- केँ आ
एकठा रैनदेरो हाथमे दैत मगाग खबडक । एक दम पीर
पहिन सिगाली धूआ फेकैत रौजन-

“अलले अहाँ दूनु गोले मगजगारी करै छी । एते छिननि कलैक
कोन रैनवता अछि । देखरै जे भोजमे दर्जला समान बहल
थेनिहाव एक-दूठा पव छैष्ट करै । पवमनिहावक काज छिं
पुछि-पुछि देगाग । थेनिहावक मग छिं जे थाएर कि ले ।
आग जग गतिक फन परै छनरै से केन भेल ?”



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सिगालीक प्रेमसँ रैनदेरकेँ दुख ले भेल । संगीक एहमास भेल ।
जहिया जूआन-जहानकेँ मासुबक बंगोली कथा संगीकेँ स्मरैत
आनन्द अरैत तहिया रैनदेरकेँ भेल । दुखो तँ दोसबकेँ
कहल कयैए । जँ मे ले तँ लावक संग कियो किअए अण
पति-रियोगक खेवला स्मरैए । रात मल पाड़क समए
रैनरैत रैनदेर राजन-

“ताम सहारै, ठुम्का खुशी मल जिनगीमे कहियो खुशी ले भेल
हुन ।”

सिगाली- “मे की ?”

रैनदेर- “अण रैखा-कथारै जँ एकोठा सुनिनिहार भेटै जाए
तँ आगेसँ नीक की हएत । तहिया छुदैक रेलना जँ अहाँ
सुनए चाहौ तँ जिनगीक अंतिम दिनक अंतिम पहचमे सीढ़ीक
अंतिम पौदाक रात कहए छै छी ।”

रैनदेरक रिचाव सुलेक खुशीमे सिगाली रिहल भ२ राजन-

“जहिया भतभोजक अंतिम रिह्यास टीनी होगत तहिया जँ
अहाँक मधुव राणी राणीक -अण राणी- संग मिनत तखल ले
मित्री रैनि पाथव मदुने सकत हएत । यएह ले जिनगीक ओव-
छोव छी ।”

सिगालीक रात सुनि दोसब सिगाली राजन-



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

“तेयो, अहाँ भक्त्याएन मल भक्त्या नगा देनिअं आ भक्त्या
गेजो। कनी टिकल जकाँ कहियो।”

सिगालीक रात अगि पहिल सिगाली राजन-

“सत नि तँ दम किलोक रँगदुक कलहमे ठेकेले बहे छह,
तखन हुनसल रिटाव पाखर सल भारी कोल कलहमे ठेकेलेह।
रहिला तँ कलह रँदनि दूनु कलह भकभकागत बहे छह तखन
माँठ तँ माँठिये छी।”

सिगाली- “कनी हविछा क२ कहियो।”

सिगाली- “देखहक जहिला ए दुनियाँ माँठक रँगन अछि तहिला
ल ए देहो माँठियेक छी। तँ देह रँगोले माँठ रँगए
पड़तह। रँग-रँगक माँठसँ ए दुनियाँ रँगन अछि। एकव
गिलती कवरँ माधारण ले। जहिला देखरँहक जे साते रँग
तते रँग रँगि गेल अछि जे डोवाक दोकान, जे मागयो
रँगक डोवा रँगोले तेकरो दोकानपर दजी घुमि जागए जे ए
रँगक डोवा नगए। तहिला माँठियो अछि। एक माँठि खान
रँगले तँ दोसव टिकल। ततरँ ले एक पाखर सल सकत
पतखर रँगले तँ दोसव पाखर सलक रसतकेँ पौदा कलेरँगा
लेखर -जन मिश्रित माँठि-। अछछा छोछह अगला सत गग।
लेछावा रँगदेरक अंतिम सग गजनि बहन अछि तँ पहिल
ओहिला सुनरँ लेखत जहिला सुगमितक सग कोलो दुव जागत
रँगेली अलतखर जगहपर आरि अछेकेक ओविलान कबए छेत।
पहिल अहाँ अगल रात रिसर्जन कक रँगदेर भाग तखन जे



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

हेतै से हेतै । जे जीरै से से खेनै हाथ, जे सब से
जेने जाग । ”

अतिम तीव्र निकलैत जलिया हजारा रासँ रेधन तिवानक
द्वन्द्व स्वसागवक घाँपव पट्टि हिनरैत जे सभसँ सुख जेन
कोठाम छै, जगठाम सना कवर । जाधवि परिव पासिँ पथ
ले पथावरँ ताधवि पथ पिछुँत ते बहत । जाधवि पथ
पिछुँत बहत ताधवि सोम भ२ छल ले सके छी । जाधवि
सोम भ२ छल ले भ२ पथरँ ताधवि कमलामन देखि ले पथरँ ।
जाधवि कमलामन देखि ले पथरँ ताधवि वंग रँदलैत कमल
कमलामन सँग भौवाकेँ पवाग-जानमे ओसवा नान-उज्ज्व
आचरे समेष्टि राति तबिक जीरन-कमल ओग मल्ल सदृश करैत
जग सदृश धात्रीमे सँधै यैना यमोदा अगल नाझाकेँ जिनगीक
कथा-लेखा सुना-सुना सुनलैत ।

अतिम तीव्र तिवान रा रासँ रेधन रँदलैत सकल-मेष्टि
जागल । शैत नगरैत रँदलैत राजन-

“तेजावी, दुनियाँमे हित-अपेक्षित, दोस-गहिम आदि अलको
तबहक होगत अछि, दूदा से ले जिनगी तँ ओकले जिनगी ले
सार्थक होगत जे सकलित हूँ । तबहि छोटसँ-छोट सकल
किछु ल होए । मर्यादक पहिने राग तँ सकल राग ल
होगत जँ से ले तँ जिनगी की । आग हमरा ओहना रिटाव
रोध भ२ बहन अछि जे सपनामे ले सपनाएन छौ । ओना



सगला तँ सगल छी । कोला दराग जहाजक सेव करैत, तँ
कोला मनेबिया मच्छुङक मेनामे सेव करैत । ”

जल्मि कोला रसतक जित्नामा एते रैदाँ जागत जे सत
किछु रिसवि ओकवा पकड़ैले रौरन रैनि जागत तल्मि सिपाली
राजन-

“समैपव दियान बथए पड़त । कानक गति केकरो रूँते ल
बाकाग छै । तँए अगनाकेँ ओगमे समारणे कर । ”

जल्मि भोजक राबीक टंगेवामे खाजा बथि एकठा हाथमे लल
पटक आगुमे आग्रह करैत, तेहल तगोदा रूमि रैनदेर
राजन-

“डैगारी, अहाँ तँ भागक संग, जे मागक संग अरैत ओ याव
छी तँए सकवण रूमि जे मुठ ले कह छी । ए रात आग रूँते
छी अणकव मेहनतिकेँ तागतिक रैनपव नुँठैत-छेबरैत एलौ ।
जेकर छेबोनिँ ओहो हमरे सन मन्त्र दूठा हाथ-पुवरेना ल
छै । हम किअए छुनिँ । हमरा ओही दिस हाँसीपव समाज
छट । सकेँ छन आ अणन निअममे सुबाव कर सकेँ छन । ह्मदा
से ले भेल । हम गन्ती कहाँ कतौ केरौ गन्तीक रैष्टक जे
कर्तव्य छै रएह ल केरौ । हम तँ तखन रूमिनिँ जे जखन
अगल छी एहेन बहिरौ । से तँ ले आगु-पाछु दुनु दिस भवन
देखनिँ ! ”



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सिगाली- “तेयावी, एहेन सजाए किअए भेल, मे कहाँ
कहनि ? ”

एक ठकसँ दुनु सिगालीगव नजबि बाथि रैनदेर ठकठकी नगा
देखै नगन । जहना हज्जामो मीन हष्टि कोला रिटाव जन्म न
सष्टि जागत तहना सिगाली अपवाधीक दूरी मेष्टि गेल । ल
सिगाली किछु रैजैत आ ल रैनदेर । अदा ड्यूरीक तीव
सिगालीकेँ नगन । घड़ ी देखि रौजन-

“तेयावी, आरै अलैक सम्र ले पागि बहन डी । ”

समैक अन्तार देखि रैनदेर ओहन कथाकाव जकाँ जे जिगगीक
रैथालेँ कथा कहैत । घटना-रिश्ते तँ ओहना होगत जगसँ
गठगव घटना अस्मिताव भोगल बहैत । अदा तँ की हूकव
रिटावकेँ रिटाव ले मानरैनि । तँ समाजक रसतु साहित्य डी ।
रिटाव-सुमारक लेन पाठक-श्रोताक दवरैज्जा सदति खूजन
बहैक चाहिये । समाधानक अलैको उपाए अछि ।

तँ जाधरि साहित्य समाजक सटि ले रैनि व्यक्ति-टि -
रफटि- रैलेत बहत तधरि दुनुक रीट रियगत ले बहए ओहो
अवृत्ति ।

जिगगीक अंतिम मोहक रात अंतिम मोड़गव आरि रैनदेर
रौजन-



“तेजावी, सबकाव रिलोधमे हरा उठन । हम्राँ रँवाहिनगिरी
छोड़ि लता रँनि गेलौ । हमरा सँहक जीत भेल । अगलमे
धुँधल भुँक भेल सतमे, किसान, रँगारी, बुद्धिजीवी, अगवाहीमे
धुँधल भेल । गनाकामे जान पसबन छल । रूमरौ ल केनि
जे लताक धुँधलसँ हमँ धुँधल गेलौ । उंगल-उंगल अपेछा
बहन, तीतल-तीतल दूधली भऽ गेल । जलिया तीतल रोगक
तीतल दराग होगत आ मीठल होगत । तेहल धुँधलमे
हँसि गेलौ । दूधलक सभ एले दोसवारै अँठाम धन नुँठैक
योजना रँगल । रुदा आ ले रूमनि जे त्रुगमे ठहला अछि
जे खुन कब जाग । तेले सएह । खुन केनक कियो नाँ
नागल हमर । अगला मल कँए जे खुनी हम ले छी । रुदा
सोनामे खुन भेल तखन हम केहू बहि । ”

तही रीट दर्जला तेजाव सिपाहीक प्रवेश भेल । सिपाहीकेँ
देखिते सिपाहियो आ रँनदेराटे टोक गेल । उठि-उठि सत
ठाढ़ भेल । जहनसँ निकलि सत सतकेँ देखल गेल ।

~~

ई बचनपर अगल मंतर ggajendra@videha.com पर
पठाओ ।



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



१. सज्जित कृपाव सा
सा



सत्तावासा

१



सज्जित
कृपाव सा



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवी

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कथा

नाना डायरी

माम भन् गेन छन । घबराव असगले छनहुँ, अतः नम्र
नागन गेठैकेँ रैन्दक२ दी । कर्म गेठैक दूरी अतेक छन जे
उकवा खुनै आ रैन्द कवरौक आभास तक नहि होगत छन ।
केओ धीरेसँ ब्रुकाक२ राँडुङ्ग्री रान भितव छनि आरौ त२ गते
नहि छनत । रैचा रौहव गेठैछत अछि । गति अगन रैहिनक
गाम गेन छनि । रा कही घब पूरे खाली खाली अछि । ओना
घबराव एकठाँ लोकर अछि । जेकरा ओ रैहूत निर्देशन द२क२
गेन छनि, द्वाद कलियो ओ ९ रैजेसँ पहिल नहि अरैत अछि
।

खालीगनक ओ एमामे छिँतीकेँ आरिफाव क२ रैनाकेँ छन्दसँ
आभाव प्रगष्ट करैत छी । जखन गन पत्रिकासँ मोन भवि
जागत अछि, हम छिँतीक कार्यएमामे दुर्गि जागत छी ।
मिबियन शुरु होरै२मे एखन समय छन तँए हम मोहनहुँ तारैत
अगना लेन दूठाँ रोठी रैना नी । रैचा आ गति रौहव बहनाक
कावणे हम भासम घबक प्रति एकदम नापबराह भन्गेन छी ।
एकठाँ तबकावी रैगलैत छी ओकरो तीण रैव खा लैत छी, कथला
हनफुन खा लैत छी, कथला दिनक भोजन त२ गोलैक२ दैत
छी । मोलमोल अगन निर्णयकेँ सही कहैत छनु कम भोजन
कएनासँ स्वास्त्र रैठियाँ बहैत अछि । आर के ओतेक मेहनत
क२ए, भात दानि आ रैहूत प्रकारक तबकावी रैगारै२मे किए
समय नगारी । ओना आगकालि रैड समय बहैत अछि ।
गाम जवाक२ हम तारौकेँ दूलागव बाधि देनहुँ आ हिनजमेसँ
मानन आँठा निकालिक२ एकठाँ रोठी रैन तारौगव बथनहुँ आ



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दोसब रैन२ नगनहूँ । पहिन बोठी मेकनहे डनहूँ की मुन
गेठेसँ घण्टीक आराज आएन । ओह..... के भ२ सकेत अछि,
एहि समय ?

'आरि बहन डी,' घण्टी रैजरे२ रैनाके सभुष्टिक जेन हम जोडसँ
जराँर देनहूँ, झुदा फटाफट दोसब बोठी मेक२ नगनहूँ । किए
कि गेठे खोम२सँ पहिन हम अगल सत काजक२ जेर२के
पक्षमे डनहूँ । कष्ट रैगनमे बहन बामध्व रानी भेलीह त२
गेनहूँ काजसँ । पाँट फिरे कहिक२ ओ गले घण्टीभरि समय
न२ जेत छथि । गले सँभावक सगाटाव, गणक गले पोछावा
हूकका नग भडन बहेत अछि । कोला रियगव चहिक२ रौत
क२ नी । सरिबास निर्मा हो रा माओरानी समझा, माथेमी
लतासतक हिति सत हूकका नग बहेत अछि । कहियो कहियो
हम मोटेत डी यदि ओ बाजनीतिमे होगतथि त२ खूँ नाम
कमेतथि । बामध्वरानीके अएरौक आशिकीसँ एखन हम हाथमे
नागन आँठी बोए बहन डनहूँ कि कन रैन अगल सभुष्टि मेडिसँ
घनघना उठन । 'एस कसि कसि ।' हाथ पोछित हम गेठे
दिस रैठनहूँ ।

'ओह ! केहन केहन लोक होगत अछि । एतेक नग्रा घण्टी
रैजरेत अछि की कमजोर लोकके धडकन ओत२के ओतहि रैद
त२ ज्ञाएत ।'

मोलेमोले हम रैजेत जाबहन डनहूँ, झुदा जहिना गेठेक
नजदिक पहुँचनहूँ हम अगल हाथसँ अगल केस ठीक कएनहूँ,
माडीकै ठगसँ अगल काहगव बखनहूँ आ झूठगव प्रविग झुकी
अलेत अतिथिके मोलसँ स्वागत कबरीक जेन तैयार त२ गेनहूँ
।

'ओह अगल डी ।' हम खुशीसँ रैजनहूँ, 'प्रणाम प्रणाम गान्दर जी
।' रिश्वेस कर ३ हमर अतिरादन जेन मात्र रैगारैठी नहि डन
। अतिरादनक ठग आ रौतचितक मेड, रात्रि रिशेवसँ अगलक
अनुवर्जता उजागवक२ दैत अछि । आगा अतिरादनेले हात



जोडल पतिक थिय मित्र मेरक नावागण यादर ठाठ डला ।
'रहूत दिसक रौद अपलकेँ चक्का पडल अछि,' हम छेँ रौद क
डाँगाँ कम दिस रौदगहूँ ।
'शुबमते नहि भेटैत अछि भोजी, जखन लोक काममे लागि
जागत अछि तऽ रौद....., हमर रक्तिन माहेर नहि छथि घबघब
की ।'
कुन काश्मि सभमे सँगे पठल आ तर्कशिना भेलाक कावण
यादरजी सहितक हिनकर सभ मित्र हिनका 'रकीन माहेर' नाम
सँगाधित करैत छथि ।
नहि, ओ तऽ चाबि पाँच दिस रौदगहूँ गाम गेल छथि ।'
'आ अएताह कहियाधरि'
एखन दुचाबि दिस आओर लागि ए जाएत आरौंमे, शायद २०
गतेधरि अएताह ?'
'तनु रौदगहूँ भेल ओ नहि छथि । हमरा अहाँक रौद करौंमे
हज्जी रौदगहूँ । हम आ अहाँ जतिक २० तनु गप्प मारैत छी,
यादर जी दुनु हाथकेँ बगलैत रौदगहूँ ।
'हँहँ..... हँ किए नहि, हम अमगले रौव तऽ बहल डगहूँ,
अपल रौंमे हम दु मित्रमे अरौंत छी ।'
'कथी नए एहव, ओहव करैत छी रौंमे भोजी, यादर जी
निःसंकोच हाथ पकड़ि कऽ रौंसरौक लेल अग्रबोधक देलैथि ।
हूकब आ बरहाव, आ अगणगण लोककेँ रौत नहि ठानरौक लेल
मजबूतक दैत अछि ।
'अहाँ जाति हएँ उएह छल तह रौंमार २ रा एहिँ मीनन जूनन
मेहनत कब । रौंमारकेँ नमोनामे नहि पक भोजी ।
जतेक मीठ अपलक रौतमे हएत ओतेक छलमे कतऽ रौं तऽ
सकैत अछि ।'
हूकब सपुतागव हम झुँ कया उठगहूँ आ रौंसैत कहगहूँ, मे



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

त२ ठीके अछि दूदा अहाँक हाथ एतेक ठंठा किछ अछि आर

त२ हाथला समाष्टु त२ गेन, एतेक ठंठा नहि अछि ।'

'दूदा हम जत२सँ आरि बहन जी, ओत२ रूत ठंठा ठेक ।'

ठीक ठेक ओना जलकपुवमे किछ ठंठा रौमी पडैत अछि ।'

'ओना रकीन माहेरके रिना अहाँ बहि कोना लेत जी, हमहूँ किछ
कम खोबहे जी, कोना आरपुकता एत त२ कहँ ।'

'हुन गवपथ आ रौनारौसीँ दुव यादरजीके रातके कोना दोसब
रात्रि सुनि निअ त२ हुनकव चरित्रपव सन्दरक२ सकैत अछि,
दूदा जे हुनका छिँत अछि सएह हुनकव साह छदयाके रूमि
सकैत अछि ।'

'आ कहु रौटा अगलके कत२ पठि बहन अछि ? दिरा केहन
हुनि, हमरा यादो करैत हुनि रा नहि ?'

सत किछ रूमि गेनहूँ अगल नग गप्पाक कोना सृक नहि अछि,
तखल चानु गप्पा शुरु त२ गेन, रौटा केहन अछि, दिरा केहन
अछि आ सुनाडअएह नहि ।' कोना रात सपुसँ कहि
देरँ यादर जी के आदत हुन ।

'ओना हमर गछा सेहो अगलके रौमी रौव कवरौक नहि अछि
। छलैत जी ।'

नहि..नहि यादरजी अगल त२' हम की सहीमे कथ
बारहावक२ बहन हुनहूँ हम रूमि के तौनहूँ आ पलेशीन त२
गेनहूँ ।'

नहि तौजी, एल कोना रात नहि अछि । सहीमे माएके स्यासु
खवार त२ गेन अछि ओकरे देख२ आएन जी दोसब रौव आएर
त२ दिराकँ सेहो लेल आएर तहियाधरि रकीन माहेर सेहो
आरि जएतहा तखन जमिक२ रौमर ।

यादरजी उठैत कहलैहि, 'एकठा टीज त२ हम रूमि बहन
हुनहूँ ।'



यादरजी पुनः मोहापव रौमना आ एकठा डिब्रा निकालैत
कहनाह, 'भौजी आ मित्र, आ डायरी अहाँके जेन अगनहूँ अछि
। किछु अरौब अरौब भऽ गेल अछि कि कबितहूँ जलरबी
हवरबीमे हवसते नहि भेटैत अछि । मोटाहूँ हवसबस
पठा दी अछि हम तऽ डायरी अपन हाथसँ अगलकै प्रजेष्ट
कबऽ चाहित छनहूँ ।'
यादरजी कनी माथ सुकाकऽ डायरी हमरा दिस रँझ देनाह ।
'धन्यवाद ।' हम डायरी लेत कहनहूँ ।
'ओह हव उँह कथ सन धन्यवाद, आदमे जेना गावा मिलैत
अछि तहूँ गवा मिलकऽ सेहो खुशी प्रकट कएन जामकैत अछि
भौजी ।' हव ओ जोडसँ हँसनाह ।
रकीन माहरे लोगतहि तऽ गह्मासँ जड़ि जैतहि सनी रात
ढेक ल भौजी ! ठीक छै ओ अएताह तऽ नमाकाव कहि
देखैहि, आ उँठकऽ ठाठ लोगत कहलैहि, 'छलैत छी भौजी
।'
नमाकाव !' हम हूँका छै तऽ छोडऽ अछिहूँ, हव आँर
।'
हँ हँ अरौब बहरँ अगलक सगनामे, ओ आकर्षित अछिहूँ अछिहूँ
अलैत कहनाह । छैपव आरँधवि कतेको रौब पाछु घुमि
घुमिहूँ हाथ हिनओलैहि । वयु ओतहि ठाठ छन ओकव प्रीमाके
ज्वार देखैहि आ छैसँ राहव छनि गेनाह ।
हम वयुकेँ ताना नगएरौक आदमे देखहूँ आ भितव छनि एनहूँ
।
मोह जकाँ मेठनकेँ मेठन सुन्दर डायरी मोहापव बाखन छन
। हम ओकव सुन्दरताकेँ देखिकऽ हाथसँ सहनाकऽ देखनहूँ आ
पूछा उँठनहूँ भितव सुन्दर आ सुदृढ अछिहूँ नखन छन ।
रकीन माहरे आ भौजीकेँ सप्रेम भेट



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मेरक प्रसाद यादव ।

नीटा आबूक गते मेहो जीखन डन ।

निखराक तबिका गज्जर डन ।

मेरक प्रसाद यादव एकठा एहल राखि डुधि गोब बंग, नयाँ आ
भावी मेरीब, उल्लत नगछ हूकब सपुत्र, राजर हलक अरसबलै
महर्गुर्ण आ उगुञ्ज हँसी हज्जारोमे अलग पहिचान देल डन ।
एहल नान एनरममे अगल एक छेपे सँग हमरा प्रजेष्ट कएल
डनथि । जहिया हम बिराह क२क२ आएन डनहुँ । ओ अन्ध
मित्रक बाद रिशेय तबिकासँ यादरजीसँ परिचय कबरोत कहलैहि,
' ओ डुधि हमर मेरक । ओना हम हूकका अगल मित्र रँगा लेल
डी, काज रँठियाँ करैत डुधि तँ ए ठीक कहनहुँ ल यादर जी
। '

हँ, हँ फेकेत जाड, फेकेत जाड दूदा रूमि निअ अहाँके
रातमे ओ नहि आर२ रँगा डुधि, हमरा दिस तकेत कहलैहि,
एथला समय अडि, हिनका भगाड रकिनी राहक हिनका किड
नहि अरैत डैहि । दू दिनमे अहाँ हिनकासँ उरि नहि जएर
त२ हएव हमरा कहर । '

हएव पति दिस तकेत कहलह, अहाँक रियामे एक्किठा रात
कह२के मोन करैत अडि कौराक टोचमे अनावकनी । आर
हमर परिचय ठीकसँ कवाएर रा थोनि दिअ अहाँक सभ पोन
। '

'ठीक डैक...ठीक डैक ...कहि दैत डियेक,' पति हथियाब बथेत
कहलैहि, 'एहि नयाँ टोड । गलाड जेहल मेरीबक नाम अडि,
मेरक, नहि नहि मेरक प्रसाद यादव । ' यादरजीकेँ मेरीब
तामन देखिक२ हमर पति हँसैत कहलैहि, 'दूदा हम सभ हिनका
कहत डी यादरजी...'

'दूदा अहाँ टाली त२ मेरक मेहो कहि सकैत डी भोजी । '
यादरजी बोलेत कहलैहि । ओना हम बिना कहल अगलकेँ



मेरक छी आ जखन जखन एहि रकीन माहेरसँ मोन उरिया जाए
रिना कोना सँकाएके हमरा नग आरि सकेत छी । ' यादरजीके
कहनाक बाद जोडसँ हँसी रँजवत ।

ओहि दिन अछि आ आबूक दिन । २३. मानक नयाँ समय रित
गेल सत मितके केने उज्जव तऽ गेल, सत एक दूठा नाती
पोता रँना तऽ गेल छथि । हृदा हृक स्पर्शता, हृकव
उन्माद हँसी अथवा जहिनकेँ तहिना अछि । कोना समारोहक
ओ जान होगत छथि । जतऽ ओ रँसथि छथि ततऽ हृकव
अगन रँगनमे लोक ओहिना आरि जागत अछि । हरेक उमेरक
लोक हृकव रातमे गँधेछ लैत अछि । कहियो ओ कहैत
छथि, 'ओ जहिनकेँ हँसी ठहक तऽ आगाँ रँठरैत अछि । मित्र
ओ नहि होगत तऽ जहिनकेँ उज्जव आ कबख रँनारँसमे कोना
कमब नहि छोडल अछि ओ समय ? जिन्दा आ हृदयमे कोना
हृकव देखागत अछि कनीकान जेन हँसि आ रँजि लैत छी ।
हृकव तऽ टिपुक गहाड अछि आगाँमे ठाठ, नहि जानि कोन
समय उगवसँ रौनारैत आरि जागत हृकव तऽ दु गज जमीन आ
किछ मित्रक सवण ? ' रात हृकव सावगर्भित आ सय प्रतिशत
सही होगत छन , हृदा हृकव ओ गम्भीर रियस रिस्कून नहि
जँटैत छन । केओ नहि केओ कहि दैत छन, 'कि यादरजी
अहँ सभक राणी रँजऽ नागन छी अहाँ तऽ हँसिते नीक नलैत
छी । '

ठीक छै चलेत छी । ' यादरजी जखन गम्भीर होगत छनाह
तऽ उठिकऽ जएरौक जेन उद्यत तऽ जागत छलैथि हृकव
हृकव एकठाँ प्रविग हृकव नरैत कहिथि, ' नमकाव । '
हृकव एहिना उठिकऽ जागत देखि नलैत छन जेना हृकव
दुःखक बागकेँ किछु देनक अछि ।
ओ आगयो ओहिना उठिकऽ चलि देनाह, हम अणन कएन गेल



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हलैक बरहबलैकै ठैठैगन बहन डनहू । एतेक दिनप ओ
आएन डनाह हमर पति सेहो एतइ नहि डनाह, हमर कोला
रात हुनका खवार रा अपमान जकाँ तइ नहि नागन । एहि
रिझियामे डुरैत हम डायरीकै उठाक अपन डोवमे बाथिक
सुतराँक तैगारी कबइ नगनहू ।
आग २० गते अछि । हुनका आगए आरि जेएराक डैहि ।
कोन रैसन अरैत छथि एकब सुचना सेहो ओ देल छलैथि आग
कए दिनक बाद हमर भासम सब चमकन डन । सब तइ ठीके
डन किछु रिशेय देखाई जेन हम नगन दुटावि पुन आ पात
तोडनहुँ ओकरा पुनदुताक कप देलिये आ एकठा गिनाममे किछु
पाथि बाथि पुनदुताकै सजा ओकरा डायरीकै ठैरुनपव बखनहू
। पुन तइ आथिब पुनले नोगत अछि । माथमे नगाँउ रा
ठैरुनपव बाथि, निखाव तइ आरि जे जगत अछि । सुनपव
रैठेठत जाबहन नापवराहीकै तकोनक जेन हम बाथि देल
डनहुँ, केना ल केना हमर चानमे सेहो तेजरी आरि गेन डन
। अरुतेतन मोनमे रैसन एकठा पतिक प्रेमे तइ कहन जे
सकैत अछि । रैठा सबपव नहि अछि तइ कहियो कहियो
अथेब अरुनामे सेहो हरा अरुनाक आभास रा दोसब ठगन
कही तइ आनन्द नोगत अछि । अरुत तइ बहन डन हम
रैव रैव मेन छैट दिन तकैत डनहुँ । सप्री रैजिते हम एक
धागमे मेन छैटपव गहुँट गेन डनहुँ पतिक झूठ उदास देखि
हम असमझसमे डनहुँ जे हिनका की भेलैहि अछि ? आथिब
पुछि जेनहुँ, ' की भेल अछि ? मोन तइ ठीक अछि ? '
नहि' उदामी भडन जेवर भैठेन,' थाकन डी कनी आवामक
निअ रा हाथ झूठ पो जे तइ भोजन नगाएर,' हम चाह दैत
पुछनहुँ । पति चाहकै ठैरुनपव बाथि देलैहि आ ठगन सौंस
भोडैत जूता सहिते शोकापव पड़ि बहनाह । की तइ गेन
डैहि हुनका कतहुँ रउछेनस तइ नहि तइ गेन डैहि हमरा
रैतवास चिन्ता सब जेनक ।



‘हमर मित्र सैरक प्रसाद यादर सखा अछि अहाँकेँ,’ किछु देव
चुप बहनाक रौद शुक कएलेहि । ‘सखा किए नहि बहत ?
अहाँ एना किए गुडि बहन डी एखन’ एहिमे पहिले हम
अगल रौत पुवा कबितहुँ एहिमे पहिले निर्मेष दृष्टि लेत
धावधराह कहऽ नगनाह, ‘सैरक प्रसाद यादर हमरा सतक प्रिय
मित्र, पतिक लावाएन अथि किछु अलहोषीक सकेत दऽ बहन
हुन ।

हमर पुवा शिबीर काणमे लेखीत तऽ गेल । ‘हमरा सभसँ
कसिकऽ छल गेल साझी..... ।’

‘की ?आकाशिपसँ खसराक पाव आरि हमर हुन । हम
किछु कहऽ छल बहन हुनहुँ ह्मदा किछु खसराक अरुहामे हमर
पति कहाँ हुनथि, ओतऽ मात्र रौजि बहन हुनाह, ‘ह्मकव माय
रिसाव हुन, देखराक लेन अहिमक जीपसँ आरि बहन हुनाह ।
ह्मकव आदत छैहि, ड्रागलबकेँ ओ पाछु रैसा देनाह आ स्वयं
जीप ड्रागल कबऽ नलीत हुनाह । ओना ओ ड्रागल रैठियाँ
करैत हुनाह, ह्मदा ओहि दिन नहि जागल की लेन, शायद
सडकपाव करैत एकठाँ मानकेँ रैछएराक टक्कबमे ह्मकव जीप
उल्लैत गेल आ खरियामे खसि गइन ।

ड्रागलबकेँ तऽ कनी मनी छैल नागल ह्मदा सृष्टिसँ भातीमे घुमि
गेनाक कारा यादरजीकेँ फँसल सुनपर मून् तऽ गेल । एखल
ह्मकव घबसँ आरि बहन डी । दिराकेँ तऽ हाजे नहि गूड ।
ह्मकव माय लेचावी कानि कानिकऽ अथमक तऽ गेल हुन । १
बर्यक कोला मवरौक उमेव लोगत अछि । तीस तीसठाँ रचा
अछि । की छएत ओकव ? हे भगवान अहाँ चुनि चुनिकऽ
लोककेँ नऽ जागत डी ।

ह्मका रैजा तऽ नहि सकेत डी । ‘कानि अछि ओतऽ छल
जाएर, लोककेँ मानुरला मनहमके काज करैत अछि ।’



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

‘सुनु हमरो किछ सुनु’ हमर रौत नहि सुनि बहनाक काका हमरा
तामस आसि बहन छन । हुनक मूँ कए गतेक२ भेन छन ।’
‘१ गते क२ ।’

‘१ गते क२ ...एहि १ गते क२ ।’ हमर आँखि आँसु आ
रोमाञ्चसँ भडन जा बहन छन । ‘है.. है.. गएह १ गते क२
।’

‘हृदा एषा कोणा भ२ सकैत अछि हमर मतनर एहि १+ गते
क२ अहाँक अश्रुपट्टितीमे ओ अगना घबराव आएन छनाह आ एही
ठाम रौसन छलैथि ... । हमरा संग रौतेछित कएल छलैथि ।’
‘की कहि बहन छी अहाँ ? ...होशिये त२ छी, हुनकर मूँ
फागुन १ गते भोवमे भेन छन आ १+ गते भोवमे अश्रिमो
सँकाव भ२ गेन एहि रौतक सयकड़ । लोक पराह अछि ।
अहाँ कहैत छी जे १+ गतेक सँसमे ओ आएन छनाह । जे
मोहमे आएन से कहि दैत छी । किछ सारसो तसारसो बहैत
अछि की नहि ?’

हमर गति हमरापर अनाप सनाप कहि बहन छलैथि हृदा, हमर
शरीर एहि रौतकेँ स्वीकृत्यके पक्षमे नहि छन रौतक सत्ताक
तना एखन मात्र हमले छन हमर हाथ पएव काँपिक२ ठँढा भ२
गेन छन । गान्धरीजीद्वारा पकबन गेन हाथक अश्रुतर हमरा
रोहोशीके अरुन्धामे आनि देल छन, हृदा हमरा सत्ताक प्रमाण
देनाक छन । शक्ति जमाक२ हम कहनहँ, ‘हमरा रँठियाँ
जकाँ सारि अछि ओ १+ गतेक सँस छन ओहि दिन हम
दुबँरनाकेँ हिमारी देल छनहँ हमर रौतपर विश्वास नहि हूँ त२
बघुनँ पछि निख । हुनका जागत समय ओहो गेठपर ठाठ छन
। उएह त२ गेठ रद्द कएल छन ।’

हँ मालिक मलिकानि ठीक कहैत छथि हमर नयाँबाबकेँ ओ हाथ
उठाक२ ज्वार मेहो देलैछि । रँवडापर ठाठ बघु हमर



रातकै प्रष्टि कएनक । 'रूदा एनाकोना भ२ सकैत अछि ।'
।' पतिपव एथला अरिग्रामक रौदन छान छन । तखन
हमरा एका एक यादरज्जीवा देन गेन डायरीक सवण आएन, हम
दौडैत डोव दिस रैठनहुँ ओ डायरी एथला ओहिठाम बाखन छन
। खबखागत हाथसँ ओहि डायरीकै निकानहुँ हमरा हाथमे छन
हमर सवताक प्रमाण ।
ओ हमर पाछु आरिंक२ ठाठ भ२ गेनाह ।
देखु ओ डायरी यादरज्जी अगल हाथसँ हमरा देल छलैथि ।
दुगध दिसक रात अछि डायरीक पन्ना उल्टैरैत हम कहनहुँ
हमरा अहाँकै सँगायितक२ देन गेन डायरीपव हूकब हस्तक्षर
आ १+ गते लिखन अछि ।
ओ बोमाशक रात सुनिक२ हमर पति चित्रक दुःखसँ उरैविक२
एहि सोचमे डुरि गेलैथि जे मूक रौद ककरो आमेकै एहि
प्रकाले कतहुँ ज्ञाएँ आएँ सम्वर अछि । की आजूक हागमे
केओ एहिपव रिग्रामक२ सकत ? रूदा जतेक ओ सव अछि
यादरज्जीकै मू १+ गते भेल अछि, ओतरे निरिवाद सव अछि
हाग्वन १+ गतेक साँस हमरा घबपव हूक आएँ, जेकब सवता
ओ नाम डायरी प्रमाणितक२ बहन छन ।
हमर पति श्रेष्ठासँ डायरी सहलौलैहि । पहिन पन्नापव लिखन
रकीन माहैँ आ भोजीकै सप्रेम भेटै । मेरक प्रसाद यादर
।
यादरज्जीक नाम देखिक२ ओ प्रणः दः खित भ२क२ कहनाह,
'हमवासँ भेटक२ जगतहुँ चित्र, एकठाँ सवना छोड़ि क२ गेनहुँ
मात्र । ओ एक एकठाँ पृष्ठकै एना उल्टैरि बहन छलैथि ओकब
मध्य हूकब चित्र रैसन हो । रूदा की ! तितव पन्नापव
जेना घड़ि ककि गेन हुँ । हलैक पन्नापव एकहिठाँ गते
लिखन छन हाग्वन १+ गते आ मात्र हाग्वन १+ गते



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

००

२



संस्कारावली ना

पाठन:

प्रयाग बाजक शिर कोष्टिक नावायणी आशिम । गंगाकात मे एहि
आशिमक अश्वपाम सौंदर्य डेक । पुराविकात गंगाक कम कम डन
डन धारा रैहैत डेक । एहि आशिम म सँसले रँगन मे एकठा
हुसक मलैया डेक ,जे रौराक प्रेम कृष्ण म प्रमिह डेक
। ओहि कृष्ण मे एकठा साधू नगभग रावह रैवथ म बहैत डेक
। साधू रैव रूठ नलोक डेक । सोन मन उज्जल केस आव पौष
पौष दाउरी आ मोड । साधू केकरो म रात बहि करैत डेक
। हँ भोले चाबि रैजे साधू गंगा नान करैत डेक आ घँटे गंगा
कात मे रैसन गंगाक कम कम डन डन डन क रैव धान
म देखैत बहैत डेक । दु मान पहिले तक साधू कतौ छनि
जागत डलोक ,कअएक दिन तक गायरै बहैत डलोक दूदा एकर
दु मान म कतौ बहि जायत डेक । रैस नावायणी आशिम मे
कोला समागम बहैत डेक त अरु कतौ कोला कोन मे
रैसन प्ररचन प्रलैत बहैत डेक ।



एहि चारि पाँच दिन म साधू कतौ नहि जागत ठेक , भवि दिन
कृषी मे पवन बहेत ठेक । प्रायः रीमाव बहेत ठेक । उठियो
नहि होयत ठेक । बाति रीवह रोजे साधू क रीव मोन खबार
त गेलैक , नलैक आग नहि रैचते ? कियो नग मे नहि
ठेक । ओकवा ठेहे के ? कृषी मे ह्मक रीहवि रूत ठेक
। दूरी ह्म ओकवा रूत रूत तकि बहन ठेक ।

साधू कबोठे ह्मवक । ओकवा मास पछेन पव ओहिना सरैठी दृष्ट
देखाय नगलैक । ओ मोटेत अछि कियो ओकवा महामे कहैत
ठेक आ कियो ओकवा पागन कहैत ठेक । कियो ओकवा अदव
मे ओकव दुःख नहि देखैत ठेक । ओकवा देखि सत हँसैत
ठेक ह्म ओकवा लोकक उपेक्षाक कोला धान नहि बहेत ठेक
। ओकवा याद पवलैक , "एकदिन माय रीजा क कहल बहेक , ले
रैऊआ , गवरीक डुष्टी मे रीहिक मासुव चलि जे । , माय
आहा सली कहैत छी । हम कालिये नानगज चन जायब , हम माय
क कहल बहियेक । ठीके रूत दिन त गेल रीहिन म भेटै
केला । आ सली मे हम बोले रीहिक मासुव नानगज चलि गेलौ
। ओहि समय हमर आग्र पदरह मोनह रीवक डन होयत
। दू मासक गवरीक डुष्टी बहेक । दू मास ओहि बहि गेल बनी
। जेठ मास बहेक । बोहिया आम पाकय आगन बहेक । सत रैचा
रूत आमक गाडी मे जखन तखन जायत बहेत डलैक । केथला
क रीहवि ठेक त रीजे रैच सत गाडी दिस भालैक । हमर
ओही रैचा सतक संग गाडी भागग डलियेक । ओहि अहव
रीहवि मे ले सविता म भेटै भेल बहय । सविता हमले रीहिक
एकरी ह्मकक रैठी डलीह । सयंक हमरा रीहिक ननदि बहय
। सविता तेवह दोदह रीवक डलीह । एक दिन सँम मे रीहवि
उठलैक । सतक संग हमर गाडी दिस भागलौ । गाडीक दृष्ट रीव
मामोहक बहेक । रीहवि ततेक पौष बहेक जे एक गाड दोसव



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

क' छलैक । सभ गाढ जेब जेब स' हिलैत छलैक । टाककात
आम भठ भठ खसैत छलैक । सभ गिया पुता दौड दौड क'
आम रिडैक । हमरू खर दौड धुग कबी । रैछा सभ जिरले स'
भठ शैद, सुलैक तिरले दौड नगलैक । एक रैब एकठा आम
खसलैक । भठ शैद, सुनिते हम उरले भागलौ । जहिना हम आम
उठारैय नगलौ तहिना हमरा स' पहिल सवितक हाथ आम पब
पबलैक । हमर हाथ सवितक हाथक उपर पबन । रैबीकान तक
ओही हातत से बहलौ । रैबीकानक रौद कोकिन कंठी आराज
सुनलौ । यौ, गान्ध, ३ आम हमर भेन । पहिल हमर हाथ आम
पब पबन अछि । हम कहनियनि, सत कहलौ ! अलीक आम भेन
। रुदा हम तखन स' दौबिते छी रुदा एकैठा आम हमरा बहि
भेन अछि । खानी हाथ जायसँ त रैबि की कहती । कहती
तोवा कोला ब्रुबि बहि छह । एकैठा आम अगितह त कम स'
कम छैनी त रैबितैक, ते ३ आम हमरा द दिअ । सविता
रैजनीह, यौ गान्ध, एहन रौत कियेक रैजेत छी । एकैठा
आम न क जायसँ त भुँज्जी हँसतीह बहि ? अगना मोबी स'
ओ दमछी आम हमरा देननि । हमरो मोन प्रसन्न भ' गेल । ओहि
दिन स' सविता स' सभ दिन गाढी से भेठे होमल नागन । आर
सविता स' भेठे कवय हम असगरो गाढी जाय नगलौ । गाढी से
आओव छोडी सभ बहैत छलैक । गाढी से कएक प्रकावक खेन
सभ होयत छलैक । डायि पता, देव सिंगी, करछी, पट्टी
, कोआ रूठी आ पोष्टवस । हुनके सभक संग खेनायत छलौ । एक
दिन देव सिंगी खेन प्रावसु भेलैक । एहि खेन से सभ देव
रैलैक आ एकैठा सिंगी रैलैक । सिंगी जहिना जहिना देव
सभ क तकल जाय, ओ देव सिंगी रैनि जाय आ दूनु मिलि
आर तारै सुकल कलैक, एहिना जे भेन जायक ओ सिंगीक
संग 'भ' दोसब क तलै । अत से जे पकवाय ओ सिंगी
रैलैक आ रौकी सभ देव रैलैक । हम सभ देव रैनि बुकाय



गेलौ आ एकगोष्ठा सिगाली रँगनाह । सत जतय ततय ब्रकाय
जेन जेन । कियो कोला आमक गाढक अठ ये , कियो गाढक
सुबझूँत ये , कियो कतौ त कियो कतौ । हम देखलौ जे
एकठाम रँहूँत धाणक पुआनक ठान बहेक , हम उँसले ब्रकाय गेलौ
। एकठाम देखनियेक तीण चरिठा ठान मँथले मँथले बहेक , ओही
ये दोगी सेहो रँगन बहेक । हम उँसले रिदा भेलौ । ओही
दोगी मँ सविता हमरा ओगिवा केननि । हमर ओही दोगी ये
सविता मँ मँथ ब्रका बहलौ । पहिले त सिगाली दिस धाण बहे
झुदा धीले धीले आगे जेना देह ये बोमाट होमय नागन
। मोष ये एकठा अत्रात आनन्दक अत्रतर होमय नागन । दिन
दिनाग पब जेना नमा चठन जायत छन । सवितक डाँव पब
हमर हाथ अनायास छनि जेन आ धीले धीले हाथ ह्रका पीठ
पब छनि जेन । सविता सेहो हमरा पाखुँव पब अणन माथ ध
देननि आ रँसुध जकाँ अणन हाथ हमरा गबदन पब ध देननि
। हमर मोष घरबाय नागन आ ओही झुदा ये सविता क अणन
डाँती मँ मँथ देनियनि । सविता एकोवती प्रतिरोध नहि केननि
। एही रीट सिगाली सत पहुँचि हला कवय नागन जे दूँठी टोव
मंगहि पकवायन । दुनु क सिगाली रँगन पबतेका हम दुनु मंगहि
सिगाली रँगलौ झुदा हमरा त किछ देखेले नहि कवय । एथन
तक हम मदहोशे बनी । रँमेले नहि कवय जे कतय मँ की भ
गेलौक । देह एथला कोला अत्रात आनन्द मँ खब खवागत छन
।

बाति ये भोजन करैत बनी झुदा मोष कोला आनन्द मँ
आनन्दित छन । रँहिन कएक रँव रँजरौ केननि जे एना
मथसुन्न जकाँ कियेक छन । गुँटे डियन किछ त जरौर नहि
दैत छन ? मोष ठीक छन कि नहि ? हम कहनियेन , रँहिन



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मोण त ठीक अछि, कलक माथ दुखा बहन अछि । खा कय
सुतय छल गेलौ । नौद की होयत ? खानी रौह दृष्ट दिमाग
मे घुमैत छन । एहि मं पहिले एहि तबहक अश्वत्थर कन
कहियो भेल छन । ओ आनन्द सखा होयते मोण आओव
आनन्दित त जायत छन । कहूना क नौद भेल ।

दोसब दिन कोला काज मं सविता रहिलक घर आयन डलीह
। रहिल भणसा घर मे कोला काज मे रात डलीह । सवितक
नज्जवि हमरा पब पबनि । पहिल त कलक नज्जा गेलीह द्वाद
पुनः हमरा कहनि, यौ, पाहुन, भुङ्जी कतय छथि । हम
भणसा घर दिस गिवा केनियनि । ओ रहिल मं जोवन मगनि
। रहिल एकठे कठेरी मे कनिक दली जोवन लेन देनथि । ओ
जाय कान कहनि, पाहुन, आग गाडी नहि जेरेक ? हम
कहनिथे, भोजन कयनाक बाद रहिल गाडी जाय देतीह
। ओहि दिन तीस रोजे क बाद गाडी गेलौ । एखन गाडी मे
दोसब कियो नहि आयन बहेक । सविता मं ओहि किछु गप्प
होमय नागन । हमरा पुढा पब कहनि जे पठय मे मोण रैव
नलीत अछि द्वाद गति रैव कमजोर अछि । गाम मे कियो
पठरे राना नहि छैक । सविता रक्षा नरम् मे पठेत डलीह । हम
ओहि समय गायन अर्थात् मैथिलि मे छल आयन बली ।

दोसब दिन मं हम सविता क गति पठरैव नगनिथि । हम
रैवत मलायोग मं पठरैत डनिथि आ ओहो थूँ मोण नगाके
पठेत डलीह । पठरैत कान हम कतरौ डरैत डनिथि ओ
हंस नलीत डलीह । हुनका हमत देखि हमरो हँसी नागि
जायत छन । एहिना मे दस पन्द्रह दिन आओव रित गेलैक ।
एक दिन हम गाम रिदा त गेलौ । जाय कान सविता
भेठे कवय आयन डलीह । याद अछि एकांत पारि कहल डलीह
, यौ पाहुन, आर कहिया दर्शन हेतैक ? गाम जाकय त हमरा



सिमासिमे जायरे ? सविताक आँखि ठरैठरौ गेल भवनि । एकठा
कोला अदृष्ट आकर्षण बहेक जे हमरा दुनु क एक दोसब दिस
आकर्षित करैत छन । हमरा गाम जेराक मोन नहि बहय छदा
हुन फुजि गेल छन ते जाय पवन । हम सविता क कहनिमनि
हम शीघ्रे आयरे ।

गाम आँखि पवाते दविठंगा चन गेलौ । उतय मोन त नहि
नागे छदा एक दु दिसक राँद पठनाय पब धाँस देरैय नगेलौ
। पठाय एकठा साधना ठेक । साधना मे जतेक निपु बहे ठेक
साधक कातदण्माव हन भेटैत ठेक । हमछ एकसान कतौ नहि
गेलौ आ अगल पुवा धाँस पठाय मे नगेलौ । एहि एकसान हम
सविता सँ सेहो संपर्क नहि कएन

। मैथिलिक पर्वका सप्ताह त गेल । दु मासक हेब छुट्टी त
गेल । हम अगल गाम आँखि गेलौ । एक दिस माय क कहनिमनि
जे एक सान त गेल रहिष क भेट नहि केनियेक अछि से
नागगज जेराक मोन होयत अछि ? माय तुवत आँका देननि
जे रहिष क गाम छनि जाय जेन । दोसब दिस बोले नागगज
गेलौ । साँय मे नागगज पहुँचनई रहिष रँव प्रसन्न भेलीह
। साँय सँ सविता सँ भेट कवय जेन मोन छुटपुट करे छदा
सविता भेट भेलीह दोसब दिस । सरौले ओ रहिषक अगला
अयलीह । हमरा असोवा पब रौसन देखि हिसका रँव खुशी भेलनि
। एकठक सँ हमरा दिस तकैत बहथि । हमरो नजरि सविता पब
गेल । ओ नजरि मुका जेननि । सविता क देखि हम त अराक
त गेलौ । अय एक सान पहिल जे सविता हुनक कोठि भेलीह
से आँखि अछि रिकसित हुन त गेल छथि । जे सविता पहिल
एकठा ब्राक पहिबल बहेत भेलीह से आँखि उठली उठल भेलीह
। टन सविता आँखि गतीव त गेल छथि । हुनका देखि हम



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हवर्षा गेलो । सहसा हमरा झूठ स निकलि गेल ,आँउ ,सबिता
 , अहीक राँठ हम बातिये स तलेत छी । सबिता रँजनीह
 ,यो पाहुन ,एके मान ये आहाँ मूठो राज्या नगलो अछि । एहन
 हमरा दिस धाँस बहेत त एकेछी समाद दि तो ? उ तआग
 बोले मदन भागज्जी कहैत छनथि जे सँस ये हमर माव
 कमल अग्रवाल अछि । जहिसा हम अहाँक नाम सुनलो ,दौडन
 आयल छी । सबिता हमरा माफ कक ,गमती भ गेल । उना हम
 गाम स अहीक भेटे कबय आयल छी । सबिता दूग टाप अगल
 अगला टन गेलीह । एहिराँट एकछी घटना भ गेलीक । हँ ,घटना
 कहक छली । रँहिन कहनि ,कमल ,तु आरिये गेल छह ,हमरा
 दु टाबि दिस जेन गंगा नाल कबय सिमबिया जाय क अछि
 । केकवा पब घब छोडलैक । तु बहरैत त हम दुनु गोछी
 निश्चित भ जायसँ । तोहब भोजन तारै सबिता रँगा देतह
 । हम हुनका माय क कहि देलियनि अछि । उना रँहिन बहि
 बहती से सुनि नीक बहि नागल झूठ पता बहि एकछी अदृष्ट
 कोलाँ भेटि देह ये रोमाँट उगेल क बहन छन । बोले रँहिन
 मिसवक सँग गंगा नाल कबय सिमबिया टन गेलीह । रँहिन बोले
 हमरा जेन भोजन तैयार क देल छलीह । बाति ये ठीक स
 गौद बहि जेन छन । दस रँजे नाल केला । तपेष्टात भोजन
 क सृति बहलो । टाबि रँजे उठलो आ रँहाव निकलि पोथरिक
 मोहाव पब छैनय नगलो । सूर्यास्त भेलाक बाद घब लौटलो
 । सबिता कलक कानक बाद अग्रलीह । दीप ज्वा हमरा नग
 रँसलीह । हम कहनियेन ,आँग त आहाँ अगला पाहुन क एको
 रँव थोजो बहि केनियनि । उ कहनि ,नग यो पाहुन । हमरा
 माँ क रूमन डलोक जे दिसक भोजन अहाँक जेन भुँज्जी रँगा
 क गेल छथि । उना हम आयल बली त आहाँ स्वतन बली । हम
 घुमि गेल बली । सबिता खेब पडनि ,राँज्जु ,की थायसँ ? आहाँ
 जे खुआयसँ सेह हमरा जेन अमृत छेक । सत् पूछी त अहाँके



देखिये क हमर प्छे भवि जेन । यो पाहुन ,कतेक सुठ
रैजेत छी । सविता भोजन रैगारैग तनमा घब छनि गेलीह आ
हम छत पब जा घुमय गेलौ । सविता एक पछीक उगवान्त छत
पब अगलीह । हम आ ओ ,पछिया रिद्धा एकहि ठाम रैस गेलौ
।

पुर्णिमा दिन बहेक । टास अगल पुवा प्रकाशे पमावि देलें छनथिन
। रैसतक मादकता प्रकृति मे पमवत छलैक । आमक स्वर्ण
टाककात पमकैत छलैक । भोवा गुंजायमान केल छलैक
। कोयलीक कू कू रातरैवण मे मिठास भवि देलें बहेक
। केखला क दक्षिण परण मंद मंद रैहत छलैक । शान्ति रागु
छलैक । दुष्टी छदयक धवकनक आराज हमरा दुगध गोष्टी क
रैमा बहन छन । हम दुनु गोष्टी पछिया पब रैसत छी । मनगानित
जोव सँ छनलैक आ सविताक ओठनी उबि हमरा देह क साँपि
देनक । हूकब केमक लष्ट हूक नान नान कोमल कपोल पब
नहरि मावय नगननि जेना मेघ टास क ठकि दैत छैक । हम
सविताक ओठनी हूका माथ सँ ओठ घुँघरै रैना दैत छियेन आ
हूकब दुनु कपोल पब अगल दुनु हाथ द ओहि टास क
निहालैत छी । सविता एक रैव हमरा दिस तकैत छथि आ नजबि
मुका लैत छथि । हूक ३ कप हमरा एतेक आदोनित केनक
जे हम अगला क नहि बोकि सकलौ । हूका अगला कलेज सँ
सठी जेलियनि । रैवीकान तक एहिना हूका अगला कलेज सँ
सठेल बहियनि । सविता अगल दुनु हाथ उठा हमरा पबदनि पब
दय अगल माथ हमरा छदय पब समर्पण क देनथिन । नागन
जेना टास क मेघ साँपि देनकै ,पुवा अन्हाव त गोलेक
। हमर मोन जेना अगला निगनि सँ रौलव होमय छैत छन
। ओही समय मे रैसक सुवद्ध सँ एकेरैव पञ्चक समूह कोनाहन



कवय नगलैक । हमर चेतना घुमि आयन । सविताक रात त
मोष क आँव ह्वि क देनक । ओ हमरा जगि पब अणन माथ
द कहननि , प्रियतम , टास मे आहाँ की देखेते छियेक
? टासक प्रकामि देखेते छियेक , टासक झुकावले देखेते
छियेक । सविता पुनः कहननि झुदा टास मे ओ दाग देखेते
छियेक । सविताक रात हमरा अतबामो क डू जेनक । हम
कहनियनि , प्रिये , ओहि टास जकाँ हमरा टास क दाग नहि
नगलैक । हमर टास त ओह टास सँ रैसी चमकते । हम राँवी
कान तक हुनका माथ मे अणन आँखि चनरैत बहनियनि
। आकामि मे टास हमरा सत क देखि ह्वि त गेलैक । पक्षी
सत जे कलक कान पहिल कनवर करैत बहैक अणना थोता
मे नीत त गेलैक । जेना पक्षी सत क हमरा प्रेम पब
रिझैत त गेलैक । रातरैवण मे निबरता पसवि गेलैक ।
नीना आकामिक नीटा मात्र हम आ सविता । कोला शैद नहि
। कोला आराज नहि । मात्र हमरा दुषक सँसक आराजक अणतुति
होयक ।

हम दुष प्रपतसु भेलौ । झुदा सविता हमरा जगि पब अणन
माथ द आकामि दिस तकेत बहनि । हुनका माथ क सलारैत हम
पुछनियनि , सविता की मोटेत छी , की देखेते छी ? ओ कहननि
, प्रियतम , हम रहुत दुष ईमष्टिमागत ओहि तावा क देखेते
छियेक । हमरो जुरैत ओही तावा जकाँ ईमष्टिमा क बहि जायत
। ईमष्टिमागत ओही तावा जकाँ हमरु एहि सँसार मे ल बहि
जाय ? सतक धास त मिनमिन टास पब बहैत छैक । यौ
पाहुन , हम आग नीक कएन की रैजाय से हम नहि जलैत छी
झुदा हमर लोम लोम अहाँक समर्पित अछि । आरै ओ जिनगी
अहाँक संग , नहि त



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

होव एहि देहक स्पर्श मूल कबतैक ।

हमर हृदय टिकोव क ठूठन । हम अगण प्रियतमाक झूठ पव
अगण हाथ ध देनथिनि आ हुनका अगणा करेज म सँ सँ लेनथिनि
। प्रियतमा अझ एहि रात क ठेठ राहिन जेरे जे प्रियतमा
जोवि एहि देह पव मृच्छाक रस चढतैक । सविता सेहो हमरा
झूठ पव हाथ ध देनथिनि । सविता खुशी म हमर गवदनि ये दू
हाथ द नुनि गेलीह । ”

दू रँव प्रेम । प्रेमनिगन ये दू डुरँन । तेसर दिन रँहिन
रँहना गाम अगनथिनि । एक सन्तान के रौद कमान गाम चलि
गेलीह । बिजुल मिकननि । प्रथम प्रेमी म पास केननि । गाम म
पठना आरि गेलीह । पठना साँझ कठोरज ये नाम निथेनाह
। अगणा गति म जिगगी चनय नगलैक । कमान पठाँज पव धान
देरँय नगलैह । रीट रीट ये सविता म पत्र द्वावा गप्प होयत
बहनि । सविता सेहो पठय पव धान देरँय नगलीह । एहि
तबहे समय रितैत गेलैक । कमान पठना ये एम् एम् सी ये
पहुँचलैह आ सविता सी एम् कठोरज ,दबँगा ये री ० ए ० ये
पहुँचलीह । सवितक पिताजी मिने रिवाज ये काज करैत
बहनि । ते सविता दबँगा ये नाम निथेननि । दूधक रीट पत्र
राँहैव अरि गति म होयत डननि । एहि रीट कहियो कहियो
कमान दबँगा आरि सविता म कठोरजक पक्सिब ये भेटै क
जागत डनथिनि । दूधक रीट प्रेम प्रसंग अरि गति म चलेत
डलैक । सविता आरि गनारक कोठी रा अरि रिकसित हुन नहि
डलीह ,आरि ओ गनारक पूर्ण हुनायन हुन डलीह ,पूर्ण नर यौरणा
अ कमान सुन्दर ,सुशील हारक



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

एकरेव महामो कबोछे हेबरौक प्रियाम केनक ह्रदा निवर्थक
। देह मे मात्र अस्मिन्नेष्टा शैव छैक । एकरेव जेव स निःश्राम
जेनक आ कलक ह्रिब तेन । श्रमः ओकरा मास पछेन पव
छनछि जकाँ दृष्ट घुमन नगलैक ।

“कतेक श्रुति स जीर्ण रितेते बहय । सविता स प्रेमिका
तेतेन दुन जिमकव प्रेम्णा स सत किछु सुन्दर गति स छलैत
हुन । प्रेम आ कर्तव्यक रीच सुलैत नहि छलौ । सुन्दर ठग स
समय रितेते हुन । एमो एमो मे रिश्तेरिश्तेनय मे प्रथम आगन
बली । पछेना साँझ कठलेज मे राख्ताक पद पव आकठ त
गेन छलौ ।”

कमानक प्रेमक सफलता स सविता श्रुति बहैत छलीह । दुनूक
सर्पक सुत्र जुष्टन हुनि । सविता सेहो री० ए० क गेन बहयि
। सविताक रिजलेट देखि कमान दबिउंगा आगन बहय । दुनूक
तेते सँम मे तेलेक । रिश्तेरिश्तेनयक सक्छेमोछन मदिब मे, दुनू
गोष्ठा रोजवगरी क दर्शन केनाक रौद लोबगना गेलैसक सामने
पार्कि मे एकठाम रैसन । कमान पुछल बहैक , आशुक पत्राङ्क
रौद मे ह्रदा सविता कहल बहैक , गाल , आहाँ पत्राङ्क रौत
नहि कक । गाल , हम अहाँक प्रेमक आनि मे जवि बहन छी आ
हम पिताजी हमर राहक गप्प सुकह क देल छथि । हम
आहाँ कोना परिणय सुत्र मे रोजवगरी तहि जेन मोट्ट । कमान
कहल बहैक जे सविता ह्रिब बद्ध । सत ठीके बहैक । कमान
घुमि क पछेना छन गेलाह । किछु दिन एहिना रितलैक । कमान
मोटेते हुन कोना प्रस्ताव पठावन जाय , तारे रीते मे
सविताक पत्र तेलेक ।

मानगज ,



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दि०

१३.०२.११३.

प्रियतम , प्रणाम ,

हम अगल हान की निधु । हमर हिति त ओहि स्नाती टिबग जकाँ
अछि जे रैबथाक एक बुँद जन जेन आकाशि दिस तकेत बहेत
अछि । हमर एक एक फल कोना रीते अछि कहि नहि सकैत छी
। हमर रीह हमर पिताजी ठीक क जेनथि । रीहक दिस हाथुन
मुदि पाँचमी बरि अर्थात् १० मार्च क निर्धारित भेलैक अछि । हे
प्रियतम , आहाँ कत ' नृकायन छी । आहाँ त बुँमते छी हमर
रीह त कतेक दिस पहिले त जेन अछि । आरै एहि देह क
पब पुरय कोना छुअत । एहि सँ त मरि जेनाग नीक । हे
पाहुन , हमरा एहि जान सँ झुझ कक । शीघ्र आउ , नहि त जेब
एहि लोक मे नहि भेटैर ।
अहीक
प्रतीक्षा मे , सविता ।

कमान क हाथ मे जहिना पत्र भेटैलैक , नगलैक जेना ए सँभाव
घुमि बहन छैक । कमान क बुँमेरै नहि कलैक जे कोना एहि
रिपति क पाव नगायर । ओ तबत दबिउंगा रिदा जेन । सोधे
सविताक पिताजी सँ भेटै केनक आ अगल सब हिति स्पष्ट क
देनकनि । सविताक पिताजी कमान क आश्रित केनथि आ
कहनथि जे सविता जतय चाहैक ओतहि रीह हेतैक झुदा



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

नर हितक कावण किछु समय लागत । कमल प्रसन्न भ' पठना
जोष्ट गोन झुदा किछु दिनक बाद पुनः एकठा पत्र भेटेलक ।

प्रियतम ,

पिताजी आहाँ क ठकि जेननि । हमर रौन आग भ' गोन
। समाजक डब म' हमर किछु रोजि नहि सकलौ । हमरा सिँउथ
मे जे सिंदूर देनक अछि , हमर मोन मे त' ओ नहि अछि
। ते हम निर्णय केलौ अछि जे अगल ज़रैण नीना समाप्त क नी
। ते रौनक बाद हम घर म' भागि गेलौ । हम अछू नग कोन
झूठ न क जायरे ? हमरा आहाँ नग गेल आहाँ क

परावर भ' जायत । आरै हमर ज़रैण नवक भ' गोन । आरै
केकरा न ज़रैण । पाहुँ , आरै एहि जग मे भेट नहि होयत
। हमर सब कहन सुनन माह कवरै । मलैयो काव अहाँक
हाथक स्पर्श हमरा रोमांचित क बहन अछि । पाहुँ , मुँठ नहि
कहेत छी अहाँक स्पर्श होयते पूरा देह ओहिना काँपि बहन
अछि जेना प्रथम अतिमावक समय देह काँपन छन । रैस आरै
किछु नहि करै । अछूके दूखे होयत । भ' सकय त' हमरा
रिसवि जायरे । पाहुँ , हमर अंतिम प्रणाम । अहीक
अभागन , सविता ।

पत्र देखि कमलक आँखि म' अत्रिपात होमय नगलैक । ओ भार
रिहल भ' गोन । तबत पेट नैष्ट पछि रिदा भेन, सविताक
ताकय । कतय कतय ल सविता के ताकय जेन गोन झुदा
सविता कतौ नहि भेटेलैक । कमल मोहनक ए सँसार रौकाव
छैक । जखन सब म' प्रिय हृदये हेवा गोन तखन आरै
ज़रैण मे बहिये की गोन अछि । ” आग रौनक रैवथ म' एहि
शिर कोष्टक हठी मे बहेत अछि । सँसार मे ओकरा जेन बहिये



की गेलैक जेकवा जेन टिता कबत । कियो किछु द दैत ठैक
त खा जैत अछि, नहि कियो किछु देनकै त कतेको दिन
भुखले बहि जायत अछि । रुदा नित रंगा नान कलैत अछि आ
नित रंगक कन कन डन डन प्रवाह के देखैत बहैत ठैक
। रंगक प्रवाहे जकाँ ल ओकब सवितक प्रवाह बहैक । एहिना
ल ओहो कन कन डन डन कलैत बहैत डलैक । रंगजले जकाँ
ओ हो ल सुद्ध, निर्मल आ सीतल डलैक । ओकब होयत डलैक
जे रंगकाते ये ओकब सविता म कहियो ल कहियो भेटै
हेतैक रुदा एखन तक कहाँ सविता अगलैक ?

साधूक बुझलैक आर सौम्य जेरा ये दिकत होयत अछि । रुदा
आ की, दुब रहैत दुब की देख बहन ठैक ? उंगव नीना
आसमान ये सविता नर रङ्ग कप ये ओकब निहारि बहन ठैक
। पता ल ओकब कतय म शक्ति आरि गेलैक आ जेव
म भागन आ सविता क भवि पाँज क पकरि काय नागन ।

बोले कृष्ण नग रँव तीव बहैक । अशिमक लोक ठठवी रँगा लल
बहैक । साधू क उठा ओहि पव ध देख बहैक । लोक सब कृष्ण
क अंदर देखय नगलैक जे कि सब ठैक । सवितक पव
बोवि किछु नहि बहैक । लोक आर बुझलैक जे साधू त प्रेमक
पूजावी डन । ओहि कृष्णक नाम प्रेम कृष्ण बाधि देन गेलैक ।

ए बचनपव अपन मतिर ggaj_endra@videha.com पव
पठाउ ।



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



बाजुदेव मांडनक

उपन्यास

हमर ठेव

गतशिस आगु-

खेनारण भगत टोरैष्टियागव चक्रव पुजि बहन डै । एकमे दिस
तकनले । नगले जेना अधवतिया भं गेले । ओना तँ माँमो-
पवात लोक एषए ले अले डै तँ बातिक कोण गप । लोकके
डव पेमन डै- जे स्वल्थमे रोधक टोरैष्टियागव झूहवगड ।
थेत बहे डै । एक दिस उत्तिरआक कला छेष्टपव चर्हा गेन
बहे । खुन रोकलेत-रोकलेत आँखि उगष्ट गले । के जानि-
बूमि कइ आगिपव ठेग बाथत ।

“जानि बूमि नव कले छिठाग.... ।”



किन्तुव मैया रौघिन जनमे । केकरा ओतेक हिन्नाति डै जे
एम्हव एते । खेनारण भगत पुवा निछेन अछि । ओकर अँधि
अछहन हुन जकाँ नाने-नाने भऽ गेल छै । पोतीकेँ डारमे
कमल अछि । टाकड़-टोवठ देह, रंग-धड़ंग ।

आगुमे सज्जारष्टिक रंग पसबन अछि । अछहन हुन, अबरौ टाँव
सिनुव । एक कातमे मयक्थक थोपड़िक कँकान, दाँत
किछल । धधकेँ आछत । पाँतिमे जलैत दी ।

धूम आ घी जोकसँ माँ केँत अछि । तँ आछत धधकि उठैत
अछि । निशिभाग अन्हबिया बातिमे धधकीलीरानीक छेहरा चमकि
उठैत छै । नमरह-नमरह थुंगल केने । पौघ-पौघ अँधिमे
नीलक डौल । जेना निशोँमे मातल होग । अधभिज्जू साँझ सँ
देहक किछु भाग माँगल, किछु भाग उघाड़ । रँग होगत अँधि
खेनारणक गर्जनसँ टोकि उठैत अछि ।

“जय काली-रगदी-जोगनी

भद्रकाली-कपाली... । ”

आगुमे जलैत दीप दिशि तोकए नहोत अछि ।

“ओल ले एम्हव देख । धधकेँत आगि दिशि । ” खेनारण
गबजैत अछि-



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“जेना कहे छियौ तलिया करैत जो। हमरा ठुडवलेँ
अरहेमना करैत तँ अरहेमनालेँ मूनी जकाँ सौमै देह आनि
धधकि उठैतौ।”

धधकीलीरानीक ठोव सुखा बहन छै। रजते मे स्या ले दै।

“ले यौ भगतजी। जलिया करैत तलिया करैत।”

“है, करैत जो। तगमे कन्याण छौ। जय कानी।”

हुंगर दिस तलेत टटिया उठैत अछि।

“गे छनली गात छोड़ ले तँ जवा क२ तसम क२ देखौ।”

भगत आनि थुड़वि धधकीलीरानी दिस तलेत अछि।

“एमहव देख, हमरा दिस। झूह किअए गाड़ल छै। कन्या क२
जन उठा क२ पी ले।”

“आर हम ले पी सकर। हमरा बूँत ले लहत। यँठा तकिँ तँ
पीते छी- योँठे-योँठे। गनामे जलन भ२ बहन अछि।
देहम जेना आनि लेने देल अछि। निहसँ आनि रँग भ२ बहन
अछि। नली छै जेना आसमानमे उँडि बहन छी। कही
रोहोनि भ२ जाएँ तरे।”



“दूग भवली देखे छी- जेह पिशाचक देन रौत । एम्
अथल... । मम मरि क२ । पी जे । गजाज भ२ बहन छौँ उ
वाति भवि कय छै हेरै कबतौ ।”

डले खव-खव कापेत धवडीलीरानी कनयो उठा क२ झूझै नगा
जेनक । साढ़ी छातीपसँ मसुरि गेल । भगत जीक आँखि
बाछै नगल ।

कामलाक टिकोड अमरुछै पारि गल-गला क२ उड़ै नगल ।
मूर्धनिक जेन हाथ आँतुर भ२ गेल । मम रक्षण झुकत भ२
रैनमे रौंझै छेलै ।

कनयोक रचन नीवसँ अगल पिलास मेछैरै नगल ।

श्रीकर्म एक मास पहिल रीतलै । तहिसाँ अजय गंगलै
भजिया बहन छै किन्तु फडो पता लै नगि बहन अछि । ओकर
भोजाग कथला जोगली जकाँ अगछै भ२ जाग छै तँ कथला
भूत जकाँ अँगनाँ निप्पता भ२ जाग छै । पवसु शीतलक गम
ओकर माथा ठनकन जखेसँ धवडीलीरानी आ भगतक थिसा ओ
अमरुछै तखेसँ जेना ओकरा देहमे आगि लगे देनलै ।

“अले तौबी के । पुवा छेकनलै अवालेरैना ठीकेदावक घरेमे
भोकाव । नाक मल-मल कहैत हेतै- अगल घब-पनिराव
ममरुवले लै करै छै आ दोसवारै उगदेमे देल घूडै छै ।
पव उगदेमे कमेल... । अँगना जेन तँ अजय रोकुछै छै ।
पता लै खेनारण भगत की भवले छै द्यागमे ।”



साँसेमँ अजय अण्णा भोजागक चमक-दमक देखि बहन छै ।
रिना कावणे छैली ले नली छै । अजय ओकरेपब नजबि
गड़ लो डले । किन्तु डलेमे डलाक । कथेन निपता भऽ
गेलै ।

अजय छँटि लेनक आ मभ घबमे गजोत घुमेनक । कहाँ छै
कतौ । दुआविपब ओकर भाय जामेनब थोथिया बहन अछि ।
अजय मोमे दोगन- गहरब दिस । हाय लो तोरी । भगत
गहरबमँ पाब भऽ गेल छै । कतए लेते ? शीना टेरैष्टिया
पबक नाँ कहेन बहै ।

घोड़ । जकाँ दोगन अजय । हकमेत टेरैष्टियापब झुमि गेल
आगुमे देखेत अछि । खेनारण भगत धकडीलीरानीक माछी
थोनि बहन अछि । एहना हानतिमे धकडीलीरानी माछीकेँ भवि
दुष्टीसँ पेलै अछि । टिबहका सफल ले भऽ बहन अछि ।

अजय नपकि कऽ भगत जिक रौत उठौनक आ तड़क-
तड़कि खेनारणक पीठपब रँवसरँ नगन ।

ए अग्रतयाशित आक्रमक लेन भगत तैयार ले डन । ओकर
दिमागक काज जेना रँव भऽ गेल । तैयो पनछि कऽ
गबजन-



“ले छै ? आग जवा क२ तोवा बाथ क२ देखौ । जय माँ
कानी..... ।”

अगिला शेरूद ओकरा झूहमँ ले निकलि सकल । हल्ला-हल्ला रौत
ओकरा कगावेलव खमए नगल । डड-डड । क२ कगावमँ नह
रहए नगल । माथ गकडल गड रौक कोशिने लेलक । धधकैत
आइत अजय ओकरा देखव उमलि देलक ।

“लौ रौप लौ । ते माग ते ।” डिविया उठल ।

अजय गाडूमँ गबजन-

“ठहव माव, आग सल्ला तव-मव तोवा गाडूमँ तीतव ठूमि दै
छियौ ।”

“लौ रौप आरि मवि जेरैग लौ ।” कहैत लक न२ क२ भागल
भगत ।

अजय किछ दूर बरौबलक । हलव आपस आरि धवडीलीरालीकै
समलवि क२ उठौलक कहूना घिसियारैत छैन दिस छलि देलक ।

.....



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ई बाबोपव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पव
पठाउ ।



जगदीश चन्द्र झा

ग्राम पोस्ट- हथिखुव डीमठन, मधुबनी

बिहारी कथा

१ माघ राउतन तेसरो छैथ

होत राबूक छैथ रोशनी, अपन नामक अवकषे अपन प्रतीक
पताका टाक कात नहवारति, आगुएस केँ पवीक्षा मेँ भावत
रय मेँ प्रथम दम मेँ अपन स्थान अगवनि । समाटाव सुनि होत
राबू दुनु पवानीक प्रशिक्षताक कोला ठीकोल नग । जे नु ब
मय्यथी आ समाजक लोक सुननि मेहो मत्त दोड-दोड आरि
होत राबूकेँ रधाग दैत । रोशनी रङ्गका जेठका मत्त केँ
प्रणाम करैत आशीर्वाद जेत ।

हुजो काकी हुज जकाँ हँसैत- रोजैत एनि, रोशनी हुनक दुनु
पैव पकवि आशीर्वाद जेठक जेन सुकनि । हुजो काकी रोशनी
केँ अपन कलेजा मँ नगलैत ठपाक मँ रजनि-

"हे यो होत रोशनी, अहाँक तेसव आ जेठाली छैथ त
मगवो खनन केँ जगमगा देनक ।"



हूणकव एहि गप्प पब सभ कियो ठाका मारि क 'हंसय
नागन । ह्रदा हेमत राबूक आग सँ एकनि रर्थ पाडुक यदि मे
रिनीष भय गेना - -

दूठा रैठी तेना राद कोना ओ रैठाक जफा मे मदिने -मदिने
देरता पितर केँ आशीरदि जेन भठकेत बहथि । ह्रदा
हूणकव सरैठी मेहनत रेकाव तेननि जखन हूणक कनियौक
तेसब प्रसरै पीड । केँ राद युजो काकीक अरौज हूणकव काष
मे पवनि -"माव राडहेन ओ तेसरो रैठीए जग तेनक....."

एहि रातक आँगा हूणका किड बहि सुनाओ देनकेँह । जेना की
अपाव दुथ सँ मोष मे कोना नष्टका नागन होओन, ओ अपन
जगह पब ठाव केँ ठाले बहि गेन बहथि ।

२ - की भगवती हमर घर एती ?

मोहँती राँरा । सगरो गामक राँरा । गाम मे सँ हूणका राँरा
कहि कय मरौधित करै डनि जेकव काव डैक हूणकव रँएस
। पनचानरे रँथक मोहँती राँरा अपन कद काठी आ डीनडोन



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

उपलब्ध, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैं एथला अपन ऊँच केँ गढुआलेत, नाटी छेक कऽ गामक दु
छकब नगा कऽ आरि जागु छथि । झुदा अपन गाम भगरतीक
दर्शन करैक हेतु कहियो नहि जागु छथि । गाम मेँ रैनन
रिनीन भगरतीक मदिब, भगरती रैष्ठ जागवस्तु टाक कातक रीम
गाम मेँ भगरतीक महिमाक दर्जा छैन्ह । गामक मान्यता केँ
हिसारै गामक सरै कहियो एक ल एक रैब भगरती घब दर्शन
हेतु अरैष्ठ जागु जै छथि ।

गर्माक दुष्टी मेँ रौराक पोता जे की दिमी मेँ कोला प्रतिष्ठित
काज करै छना, गर्मा रितालेँ आ आम खेराक गच्छा मैं गाम
एना । ओहो गामक पवस्त्राक निरहि करैत भगरतीक दर्शन
कय क एना । एना रौद दना पव रैसन रौरा संगे गग मग
होगत बहलै । गगक रीट मजय रौरा मैं गढुनाह-“ रौरा अहाँ
भगरती घब नगँ जागु छियेक । ”

रौरा - “नगँ”

मजय - “किएक”

रौरा - “हौ रौआ, भगरती घब त सरै कहियो जागत अछि,
झुदा भगरती केकरो-केकरो घब जागु छथि । हम अपन
मन आ सुभारै केँ एहेन रैनालेँक प्रगाम मेँ छी जे भगरती
हमव घब आरैथि । ”

मजय रौराक झूठ मैं एहेन दर्शनिक गग सुनि अरौक बहिगेन
आ सोचय लागल जे की ओकव मन आ सुभारै एहेन छैक जे
कहियो भगरती ओकव घब एती ? आ ओकव अरौक बहक
कावँ बह मायद नगँ ।



मानवीय

এ বাচসাপৰ অংশ মতিৰ ggajendra@videha.com গৈ
পঠাউ।



অন্তঃস্নেহ

সোচৰে আৱশ্যক জে.....

মিথিলা শিষ্ট, ককৰো জেন অগৰিচিট বহি, অগল দেশে বা
বিদেশক কোলা কোণমে চনি জাউ মাত্ৰ 'মিথিলাক ভী' কহৰে ত
ও অহাঁক পৰিচয় বুমি জএতাহ। সভক মোণমে স্নত: আৰি
জএতনি জতএ বাজা জগকক বাজ-দবৰাঁব ভন, জতএ
জগকগন্দনী সীতাক জগা ভেন ভন, জে মহাকৰি বিদ্যাপতিক
জগাশ্বান থিক। হমবা মোণ অছি হম জখণ বঁহুত ভেঠ বহী ত
জগকগবমে এক বঁহ কোলা ধাৰ্মিক সমাবোহ ভেন বহএ, জাহিমে
এক দিস জতএ সাধুলোকনি জুঠন ভনাহ ত দোসব দিস বঁহুত
বিদ্বাণ জোকনি মেহো। ওহি মধ্য একগোষ্ঠ বিদ্বাণ কহনথিহ জে
ও জখণ মাফা গেন ভনাহ ত ওতএ বামাফা, মহাভাবতক সঙ-
সঙ বিদ্যাপতিক পদাৱনী মেহো ভেঠন ভননি। সভাস্থ ও
কহনথিহ জে ওতএ একটা পাঠক ওহি পদাৱনীক বিয়গমে অগল



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ऐप्पणी देल बहबिह जे मैथिली मधुव भाया नहि अछि । हुनक
ओ उज्जि सुनि हमर रौनमोनकेँ रँडका मष्टका नागन, काका हमर
घर मिथिला-मैथिल-मैथिलीक जेन पूर्ण कर्षे समर्पित हुन, जतए
आन-आन भाया मात्र पाहुन भए अछैत हुन, ओहि परिवेशमे
रँहैत रँसात सभ किछ मैथिलीक जेन हुन आ तँ हमरा ओ उज्जि
सुनि रँड छेठ नागन हुन । ह्रदा किछ अणक रिवाजक रौद ओ
रिद्वान आगाँ रँजनाह जे मैथिली मधुव नहि, स्वमधुव भाया थिक
आ हम आग ओहि धवती पव आसन डी जतुका भाया स्वमधुव
अछि जे माँ सीताक पर्सिग्राटी भेट, थिक ।

हुनक ओ कहर हमर रौनमोनमे पैसि जेन आ हम निश्चय
कए जेन जे आरँस हम अण पविचय मिथिलारानीक कणमे
देरौ । ओ अण आसन, जखन हम पहिन रँव मिथिला माँ रौह
पुर्णोत्सवक बाजा असम पडैतहूँ । हमरासँ पुढन जेन ओह प्रेम
आ हमर उतरो पुर्न मोटक अस्मावहि निकनन । हमर उतव
सुनि ओ लोकनि सहजहिँ छटि आवसु कए देननि बाजा जलक ओ
हुनक जगजगणी सुखी सीताक, अद्वितीय मलकरी रिद्यापतिक
आ रँहते मणीयलोकनिक । हमर ड्योती गौबरसँ तनि जेन ।
हमरहि सँ बहबि एकछेठ रिहारी मित्र, जे पविचयमे रिहारी
भेट, जोड़नहिँ आ रिभिन्न तबहक तानासँ व्रत भए जेनाह ।
केओ चावा घेठानाक रिषयमे जिज्ञासु भए जेनाह तँ केओ नानु
मालायेमे, केओ दरिद्रताक रिषयमे मोचरँ आवसु कएननि तँ
केओ ट्रेणक टोड ीक थिम्सा, जतेक मुह ततेक थिम्सा । एहि
प्रसङ्केँ उठैरौक काका अछि हमर-अहाँक मोचक रिषयमे किछ
मोचरँ । मिथिलालेँ रिहारीगनसँ तँ जूझ पडैत छैक, ह्रदा
जखन थोआ-बारँड ी-अमिबतीक गप्पा अछैत अछि तँ मिथिलालेँ
ताहसँ रँटिते बहए पडैत छैक, ३ किअक ? की ।
मैथिलमे पौकयक कमी आरि जेन अछि रा हमसभ एखन धरि
अण अरिकावक महत्केँ छि नहि सकनहूँ अछि ? रा आन



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कोला गप्पा, झुदा एतरो अरथ जे हमसत एखनहुँ दली-टुड़ १-
टीनीमे नष्टपथन छी । मिथिलाक स्वर्णीम इतिहास, ओहि ठामक
अद्वितीय रौद्रिक प्रकाश, मिथिलाक सांस्कृतिक प्रवासमे आरि आन
सत केउ अगलकेँ भागामानी बुनैत छथि, झुदा ३ फेब्रु सँ
दिससँ अगलकेँ द्वारा ठकन गेल अछि, अगलकेँ द्वारा साधन गेल
अछि, ३ किछक ? एकबहि हबिडुआक हेतु जखन एहि ठामक
मिथिला राजा आन्दाजनक अभिप्राय बियस पब बियस-बस्तु तकरै
भावसु कएन तँ एकठा आलेख भेटैन- 'हिन्दी भाषा मे अनग
बाला की माँग काँ समर्पित मिथिला' ओहि मे बिहावक प्रशिक्षण आ
मीडियाक मानसिकताक पब सजय मित्रि लिखल छथि- "समर्पित
की रीत छनी तो खोड़ी रीत बिहाव की कब लेमिथिला के
मानस के उद्धग की । आपके जेहन मे उमड़ बहे कइ सराजो
के झरारै मोहद आप तनानि पाये । मिथिला ओसी राजा बिहाव
का एक अंग है । पौराणिक-ऐतिहासिक मिथिला का दो-तिहाइ
हिम्मा बिहाव मे ओब शेष लगान मे पड़ता है । कभी यौक ।
मिले ओब समय हो तो बिहाव के हृन्मवाला के भाषण सुन ।
ओह ही काँबिहाव की मीडिया पब ती नजब पड़ ।
बिहाव की महिमा का झरै ये रैखान कबते तो भगवान् रूँ ही
ओह नजब आते । भगवान् महारीव कभी-कभाव याद
आते....पब जनक नही...माता सीता नही । मिथिला का स्वर
कवा दे तो ओसकी भारै तन जाती । ओस ओनाके की छिछी,
पाणी, हरा...ये सँ बिहाव की संपदा हूँ पब ' मिथिला' मेह,
ओब यहाँ के लोगो मे पबहेज । यहाँ की बिकासत पब गर्र
कबल की रैजाए ओह मेरि का अघुतर काँ ? आगु लिखल
छथि जे - सुना होगा आपल की मैथिली भाषा संरक्षण की
आठरी सूटी मे दर्ज है...रो सारिब अकादमी मे भी है । यानि
ओ जगहो पब बिहाव का मान रैता बही । पब का राजा के
नायको को ओस पब नाज है ? हब मेअस बिप्लव मे



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली भाषियों की संस्था कम रैताल की गलती साजिस का
किसी से दुप्री वह गलत है ? थोड़ा । पीछे जाई...शिर गुजन
महा जैमे थातिनद्र साहिलकावों ल मैथिली की परिवर्तिथि
कबल का रीड़ । काँ उठाया था ? पाठकमों से मैथिली को
बाँव-बाँव ठेठल के फटफ का बाजकीय गरि का अहसास है ?
मैथिली जुरे आठरी अश्वसुटी ये मोमिन की गलत तो बाह्यीय थीरी
टैमलों ल भी गमे प्रदुखता से दिखाय । सन्निधल सन्निधल
कबल गडा था...मिहाजा ये बूझ थी । लेकिन रिहाव के
सर्वाधिक लोकथिय टैमल ल गम खरैव को दिखल की जहमत
नही उठाई । गम टैमल को रिहाव की म्रव कोकिना मोवदा
मिहा की आराज नही म्रवाती...काँकि रो मिथिला फ्रेव से आती
है...जुरेकि मलाज तिरावी 'अस्पल' रैल हू है । देशे के
किसी कोल से छे जाई...लीव रिहावियों से रीत करे ।
रिहाव का नाम लेते ही रो भोजपुरी का जिह्व करेगे । गली
हाल गल जगलों के सममदाव समे जाल राजे पत्रकावों का
है । अधिकारी को गता नही की मैथिली रिहाव की ही भाषा
है । रिहाव सबकाव की गरि की अश्वभुति ठेव करिनिगत (?
) का ये जीता जागता नतीजा है । पठना से दुपल राजे
हिन्दी के अथरों को गलत कर देखे । हेडिग्स ठेव कर्तुन
के ठेकस्टे आगको भोजपुरी से मिलेगे । गल अथरों की
ये किर्दानी मालों से है...अछा है...पव मैथिली ये काँ नही ।
गल मिथिला का पाठक/ खरीदार चाहि पव मैथिली नही
चाहि...रिक्कल रैमे ही जैमे बाजके लताँ को मिथिला के
लाग ' चाहि जिम पव सता की योमि जमाई पव गल ' लाग
' के हित की पवराह नही । " एहि ठाम उपर्युक्त उक्ति बखराक
पाछाँ हमर बाय ग अछि जे हमसभ किछु काल लेन एहि
दिनामे मोटी । मोटी जे, आथिब एहल मानसिकताक जग
किएक होगत ठेक ? की ! एकव पाछाँ मात्र एतरेहि सिह
कवर अछि जे मिथिला आ मैथिलीकेँ उचित अधिकार निवर्धक



झी ? की ! एखनहूँ एकव बिलोधीलोकनि गएह मोटि बहन छथि
जे मैथिन मात्र दुइ १-दलीमे रिग्रास कलैत छथि ? की !
मैथिन एखनहूँ 'सूतन झी, रिश्ताह लोगत अछि'मे रिग्रास कलैत
छथि ? नहि तँ एहन मासिकता किअक ? हमरा नलोत अछि
जे एहि मासिकताक पोषण भेल आव-आव तबक सङ्ग दबतंगा
बाजालोकनिक मोसमक समयमे । यदि ओ हिन्दी, देरनागरी, उर्दू,
हावनी आ अंग्रेजीकेँ सम्पादित नहि कएल बहतथि तँ आग
मिथिना-मैथिलीक ओ दमो नहि भेल बहलैक । एहि प्रकारक
उक्ति देरनाक पाछाँ राख अछि ओहि कारणाकेँ तकरै, जहि रैलै
मिथिना-मैथिन-मैथिलीकेँ उचित अधिकारसँ रचित बखराक सहस्र
प्राप्त कएल जख बहन अछि, दबतंगा बाजक दूरदृष्टिक अंतर
आग धरि मिथिनाकेँ सत्ता बहन छैक ।

उना कारण मात्र ओतलै नहि अछि । हम मैथिन जन
सेहो एको पाग कम दोरी नहि झी, एकव पाछाँ । हमसँ
आगत अपन क्षेत्र-अपन मातृभाषाक प्रति सजग-सतर्क नहि
भए सकनहूँ अछि, प्रायः एखनहूँ एकव महलकेँ नहि आँकि सकनहूँ
अछि । मिथिनाक हृदयस्थली मधुरनी जिनक सम्भाव्य बिलोपसभाक
सदस्य श्री नीतिनि मित्र अपन क्षेत्रमे सहायता जेन्त मैथिलीमे
नहि राजि पलैत छथि, प्रायः प्रयासो नहि कलैत छथि । जँ
कदाचित् केओ मैथिन एहि पब छिन्पणी करितो छथि तँ
लताजीक चमत्कृत आ मिथिनाक तथ्याकथित बूझिजीरी लोकनिक
उक्ति लोगत छनि- 'आह, डाक्टर साहसेक रैछो ल छथि, सब
दिन राहले पठननि, तँ ओ फ्रमा अछि ।' ओझी, मिथिनासँ राहब
पठराक पवम्पवा मात्र मिथिलीक परिवारमे छनि कि आओरो
लोक पठि बहन छैक । जँ राहले पठि ओहि बूझिकेँ प्रयोग
करै छन तँ ओहि हेतु आन कतेको माध्यम छैक । फ्रमा, ओ
जनलता रैलोक लेन जेन्त जूझै आरम्भ आ जेन्त जूझैक



'বিদেহ' ১০৮ স অংক ১৭ জুন ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৪ অংক ১০৮)

মাননীয়

সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

হেতু জন-জনকেব ভাষাসে জুড়ই পবম আরষ্টক, জন-জনকেব
মাহু ভাষাকৈ পুৱই আরষ্টক। যতুপি এহুলা বাজলতাক অভার
নহি জে মৈথিল জনক সঙ সন্ত দিশোমে পুৰি বহন ডুখি, নহি
তৈ মৈথিলীক ঔপব ঔঠই অসম্ভৱ ভৱ। হুদা, এহি ঠাম ও
কহুৱামে কোলা অসৌকৰ্যক গপ্পা নহি জে মিথিনামে লহুতত্বক
পুৰি অভার খিচি। কেও বাজলতা এহি হেতু প্রতস্কপিতো নহি
বুঝাগত ডুখি। পবম, একলৈব ফেব সমস্তা আৰি ঠাঠ ভএ
জাগত খিচি হম-অহা সাধাবা মৈথিলক নগ। জৈ সম্পূৰ্ণ
মৈথিলবাসী এহি হেতু প্রত-স্কপিত ভএ ঔঠখি তৈ ককব মজান
জে মিথিনা-মৈথিল-মৈথিলীকৈ উচিত অধিকাৱ নহি দেত।

হুদা, কী হমসন্ত এহি দিশোমে সাক্ষি ভএ সকলহু
খিচি? হমবা তৈ নহি নহৌত খিচি, ওলা অহা সন্তক জে বিচাব
হো। এহি বীচ দবতগা গেল বহী, ওতহি বহনহাব একটা হমব
মিত্রক পাবিৱাবিক ভাষা হিন্দী স্বণি চকরিদৌৱ নাগি গেল। ও
অগল মৈথিল পলৌস হমব পৰিচয় হিন্দীমে কলৌনগি আ হম
হুশক মুহ তকৈত বহি গেলহু। অগলাকৈ সন্সারিত-সন্সারিত
অগল পৰিচয় মৈথিলীমে দেন। জৈ দবতগামে ও পৰিস্থিতি তৈ
বাহবক গপ্পা কবই ৱাৰ্থ। একবা কি কহই? কী, ও অগলাকৈ
সাধাবণ মৈথিলসে এক ওট ঔপব দেখুৱৌক প্রবৃতি থিক? আ
কি আল কিচি। হুদা বিযয় অৱষ্ট বিচাবণীয় খিচি, মোচলীয়
খিচি। একব পাড়া ফেব কাবণ তকনা পব জেনা বুঝুৱামে
অৱৌত খিচি জে সাধাবণ মৈথিল অগলাকৈ হুখা ধাবাসে কঠৈত
গেলাহ। এতএ দ্রষ্টৱা থিক একটা উক্তি, জাহিমে ডা.তাবানন্দ
ব্রিয়োগী বমেনি বঞ্জনক কৰিতা সগ্রহ বঙ ক আদুখ মধ্য নিখল
ডুখি ভাষামানবীলোকগি জলৈত ডুখি জে মৈথিলীক জগ্ন জন-
লৌনহাব গবীৰ-গবরা দ্বাৱা অগল সাংস্কৃতিক তহুমন্তক অতিৱাতি
হেতু, সাংস্কৃতিক বিবোধমে ভেল ভৱ। আ বৈহ মৈথিলী আগু
চলিক২ তেহন সম্ভাৱ আ সাংস্কৃতিগি ৱাণা দেন গেল জে আম



लोक अगण भाया आ भारले लेन ओहिठाम कोना जगह नहि
पौनसि । अन्दा, येह मैथिली जै संस्कृतक स्थापन भऽ जगते,
एहिमे धर्म-कर्म पुजा-पाठ होरऽ नहि, मोक्ष-मार्ग होरऽ
नहि, तै एक रीत छन । अन्दा से कि ? संस्कृत अगण
सोदशोत्तर तै कायम कयल बहन, एकर मैथिली बजली-मजलीक
भाषा रीति बहि गेल । - एहि उद्दिष्ट आन जे किछ हो,
एतरो तै अरु कहल जाए सकैत अछि जे मैथिली
साधारणजनसँ दूर होगत गेलीह, गृध्राक्षीक प्रवृत्तिसँ आहत
होगत गेलीह आ तै अगण उचितो अस्तिताव प्राप्त कवरसँ
रचित होगत बहलीह । अगणसभ देखि सकैत छी जे किछ
मैथिल अगणसँ पब पब अगणसँ फुटल भोजि हिन्दीक सेरा
लेन लाबि ठा लोल फिलैत छथि, मोट ग जे साहित्यिक प्रभाव
एकहि रीतिमे हिमाचल पहाड़ पब चढा जाएत । ग सभ
समर्थक रिसबि जागत छथि जे हिन्दीक समृद्धिमे अछि मैथिलीक
भूमिका । जै आग मैथिली हिन्दीक उपेक्षा कए लागल तै
हिन्दीक स्थिति मिथिलासे सेहो गुरुत्वावह आ दक्षिण जकाँ भए
जाएत, जतए हिन्दी प्रभाव सगिति आ कि-कि ल खोजल गइ
बहन छैक । अन्दा हमरा लोकसँ तै अगण अस्तिताकेँ तोक पब
बाधि दोसबाकेँ सहजरीमे रिश्वस करैत छी, अगण सकैत छी
आधारब कए दोसबाकेँ जीवण दए गरक अस्तिता करैत छी ।

सकल अरु सत्य: रीतन ओ दिन, जनकपुर मे
मिथिला संघर्ष सगिति लेन आन्दोलनक समय रीम रिश्वसमे पाट
गोष्टे शहीद लेन, जाहिमे एकछी मिथिलाक वंगकर्मी बंधु मा
सेहो छलीह । ओ आग पब रिश्वस कोना स्मार्थकेँ मैथिली आ
मिथिलाक लेन नदरेत बहलीह आ अस्तिता मिथिलाक लेन अगण
संविधान तक दए देलहि, अन्दा लगानी मिडिया आन कए
कान्तिपुर मात्र, हुनका प्रति श्रद्धा अस्तिता कवर अगण कर्तव्य



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बुझनक । एहन रनिदाशीक हेतु लगान आ भावतक कोला
रबिआ साहिवकाव किछु नहि रज्जवाह । कोल कावण छन जे
भावतीय साहिवकावलोकनिक मड लगानक साहिवकावलोकनिके सँ
डा.बाजेन्द्र प्रसाद रिमान, प्रा. बासुदेव कागर्जा, प्रमोद, श्री
अयोध्या नाथ टोषरी आ महेश्वर मर्गिया आदिक कोला रज्जवा
प्रकाशिके नहि आएन ? आग काहि छेँ सँ छेँ खरबि मिडिया
मे बहेत अछि, हुदा हिनकावलोकनिक सरेदनाहउ कोला समाद
कतहु देखराये नहि आएन । गता नहि एकव गाढा कोल
असंजसता छन । किछु रात्रिक मोट छन जे हमबामतकेँ
बाजनीतिक सहयोगक आरंभकता अछि । हुदा, राह ले !
अपलक मानसिकता । जाहि बाजनीतकेँ हम-अहाँ रनरैत छी
ओ मनायता कवताह तखन हम डेग उठावरै, की उचित ?
हमबाँ बुझराये आरि बहन अछि जे किछु एहि प्रकारक लेखक
आ साहिवकाव मैथिलीक प्रतिनिधित्व क बहन अछि जनिक
मानसिकतामे मिथिला आ मैथिली सँ रैनी अपन हित छन, अपन
अस्तित्वक चिन्ता छन । हुदा एहन-एहन रात्रिक चर्चासँ घरघराक
गप्पा नहि छेँक, कावण आगउ दीनेन्द्र धेगर्षि, श्याम सुन्दर शशि,
का. बासुदेव ना, प्रा. प्रमोद कागर्जा, गायक सुनील मल्लिक,
प्रा. वमेश बख्श, का. मोहि जलकपुत्री मलक लोक लगानमे
सक्रिय छथि जनिक प्रतिज्ञा आ रात्रिसँ मिथिलाकेँ गरि कवरक
अरसब रैव-रैव भेटैत बहेत अछि, हुदा प्रम ठाढ़क ठाढ़
अछि जे की हमसभ अपन मातृभाषाक लेन प्रतर्ककपित छी ?

ए बलापव अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



१. डा. अश्विनी सा-दु-पत्र : एक रिश्रिषा २. डा.
नेलिषव रुमव “बिदेह”- लोथी सरीषा - अश्वरवा



१

डा. अश्विनी सा

मैथिली रिश्रिषा

व.ना.ति. मलरिगुवय रुश्रिषावश्वरवा ।

दु-पत्र : एक रिश्रिषा

दु-पत्र रसुततः पत्रातुमक शीलीमे लिखन मैथिलीक पहिन
उपलुगुम थिक । मात दु गेष्ट पत्रमे समाएन समग्र कथलक ।
मात दु गेष्ट पत्रमे भावतीय लारीक मिश्रन, निर्मन, शीलीष ओ
प्रीठ टिवाकन । पहिन पत्र अगल मरागी सुवेणुदकेँ लिखन डथि
शीमती अश्विनी देरी आ दोसर पत्र एक अमेरिकन महिना जेमिका
द्वारा अगल भावतीय मित्र वमेशिक लामे लिखन गेल अछि ।
मात चाबि गेष्ट पत्रक प्रयोग एँ उपलुगुमक एक अनग
रिश्रिषता अछि । सुवेणुद निर्गिराद कर्पेँ एँ उपलुगुमक लामक
डथि, आ लालिका भावतीय लारी शीमती अश्विनी देरीकेँ मेहो कहि
सकेत छी आ एक अमेरिकन महिना जेमिकालेँ मेहो । वमेशे



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हुथि हूथु सहु-नूयक । ङुदुग देरूक दुव-दुवूजे सङुगुणी
तुधु अु सुवेणुदुक सव ।

कथानक

दु ङुठु पत्रक माधुयसुं जे हूथु कथानक ङुठुकक
सुःतेतनूगव तुव ँकेतेत अुठि से ङु जे सुवेणुदु अुगु
रूङुसु ररुय अुसुथूमे ङुदुह ररुय ङुदुसु अुगु ङु
सुहसुतुसुं रुररूह कएल हुथि, हुकव माधुयसुतू अुगु कएुं
कएल हुथि वमेणे । लूवूठु-सुतूसुं रुररूह नुशुतुतु तेन हुन ।
सुवेणुदु ङुङुङुनूयरुगक तुवुसु ररुय हुतु वरुथि अु ङुदु नरुग
ररुगक हुतुव । ङुनू ङुदु दु ररु ङुलुनू गूगु सुलूगु सुगूगु
गवु अुङुगु सुन तः ङुन वरुथि हूदु ङुग सुतूमे दुनु तुङु
गुन कथू सुथुव कः तेन वरुथि । सुवेणुदुक रुररूह ङुं येथुन
वूतुः ङुदुसुं तेनन ।

ङुदु, सुलु लूगुतु ङुदु देरू, अुर दु रूदुतुक सुधु हुथि अु
सुवेणुदु अुमेरुकूमे वगु ङुन हुथि । अुर तू नअु ररुसुं लूलू
सुङुगु लू वरु ङुन हुनू, सुतु दु-अुथु तुलूक सुङुगु
हुठुडु कः । अुसु गूडु सुं नूगुन तः ङुनूह अुठि ।
रुररूहक रूदु दु-तुव ररु धुव तू सुवेणुदुकु ङुदुसु दूगुतु
तेन हुनन अु तुकवरु ङुगुगु तेन वरुन दु ङुठु सुथू-
सुतूगु हूदु तू क अुर तू अुमेरुकूक एक ङुवूगु वगूक



बंग तेनामे तेना ओमराएन छथि जे समरंभ-रिद्धेदक प्रसूतार
गण्डु देरीकेँ पठौल छथि । अमनमे पहिन पत्र सुलेखक
समरंभ-रिद्धेदक प्रसूतारक जराँ अछि । अगल लोक-रेद,
घब अगल, गयष्ट-परिजलसँ निम्गूह भेल नख रयसँ अमेरिकामे
बैत अगल जिरल, गच्छा-आकाशक एकमात्र आधाय, मोहाग-
भागक अरिपठाता, सुख सायाज्यक मरामी, अगल-साक्षित पति
सुलेखकेँ निखन हूक प्रत्यागमक रैष्ट तकेत, पनकक मेज
मजौल, रिबहागमे तछपेत श्रीमती गण्डु देरीक पत्र ।

ओना जेमिका प्रभावित छथि सुलेखसँ । तखन पहिल बमेशेन
तेँष्ट पहिल हूक सुलेखसँ होगत छल आ प्रभावित जे
होगत छथि सेहो सुलेखसँ हूक आटाक जे बमेशेन गण्डिया
अरैत छथि तँ बमेशेन मोहो प्रभावित भऽ जागत छथि ।
हूक बमेशेमे भावतीयता ततेक ल रेशी देखेत छथि जेमिका
जे एमेशेन भावतीयता प्रभावित होगत होलीह आ बमेशेन
दुबरी रैलैत होलीह । हूक गण्डु देरीकेँ रिद्धेदक प्रसूतार
पठौलक उगवात सुलेख जेमिकक समस्त अगल मोलक रौत
मगयष्ट कऽ देलीह । जेमिकसँ पहिल तेँष्ट सुलेखकेँ जर्म
कुलामे भेल बहल । दुल्ल आराममे मात्र चाँचि रैलकक
अन्त बहल । दुल्ल अमग बहल । मोल मलएरौक हेतु एक-
दोसबाक घब आरै-जाए लागल बहल । जेमिका सुलेखक
ओरिछा जे भास भात सेहो कबल, कबल, सुलेखकेँ तक
अरगति ले बहल आ ए रौतसँ जेमिका मित्र बहल । मग
उठलाग-रैमलाग, पार्क घुमलाग, मिलाय देखलाग आदि रौत तँ



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

सहजे होमए नगवनि । स्वलेखक सँग जीरल रितएरौमे
जेमिकारै कोला तबहक आपति ले बहनि, से ओ मोल-मोल
जलैत बहनि आ तँ जे स्वलेखक ओल दुदरीसँ रिछुदेद आ
हुनका सँग सम्पर्कक प्रसन्नता सँ कइ देल बहनि आ सँगहि
हुनक समाति मंगल बहनि से जेमिकारै असुराचारिक ले
नागल बहनि । जेमिका आ जलैत बहनि जे स्वलेखक पहिली
भावतमे रिखल कहल छथि, सँगहि स्वलेखक ए तर्कसँ, जे आर
रिगत नअ रयसँ हुनका अपन पल्लेसँ कोला सँग ले छल
सेहो सहमत बहनि आ स्वलेखकसँ सम्पूर्ण स्थापित कवरौमे
एकरा कोलाठा रोधा ले बूनेत बहनि, काका अमेरिकी
संस्कृतिये एकर कोला मुन्य ले छैक । ह्मदा बमेशे जे अपन
छेष्ट-छीन पत्रक सँग स्वलेखक नामे लिखल ओल दुदरीक
रिसुत पत्रक अंग्रेजी अखबार जेमिकारै पठलै बहनि तक
पठि जेमिका किंकर्तव्यक्रियुत बहनि । एख ओल दुदरीक
अंग्रेजी अखबार हाथे अएनि तँ भारतीयताक असली सुरक्षसँ
अरगत भेलैह । ओहना भारतीय आचार-ऐरव, रीति-रिवाज,
धर्म-कर्म आदिसँ प्रभावित बहलै कथि ।

अहमि:

२.



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



स. मेनिब रमर "विदेह"

पौथी समीक्षा - अग्रव

कोणहू भायाक जिरेत होयराक
प्रमाण की ? एतह जे जाहि क्षेत्र विशेष मे ओ भाया
राज्य जागत अछि ओहि क्षेत्र विशेष केव हनेक राष्ट्र (रा
अधिकारी राष्ट्र) ओहि भाया के अगल महत्वाक कग मे रैजैत
हो । "हनेक" मतनरै हव रक्षारिणैयक लोक चाहे ओ
कोणहू रयसमूहक हो, चाहे ओ कोणहू जातिक हो, चाहे ओ
कोणहू धर्मक हो अथवा कोणहू र्यापाव / रारमास सँ जुड़न हो
। मात्र रैजैत हो - सह ठी नहि, अशित ओहि भायारिणैय
मे अगल बचनमेक ओ सर्जनमेक योगदान सेहो करैत हो
। "मैथिली" के सपूर्ण कर्षे ओ सौभाग्य आग धरि कहियो
नहि भैँष्ट सकन ।

एक दिशि, कोणहू "एक समूह" कोणहू
"दोसब समूह" के मैथिली नहि राज्य देनथिह रा नहि पद
- लिख देनथिह आ "मैथिली" के अगल रैपौती सम्पति रैना



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

क२ वखनहि । दोसब दिशि, टूँकि “गहिन समूह” मैथिली केँ
अगन रँपोती सम्पत्ति कहि देनहि तै “दोसब समूह” सेहो
मैथिली राजरँ रा मैथिली पठरँ निखरँ डाढ़ि देनहि ।
मैथिलीक जेन जे पवम दुर्भाग्यक गप्प बहन । घ२ब - घबारी
आ सम्पत्तिक रँष्टरावा भ२ सकैत छै, माएक नमि; मैथिल लोकनि
केँ से रात रँमरा मे रँहूत रिमरँ भेनहि । काबि जे हो,
पव “माए मैथिली” केँ जे सौभाग्य आन समकक्ष भाषाक
अपेक्षा रँहूत काम धरि नमि; भैँष्ट सकनहि ।

समष्टि खूशीक रात जे जे पढिना
किछु रयि सभेग समय रँदनेन अछि आ हनेक रञ्जनिशेयक लोक
अगन बचनीमता सँ माए मैथिलीक आँचर भवि बहन छथि ।
शुकआत मे गति रँहूत स्वतु डन आ श्री रिमरँ पासराण
“रिहंगम” रा स्र. फज्जुर्वहमाण हामिजी सन एक आधरि ठा
न२र नाम देखरौ मे अरैत डन पव आग एहेन नौर सभक
संथा रँहूत तेजी सभेग रँदनेन अछि । एहेन एक गोष्ट रविग्रा
बचनकाव छथि श्री बाजदेव मन्वज्जी । आग हुनिकहि निखन
एक गोष्ट कारा संग्रह “अग्रवा” केब समिक्षा न२ क२ हम
अगलक सोमाँ उगहित छी ।

“अग्रवा” - बचनकावक गोष्टेक पचरुति
ठा कारा बचन केँ अगना मे समाहित कएल अछि । सभ्ठा
करिता “अग्रिवाक्खर डन्द” मे अछि । पव देवएरौक काज
नमि; “अग्रिवाक्खर डन्द” बहितिहूँ “ग्रिवाक्खर डन्द” केब बचन सन



प्रतीत होयत आ पढ़ौ मे ठहल नगररु आ बटिगव नागत
। यथा :-

अहाँ कहैत छी कायब रँगरँग नीक

हिमक भ२ जाएँ मे अछि ठीक

लोक कहत - राह-राह

किन्तु हमरा गलैत अछि आ अधनाह

..... “अहिमक रीब”

रिष उचित शिष्ट, केव भार मवि जागत
अछि आ रिष भारक शिष्ट, तँ शिष्टकोशहि रूम् । पव आ दोष
एहि करिता संग्रह मे कतहु देखौ मे नहि आगत । उचित
शिष्ट, ओ समीक्षण भार केव अजगत संगम देखौ मे अरैछ ।
जेशा कि

तनु बेतपव

हवहड १गत मड



कानि कानि

क२ बहन नाट

लेतागव हाडत टिम

उडरौक लेन आसमान दिने

अभागत

देहसँ मडए नागत

टाँदीकेँ कप

मुनि उठन

कतेको आँखिक मल

जबि बहन माडक तल

“रौंडन पबक माड”

सम्पूर्ण कार्या बचना रिश्वरू खाँपी मैथिली मे
थिक; है कतहु कतहु किछ हिन्दी शैक्षणिक प्रयोग ठीक सँ
मेन नहि; खागत अछि, पब मे अल्प । भाषा रूतहि सहज
उ स्रवारीक थिक आ ताहि कावणें पठरौ कान घटनाक्रम रा
रणीत रियस पाठककेँ अपना समझ घटित होगत प्रतीत
होतहि । जेना कि देखन जाओ



शेह, बहि बहन दिनक रौन

तेह बहि बहन ओकब मोन

.....

रौजैत बहैत छी अगरीत रौन

भीतब बखल रीखक मोन

..... “दिनक रौन”

कोणहूँ साहिब मे जै विरिधता नहि
हो तै ओ मस्ती नहि कहैछ । जहिना भोजन मे यद्वस
कै भोग आरुष्टक तहिना साहिब मे नरवस ओ तकर उंगवस
सतक समारोह पवमारुष्टक । मात्र निगाव ओ तजि बसोपवस
सँ साहिब समग्र नहि भऽ सकैछ । एहि प्रकारक साहिब श्रृंखला
एकतगत ओ असंतुलित कहैछ । “अन्नदाता” मे ओ दोष नहि
। एहि छोट किण्ठकार्य संग्रह मे रहैत अधिक “रिषय -
रैरिषय” थिक । हरेक वचना भरि सुभार मे एक दोसरा सँ
तिष्ठ । ओ एह एकव सतसँ पैघ विधेयता थिक । एक
दिशि “जाति” ओ “हम हव उठै” सग वचना जेणै सामाजिक
रैयमा पब प्रभाव करैछ तै दोसरा दिशि “कालक मन्दा” सग
करिता समाज मे पसवण अधिग्रहण ओ अधिका पब ।



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कमजोब री दलित रात्रिक मलादशोक केहेन मारिक छिप कथन
गेन अछि से देखू

छप छप छुरैत खुनक रूँस

धवती भँ बहन न्नात

पुछि बहन अछि छिड़

अगला मस मँ अ रात

आरँ राना अ काबी आ भावी
बाति

कि नहि राँतत हमर जाति

? “छिड़ की
जाति”

“हमिआबक सता” आ “अहिमक रीब” मस बचला
कोनहु समझाक शान्तिपूर्ण समाधान कवरौ पब ओ अहिमा पब जोब
दैछ आ अलबोक बङ्गात र नक्षत्रादी प्रवृत्ति केँ निरोध
करैत रूमना जागछ । देखन जाओ



सुनह नगरैह धान

थोमह अगण अगण काण

तरै भेठैतह आजूक सन्मान

रिग देहम् गिलोल बकत

क२ सकैत छह दोसब जूगत

.....
.....

रिग हिमाकै जे कएल होयत
द्वदगव बाज

उकरे भेठैत आ अमुना तज

..... "हथिगवक
सभ"

एहि पोथी मे "रूमिगक टिपु" आ "कथीक
गाढ" नामक रीनकरिता मेहो अछि, जाहिमे रीत सुनव ठग सँ
रीन मलाभार कै रात्र कयन गेल अछि । रूमिगक छोट भाए
केव जय भेलै, पुवा परिवार खुशी मला बहन छन आ रूमिग
कामि बहनि छनि । पढ़ना पब की उतव भेठैलैक मे अगणह
सभ सुनु



आ तँ छै खुशीक रात

जन्मगत तौबा भाँ

कतेक खुशी छह तौब माँ

दादी, सरैयाँ जाले छी

हम ओहि नए नहि कालेत छी

छिन्ना अछि हमरा आरै के कोबाकेँ जेत

दूधो माँ पिरै नहि देत

..... “रुमियाँक छिन्ना”

“गाढक हिम्मा” आ “गाढक रैनदल”
पर्यावरण अमलुनन ओ तकर बरफा दिशि धाणाग्रथ करैछ जखन
कि “मलाराश्रित चान” आ “परमक अमिकाव” किछित् शिगाव
बसक करिता थिक । “रौठा क छि” नामक करिता मे २००+
आ मे कमल नग छुटन कोसीक राह सँ आयन रौठा क रहत
मरिपिणी आ मजरी छि कयन गेन अछि । किछ अशि द्रष्टा
थिक



मानवीय

एहमवि

अर्थनम स्त्री

परिशोष

दुख कला

लैमन अछि धावक कात

देह न्नात जिखत अछि कि
दुख

मागत मोटि बहन अछि गहन
रौत

एथनहि निकलन अछि

संघर्ष कर रौत क धावा मँ
..... "रौत क छि"

समग्रति मैथिली साहित्यक दमो दिमो, मैथिलीक प्रति
करिक प्रतिबद्धता ओ तहि सन्दर्भ मे देन जेन सप्रेमिका
देखन ज्ञाओ



दोसबोक माय

अछि हमले माय

तँ कि यौ भाय

अपना मायकेँ रिसयि जाग

.....

मैथिलीक अछि असीम भंडाव

एहि रात केँ हम मोटि नी

घब भवन हो जखन

दोसबासँ किएक पौट नी

बाथि सतोर कबी उपाय

की यौ भाय ।

..... “माय”

उना तँ हलक करिता चर्चाक अपेक्षा
बथेत अछि पब से समुद्र नयि । जहिना भात सीमले कि
नयि से ओहि मे सँ मात्र एक ठो दाना केँ छुरि अन्दाज लगाउन
जा सकैछ आ तहिना उपरोक्त किछ उदाहरण सब सँ समग्र



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पौथीक अग्रगण्य । बाकवण केव दृष्टिकोण सँ एहि पौथीक एक
छाँट खास विशेषता अछि जे रिभडि (कावक छिह रा मोई)
प्राप्ति मैथिली जेकाँ मुनमोई केव संगहि मिथव जोग अछि । *
अबु मे मैथिलीप्रेमी पाठक लोकनि सँ एतरेहि कहए चाहैहि कि
ई करिता संग्रह हुनिका आगो सप्रेम रैमी कटिगव नगतहि ।

पौथीक नाँव : अग्रव (मैथिली करिता संग्रह)

लेखक : श्री बाबुदेव मंडल

प्रकाशक : प्रेति प्रकाशन +२९, भुवनेश्वर, नु बाबुदेव मंडल, नगर
दिल्ली - ११०००५

दाम : १०० टोका मात्र

* प्राप्ति मैथिली मे संस्कृतक प्रभावक कारणेँ कावक छिह रा
रिभडि मुनमोईक संगहि मिथव जोगत छव । आधुनिक मैथिली
मे रैहूँ कृष्टका क२ मिथव जोगत अछि अथवा मिथित स्वरूप
मे । मिथित स्वरूप - याल कि किछ कावक छिह संग मे
(यथा कावणै) आ किछ कृष्टका क२ (यथा टोकी पव) ।
संस्कृत मे रिभडि छिह रा मोई नमो जोगत अछि अतिष्ठ मुव
मोई मे दिकाव उ०००० क२ “मोई रा धनु क२” रैहूँ
जोगत अछि तेँ उ लयनी मुनमोईक संगहि रैहूँ । पव



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

जर्नल, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली समेत आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा सभ मे
शैक्षिकता री धातु विस्तारि नमि लोख (अधिकारितः) आ तै
काबक केव विभिन्न निरूपणार्थ अवग आखव रा शैक्ष लोखत अछि
।

ई बलापव अपन मतिर ggaj_endra@videha.com पव
पठाउ ।



:: दुर्गासिंह माडव

लैलाव साहित्य प्रकाशक रेल्ल

तारीख 10/6/2012 दिन बरि, निबमानीसँ पठना जेरौक हेतु,
स्थानिय निमाषणसँ संख्या 8 रैजे सबकारी रैम द्वावा गोसांग-
पीतबकेँ सुमवि, आवकित जगहपव रैसल । मसमे सदिखन
देर-पीतबक यदि, तकि यात्रा श्रुत हुअए । निबविगत समेस



रैस थूजल । ततला, नवहिया, हूनगवास होगत चलोवागजमे
काका (श्री जगदीश प्रसाद माडन) के गोव नागि आदवक रंग
रैसाउन । हुका जोड़क हेतु रैवमा गामक कतोक लोक जेला
कपिलेश्वर बाँडत, लक्ष्मी दाम, शिरफुमाव मिश्री, अथिलेने, सुवने,
मिथिलेने आदि आएन छनह । बाति भवि देर-पीतवके
सुमलेत तीर रैजे तेवमे दुनु रोगुत पठना पहुँचलौ । रैसम
उतवि पलेष्टफर्मके गमछाम सारि रैसलौ । ठुमर आँखि डोका
मन-मन आ रंग अबहुन मन । जाकि आँखि झनलौ आकि काका
उठौनह जे उरु-उरु प्रात भऽ जेन । से ल त नदी-तदी
तवगले हरी निख । हरीछ भेनाम सुनत शौचानागयोमे
नगर नगर पड़त । मएह कएन । आँखि मिडित डेग
शौचानय दिसि रैठ जेन । रैवी-रैवी दुनु रोगुत नदी हिललौ ।
गामक रैसाउन दतमि, जेकव अगिला झूह थकछन आ पछिला
भाग टवन । झूहमे दऽ टारिये घुममा ए कातम आगे कात
धवि दऽ फकव-आचमि कऽ आगु रैठलौ । एहव काका
अथियामि छनाह जे टाक दोकान केमहव छैक । जे पहिल
एक-हक गिनाम टाह पीर लेतो तख जे होगते से
होगते । गाँधीमेदलक उतवरायि कातमे धूँ आँ होगत
देखनि । तख भवाम भेन । सहष्टि कऽ नग गेलौ । छनह
पजावह छन । रैचगव रैमेत दु गिनाम टाक आग्रह
केलौ । मए सफ भऽ जेन बहक । काका कहनि जे से ले
त कोला ठेकुसीरनाके तारत भाँजि ल निख, जे ओ हराग
अह्ता जएत जौ जएत त पाग कत जेत ? एकठी झूलमछ
आदमीके देखि हाक देखि । आरि गडनक । ताड़ । एक मए
जेत मेहो कहनक । टाह पीर दुनु रोगुत ठेकुसीमे रैसलौ,
रैमिते मिदा भेन । दुनु रोगुत अण्ठा आले बनी । ले जागि



'विदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हमरा कहिमे गनती भेल आकि ओकवा सुलेमे । ओ तँ हराग
अछाक रैदना मिठापुव रैम अछा नऽ अणनक । आरँ तँ भेल
तीतम्हा, ओ कहए जे ले सब हमरा तँ अहाँ रैम अछा कहलौ,
हराग अछा ले । से ले तँ हमरा भाड । दिअ आ हम
जाएँ । कनी कान तँ केनादल नागन, दूदा हेब ओकले कहनि
रैवनी जे जेरँह से निहल दूदा हमरा सभकेँ हराग अछा
उतावह । ओ कहनक ओतए जेरँग तँ ओव एक माए ठीका
जेरँ । ए तबहँ दु माए कपेआमे हराग अछा पहुँचलौ ।

हराग अछामे जगठाय गवम मिलेली श्रीमान् गजेन्द्र राबूसँ
माझात दर्शन भेल । नमस्काव पाती भेलाक बाद रँहूत रैमी
उतसाहक संग हमरा लोकनिकेँ अगला गाड़िसँ हराग अछाक
तीतव नऽ गेलाह । नऽ जागत जलौनहि जे हराग जहाजक
यात्राक की केना निश्चय होगत डेक । गाड़िसँ उतवनाक बाद
गजेन्द्र राबू हमरा दुनु रापुतक पाँच-मात पोष्ट होष्टे
थिचनहि । हमरू हूक होष्टे अगला केमबामे जेलौ ।

मोरागनक घड़िमे मात राजि गेल छल । हमरा लोकनि एक-
दोसवासँ हवाक होरँक स्थितिमे आरि.... । गजेन्द्र राबू अगला
रौनापव गेलाह आ हम दुनु रापुत अगल-अगल पहिचान पत्र नऽ
नीक लोक जकाँ नागनमे ठाठ भऽ गेलौ । जनीजाति जकाँ
मोष्टेबी-मोष्टेबी तँ रैमी छल ले आ ले गजरीया (गजार
कमागरना) जकाँ गवमियो मासमे कमानक मोठी । तँए कोला
दिक्कतो नहिये भेल । जाँट-गवतान कवा जेलाक बाद
प्रतीक्षानय जा आवामसँ रैमिलौ । काकारेँ कल चाहक खगता
रूमि आग्रह करैत अगला सुतावेलौ । ओना आदति भनहि
काकारेँ छनहि आ से नित्य दु रँजे स्वर्ग रैना कऽ पीरक,



झुदा हमरा से ले, पहिलि कहि आएन छी जे भवि वातुक
जगवना छन । तँ ए प्रति कप चालिस ठोका देरौमे अखबन
ले । ए तबहँ किछ कानक पछाति पुनः घोषणा भेल आ हरेव
दुनु राँगुत नाँषमे नाँषि हराँग अछाक भितर मैदानमे
गेलौ । दुँगायो डेग तँ ले होगते तगले अलले एकठा
रँडका रँस छन । जगपव चढाँ हराँग-जहाज नग गेलौ ।
पहिले भवि मल निगहावि-निगहावि कऽ देखलौ । पुनः अगला
देरता-पीतवलेँ स्मवि हराँ-जहाजक सीठौपव चढाँ भितर
गेलौ । झूहेपव मिलेरँ वंगक चारिँठा रँडटिया नाक-भौह
चमका-चमका मरागतमे हाथ जोडाँ अथेजीमे कहनक-
लेनकम सब । आ भला कऽ हँसि देनक जेना पठौन सुगा
हूँ अए । हराँग जहाजमे सीठ दुनु राँगुतक एकठाँस छन । सीठ
हेवि दुनु राँगुत पहिले हराँ-जहाजक भितरक रातारवणक
अरलोकन कएन । एना नगए जेना भवि जहाजमे रँवफ थमि
बहन होग आ तगपवसँ गम-गम से करैत । राँहवमे जठ
गर्म भितर ओतरेँ ठँठा कनिये कानक रौद मल एकदमा शीत
भऽ गेल । तेकव रौद दूँठा रयमक रौनक आँसि अथेजीमे
किदैल-कहाँदल कहि लिपिमे दोहबौनक । जेकव भार छन
जे हमरा लोकसँ आग्रह करैत कहन गेल जे आँसि ३ हराँ-
जहाज अगला मथामसँ समग्र झुमँग लेन उँड ल भवत । फन
तीन छँठा तीस मिठक भितर अगला मथामपव पहुँचत । तँ ए
अगले अगले लोकनि अगला-अगला सीठपव बाखन रँवफसँ डाँड
राँवहि ली । मए कवग गेलौ । हराँग-जहाज थडकए
नगन । कवीरँ रीया दमे थडकनाक रौद रागा झूँहे घुमि अगल
दिमो आ दमो रँगा रँडौ जेवसँ थडकए नगन । थडकैत-
थडकैत एकरँव हराँ-जहाज माहए कऽ धवतीलेँ छोडाँ



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अकसमे उड़न गगन । ज़ी तँ मन् बहि गेन । ह्रदा किड
कानक रौद मथिब भेन । थिडकीसँ निट्टाँ तकलौ । आहिने
रैगलैया ३ तँ किड कतौ ल देथि । सौसे उज्जव-उज्जव
रौदलेष्टी । रौदनक रंग हरा-जहाज उड़न जा बहन डन ।

हरा-जहाजक भीतव ठैम-ठैमगव चाह-जनथे भेठैत बहन
ह्रदा रौड मगह.. । खैव डोड़ु । नख पाँटमे जे हरा-जहाज
खुनन ओ एक-पैतिसमे ह्रमरंग हराग-अड्डागव पहुँचलौ । कबीर
गनबह मिष्टक रौद लोक सब उतवए नगनाह । पाहु-पाहु
हमरू दू रागुत उतवलौ । उतबिते ह्रमरंग हराग-अड्डा देखि
टकरिदेव नगि गेन । सबठा तँ देखलौ स्वगलौ नहिये ।
काकाक सह पाँरि कनलौ कबरौक लेन एकठा होठन पहुँचलौ ।
भोजन-साजन क२ पुनः घुमि हराग-अड्डागव आँरि नागलमे
नागि सामान टक-टाक कवा ठीकठ न२ भीतव थारेली कएलौ ।
काकाक चाह पीरौक समए मेहो भ२ गेन बहनि । ३ हमवा
रुमन डन जे गाममे अगलसँ रैना साठे तीन रोजेक नरैवर
पीरौ डुमि । जहाज तँ चलि चलिममे डन । हाथमे एक घंटी
समए देखि एक-कग काँहली चलि रीस दन ठीकामे किन दू
रागुत पीरलौ । कनिये कानक पड्ठाति घोषा भेन पछेल
जकाँ नागलमे नागि ह्रमरंगसँ कोट्टि लेन भीतव जा रैसलौ ।
रैमिने अगल घबक गोमाग आ देर-पीतवकेँ स्वमरै सहजहि
मममे आरै नगन । पहुँके जकाँ सब अगुनर कलेत कोट्टि
पहुँचलौ समए होगत बहे डन चलिम । मोरौगनक सुगत आँ
केलौ होगते एकठा सँदेने अ एन जे अथेजीमे डन जेकव
मैथिली बहए- हम प्ररीण ह्रमाव सहयोगी मोहित बारत दिवली,



उज्ज्वल आ नील रंगक कमीज पहिब निकसि द्वाब नग ठाढ़ छी ।
हमरा दुनू रौपुतकेँ धोती-कर्ता देखि ओ प्रह्वननि- “अगल
जगदीशे प्रसाद माँडन ? हम प्ररीण कराव । आँ अगलक
लोकनिक गाड़ि ठाढ़ अछि जे हेछैन छोट्टि देत ।”

गाड़ि क टाक आगु रैठि दुनू रौंग नर सम्हारि क२ बखननि ।
दुनू रौपुत गाड़िमे रौमरौ आ गाड़ि आगाँ समवन । कबीर
टाकिसि लिष्टक उंगवान्त एकठाँ दस मजिना मकान पुर्ततः
राताम्रकनित, गोहमम पार्कि हेछैन कोट्टि, नग ककन ।
मुनीश्वरमे सज्जन दवमाण हेछैनक दवरैज्जा थोनि ठाढ़ छन ।
गाड़ि क ड्राइवर राहवक दवरैज्जा थोमनक । दुनू रौपुत रौह
भेलौ । दवमाण मूकि क२ मरागत केननि । तीतव गेलौ
आकि नज्जवि एकठाँ अठावह रैथि नरयोरना अति रिक्का
मरभाररानी लिदी आ अथेज्जिमे नीपुन अगल पविछ अथेज्जिमे
देनक । जेकब तार छन, हम पुर्णिमा सैमसंग कम्पलीक तबखस
मेरामे ठाढ़ छी । कइ हम अगलक की मदति क२ सकैत
छी ? पुर्णिमाक दुनू हाथ जोड़र, निछाँ उज्जव तंग जीम आ
डुंगव स्वागाथि रंगक ठैमर, नम्रव-नम्रव काबि तौव केशिक
किछु लठ दहिना कातक छातीपव खसन । तिनकोवक हड मनक
दुनू ठोव नान धूँधूँह । तवि आँथि काजव । खुर नम्रव-नम्रव
हाथ आ पौवगव-पौवगव ओगरी मत जे कोला नीक कम्पलीक
चमकीरना नम्रवगामँ रंगन । दुनू हाथ जोड़ि मुर्ति जकाँ ठाढ़
छन । देखिते मन गदगद भ२ गेल । जे एहि रसमक रानिका
एतेक मोनीन ! हमरा अगला भाग्यपव तौवर तेन जे धनि
हमर मिथिना, धनि हम मैथिल आ धन्य हमर मैथिली । जग
प्रतापे हम दुनू रौपुत ठैगोव साहित्य प्रवसकाव प्राप्त



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कबराक हेतु मिथिलाक गाम रैबगा, भाया तहबिया, जिला
मधुबनीमँ छल कोछटि पहुँचलौ।

बिसेपसपव उँटित आदव-भारोपवाणत कममे नमरँव छवि साए
डुह केव कंजी जे ए.पी.एम. कार्डि जकाँ डन। पुर्णिया हमरा
सरँहक संग आग ओग कंजीमँ कम थोवन। संगे ओखे कार्डि
कणी कंजीकेँ एकठा दोसर थोहियामे पेमोवनक तँ भवि घब
गजोत पसवि गेल। दू रौडक कप। उँडल धप-धप गद्दा-
तोसक तक्रिया आदि अत्याधुनिक डन। सामल ठैरुनपव एकठा
एन.सी.डी, हेषण आ चह रैलरीक सभ सकमजाम डन। चहक
सकमजाम देखिते काका तँ गद्गद भऽ गेलाह कहनि-
“दुर्गमिणदजी, सभसँ पहिले एकठा चह पीरू।” सएह कएन।

चह पीरैत पीरी थोनि कल कान देखलौ। तात पुर्णिया मल
पड़नीह हूकामँ हमरा एकठा रैगवतो डन। ओ अगल नमरँव
देल डनीह डायन केनौ पाँटे मिष्टक पछाति तीतव एनीह ओखे
अदाक संग। आग्रहपव रैसनीह। खगता कहनिमनि जे हमर
कैमवाक रैठवी डाल भऽ गेल अछि कल चार्ज होगतए।
पुर्णिया हरिक संग रैठवी नऽ वातक तोजलक विषयमे सेहो
रँता देननि। आ अ कहैत रौहव जेरौक अग्रमति चाहनि जे
हम अही ह्वावपव कप नमरँव छवि साए दुमे डी। अगल
लोकनिकेँ कोला खगता हूअ तँ निःसंकोच रँजा जेरँ। हम
अही सरँहक सेरार्थ आएन डी। धन्यवाद कहैत दूनु ठोवकेँ
बिहँसलैत पुर्णिया कमसँ रौहव भेनीह। नागन एना जेना
रिजनी छल गेल हूअ आ कम अगलव थज-थज भऽ गेल



हृत्प्र। पढाति थोड़ कानक, काका मोन पाड़न जे भोजना
कवरो ? हम कहियनि- निश्चुकी ।

अगल-अगल कर्ता पहिब दुनु रांगुत भोजनक लेन द्वितीय
तनपव पहुँचौ। एक नजबि घुमा टाक कात देखौ।
अनग-अनग छैरुन आ कर्मी नागन । सब छैरुनपव कनिये छै-
छै तेलिया, पलेछे, उज्जव धग्-धग् गिनाम, पानिक रौतन आ
काँछा चहाट बाखन छन । कल कान धवि दुनु रांगुत गमस्य
बहौ। जे गुडि-गुडि पवसि-पवसि खुआउत । झुदा ओत त
अगल-अगल पवसि खागरेना हिमरौ छन । रँझी रँझ रँस ।
एकटक छै पलेछे न२ दुनु रांगुत आगाँ रँझौ। जे छिज-रौस
छिह छेछिं ओ एकछै छैकछी उठा-उठा अगला पलेछेमे बाखी
आ कक्काके दियनि । झुदा जे अलछिहव छिज-रौस छन
तगमे गुडि पडै। सेहो छिदीमे ले छिदक तँ छिदी तँ
कियो रँसरो ले कवै। मैथिली कथे कोन जे मैथिलो आर
छैछै-राग-राग करै। तखन गुडि-पाडि अगल-अगल पमिसक
सब सामग्री न२ भोजन केलौ। भोजनक तँ रियासे झुनि
गुडि, उतव भावतसँ न२ दक्षिण भावतक सब किछु पूर्ण
रँसखा छन । भवि पोख भोजन द२ दुनु रांगुत आगाँ रँझौ
देखौ जे एकछै कबानीमे खीब मल किछु खान्य पदार्थ छेलैक ।
अगला जोगवक जेलौ। खागते मल गद्गद् भ२ गेल ।
तत्पश्चात आगमनीय न२ भोजन सम्पन्न करिते बही तारि
मोहित बारत जी हमरा लोकनिक थोड़-गुडाछा करैत नग
पहुँचनह । हान-टान भेल । आवाम कवै जेलौ ।



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



भौमसव तवगले ँठि नहा धो क२ तैगाव भेजौ। जवगाव
केनाक रौद दूनु रौपुत हेष्टनक निचवा तवगव आरि सागाटाव



पत्र आदि देखि बहल छलौ तखल लेका रातवा जी एनीह ।
सरहक फ़ोन-डेम जानि आनन्दित भेलीह । एक-दोसबक
परिच-पात भेल । आ हमरा लोकनि ए.जे.हॉलक लेल रिदा
भेलौ । हॉल देखि मल गद्दद् भ२ लेल । ए.जे.हॉल पूर्णतः
रातान्तरकालि रैस पौघ हॉल । जगमे हजारक-हजार रिदा
लोकनि रैस मलेत छथि । रैस डूँटगव मट । जगवव दहिनासँ
छटक लेल आ रागसँ उतबक हेतु सीढ़ी रैल छल ।

कथाकाव-साहित्यकाव लोकनिक रैसिक रैसस्था, मिडियारनाक आ
आवित अतिथिक सरहक अलग-अलग रैसस्था छल । दिनक
तीन रैजे पत्रकाव लोकनिक मंग भैँरारत छल । एक कात
मातो रिदा, कथाकाव, उपासकाव आ करि लोकनि आदि
रैसिक रैसस्था छल जिनका आगाँ नाँ छल लमगलेछ छल ।
आली दीर्घामे लेका रातवा मेहो रैसलीह । रैवारवी सब रिदा
लोकनि अलग-अलग पोथीक एक मनक अंग्रेजीमे बखनि ।
तकव गडाति काका अलग पोथी सरिदी रिदाव माहलाया
मैथिलीमे बखनि । पुवा कम्प रिभिन्न प्रकारक कैमराक ब्लैशेसँ
छमकि बहल छल जेना माओन-तादरक रैदीमे बहि-बहि
रिजलोक छमकेत बहेत । रिदाव बखनाक बाद सब रिदा
लोकनिसँ रिभिन्न प्रकारक प्रश्न न२ न२ पत्रकाव लोकनि नुमि
पढ़ना । सौभाग्यसँ हमहूँ विदेह प्रथम ३ पत्रिकाक सह
सम्पादक प्रतिनिधित्व करबाक हेतु उपस्थिति बही । आ
पत्रकाव लोकनिकै मैथिलीसँ हिन्दी आ अंग्रेजीमे भवि पोथ
सतोय प्रदान कएल । पाँट केमहव द२ क२ रैजले मेहो ले



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बुद्धि पौर्णो। सत क्रियो ए.जे. लौक सतकक्रमे प्रवेशे
कएन। अगन-अगन म्थान ग्रहण केलौ। आ शुक्र तेन ठैगोव
निष्ठेरेव अरार्डिक कार्यक्रम। ३ तेसव प्रवक्ताव समारोह डन
जेकर आयोजन एरेव कोट्टिमे तेन बह। जगमे रिभिन्न
भाषामे साहित्यक योगदान हेतु साठ्ठा भावतीय भाषाकेँ चुन
गेन, अंग्रेजी, कोकणी, मैथिली, मलयालम, मणिप्रवी, लंगानी आ
सिन्धी बह। जे प्रवक्ताव कएन गेन। कोट्टिक रौवह जुषक
संध्या समारंग अण्डिया आ साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्यमे
सरोतम योगदानक लेन सातो भाषाक लेखककेँ प्रवक्ताव
कवरौक लेन तैयाव डन। जेकर चयन साहित्य अकादेमीक
पट-पवमेवेव द्वारा तेन डन। एक मनक ७७ महल रिभुतिक
लेन जे क्रमिः १ तवहेँ उपस्थिति डनाह- 1. श्री अमिताभ
गोय, अंग्रेजी, श्री अरुण पाण्डे, 2. श्रीमती शीमाकोनमूरकव,
कोकणी लेव, 3. श्री जगदीश प्रसाद मांडव, मैथिली, गामक
जिगगी, 4. श्री अकिथम अह्यतम् नागर्दवी, मलयालम-
अभिमानाकानम, 5. श्री एन. कंजमोहन सिंह, मणिप्रवी, एना केँगे
केनरा माठे, 6. श्रीमती अदिति दवनाम, लंगानी, प्रया प्रया
आ 7. श्री अर्जुन हसीद, सिन्धी, ना अएना ना।

ए कार्यक्रमक अध्यक्ष अतिथि, डा. एम. रिवागा मोगनी, उ.ए.डी
ककण, एम.पी. रिनेन्द्र कुमार, श्री अग्रहावा प्रयासुति, मटि
साहित्य अकादेमी दिवली आ श्री बी.डी. पार्क धेसीडेष्ट एंड
सी.डी.ओ. मांडव-रेम्टे एसिया, अध्यक्ष कार्यालय एच.क्यू. समारंग
अनेकप्रैमिक्स डनाह। कार्यक्रम दोबास लारेन प्रवक्ताव
प्रवक्ताव मनकरि बलिदनाथ ठैगोव केव संधिमे अगन-अगन

बहुमन्य रिटाव बखनि । कार्यक्रमक उद्-घोषिकाक कगमे
साहित्य एर कनाक दुनियाँक प्रसिद्ध थी.ती. एकव, माँडन बजनी
हविदास द्वावा जर्दन्त प्रसूति सरहक मसकै मोहि लेनक ।



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



MS. SHEELA KOLAMBKAR

Awarded for Geera

Language – Konkani

Genre – Short Stories

Ms. Sheela Kolambkar is a renowned writer, who has written several books which have been translated in various languages such as English, Telugu and Malayalam. She has been bestowed with Sahitya Akademi Award 'Bhangarachen Sukne' in the year 1997 and 2007 respectively. Ms. Kolambkar's collection 'Geera' is an eloquent display of the agonies faced by women in a village. It demonstrates her prowess in describing the finer nuances of a woman's life – a child, husband, friends, and even acquaintance. Ms. Kolambkar is one of the few female Konkani writers; Ms Kolambkar's path breaking writing has enriched the Konkani literature. Geera collection covers literary work of the

MR. K. KUNJAMOHAN SINGH

Awarded for *Eina Kenge Kenba Natte*

Language – Manipuri

Genre – Short Stories

Mr. Kunjamohan's book containing 15 short stories and spread over 100 pages, is a masterpiece of the art of storytelling. In almost all the stories featured in the book, the characters are beautifully portrayed in a language familiar to common people.



कार्यक्रमे प्रवक्ताव रितवा हेतु उद्घाटनक पञ्चाति रिजेता
रिद्धाण लोकनि मीटमीन होथि आ प्रवक्ताव भव अगण-अगण
संथाणव आगम आरथि । प्रवक्तावक कगमे प्रवक्ताव वक्ताव
हैगोवक एकठा रैम किमती मुति, एकठा टिकन मान एरै एकाणरै
हज्जव कपेयाक टेक प्रदान कएन गेन । रीट-रीट मिडियाक
कैमवा रिजल्लोका जकाँ लोकेत बहन । प्रवक्ताव गारि श्री
जगदीश प्रसाद मण्डनजी अगण निखन पोथी गायक जिनगीक
रियमसँ पुरि पोथी प्रकाशक त्रुति प्रकाशककै धन्यवाद दैत
रिस्तावसँ मातृभाषामे अगण रागगी प्रस्तुत कइ मिथिला आ
मैथिलीक सगदिाकै रैठ गेनि ।

कार्यक्रमक समापन भवत शान्तिमक प्रसिद्ध नवतीकी, कनाकाव
पद्मश्री शोभाचन्द्र कमार द्वारा भवकव उद्घाटनपूर्ण म्तरवीय
नृत्यक संग भेल । पाँट रैजे संध्यासँ दस रैजे वाति धरि रूम्
जे डू आगुव घाँमे डल जकव सफलताक श्रेय स्रष्टी कटिका
रैठा, वेणुका भाव, सैमसंग गण्डिया, री.डी.पार्क आदिाकै डल्लि ।
जे समस्त कार्यक्रमक दोवान काग देखै आ रैकोष्याणम् कगमे
बहना/बहनीह ।

ए सँरहक पश्चात हमवा लोकनि होठन आरि म्तरकटि भोजन
कइ आवास केलौ । प्रातः भेल छवि रैजे भोवमे अतिरादनक
संग हाथ हिनरैत गाड़िमे रैसलौ । अद्भुत अखला ओ हमवा
मल अडि..... । तारैत गाड़ि कोट्टि हराग-अड्डाक जेल
प्रस्थान कइ टुकल डल । वाति दस-रैजेत-रैजेत यात्राक

बि ए नु बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maitthili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम ट्योथिनी पत्रिक ई पत्रिका



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पूर्ण आनन्द लेत दुनु रौपुत गाम लेक्या-लोकनश्रव आरि
लोलो ।

ई बचनपत्र अगल मतिर ggaj_endra@videha.com पत्र
पठाउ ।



टिप्पण कर्याव सा

सबबा, मदलश्रव अल



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मधुबनी, बिहार

१. बिहनि-कथा - ठकबुद्धि आलख-जिउतव रैनाम् भुष्टतव

१

बिहनि-कथा - ठकबुद्धि

बिहनि बाग पहिने रैव दुनु प्राणी गाम आयन अछि.संग मे दुनु
रैचा सभ मेहो अयनहि अछि.गंगाधर पण्डित काव सँ उतरैत
बिहनि, ओकव कनिअग आ रैचा सभके देखल बहनि.अनमल बिदेसी
नछोडै. गोव धग-धग रैचा सभ. कनिअग मेहो रैष्ठ सुनवि
डैक.बिहनि त पहिनेहि जैका अछि.गहूँमक वंग सन झुदा मुँहक
चमक रैठा गेलैक अछि.किएक नहि रैठते कनकठवक पोसु
कोला मायूरी पोसु नहि होग डै.जिनाक बाजा होगत अछि
कनकठव.तखन बाजसी ठाँठ-ठाँठक चमक त एरै कबते.कनिअग
बिना कमाव मेहो एस.डी.उ.डैक.दु रैवथक जुनिगव डै कनिअग
बिहनि सँ.दिलीए मे दुनु प्रेम बिराह केल बहए.रैचणी, बिहनि
माय दियामा सँ झुठन जा बहन डै.गाँठ रैवथक पोता बालेने
आ दु रैवथक पोती बगि के देख ओकव खुशीक कोला ठेका
नहि डै.रैव-रैव दुनु के कनेजा सँ सठारैत अछि.बालेनिक झूठ
सँ "दादी" भेट, सुनतहि ओकव आँधि लोवा जागत डै.आँचवक
खुष्ट सँ रैव-रैव अण आँधि पोछि जेत अछि रैचणी.

भवि गामक लोक कवमाण नागन डै बिहनि दना पव. गंगाधर
पण्डित जी, दयाकात मासुव साहेब,किवतु झुथिया,...गामक
झूठकथ रैचा रैनु मेहो कवसी नगा रैसन छुथि.एतरे मे



बयि के कोवा मे लल रिने मेहो आँगन मँ दलान पब अरैत
अछि. रिनेक अरिते ओहिठाम कबमी पब रैसन सत लोक ठाढ़
भ२ जागत अछि. रिने, रँचा राँव, पडितजी, मांशुव साहेब, सत के
पएव डुमि गोब नलौत अछि. मांशुव साहेब रिने के भवि पाँज
पकवि डाली मँ सथा लौत डुमि, हुनका मुँह पब गरिक भार स्पष्ट
देखाव भ२ बहन डैक जे हुनकब रिद्वारी आग कनकठब रँमि
गेन. रिने सत के रिनय भारे रैसराक आग्रह करैत अछि. सत
रैसथि अछि.

भवि गोआ के आग गरि भ२ बहन डैक जे ओका गाम मे
एकठा कनकठब मेहो डैक-रँचा राँव रिने दिस तलेत
रँजनाह..... एकठा बहि दु ठा रँचा राँव - पडित जी रिचहि मे
रँचा राँवक राँत कठैत कहनथि. कनिअ मेहो अगिला मान धरि
कनकठब रँमि जेतीह ल... पडित जी आँगा रँजनाह. रिने किछ
बहि रँजना. खाली कुरियाएन बहए कल.

आँगन मँ गोपीया, रिनेक पितियोत एकठा छिपनी मे पाँट-डुह
कप छल लल आयन. सत गोठे छल पिले नगनाह. एतरे मे
बुझिनाथ मेहो रिनेक दलानक आँगा राँठे कोरुनो जागत
बहथि.... कलौ जागत बहि बहथि.. ओ त रिने मँ भैँठ कवय
आयन बहथि. दूदा रिने नग रँचा राँव के देखि दोसब राँठ
पकडि लेनथि. सात पकथा मँ दूक पबिराव मे एक-दोसवाके
मिठा देखेराक होव मचन डहि. पुँतनी दुआली छलैत
डहि. देखनक रँचा राँव केहन निर्मल भ२ गेन, रैदनीक दुआवि



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

पब रैमि आरि चारि गिरित अछि....छमावक दुआरि पब.बाम-बाम."

-३ रात कठिब सँ कहैत कान बुझिनाथक स्रव मे अपन दुआरि
सँ पाँडा भऽ जेराक थोमी स्पष्ट प्रतीत भऽ बहन छलैहि.

बाकेशि लथ मे एकठा गेल लल दान पब आसन आ रिमठ
के अपना सँग खेनरीक लेन जिद कवय नागन. रँचा रँचु ओकवा
अपना कोवा मे रँसा लेनथिह आ गान पब दुआ नऽ नऽ
दुआवऽ नगनथिह.रँचा रँचु कोवा मे अपन पोता के रँसन
देथि रँचनी के कबीर तीस रँवथ पहिबका रात मोन पबि
गोनग.हुह मासक बहक रिमठ.हाँ रिमठ..भवि रँचनी आ रँचनी
सत तऽ रिमठए कहैत छलै रिमठ के.रँचनी लेन तऽ रिमठ
एथनह रिमठए अछि.

ओहि दिन रँचनी एसगले बहए घब मे.मास लेल गेल बहए.सम्ब
मास के पहुँचै गेल बहथिह.रिमठक पिता सेहो कोला आन
गाम गेल बहय बसणटोकी रँजुरे लेन.नरहथ रँचनी गिवहतनी
माल रँचा रँचु गिवहतक घबरौलीके रँचा होनहारी
बहए.प्रसंगीछ । उँटि गेल बहए.रँचा रँचु गिवहत के हूकव रँचु
माल रँचु गिवहत पठैले बहथिह मास के रँजा अणय
लेन.असमजस मे पबि गेल बहए रँचनी.....घब मे प्रकय-पात
नहि छै.ओकवा एथन सालो नहि प्रबलैए मासब रँसना. कोला
जेतग घब मे रँहव... ? हुह मासक रँचा के कत
बथतग... ? .ओ तऽ आग धरि कहियो, ककरो पबसौती कलेरौ
नहि केनकग...हुदा, नहि जेतग त पमावी छियेक गिवहत
हुँटि जेतग...रौमि मवि जेतग...मासिक की कहतग...तछ मे



রঁড়কা গিবহত.....সৌসে গাম হুগকব থাক কলৈ ড়ৈ.....রঁড়কা
কনোরব রঁনা লোক ড়খি...অন্ততঃ রঁচনী অগল পিতীয়া সৌস কে
সগ ক২ গেল বহএ.বিন্দু কে সেনো সগে লল গেল বহএ. ড়া
মাসক রঁচা কে কত বখিতগ.

মুনেশি রাঁবু জগমল বহখিন্.রঁড়কা গিবহত, রঁচা গিবহত সন্ত
গিবহতনি,সন্ত কেযো রঁডু চবখিত বহখিন্.রঁচনী সেনো মোল
মোল নিচেল ভেল বহএ জে গিবহত নহি ড়ুঠলৈ.রঁচা জগমল
টে রৌগলো রঁশী ক২ কে ভেঠতগ.ঘোষ তলল, বিন্দু কে কোবা
মে উঠেল বিদাহ ভেল বহএ কি তখল পএব মে কিডু অতবন
বহএ.ঘোষ তব মে নহি দেখাগল বহএ ওকবা. অলে রাঁগ লে
..জুগুম ভ২ গোলৈ..মৌগাক পিতরীয়া লোঠা ড়খা গোলৈ..কোলা রঁচা
টিকবি উঠল বহএ.রঁচনী কে দেহ জেলা পথবা গেল বহি গ
রঁাত স্মিতহি দেবী...বু.....দী,খ...বালী..অসর্ধ-অসর্ধ গাবি পঠত
রঁচা রাঁবু রঁচনী দিস মাবল লেল হুবকল বহি..ওত২ রঁচনী কে
পিতীয়া সৌস পএব পব খসি পবল বহি রঁচা রাঁবু আ রঁড়কা
গিবহত কে উঁগ জাল রঁচলৈ.একএক ঠা রঁাত,একএক ঠা গাবি
রঁচনী কে এখলহু ওহিলা মোল ড়ৈ.এখল ধবি নহি বিন্দবন ভেলৈএ
ওহি অগমাণ কে...বিন্দু আ কে রাঁগ জখল গাম অগলহি ত২
সন্তঠা রঁাত রঁচনী কহি দেলকে আ দুলু পবলি ওহি দিল সম্পাত
খেল বহি জে আর ও ককলো পমাৰী বঁশি কে নহি বহত.ড়ুঠ
গোলৈ গিবহত..ড়ুঠলৈ কি ড়োড়া দেলকে...হেব বিন্দু আক রাঁগ
বসলটোকী রঁজাকে আ রঁচনী খেত মে রৌগল ক২ কে বিন্দু কে
পঠেলকে.....কনকঠব বঁললকে.পককা মান বিন্দু কে রাঁগ চলি
গোলৈ রঁচনী কে অসগলে ড়োড়া কে.নহি...নহি ও এসগব কল
অডি.....ভবন-পবন পবিরাব ড়ৈ.এহল পবিরাব জকবা দেখ ককবা



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हम मेहस्ता नलोत डै.रेचनी के आँखि हब लोवा गेन बहे.उ
हब आँच सँ आँखि पोछि जेनक.एतेक दिन रेचनी के एकठा
प्रम रैव-रैव मोन मे उँटैत छल जे रैचा रौरूक प्रतोह
डाकैवनी डै.ओहो तऽ पवसोती कवरै डै जेकिन ओकब डुखन
किडो किएक नहि डुखाएत डैक... ? ..रूदा आँगा अगना दगन
पव रैचा रौरू के चाह पिरेत देख रेचनी के एहि प्रमक उँतव
मेहो भेठ गेलै.

मि सजन डैक.मि पव रिमठ रैमन अछि.गामक गामान लोका
सत मेहो रैमन डुखि.रिमठक सन्धान समारोह आयोजित कयन
गेन अछि.सतठी खट रैचा रौरू केनखि.मगक पव किवत
रूथिया भाषण दऽ बहन डुखि.-"हमर गामक श्री रिमठ
बामकनकैव रैमि गेनाह. ३ हमरा सतक जेन गौवर के रात
अछि.हम सत आँगा हुनका समस्त प्राणीक तबह सँ सन्धानित
कवरै..." रैचा रौरू रिमठ के पाग, मान आ दोपटी पहिराय
सन्धानित करैत डुखि.रिमठक रूह पव एखला रैम रूथी ठी
डै.ओकवा सतठी रूमन डैक.रैचा रौरूक किवदानी...गामक
रैथा...समाजक टापुसी.सत जलैत अछि रिमठ आ तर्ग ओकवा
माथक पाग कोला ठकक द्वावा पहिराउन छैपी सँ रैनी नहि
नलोत डैक.रूदा,आर रिमठ ठकाग रैना नहि अछि आव तर्ग
ओकवा रैचा रौरूक ठकरूँहि पव हँसी नलोत डैक.

२

आमेख



जीवतव रैनाम् ज्ञातव

ज्ञातवक रिकछ रतिमान सामाजिक आंदोलनक "प्रतीक प्रकय"
श्री अन्ना हजारे जखन सबकार के अंगन कतिरारोप करौनहि
तखन सता पब रैसन तथकथित जनमेरक सभके आ आंदोलन
संरिधान रिकछ नागय नागन. समिद के समदीय गविमा पब
आघात रूमय नागन. लोकतंत्र के "तंत्र"क रचार मे सतातंत्र
संरिधानक दोहाग देरय नागन. द्वाद, लोक के सभ रिसवि गेन.
लोकक पीड़ । के सभ महत्त्वनि रूमय नागन.

लोकतंत्रि रैयक रूजुआ के मात्र एक आंदोलन पब जखन देशक
कड़ लो जगत सडक पब आरय नागन आ अंगन अधिकारक
हेतु नडय नागन तत्र "सता"क नजवि मे आ "जीड़" रैनि गेन.
सतामीन लोक कहय नागन जे देशे मे लोकतंत्र अछि जीवतंत्र
नहि. काबुन रैयारोप अधिकार मात्र समिद के छेक. मतनर सार
जे छुनारक रौद जनप्रतिनिधि अंगना के शोषक रूमैत छथि ओव
जगत पब अंगन हुकुम चनायर संरिधान प्रदत्त अधिकार.जनमेरक
सपथ धय सिमसन धवि गहुँचना उपवात ओ मेरा आ शोषन मे
भेद रिसवि जागत छथि.ओ रिसवि जागत छथि जे लोकतंत्र मे
लोक प्रधान होगत छेक तंत्र नहि.

येह जीड़ जखन कोला छुनारी रैनी मे कोला राजनीतिक दलक
सभा उठौल एकहठा होगत अछि तखन आ मतदाता रैनि
जागत अछि, तखन आ देशक जगत बहेत अछि.लता एकवा
अंगन भाग्य-रिधाता रूमैत छथि ओव राजनीतिक रैनी मे गेन
जगतक प्रहक उचित-अवचित प्रर जगतारणक द्यातक कहलैत



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अछि कि एक तऽ यैह मतदाता प्रत्येक लताक जेन सत्ता-प्राप्तिक
साधन होगत अछि. रतमान राजनीतिक परिदृष्टि मे राजनीतिक
दृष्टिकोण सँ 'मत'क मतनर मात्र चुनाव दिन एकठा रोठ सँ
अछि. मतदाता के चुनावक रौद अगल अतिमात्र प्रकट कवर चुनाव
प्रतिनिधि के रैर्दीप्त नहि होनगत छैक. ओ एकवा अगल
अधिकार मे हस्तक्षेप रूनेत छथि.

जनता जखन लताक जय कहैत अछि तखन ओ देशीक जागक
नागरिक कहलैत अछि. राजलता सतकेँ ओ तखन लोकतंत्रक
कर्षाव रूमणा जागत छहि. लेकिन यैह जनता जखन सबकारी
तंत्रक तन्दा तोड़रौक हेतु 'भावत माताक जय' कहैत अछि
किरा 'रैदे मातवम्' के नावा नगलैत अछि ओव लाख मे
बाष्ट्रप्रज नय कराररुखक विरोध मे आराज उठलैत अछि तखन
ओ सबकार आ राजलताक नजरि मे असु, उम्ह, आ
लोकतंत्रक ओ संरिधाक विरोधी रैनि जागत अछि.

रात सह छैक जे जनता अगल प्रतिनिधि के चुनाव करैत अछि
आ रैहमतक आधार पव चुनाव एहि प्रतिनिधि सतकेँ भारतीय
संरिधाक जनहित मे नियम-कानून रैणयराक अधिकार दैत छैक
रूदा जखन जनप्रतिनिधि आ सबकारी तंत्र अगल एहि संरिधाक
अधिकार के सद्धित उंगयोग नहि कऽ गलैत अछि ओव
जनहितार्थ कानून रैणरौ मे रिहल भऽ जागत अछि तखन
जनता अगल अतिरु रैदेरौक हेतु, अगल भविष्यक निर्माणक
हेतु एरौ लोक कणाण हेतु सूर्य ठाठ हेरौक जेन रौधा होगत
अछि आ हेव जनभारणा आदोमक कण धाका करैत
अछि. सामाजिक सवोकार लोकतंत्रक आधार होगत छैक लेकिन
जखन सवोकारक अर्थ सबकारी शैर्लोक्यमे सद्धित भऽ जागत
छैक अथवा किछु खास रङ्गक लोकक विशेषाधिकार रैनि जागत



ढैक तथण रँटित समाज अणन सलोकलक हेतु नडरौ जेन
मजरूव भऽ जागत अछि.

अप्रुटावक बिकरु रँटिमाण जनभारणा, यथास्थितरानी भऽ टुकन
जनता से नर-टेतलक प्रतीक अछि. थाम कऽ एहि से
हरारअक महभागिता अरुतँवक जेन सप्रु टेतरणी अछि जे
आरँय रँना समय सामाजिक परिवर्तनक समय अछि. समाजक
मर्याम एरँ निम्नरअ से आयन जागृति अ सँकेत दऽ बहन अछि
जे लोकतँव से बाजा आ प्रजाक रँच कोला भेद नहि होगत
ढैक, अ एकठा समतामूनक एरँ बिकसित समाजक निर्माणक दिना
से एकठा गैय एरँ महवृर्ण सँकेत अछि. सामाजिक न्याय,
समानता एरँ रँटित समाजक उथान, जे एथन धरि मात्र नावा
तक सीमित अछि एरँ विभिन्न बाजलैतिक दनक रोठैरँक-
बाजनीति के शिकाव अछि, एहि दिना से आरँ जन-जागृतिक
प्ररन आनी कयन जा सँकेत अछि. सँवरँतः बाजलैतिक दन
सभ सेहो एहि रँदलैत रारस्था सँ किछु सिखत ठव बाजनीति
से जनताक सेरो के सँरोपवि रूमन जागत.

स्वतँवता प्राप्तिक रँद एथनधरि समाज के जाति-धर्म, अमीव-
गरीब, जलदि विभिन्न रअक आधार पव रँष्टि प्ररक बाजलैतिक
दन सतसुख प्राप्त कयनक अछि. निजी स्वार्थ भावतीय बाजनीति
के एथन धरि मून भारणा बहन अछि ठव दिनाबुदिन आम जनता
एकत होगत गेन अछि. रँटिमाण आंदोलन के तौडरँक हेतु
सेहो सता लोवण समाजक दिन सँ प्रयास कयन गेन द्रुदा
एहिरँव एकव यात्रा से जे कोला रँधा-रिघ्न आकि कानुनी दँर-
पेचक तिकडम आयन सँभठा घोठाना आ वृसुथोरी सँ तंग
जनाक्रान्तिक आरि से रँहि गेन सँगहि एकरँव खेव सारित जेन
जे दृढ गडानिधि, आमेरँन, आ सँयम नस्त्रप्राप्तिक अमोघ अरु



'বিদেহ' ১০৮ স অংক ১৭ জুন ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৪ অংক ১০৮)

মানুষবিদ

সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

অভি. ও তখন ওব আশাশ ভ২ জাগত ঠেক জখল কেসো এহল
মাস্তাদর্শক সমাজ কে ভেট জায় জকবা পব সভ কে বিশ্লেস
হো.

এহা মে জখল দেশিক প্রাধিকারী, দেশিক সর্বোচ্চ সর্বাধিক সন্থা,
সমসদক পঠন সঁ এহি আদোশ ওব আদোশকাবী কে সন্থা
ঠোকেত ভুখি ওব দেব-সরেব সমস্ত জল-প্রতিনিধি জলতা কে
অগল মানিক মানস লেন রাধা ভ২ জাগত অভি তখন "
জলতাক ওড়া সমসদক ওড়া" রনি জাগত ঠেক. সগহি সন্তানোবুগ
ওব চাঠকাবী সভকে সকেত দৈত অভি জে জলআদোশ
লোকতত্রক কাবক হোগড় সন্থাবক নহি.

কবীর একরর্থ পহিল "মিথিলা সমাদ " মে প্রকাশিত

এ বাচসাপব অগল মতিব ggaj_endra@videha.com পব
পঠাউ ।

২. পদ্য



मानवीमिह



३.१. जगदीश प्रसाद मण्डल



३.२. छ. मेनिष्वर कृष्ण - विदेह



३.३. जगदीश चन्द्र ठाकुर अमिन २.
मृषी कायत



३.४. शिरकृष्ण मा 'ष्टन' - मिथिला-पत्र



३.३.१



किशोर कावीगवर



बाबासा सा-

सम्पादन



श्रीमान श्रुत

३.३



टिप्पणी करार सा

३.१



जगदानन्द सा मल्ल

३.१



संभाषण करार शि- अतिमसहिन अतिमस



मानवीमिह



जगदीश प्रसाद यादव

जगदीश प्रसाद यादवक दूरी गीत

गीत-1

गाढक बग रैदलि बहन छै

मोमरा संग सुधरि बहन छै ।

थन-कमल जकाँ कहियो

गाढ़-मान-ऊँज्जब रैले छै ।

तल्लिा फूल-फल कोठाँ जकाँ



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मवि-मवि कोलो हलो रैले डै ।

गाढक बग रैदलि बहन डै

सौम्य संग..... ।

आनी आनी नगा-नगा

जोत अगवाजित रैलेत बै डै ।

सुधवि कग रैदलि टालि

कावी काजव टाकि डै डै ।

गाढक बग रैदलि बहन डै

सौम्य संग..... ।

नती पानि कग रैदलि

थन-कमान कहरोत चले डै

तलिना नती अगवाजित

गाढ रैनि गडाडा धड़ डै ।

गाढक बग रैदलि बहन डै



मानवीय

मौसम रंग..... ।

गीत-2

झँक हँसी केलें अरै डै

ठोबक कप देखैत चू ।

झाती केलें दनकि बहन डै

सुब-ताप भजैत चू ।

झँक हँसी केलें अरै डै

ठोबक कप..... ।

जिणगी जेकब जेहलें बह डै

झाती तेहलें तेकब रलै डै ।

हममि-कममि कहैत बह डै

पावदर्शी एना रलैत बह डै ।

झँक हँसी केलें अरै डै



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ठावक कप..... ।

जखल पानिस शीशा नगते

सन अन्हाव रँगिते बहते ।

सन अन्हाव अन्हाव रँदनि

एकतग्य रँगि शीशा कहते ।

झँहक हँसी केलेश अरौ ठे

ठावक कप..... ।

देथि-देथि, सुनि-सुनि

हँसत डेग उठरैत चनु ।

झँहक हँसी केलेश अरौ ठे

ठावक कप..... ।

ई बचनोपव अपन मतिर ggajendra@videha.com पव
पठाऊ ।



श्री. शशिब कुमार

~ बिदेह ~

एम.सी.(आयु.) -

कार्यचक्रिसो

कालेज ऑफ आइडिओ एंड बिजनेस सेटव, निगम - प्राधिकार,

पु॥ (मेलबार्न) - ४५१०४४

अपन लेना सस्तर !

हाय ! सहजो ल जागड़, तीव तेज - तबब ।

अपन लेना सस्तर !

गोरी कनखी ल याव !



केउ कहगत अछि लेन जेना मागव रा सीन ।

मीन हागन कवय केनि रा हो कमनदन नीन ।

झुदा हमरा नछोड जा सत्यः
कछाव ।

अप्पन लेना सन्हाव ।

गोबी कनथी ल माव ।

आँखि सुन्नव एहेन की पाउत हबीन ।

की तुमना कवत गोबी तोबा सँ मीन ।

धन्य काजव भ२ गेन रँनि एकव शिगाव ।

अप्पन लेना सन्हाव ।

गोबी कनथी ल माव ।

थिक काबी झुदा मल्लाहारी जा लेन ।



मानवीय

दूब बहिटहूँ हमर छीनि लेलक अ टैल ।

रिश्त आहटिअहि कयलक छदल आव - पाव ।

अप्पल लेला मरुव ।

गोरी कलथी ल माव ।

देस भगवानक तौबा अ अलमोल छै ।

झुला किछ नहि, झुला रैड एकव मोल छै ।

एकव आगाँ निडाँव अ सौसे समाव ।

अप्पल लेला मरुव ।

गोरी कलथी ल माव ।

हम नहि बोकै



मानवीय

अहँ जाग छी त२ जाँ, हम नहिः लोक ।

किछु स्मृतिहि जाँ, रँक नहिः
ठैकर ।

हम प्रेम कयल, थिक दोष हमर, सट मानल सगल
जे देखल । ।

हम लह नगा, गनती कयनहूँ ।

हम प्रीति जगा, गनती कयनहूँ ।

नहिः दोष अहाँ केव अछि कनिषे, हम अगल बिकट छरि नहिः
देखल । ।

हम झलक धूनि से, नहिः मोचल ।

की अहाँ, की हम, से नहिः देखल ।

छी दलक भागी हमहि सखी, हो अहँक हलक दिस शुभ -
मंगल । ।



मानवमिह

अहँ जतय बली, सुथ सदिखन ।

हो अहँक संग, मातो सबगम ।

हन्नाब हिम्मा ये भवहि जाव, हो अहँक हलक पन म्
लौड़न । ।

तोहब जिनगी ये रसभुक्त नय

तोहब जिनगी ये रसभुक्त नय,

हन्नाब पतमड़ पवराहि ल
अडि ।

तोहब लहक भग्नारमैय पव,

प्रेम रिजय निज चाह ल अडि
। ।



मानवमिह

तौ हमर ल भ२ सकलै, सविगह्

अनकव होयरी पव आह ल
अडि ।

तोहव सुथ मे हमर सुथ डी,

स्रीकार्य तोहव दूथ डौह ल अडि
। ।

हम प्यासन मरु मे पानि रिना,

मरि जायरी - से पवराहि ल
अडि ।

रैस तोहव जिणगी हो सुखव,

मम मे तोहव अधनाहि ल
अडि । ।

डन हमरहि प्रेम मे दोय कोणह्,


तोवा पव सथि अरसाद ल
अडि ।

हो पूव तोहव हव - एक सपना,

बन्धिः भेन हमार, से आह ल
अब्धि । ।

ए बसोपव अपन मतिर ggajendra@videha.com पव
पठाउ ।



१. जगदीश चन्द्र ठाकुर अमिन २.  **हमरी**
कामत



जगदीश चन्द्र ठाकुर अग्रिम

गजल १

हम तमनायर् गजल स्वायर्

अहाँ अग्रतायर् गजल स्वायर् ।

अ सौमे आकाशे हमर डी

उडि-उडि आयर् गजल स्वायर् ।

मागक कबजा मारिक कबजा

हमझँ दुकायर् गजल स्वायर् ।

पाग कते भवि गोन मोषमे

गंगा रैनायर् गजल स्वायर् ।



मानवीमिह

मगटे आगि अछु जंगममे

कतहु गड़ गिरै गजन सुनायरै ।

अहाँक हृदयमे घ ब रुमर अछि

घुमि- घुमि आयरै गजन सुनायरै ।

ताकरै राँठ अहाँक जीरन भवि

सगल सजायरै गजन सुनायरै ।

गजन २

घबसँ होड रँहार रँछी

रँछ तँकेछ गहाड रँछी ।

थगठा थिक मोला आ टानी

242



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८),

मानवविज्ञान

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

उत्तम मूलक धाव रैथी ।

गोन जमाणा तिनक दहेजक

सबस्वतीक संसार रैथी ।

लैहव सासुर तीर्थ धाम सर

त गोन आग रैजाव रैथी ।

आरै गतान ल जेती सीता

सुन्दर यैह रिटाव रैथी ।

२



रुमि कागत

दुष्टा करिता

करिता-

हमर मिथिला हमर थां

हमर मिथिला हमर जगनी

हमर गएह गवाण अछि

देखलौं तँ रब दुनियाँ आगु

रुदा मिथिले हमर ज्ञान अछि ।

एतका माँष्टिमे खुनिरु संस्कारक



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवमिह

जे ले रूने केकरो आन अछि

आलोकै अगना रैगरेए

सएह मिथिलाक पहिटास अछि ।

जतए गोरबक लोगत अछि गुजा

रंगबोकै मिलैत दूगार अछि

आ पारस धवती हमर

एतए जलनी धाम अछि ।

जे एनाह एतए रैमि जेनाह

कथला बाम तँ कथला उगना जेनाह

देरतो ए माष्टिसँ करैत दूगार अछि

एहेन परित हमर भूमि

एहेन स्वन्दर हमर गाम अछि ।

नारी

निर्माण अछि, ओ माता अछि

निर्माण हुनकर दुनार

ओ नारी अछि ए समाजक

जगमे बचन-रसन अछि समाव ।

ले भेटैनि अश्रुकुन परिवेशे हुनका

ले ज्ञानक साव

तेयो हेबत छी देखि क२

कतेक छुट्ट, आदर्श अछि लिखब रिटाव

हब हागमे

दरैरैत आएन लिखा अग्रणी समाज ।

झुदा कहि बहल अछि आगि नारी
जननी भौ हम समाजक
हमारी रैदलरै एकव मोट-रिटाव
पैदा कवरै अपन प्रतिमै संस्कार
निर्मल बहरै हम, ममाता बथरै
रैछैरै जन-जनमे प्याव ।

ए बचोपव अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



शिरकगाव सा ँ छिन्नु

मिथिला-प्रबन्ध

मिथिलाक छोटोले मरुए पड़वनि

समेनिगा बिश्वरुहक दनि

मतलैगा पोथबिसँ पंचरुष्टी धरि

कि कस्वण तकलौ

कतहु ले भेटैत



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सब बाकने सब कने

बख मास बहि

पौसठि रैबख धरि

मयना ठुठरैत बहनीह

प्रसर रेदनाक थीस

तख ज्ञा क२ भेल

जीरण संघर्षक जीत

दिरमेमे तरेगल रैहकल

बिदेहक आँख जलमान जगदीश

मौलागल गाढक हुन गमकल

तापसमे लैक वारी चमकल

पूराग्रहक छपेष्टिमे

जाति-पञ्जातिक जेठमे

उसवा क२ मैथिली

भ२ गेल छनि निर्मूल



रौद्रमा गजेनक आशि जागन

सुखेन गुननविमे हुन नागन

बगन जिनगीक जीत

रैगजिक ले-

गमिनेनत गामक जिनगी

मात्र मेहथ आ रैवगा ले

मोवगसँ मिगिया धरि

चमकि उठन गदियनयी अकाम

केकरो ले डन रिग्याम

द्विजक दूबदेयाक संग-संग

अस्फोपक मोती रैहत... ?

सुराभारिक डन उगहाम हएँ

दूदा ! तिवस्कावक फोत्रि ले

जीरन-मवण तँ प्रगतिस्थ नीना



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवमिह

तखन केकरोसँ केहेन द्वय ?

अरतावरदक सेहो होगछ पवाभर

केउ पगली देत की ले

कोला हय्ना ले

ले उतथासक आशि

पतनसँ ह्ना ले

अकान तेन तँ रिमौठ टिरो क२

बाँत-दिन सगबसता दीप

जुड़लैत बहन

अपन गीतजलि गारि

कम्थागागज करैत बहन

कोला कबुय कम्थागागज ले

गत्र-गत्रमे सगबसराद

कनमे ठाँ सँ ले



जीवन दर्शनमे सेहो

छनि गेला भोगेष्ट

ले तँ उतव भेटि जगतए

यात्री, आवसी आ फज्जबस

सेहो कोला तुलना ले

आन गच्छा-पौष्टिक कोन गप्प

लोक छाँडी ले छनहा कए

रिक्त ले रूँडि रिक बूमए

संस्कार ले छोडै

थाँडी किमाण मजदुरक कप

ब्रह्म रौनामे कनम थियारथि

सबन धरन रौबगाक भूप

एहन साम्यवादी-

फाँसीपव छठि जाएँ



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवमिह

झुदा रैछैलीकै अधनाह

राष्ट्र ले देखाएँ

लेकरो ले स्रजनक

सततिक लोण कथा

अछूतिली सेहो सेहो बहनीह

ए लेखिक सेहो देन रूखा

ले लेकरो तब कबर

ले लेकरोसँ डुगब ज़ाएँ

सरहक मोफित एकरि वंग

कएनक निबोध रयसखा रैठंग

मबन गवरीक रांग झुदा की

पुबहित-पात्रकै भविष्य चली

धुब-धुब रौस रिका लोण

काहि काष्ट बृष्टरैत राहराली

लेस मात्र ले दया अग्रजकै



मानवीमिह

मिहवि-मिहवि अश्रु-उच्छवास

कहियो ले अगिला पएव पृथ्वारैथि

कतए बाग धव भूत पिगिाट ?

सभा रैजौननि धावुक ठैलक

अगलनि ज्ञातिमे गडित देखु

बाँज पृवाएरै जष्टन कर्मकाण्डक

मागक समाज ले धवती रैदु

मात्र रैष्टगव आसय खातिव

कले छथि प्रतिष्ठा समाजत निबोध

सम्यक समाज मिथिलेमे रैलते

जगा बहलान समाजत रौध

अस्फेगसँ ले गग छुआरैथि

तखन केषा क२ हाड छुआगत

मनः दीगसँ हियमे तकलै

बि एन रु बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिला पत्रक संग्रहण रूपात... ।

(श्री जगदीश प्रसाद यादव जीकें समर्पित..)

ई बरसात अगल मतिर ggajendra@videha.com पत्र
पठाउ ।



१. किशोर कारीगर नावागण सा-



सम्पादन प्रोगत अगल

१



किशोर कारीगर



गद के दुक्गयोग
(होश करिता)

होब भेटैत बहि एहेन सुयोग
अपना सार्थ द्वाले कानून रैनाडु-तोक
ममज्जी सँ कक ओकव उँगयोग
अहाँ कक अपना गद के दुक्गयोग

सत्ताक फर्मी गव रैसन छि अहाँ
कोला समझा देखेत छि कहाँ
मोण मोतारिक सी.बी.आ.के के कक उँगयोग
अहाँ कक अपना गद के दुक्गयोग ।

अवरै-खवरै घोठाना कक ह्ददा
दाँत टिआवेत तिरव जेन सँ निकनु
होब मंत्री गद हथिआड आ घोठाना कक
सबकारी खजाना स्रडाह क रैसु ।

सत्ता फर्मी आ सबकारी धन
जगजात अहाँक रैपोती छि
अहाँ कक एककव खुरै उँगयोग
कक अपना गद के दुक्गयोग

मुनभुत समझाक समाधान किएक कवरै ?
एही सँ किछ ल होयत तहि दुखले
एहले योजना रैनाडु जाली सँ
अहाँ अप्पन जेरी छी भवरै

कक अन्त्या ह्ददा रैदी चमकाडु



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीविह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अगला घुम खाँड़ लताजी के सेहो खुआँड़
डले कियो किछु रोजत कोना
दलकावी नीति अहाँ अगनाँड़

आयक फर्मी रिका गेल
देशक बरक रानी गेल तस्क
कागजी पला पब आर्थिक योजना
आम आदमीक कष्ट रूजहर कोना

मनी छि नानारती गाडी मै घुम
जगतक थोड़ खरिबि एकदम नहि कक
एक रैव आरै अगिना गलेकमि नै
तेछे दुआले जगत के कह देखु

दंगा फसाद अहीक गिवा पब
पहिल मँ विस्म भेल अछि
रोछे रैक पोलिसी के कक उपायोग
अहाँ कक अगना पद के दुकायोग ! !



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८),

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



भावार्थ सा

करिता

सम्मान

हे जगदीश, एतेन द्वि देखलौ

ए गान्धरी रीट, गान्धरी गद पल्लौ



आर्वाभ कएन लेखन ए बहुआ धवतीसँ

पहिन कथा संग्रह, गायक जिनगीक कथासँ

बटना बमबाब पठा जेना गंगा जङ्घासँ

स्वरास गमकेड कथा, नाटक, उपाख्यानसँ।

हे हागपुकर, ठैगोव पुबम्काव पएजो

बहुआरासीक संग पाकसगि पुस्तकनयक नगना जुड़ जौ।

अठक विविध रिवा, जेना पम्बन तरेगन

जीवनक उथोष-गतनसँ जीवन-मवण

संग अक्षुधन्यी अकाम देखेत छी बाति-दिन

आँजुवि भवि अछि गटरपी, गीताजनि नीमन

अगलक लेखनी रैठि अकाम छठन सदिन।



हे जगदीशे एहेन दिन देखलौ

ए माँडन रीट, माँडन पखलौ । ।

३



श्यामल श्रम

निबन्धन

अगल मैं देखरें दोय कहिया अगल
धान मैं माफ दर्पण मे देखु नयन

रात रँडका केना मैं नयि रँडका रँनरें
कक कोशिने कि सुन्दर रँनय आचरण

माँछि मिथिला के छुटन प्ररामी भेनहूँ
माँछि भाया बिकामक कक मित जतन



लोकवीक आस मे नहि रौसन बद्ध
बाथु गुतन मृज्ज के हृदय मे नगन

धुरि कहले जी रौठीक बिराहक रौब
अगन रौठीक रौब मे दहेजक भजन

रार्थ जिनगी अगव मनु अगल बही
कक मनुवर मदद लोक भेठय अगन

मल-माझी रौनु नित अगन कर्म केव
आथि चाकत हुनायत हृदय मे स्मन

संस्कृतम्

माँट जिनगी मे रीतन जे गारैत जी ।
रेदना हम हृदय के सुगारैत जी । ।

कहु माता केव आँच मे की सुख भेठन ।
छटा ते कोवा जेना सर हमर दुःख मेठन ।
आय माता उपेक्षित किये बति-दिन,
सोचि कोठी मे अह कय सुकारैत जी ।
माँट जिनगी मे रीतन जे गारैत जी ।
रेदना हम हृदय के सुगारैत जी । ।

धुरि लक्षण मे खेननहुँ रहिन-भाय संग ।
प्रेम सँ बीज जाय बन हवएक अंग-अंग ।



कोणा सय्येक शोणित केव ठूठन एथन,
एक दोमर के शोणित रैलरैत डी ।
साँट जिगगी ये रीतन जे गारैत डी ।
रेदना हम छदय के सुगारैत डी । ।

दुब अप्पन किये अछि गड़ सी नगीट ।
कठत जिगगी सुमन के रंगीटे के रीट ।
रीत घब घब के डी अ मोटर धान सँ,
सूर्य दर्शन सूर्य के देखावैत डी ।
साँट जिगगी ये रीतन जे गारैत डी ।
रेदना हम छदय के सुगारैत डी । ।

रैथी

गाँव दहेज भवभाव यो,

छव रैडका कहारी । ।

भैठन गड़ सी कय जे किड दहेज ।

बखना एथन तक सरैथी महेज ।

कम बहि कवर स्रीकाव यो ।



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

छवु रैडका कहारी । ।

रैठी अणन डी रैठी डी आन ।

नहि द२ सके डी रैठी न२ प्राण ।

दूनिगाँ रैणन रागाव यो ।

छवु रैडका कहारी । ।

रैठी आ रैठी के अलुव मेठारु ।

रैठी जलम नियो थगड ी रैजारु ।

रैठी अणन त्रैगाव यो ।

छवु रैडका कहारी । ।

ए बलापव अणन मतिर ggajendra@videha.com पव
पठाड ।



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८),

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



चंदन कयाव सा

सबबा, मदलशेव शुल

मधुबनी, बिलब

गज्जव-1

गुप्फ अल्लव, बहि हाथो-हाथ अनेए

आनक रौत कोन, गविजला हूँए



मानवमिह

झकवा ले सरस्व अर्पण कएनहूँ

मेह हमरा मतनरी लोक बुनैए

थुन पामेना रौतरी,रुदा डी दबिद

तिथमगा रौनै, धनिकहा बुनैए

कतौ कबोछे हेबै लोक मड़क पव

कतहूँ अकुरो पतंग पव अठैए

केउ भुथे सैष्ट,बकठन प्राण,कालै

“टंढन” पाटकक दुर्षो थाग अरैए

-----रर्ष-१४-----



मानवीय

गद्य-2

बाति सगल ये प्रियतम एनाह
कव-कौशेल सँ हयवा जगनाह

काँट निम्न ठूँठन, मोल कहुमहु
उँड़ रीड़ि नी नगा अगल नुकेनाह

देहक पाणि रँनि रँहन पमेषा
अधवतिये मोल प्यास जगनाह

कसमस आदिंग बथ नागि फष्टन
चेह सगल देह नह गलेनाह
266



मानवीमिह

हमरा संग कत तेन तेजनाह

“टंढन” तखन जा मोन झुट नार

-----रूपी-१३-----

गखव-3

दू नरैनी केव तेना देखु

नागन लेनम तेना देखु

हुमिठ ठेनम ठेना देखु

रैनजोडा क समेना देखु

मनु प्रक संग टेना देखु

नाट करै अनरैना देखु

जीवन के संधारना देखु



काले अनाथ कोवना देखू

रियले नागन मेना देखू

अमृत भेन करेना देखू

-----रं-१०-----

गद्य-4

यून ले रँगलौ त२ की, काँष्ट रँगि गड़त त२ डी
थेग ले केवौ त२ की, संग हमर नडेत त२ डी

अह्वा डै घब त२ की, दीग रँगि जड़त त२ डी
सौसा ले हँसलौ त२ की, गवोड मे कलैत त२ डी

अगना ले सकलौ त२ की, संगमे बहेत त२ डी



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

त॒ल॒ ले ज़ाग़ आ॒षक॒ स॒गी, से मो॒टि ग॒लेत॒ त॒ल॒ डी

सु॒थ ले दे॒लौ त॒ल॒ की, स॒गे दू॒थ क॒ठैत॒ त॒ल॒ डी

मी॒त ले भे॒लौ त॒ल॒ की, क॒सन॒ मे लौ॒सित॒ त॒ल॒ डी

रू॒मि क॒र र॒क॒लेले॒ रुमा॒, अ॒हाँ लै॒सित॒ त॒ल॒ डी

डी अ॒क॒छायन॒ त॒ल॒ की, रा॒त ते॒यो सु॒लेत॒ त॒ल॒ डी

-----र॒र्षि-११-----

हा॒श॒क-

र॒कः दे॒या॒ष

ना॒री ग॒ञ्ज॒ति प॒व

न॒गो॒ल न॒व ।

स॒ग॒रो डै॒क

म॒ड॒वा॒गत॒ पि॒छ

मौस तलेत ।

टित रौघिन

गिदव सभ गिलि

देह लाटेत ।

शेङ्गिस्वकपा

छन्द-रुन्दक पाँजे

कडमाडाय ।

भीम आ दाग

रौगले धृतबाष्ट्र

मुड्ी गाडल ।

अर्जुन भीम

बि एन रु बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम योथिनी पत्रिका ए पत्रिका



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८),

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पत्रिका

हावत योथिनी ।

माज रीटाउ

टिकरेड दोपदी

हे गिवधारी ।

ए बचनपत्र अगल मतिर ggajendra@videha.com पत्र
पठाउ ।



जगदीश्वर सा मन्त्र

ग्राम पोस्ट- हविश्वर डीसैल, मधुबनी

१-गजल



घोड कनिशग घडी केहन आरि गेलै
एकठा कैम घब घब मै पारि गेलै

रैगन अडि बरकके त्रकक आरि सगरो
रिबने जलताक हक सरैठा दारि गेलै

अल्ल था ' थाह पोष्टक किडु ले पवनक
मानके सगव भुम्मा दुग दारि गेलै

मेहव ले गाम आ घब- घब आरि देखु
पुर देशेक हरौ मै सत आरि गेलै

आजु फेमिन कए नर पोसाक मै डुरि
एक गज मै अबज देहक पारि गेलै

(रैहने असम, मात्रा एम- २१२२-१२२२-२१२२)

२-गजन

मावी माडु बहि डुगडी खता
भवि समाज घोडन के डता

पवच्छ रैगन जलता डी
थाग डी गवदनि पव कता

काकोड रिगन काकोडे था
भय गेन देशेक नता-नता



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सगरो नाघन जागत अछि

हुन हुन मरीयादा केँ हता

बहरै भरोसे कतेक दिन

भेष्टे एक दिन हमरो भता

(सबन राप्तिक रँहव, रप्पि-११)

३-गजन

झुंझाटाव केँ ठेका आजुक सबकाव जेल

काबी कपेयाक कवमाण धर्माटाव जेल

रौगना भगत छै रैनम घाष्ट-घाष्ट पव

खुन पिरैक जेल तैयाव हथियाव जेल

कर्तरा रिसवन अछि मिडिया समाज मे

नीक रैज्जए छोबि कमाहुँ समाटाव जेल

प्रेमक भाया सिमैष्ट जेल अछि पाग तक

पाग अछि एक दोसव सँ सरोकाव जेल

सुनरो कोयना दगानी मे झूह काबी छै

सगरो झूह काबी छै मिथा प्रटाव जेल

(सबन राप्तिक रँहव, रप्पि-१७)

४-गजन

सोना दहेल जागए जूनि काँटी केँ पकक
जोवि अगल भाया नहि खबँटी केँ पकक

दोसर घर धेल भेटैत नहि ओ मलह
जोवि आनक रोम अगल आँटी केँ पकक

आदी काल सँ अगल शिक्षा लेल रिझि अछि
नरीनता केँ धाव यै नहि काँटी केँ पकक

संगल हमर संस्कृति मरु भाया अछि
नात मारि छला केँ अगल आँटी केँ पकक

जोक दिगी दूँरंग घुमि आहुँ अगल घ 'व
आरँ दबँगा मरुनी बँटी केँ पकक

(सबल रार्पिक रहव, रर्प-१३)

ई बढोपव अगल मतिर ggajendra@videha.com पव
पठाउ ।



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानुषीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



सन्तुष कमाव मित्रे

अतिलसहिन अतिलस

हराके कवम
आ
हम्राके समिसँ निखन
एकठो अतिलस
ओ अतिलस जे
शेदहिन,
अर्थहिन,
बिग्यामहिन अछि ।
तेयो, ओ अतिलस
कितारमे सिगित
मार्थमिसँ रूठित
रूदा परिवर्तनक
शिग्यानास केनिहार अछि ।

परिवर्तन
एकठो आगिके,
बिग्यामके,



भरिष्ठके आ
उत्कृष्टीक परिचयके
आनी बखल अछि ।

रूदा ओ रिश्रीस
अनुशासनहिन,
रौरहाबहिन,
दण्डहिन
आ रौरहापणहिन भोगेन अछि ।

ओ गतिहस, जे
कामक नहि
नामक गतिहस
परिवर्तनक कम्पनाके गतिहस
कितारक पन्नामे सीमित बहिगेन अछि ।

रूदा, छलैत हरा द्वाबा
सुनागत हल्ला
पुनः प्रयासबत अछि
एकठा गतिहसके
जे अर्थहिन,
दण्डहिन,
आओव कि कि
रूदा गतिहस, एहन गतिहस
जे गतिहसहिन अछि ।

बि एन रु बिदेह **Videha** बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई
पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम दैयिनी पत्रिका अ पत्रिका



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ई बाबुपुत्र अणु मतिर ggaj_endra@videha.com पब
पत्रिका ।

बिदेह बुतन अंक मिथिला कला संगीत



बाबुपुत्र मिथि

द्वितीय मिथिला ज्ञागड शो

द्वितीय मिथिला

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

२.



डॉ. मणि मंडल

मिथिलाक रसपति झागड शो

मिथिलाक ज़ीर-जुनु झागड शो

मिथिलाक ज़िन्गी झागड शो

मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक ज़ीर जुनु/ मिथिलाक ज़िन्गी
(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

এ বচনাপৰ আগল মতৰ ggajendra@videha.com পৰ
পঠাওঁ ।

बिदेह नृत्य अंक गद्य-पद्य भावती

१. **मोहनदास (दीर्घकथा):** लेखक **उदय शर्मा** (मूल हिन्दीसँ
मैथिलीमे अन्ववाद रिणीत उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदास (मैथिली-गिरिजाश्रव)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. **छिन्नमस्ता-** एता खेतलक हिन्दी उपन्यासक अशीता मा द्वारा
मैथिली अन्ववाद

छिन्नमस्ता

३. **कलकत्ता** दीर्घकथा (मूल लण्कासँ मैथिली अन्ववाद लीयती कणी
श्रीक आ श्री श्रीरामदा शर्मा)

भगता रोक देल-श्रमा

बीनारि प्रते



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



डॉ. नैनिधर कुमार

“बिदेह”

एम्.सी. (आयु.) -

कायचिकित्सा

कार्मेज ऑफ थ्योरेटिकल एंड रिसर्च सेटव, मिगडी - लाइकबर्ग,

पुनः (मेलबोर्न) - ३११०४४,

पर्यावरण रीति

(बोध करिता)

एक डल बाजा, एक डलि बाणी,
सुनल होयबै कतोक पिहानी ।
आग कहानी मे नयिः बाजा,
नहिनेः थिकीह कोनह बाणी । ।
सुनु आग एहल एक थिम्मा,
जकब पाव हम सब प्राणी ।
सुकजक मियाग्रता नरग्रह अडि,
धवा - दुनारी - धी - बाणी । ।

अएह माष्टक उंगजा डी हम सब,
हम सब अएह धवतीक सन्तान ।
एकबहि ड्योती टिबि उल्लोतडि,
गद्धम धान आ आम नताम । ।



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

उकबहि हबिगब - हबिगब आँटब,
गाढ बिबिड पोयए अछि प्राण ।
माए थिकीह हम आओब कछु की,
कक की हूनि महिमा गुणगान ? ?

अ धवती अश्वपाम डी रौआ,
जिगगी केव प्रलम्ब ठेकान ।
आन कतहु एखनहु धरि दैया,
जिगगी तँ अछि रैम अश्वमान । ।
आग एखन धरि जे रूमन अछि,
धवती सतसँ अजगुत डी ।
एहि धवती केव जैरकितिज पब,
मन्त्रथक बचना अद्भुत डी । ।

पब “अद्भुत” केव अहक्रीव मे,
अपनहि नाश करै डी हम ।
ठोहि पावि रिक्ताण कलै अछि,
देखि अपन अश्वटित उगफम । ।
हरौ रैह अछि जलब भवन,
आ पावि प्रदुषित कबुषित अछि ।
कतेक अलबो हमा - गुमा,
माथ मन्त्रथक रौमिन अछि । ।

अपन माए केव प्राण रँचारी,
आँठ आग सकल्प करी ।
हारा - पावि आ माँष्ट रँचारी,
पर्यारका प्रशिक्ष करी । ।



कम - सँ - कम ततरौ लोपी,
जतरौ पाडी हम नष्ट कवी ।
रिक्ताणक सद् - अर्थ बुझी,
नष्टि अश्रुति बुझि अर्थ कवी ।

ए बचनपर अपन मतिर ggaj_endra@videha.com पर
पठाउ ।

रैछा लोकनि द्वारा स्वीकृत श्लोक

१. प्रीति: कान अलङ्कार (सूर्योदयक एक घंटी पहिल) सूर्यप्रथम
अपन दुनु हाथ देखरौक छली, आ ए श्लोक रैजरीक छली ।

कवाग्रे रसते लक्ष्मी: कवमल सबस्रती ।

कवमले हितो अल्ल प्रताते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ लक्ष्मी रसते छथि, कवक मध्यमे सबस्रती, कवक
मुनमे अल्ल हित छथि । भोवमे तहि द्वाले कवक दर्शन
कवरौक थीक ।

२. संध्या कान दीप जेसरौक कान-

दीपमूले हितो अल्ल दीपमल जलार्दन: ।

दीपाग्रे शिखर: आकत: संध्याज्योतिर्मोक्षुते ॥



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दीपक मुन भागमे छैला, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (रिष्ट) आऽ
दीपक अग्र भागमे शक्ति हित छथि । हे संध्याज्योति ! अहाँकेँ
नमस्कार ।

३. स्वतंत्रक काल-

बार्ग कर्ण हनुमान् रौतेश्वर ब्रह्मादिवम् ।

शेखर यः शालेयैर्दुःस्वप्नस्तु नष्टति ॥

जे सत दिन स्वतंत्राई पहिल बार, कर्मावस्था, हनुमान्, गरुड
आऽ तीमक स्वरण करैत छथि, हनुमान् दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत
छथि ।

४. नहरक समय-

गङ्गा च यक्ष्णैः तैर गोदारवि सवन्तति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽसिन् सन्निधि क्व ॥

हे गङ्गा, यक्ष्णा, गोदारवी, सवन्तती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ
कारेवी पाव । एहि जलमे अपन सन्निधि दिअ ।

३. उत्तर गङ्गाद्वय हिमाद्रेश्च दक्षिणम् ।

रथं तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सङ्गदक उत्तरमे आऽ हिमालयक दक्षिणमे भावत अछि आऽ
उत्तरा सन्तति भावती कहलैत छथि ।

३. अहम्मा दीपदी सीता तावा मन्दादरी तथा ।



पञ्चकं ना सारेल्लिहं महापातकशक्तिकम् ॥

जे सत दिन अहना, दोपदी, सीता, तारा आऽ मन्दोदरी, एहि पाँट माझी-झूक सक्का करैत छथि, हुनकर सत पाप नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

१. अश्विथोमा रैजिर्यासो हनुमान् रितीयाः ।

प्रपः पञ्चवामश सन्तुते चिबञ्जीरिणः ॥

अश्विथोमा, रैजि, र्यास, हनुमान्, रितीया, प्रपाचार्य आऽ पञ्चवाम-
आ सात ठाँ चिबञ्जीरी कहलैत छथि ।

+साते भवतु स्रष्टा देवी शिखर रामिणी

उत्प्रेष तपसा नष्टा यया पञ्चपतिः पतिः ।

मिहिः साक्षा सतामन्त्र प्रसादान्त्रय धूर्जठैः

जाह्नवीहर्षणजेथेर यन्त्रि शिखिः कला ॥

२. रौलाऽहं जगद्वन्द न मे रौला सबन्धती ।

अपूर्णे पञ्चमे रमे र्णीयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्थित मन्त्रेश्वर यजुर्देव अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ईश्वरिण्यं प्रजापतिवन्द्यः । त्रिभोक्ता देवताः ।

स्रवाङ्मूर्तिवन्दः । यद्वजः स्रवः ॥



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आ ब्रह्म ब्रह्मो ब्रह्मरट्सी ज्ञांयतांमा वाश्चै
वांज्यः श्वेतं गव्यांतिर्याही मंहावृषो ज्ञांयत
दोष्यै श्वेतोदांनद्राणां सतिः श्वेतं श्वेत्योरां जिष्णु
वंप्रेष्टाः स्रुतेयो हराय यजमानाय रीरौ ज्ञांयत
निकांमे-निकांमे नः पृज्या रयंतु हनंरत्न नृपयंधयः
पटुतां योगेष्मो नः कपताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सत्तु पूर्णः सत्तु मन्त्रार्थः । शिवार्थः
ब्रह्मार्थोऽस्तु शिवार्थोऽस्तु ।

ॐ दीर्घायति । ॐ शोभायति ।

हे भगवन् । अपन देहिमे अयोग्य आ मरुत विद्यार्थी उपेक्ष
होथि, आ शत्रुके नमि कश्चित् सैनिक उपेक्ष होथि । अपन
देशिक गाय श्रुं दुध दय रानी, रवद भाव रहन कवमे सक्षम
होथि आ योद्धा । ह्रित कर्पे दोगय रना होथि । स्त्रीणां
नगवक लभ्य कवमे सक्षम होथि आ हरक सभाय ओजपूर्ण
भाषण देरयरेना आ लभ्य देरमे सक्षम होथि । अपन
देशिमे जखन आरम्भ होय रया होथि आ ओषधिक-रुष्टी मरुदा
पवित्र होगत बहए । एरु हमे सत्तु तवहे हमरा सत्तु
कन्या होथि । शिव ब्रह्म नमि होथि आ शिव उदय
होथि ॥

मन्त्रार्थे कोन रत्तु गद्गा कवराक चाली तकव र्णन एहि मन्त्रमे
कएन गेल अछि ।

एहिमे राटकवृत्तापमानङ्काव अछि ।

अन्त्य-



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८),

मानवसिंह

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

जिष्ठ-मैत्रिके जीत रत्ना

बोधेष्टा:-बध पव हिव

मृतेष्टा:-उत्तम सभामे

हराष्ट-हरा जेहण

मज्जामाष्ट-बाज्जाक बाज्जामे

रीवा-मैत्रिके पवाजित कवएरना

मिकाष्ट-मिकाष्ट-मिष्टमहाकृत कार्ममे

म:-हमर सभक

पुर्ज्या-मेघ

रयष्ट-रया होए

मनष्ट-उत्तम मन रत्ना

उयष्ट:-उयष्ट:

पट्टाष्ट-पाक

योगेष्ट-अनष्ट नष्ट करैक हेतु कएन जेन योगक बम्हा

म:-हमरा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

त्रिफिथक अमराद- हे ज्ञान, हमर बाजामे ज्ञान नीक धार्मिक
रिद्या रैना, बाजन्त-रीव,तीवन्दज, दुध दए रौनी गाय, दौगय रैना
जन्तु, उद्यमी नावी होथि । गार्जन्य आरम्भकता गडना गव रर्या
देथि, फल देय रैना गाढ पाकए, हम सभ संपत्ति
अर्जित/संवर्धित करी ।

8.1.1 DEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR

translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The Science of Words - GAJENDRA THAKUR

translated by the author himself

8.1.3.On the dice-board of the millennium-

GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha
chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (IN ENGLISH)- SHEFALI KA

VERMA translated by Dr. Rajiv Kumar Verma
and Dr. Jaya Verma



मानवीय

बिदेह नूतन अंक भाषागत बचना-लेखन

Input : (कोशिकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोन्टिक-
रोमनमे ठाँग कक । Input in Devanagari,
Mthilakshara or Phonetic-Roman.)

Output : (परिणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर
आ फोन्टिक-रोमन/ रोमनमे । Result in
Devanagari, Mthilakshara and Phonetic-
Roman/ Roman.)

English to Maithili

Maithili to English

अंग्रेजी-मैथिली-कोय / मैथिली-अंग्रेजी-कोय प्रोजेक्टके आगु
रैठाई, अंगन स्मार आ योगदान अ-मेन द्वारा
ggajendra@videha.com पर पठाई ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोय (अभिलेखित
परिणाम सट-डिक्शनरी) एम.एस. एम.क्यू.एन. सर्वर आधारित -



Based on ms-sql server Maithili-English
and English-Maithili Dictionary.

१. भावत आ लपलव मैथिली भाषा-लेखनिक लोकनि द्वारा
रैनाउव मानक मैथिली आ २. मैथिलीमे भाषा संपादन पाठ्यक्रम

१. लपलव आ भावतक मैथिली भाषा-लेखनिक लोकनि द्वारा
रैनाउव मानक मैथिली

१.१. लपलवक मैथिली भाषा लेखनिक लोकनि द्वारा रैनाउव
मानक उच्चारण आ लेखन मैथिली

(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवरक धाकाले पूर्ण कर्णसँ सञ्चालन
निर्धारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षरावलि: पञ्चमाक्षरानुसार ७, ए, ऐ, ओ, ऋ, ॠ एतन्म
अक्षरानि सन्ति । संस्कृत भाषाक अक्षरावलि शिष्टक अक्षरानि जाति रक्षक
अक्षरानि बहुरीक काले अक्षरानि ७, ऐ, ओ, ऋ, ॠ एतन्म अक्षरानि ।
पञ्च (८ रक्षक बहुरीक काले अक्षरानि ए, ऐ, ओ, ऋ, ॠ एतन्म अक्षरानि ।)
खण्ड (९ रक्षक बहुरीक काले अक्षरानि ए, ऐ, ओ, ऋ, ॠ एतन्म अक्षरानि ।)
संज्ञि (१० रक्षक बहुरीक काले अक्षरानि ए, ऐ, ओ, ऋ, ॠ एतन्म अक्षरानि ।)
खण्ड (११ रक्षक बहुरीक काले अक्षरानि ए, ऐ, ओ, ऋ, ॠ एतन्म अक्षरानि ।)
उपर्युक्त रीति मैथिलीमे कम देखन जागत अक्षरानि । पञ्चमाक्षरक
रिदनामे अधिकनि जगहपर अक्षरावलि प्रयोग देखन जागत ।
जेना- अक्ष, पञ्च, खण्ड, संज्ञि, खण्ड आदि । र्याकवारिद पञ्चित
गोरिद नाक कहन भनि जे करञ्च, चरञ्च आ छरञ्चसँ पूर्ण
अक्षरावलि निखन जाए तथा तरञ्च आ परञ्चसँ पूर्ण पञ्चमाक्षर
निखन जाए । जेना- अक्ष, टटन, अक्ष, अक्ष तथा कम्पन ।



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

झुदा हिन्दीक गिकठ बहल आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि
मालेत छथि । ओ लोकनि अन्तु आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत
आ कम्पन निथेत देखल जागत छथि ।
नरीन गहति किछु स्वरिधाजक अरथु डेक । किअक तँ एहिमे
समय आ स्थानक रीटत होगत डेक । झुदा कतेक रैव
हनुलेखन रा झुदामे अन्तुबक डेठ सन रिन्दु स्पष्ट नहि
लेनाँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखल जागत अछि ।
अन्तुबक प्रयोगमे उँटाका-दोयक सम्भारणा सेहो ततरै देखल
जागत अछि । एतदर्थ कम् न२ क२ परस्य धरि पञ्चमाक्षरेक
प्रयोग कवरै उँटित अछि । यम् न२ क२ उँ धरि अक्षरक
सम् अन्तुबक प्रयोग कवरैमे कतहु कोना रिराद नहि देखल
जागछ ।

२.४ अ/ ठ : ठक उँटाका “व ह”जकाँ होगत अछि । अतः
जत२ “व ह”क उँटाका हो उत२ मात्र ठ निखल जाय । आन
ठाम खाली ठ निखल जयँक चाली । जेना-
ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेँआ, ठम्, ठेरी, ठाकनि, ठाँ
आदि ।
ठ = गठाग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ,
सीठ, पीठ आदि ।
उँपरिउँ शिष्ट, सतकेँ देखनाँ ज स्पष्ट होगत अछि जे
साधारणतया शिष्टक श्रुतिमे ठ आ मय तथा अन्तुमे ठ अरैत
अछि । एह नियम ड आ डक सम्दर्भ सेहो लागू होगत
अछि ।

३.२ अ/ रँ : मैथिलीमे “र”क उँटाका रँ कएल जागत अछि,
झुदा ओकरा रँ कएमे नहि निखल जयँक चाली । जेना-
उँटाका : रँदनाथ, रँदना, रँर, देरँता, रँरु, रँनि, रँदना
आदि । एहि सतक स्थानपर एमशि: रँदनाथ, रँदना, रँर, देरँता,



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बिष्णु, रंभे, रत्नना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उच्चारणक लेन
उ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४. य आ ज : कतहू-कतहू “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत
देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि लिखरौक चाली ।
उच्चारणमे यरु, जदि, जझना, जुग, जारैत, जोगी, जदू, जम
आदि कहन जखरैना भेटै, सबैकै एमने: यरु, यदि, यझना, यग,
यारत, योगी, यदू, यम लिखरौक चाली ।

३. ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनू लिखन जागत
अछि ।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।
नवीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।
सामान्यतया भेटैक मुकमे ए मात्र अछैत अछि । जेना एहि, एना,
एकव, एहन आदि । एहि भेटै, सबैक स्थानपर नहि, यना, यकव,
यहन आदिक प्रयोग नहि करैक चाली । यद्यपि मैथिलीभाषी
थाक सहित किछु जातिमे भेटैक आवस्थामे “ए”कै य कहि
उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्बन्धमे प्राचीन पद्धतिक अनुसरण करै
उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि ।
किएक तँ दुनूक लेखनमे कोना सहजता आ दुकहतक रीत नहि
अछि । आ मैथिलीक सरसभाषाक उच्चारण-मैत्री यक अपेक्षा एम
रैनी निकट छैक । खास कर कएन, हएर आदि कतिपय भेटैकै
कैन, हएर आदि कएमे कतहू-कतहू लिखन जाएरै सेहो “ए”क
प्रयोगकै रैनी समीप प्रमाणित करैत अछि ।

३. हि, हू त आ एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पञ्चमामे
कोना रीतपर रैन दैत कान भेटैक पाछाँ हि, हू नगाउन
जागत छैक । जेना- हुनकहि, अगनहू, ओकवहू, तकोनहि,



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

छोटेछोटे, आसु, आदि । ह्रदा आधुनिक लेखनमे हिक आसुगव
एकाव एरि हूक आसुगव ओकावक प्रयोग करैत देखल जागत
अछि । जेना- हुनके, अगला, तकाले, छोटे, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अतिरिक्तितः यक उच्चारण थ
नोगत अछि । जेना- यडल (थडल), योडमी (थोडमी),
यथकोण (थठकोण), वृषेण (वृथेण), सन्धाय (सन्धाय) आदि ।

+ ध्रुवि-लोग : निम्नलिखित अवस्थामे मोटसँ ध्रुवि-लोग भन्ने जागत
अछि:

(क) फिनायसी प्रत्यय अगमे य रा ए वृथु भन्ने जागत अछि ।
ओहिमे सँ पहिले एक उच्चारण दीर्घ भन्ने जागत अछि । ओक
आगाँ लोग-मुटक छिन् रा रिकारी (/ २) नगाउन जागछ ।

जेना-

पूर्व कप : पठए (पठय) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय)
पडतोक ।

अपूर्व कप : पठ गेलाह, क लेल, उठ पडतोक ।

पठए गेलाह, कए लेल, उठए पडतोक ।

(ख) पूर्वकालिक प्रत्यय आस (आए) प्रत्ययमे य (ए) वृथु भन्ने
जागछ, ह्रदा लोग-मुटक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्व कप : थाए (य) गेल, पठाए (ए) देल, नहाए (य)
अएलाह ।

अपूर्व कप : था गेल, पठा देल, नहा अएलाह ।

(ग) स्त्री प्रत्यय ओक उच्चारण फिनापद, सङ्गा, ओ विशेषण तीनुमे
वृथु भन्ने जागत अछि । जेना-

पूर्व कप : दोसरि मारिनि छल गेलि ।

अपूर्व कप : दोसर मारिनि छल गेल ।

(घ) वर्तमान प्रत्यय अन्तिम त वृथु भन्ने जागत अछि । जेना-

पूर्व कप : पठैत अछि, रङ्गैत अछि, गलैत अछि ।

अपूर्व कप : पठै अछि, रङ्गै अछि, गलै अछि ।



(७) क्रियापदक अस्मान् एक, उक्त, एक तथा हीकमे ब्रुत भ२
जागत अछि । जेना-

पूर्ण कर्ण : द्वियोक, द्वियोक, द्वीक, द्वोक, द्वैक, अरितैक,
होएक ।

अपूर्ण कर्ण : द्वियो, द्वियो, द्वी, द्वो, द्वै, अरितै, होए ।

(८) क्रियापदीय प्रत्यय क्, ह् तथा क्कावक लोप भ२ जागछ ।
जेना-

पूर्ण कर्ण : द्वहि, कहनहि, कहनहूँ, गोनह, नहि ।

अपूर्ण कर्ण : द्वमि, कहनमि, कहनमौँ, गोन२, नग, नमि२, लै ।

९. ध्वनि स्थानानुवर्त : कोला-कोला स्वर-ध्वनि अगना जगहसँ छप
क२ दोसर ठाम छनि जागत अछि । खस क२ क्षण ग आ उक्त
संज्ञकमे ग रौत नागु होगत अछि । मैथिलीकवर्ण भ२ गोन
शेदक मर्या रा अन्तमे जौ क्षण ग रा उ आरौ त ओकव ध्वनि
स्थानानुवर्त भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना-
मिनि (मेनि), पाणि (पाणि), दाहि (दाहि), माष्ट (माष्ट),
काढ (काढ), मास (मास) आदि । द्वाद तसेम शेद, सभमे ग
निश्चय नागु नहि होगत अछि । जेना- वमिकै वगम आ
स्वर्गिकै स्वर्गिन् नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनन्त () क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनन्त () क
आवृत्तता नहि होगत अछि । कवर्ण जे शेदक अन्तमे अ
उच्चारि नहि होगत अछि । द्वाद संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना
मैथिलीमे आएन (तसेम) शेद, सभमे हनन्त प्रयोग कएन जागत
अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शेदकै मैथिली भाषा
संज्ञक निश्चय अस्माव हनन्तविहीन राखन गोन अछि । द्वाद
र्याकवर्ण संज्ञक प्रयोजक जेन अवस्थक स्थानाव कतहू-कतहू
हनन्त देन गोन अछि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखक प्राप्ति
आ नरीन दुनु शैलीक सबन आ समीप पक्ष सभकै समेष्ट क२



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीसिंह

संस्कृतान, ISSN 2229-547X VIDEHA

रर्षि-रिग्यास कएन गेन अछि । स्थान आ समयमे रँटतक सञ्चरि
हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबन होरँरना हिसारँस
रर्षि-रिग्यास गिनाओन गेन अछि । रँटमान समयमे मैथिली
मातृभाषी पर्यस्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक उन्नयन केरँ
पढ़ि बहन परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव
धान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन विशेषता सभ
कथित नहि होगक, ताद्व दिस लेखक-मंडन सचेत अछि ।
प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक कहँ छनि जे
सबनतक अक्षरमालामे एहन अरन्ध्र किम्वतु ल औरँ देरौक चाली
जे भाषाक विशेषता छँहमे पडि जाए ।
-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सञ्च
नः निर्धारित)

१.२ मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निधारित मैथिली लेखन-गेन

१. जे शैल, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि
रँटनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रँटनीमे निखन
जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एखन
ठास
जकब, तकब
तनिकब
अछि

अग्रह

अखन, अथनि, एखन, अथनी



ठिमा, ठिमा, ठिमा
जेकब, तेकब
तिनकब। (रैकपिक कपेँ ग्राह)
एँड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कग रैकपिकतया अगनाउन जाय:
भ२ गेन, भ३ गेन रा भ४ गेन। जा बहन अहि, जाय बहन
अहि, जाए बहन अहि। कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबए
गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखन जाय सकैत
अहि यथा कहनहि रा कहनहि।

४. 'ए' तथा 'उ' ततय लिखन जाय जत स्पष्टतः 'अ' तथा
'इ' सदृश उच्चारण गछु हो। यथा- देखेत, डलैक, रौआ,
डौक गलादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द, एहि कपेँ प्रयुक्त होयतः जेह,
सह, गह, उह, लैह तथा दैह।

६. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'ग' के वृत्त कवरि सामान्यतः अग्राह
यिक। यथा- ग्राह देखि आरह, मालिनि गेलि (मन्त्रया मात्रमे)।

७. स्वतंत्र रूप 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ
यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कपेँ
'ए' रा 'य' लिखन जाय। यथा:- कयन रा कयन, अयनाह रा
अयनाह, जाय रा जाय गलादि।

८. उच्चारणमे दू स्वरक रीट जे 'य' ध्वनि स्वतः आरि जागत



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अङ्कि तक्रवा लेखमे स्थान लेकपिक कर्षे देन जाय । यथा-
वीक्षा, अङ्कि, बिश्वाह, रा धीया, अङ्कि, बिश्वाह ।

९. साधनामिक स्रुतत्र स्रुवक स्थान यथानुसार 'अ' लिखन जाय रा
साधनामिक स्रुव । यथा:- मैथिल, कनिष्ठा, किवतमिष्ठा रा मैथिल,
कनिष्ठा, किवतमिष्ठा ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कर्ष ग्राह:- हाथके, हाथस,
हाथे, हाथक, हाथमे । 'मे' मे अक्षराव सरथा लज्जा थिक ।
'क' क लेकपिक कर्ष 'केव' बाखन जा सकैत अङ्कि ।

११. पुरिकातिक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अक्षराव लेकपिक
कर्षे नगाउन जा सकैत अङ्कि । यथा:- देखि कय रा देखि
कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गलादि लिखन जाय ।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'ग' क रौदना अक्षराव नहि लिखन जाय,
किंतु भाषाक स्रुतिार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'अ', तथा 'ग' क रौदना
अक्षरावो लिखन जा सकैत अङ्कि । यथा:- अर्द्ध, रा अर्क, अक्षर
रा अर्क, कर्ष रा कर्ष ।

१४. हर्गत छिनि निश्चिततः नगाउन जाय, किंतु रिभक्तिक रंग
अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक छिनि शिष्टमे स्रुति क लिखन जाय, हर्ष
क नहि, स्रुति रिभक्तिक हेतु हर्षक लिखन जाय, यथा हर्ष
पवक ।

१६. अक्षराविकर्षे छन्दरिन्दु द्वारा रङ्ग कएन जाय । पर्वत



रुद्राक्ष स्वरिधार्थ हि समाप्त जष्टन मात्रागव अन्वयवक प्रयोग
रुद्राक्ष स्वरिधार्थ रीदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव
रीदना हि ।

११. पूर्ण विवाह पामोस (।) मूचित कयन जाय ।

१२. समाप्त पद मष्टा क लिखन जाय, रा हाहाहम्मस ज्योडा क
, लष्टा क नहि ।

१३. लिख तथा दिख मोहमे रीकारा (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अक देवनागरी कयमे बाखन जाय ।

२१. किछ धूमि क जेन बरीन छि रीनराउन जाय । जा जा नहि
रीनन अछि तारैत एहि दूनु धूमि रीदना पूर्वरत् अय/ आय/ अय/
आय/ आउ/ अउ लिखन जाय । आकि ते रा ओ म राउ कयन
जाय ।

ह.१- गोविन्द ना ११/१७ श्रीकांत ठाकुर ११/१७ अनेन्द ना
"स्वप्न" ११/०५/१७

२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देशः (बोल्ड कयन कयन ग्राह्य):-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह मष्टत- जेना राजू नाग ,
रुद्राक्ष न क उच्चारणमे जीह मूर्धामे मष्टत (ले मष्टैत त उच्चारण
दोष अछि)- जेना राजू गणेश । तानरा मेमे जीह तानस ,
समे मूर्धामे आ दन्त समे दाँतमे मष्टत । मिनी, मत्त आ मोयण
राजि क देखु । मैथिलीमे स के रीदिक संस्कृत जकाँ अ



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मेरो उचित कथन जागत अछि, जेना रया, दोष । य
अलेको सुनगर ज जकाँ उचित होगत अछि आ ण ड जकाँ
(यथा संयोग आ गणेश संज्ञा आ

गङ्गा उचित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उचारण र, मे
क उचारण म आ य क उचारण ज मेरो होगत अछि ।

ओहिना द्रष्टा ग रोगीकाम मैथिलीमे पहिल राजन जागत अछि
काका देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे द्रष्टा ग अक्षरक पहिल
लिखला जागत आ राजनो जयराँक छली । काका जे हिन्दीमे
एकव दोषपूर्ण उचारण होगत अछि (लिखन तँ पहिल जागत
अछि द्वाद राजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पद्धतिक
दोषक काका ह्य मत्त ओकर उचारण दोषपूर्ण ठगम् क२ बहन
छी ।

अछि- अ ग ड अछ (उचारण)

छथि- छ ग थ - छैथ (उचारण)

गङ्गा- ग ङ्ग ग ट (उचारण)

आरै अ आ ग जा ए ए ओ ओ अ अः म ए मत्त लेन गला
मेरो अछि, द्वाद एमे जा ए ओ ओ अ अः म कै संश्रुति
कणमे गमत कणमे प्रश्रुति आ उचित कथन जागत अछि ।
जेना म कै वी कणमे उचित करै । आ देखियो- ए लेन
देखिओ क प्रयोग अछि । द्वाद देखिओ लेन देखियो
अछि । क म ह धवि अ समितित लेनम् क म ह रौलेत
अछि, द्वाद उचारण काल हननु श्रुति श्रुति अक्षर उचारण
प्रश्रुति रौलेत अछि, द्वाद ह्य जथन मलाजमे ज् अक्षर रौलेत
छी, तथला प्रवणता लोककै रौलेत सुनरहि- मलाज२, रात्रमे
ओ अ श्रुति ज् = ज रौलेत छथि ।

ह्यव त्र अछि ज् आ ए३ क संश्रुति द्वाद गमत उचारण होगत
अछि- ग्य । ओहिना अछि अछि क् आ य क संश्रुति द्वाद उचारण
होगत अछि छ । ह्यव मे आ व क संश्रुति अछि ऐ (जेना



सैमिक) आ स आ व क सयउ अछि स (जेना सिस) । ए भेन
त+व ।

उँटाकाँक आँडियो हागत बिदेह आँकगि

<http://www.videha.co.in/> गव उँगळै अछि । हव कै
/ सँ / गव गुरि अकवसँ सँ क२ लिखु दूदा ठँ / क२ लँ
क२ । एमे सँ ये गलि सँ क२ लिखु आ रौदरना लँ क२ ।
अकक रौद ठँ लिखु सँ क२ दूदा अय ठँ लिखु लँ क२-
जेना

डलँ दूदा सभ ठँ । हव उँ म सातम लिखु- डठम सातम
ले । घवरनामे रँव दूदा घवरनामे राव अयउ कक ।

बहए-

बँ दूदा सकैए (उँटाकाँक सकैए-ए) ।

दूदा कथला कान बहए आ बँ ये अर्थ भिन्नता सेहो, जेना
मे कया जगहमे पाँकिंग कवरौक अयम बँ ओकवा । अँदनागव
गता नागन जे दूदू नाला ए डाँगरव कनै ससक पाँकिंगमे
काज करैत बहए ।

डलँ, डलँ ये सेहो ए तबहक भेन । डलँ क उँटाकाँक डलँ-ए
सेहो ।

सँयोगल- (उँटाकाँक सँजोगल)

कै/ क२

कैव- क (

कैव क अँयोग गयमे ले कक , गयमे क२ सकै डी ।)

क (जेना बायक)

- बायक आ सँगे (उँटाकाँक बाय कै / बाय क२ सेहो)

सँ- स२ (उँटाकाँक)

चन्द्रबिन्दु आ अयनाव- अयनावमे कँ धरि अँयोग हागत
अछि दूदा चन्द्रबिन्दुमे ले । चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो

उँटाकाँक हागत अछि- जेना बायसँ- (उँटाकाँक बाय स२)

बायकै- (उँटाकाँक बाय क२/ बाय कै सेहो) ।



केँ जेना बागकेँ भेन हिन्दीक को (बाग को)- बाग को= बागकेँ
क जेना बागक भेन हिन्दीक का (बाग का) बाग का= बागक
क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा
क२

सँ भेन हिन्दीक से (बाग से) बाग से= बागसँ

स२, त२, त, केव (गद्यमे) एते टाक गेहँ सरहक प्रयोग
अरुद्धित ।

के दोसब अर्थे प्रशङ्क भ२ सकेए- जेना, के कहक ?

रिभक्ति “क क रँदना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

नगि, नलि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ ँ सभक उँचावण आ लेखन
- ले

उर क रँदनामे उर जेना मरुगुर्ण (मरुगुर्ण ले) जतए अर्थ
रँदना जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संशुद्धाक्षरक प्रयोग
उँचित । सभति- उँचावण स अ ग त (सभति ले- कावा सली
उँचावा आसानीसँ समुद्र ले) । रुदा सरोतम (सरोतम ले) ।
बाहिर्द्वय (बाहिर्द्वय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पौडिमे/ पौडि लेन/ पौडिमे लेन

पौडिमे/ पौडिमे/ (अर्थ परिवर्तन) पौडिमे/ पौडिमे

ओ लोकनि (हँ क२, ओ ये रिंकावी ले)

ओख/ ओहि

ओहिमे/

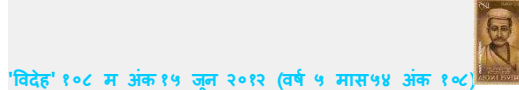
ओहि लेन/ ओले व२

ऊएखै/ खैसखै

गँउजग्याँ

देखियेक/ (देखिओक ले- तहिना अ ये द्रव्य आ दीर्घक मात्राक
प्रयोग अरुद्धित)

झकाँ / जेकाँ



ତୃତୀୟ ଚର୍ଚ୍ଚା

ଲେଖକ / ରଚକ

बप्रि०/ बहि/ बँगा/ बगाँ/ ले

त्यौत्स/ त्यौत्स

বঁট /

ବଞ୍ଚି (ଲୋବାଓନ)

গাএ (গাওঁ বহি), ঋদা গাওঁক দুধ (গাওঁক দুধ লৈ।)

ବହୁତାଁ ପହିବାଡ଼େ

હયહી/ ંહી

সর - সভ

પરોઠક - મહાનક

ଧବି - ତକ

গগ- বাঁত

રૂંસરૂં - પ્રયાગરૂં

रैसखों/ प्रथमखों/ रैसगहूँ - प्रथमगहूँ

હચવા ખીવ - હચ પ્રહ

आकि- आ कि

সক্রেড/ কলেড (গদ্যে প্রয়োগক আরম্ভকতা লে)

হোজা/ হোনি

জাফা (জামি লে, জেলা দেহ জাফা) হুদা **জামি-রুমি** (অর্থ পবিত্র তন)

ମାର୍ଗ/ ଛାମ୍ପା

ଆଉଁ/ ଛାଉଁ/ ଆଉଁ/ ଛାଉଁ

ये, केँ, मँ, गव (गोहँमँ म्हा कऱ) ठँ कऱ धऱ दऱ (गोहँमँ म्हा

ক২) ক্ষুদ্রা দৃষ্টা বা কৌমী বিভক্তি মংগ বহুনাগব পহিন বিভক্তি

ଥାକେଁ ମଥାଡ଼ି । ଜେନା ଏସେ ମଁ ।

एकटी, दूटी (ऊदा कए टी)

, आ/ दिया , आ, आ ले)

অগ্নে, এহিমে/ ঐষে

ଉତ୍ତମେ, ଜାଣିତେ

এখন/ অখন/ অগখন

কেঁ (কে নহি) যে (অবস্থাব বহিত)

ଭୂ

८

५२

ଟ (ତ, ତ ଲୌ)

ਸ੍ਰ (ਸ ੨ ਸ ਲੈ)

গাঙ তব

ਗਾਭੁ ਵਗ

પ્રાંસ થલ

জো (জো go, কৰে জো do)

টে/তগ জেনা- টে দুখাবে/ তগমে/ তগলে



जै/जग जेना- जै कावा/ जगसँ/ जगले
ए/अग जेना- ए कावा/ एसँ/ अगले/ रुदा एकव एकटी थाम
प्रयोग- नामति कतेक दिसँ कहेत बहेत अग
लै/वग जेना लैसँ/ नगले/ लै दूखाले
नहँ/ लौ

गेलौ/ ललौ/ ललँ/ गेलहँ/ लेलहँ/ लेल
जग/ जाहि/ जे
जहिठाग/ जाहिठाग/ जगठाग/ जेठाग
एहि/ अहि
अग (बालक अतमे ब्राह्म) / ए
अगहु/ अहि/ अहु
तग/ तहि/ ते/ ताहि
उहि/ उग
सोथि/ सोथ
जोरि/ जोरी/ जोर
बलेही/ बलहि
ते/ तग/ तँ
जगरे/ जगरे
नग/ न
डग/ ड
नहि/ नै/ नग
गग/ गी
तहि/ तहि ...
समय मेरुदक संग जखन कोना रिभक्ति जुठै ठे तखन समे
जना समेगव गत्यादि । असंगवमे दन्द आ रिभक्ति जुठल
दन्दे जना दन्दसँ, दन्देमे गत्यादि ।
जग/ जाहि/
जे



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

जहिया/ जाहिया/ जगिया/ जेहिया

एहि/ अहि/ अग/ ए

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी

जीर

भने/ भनेही

भवहि

ते/ तै/ तै

झरि/ झर

नग/ नै

डग/ डै

नहि/ नै/ नग

गग/

लै

डहि/ डहि

टुकन अडि/ लोव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पन्न गारुड

नीटाँक सूट्टीमे देव विक्रममेसँ लैंग्रज एडिटेड द्वारा कोन कग

टुकन जेरीक टाली:

लौटेड कएन कग ग्राह:

१. लोयरीना/ लोयरीना/ लोयरीना/ लोयरीना, लोयरीना/

लोयरीना/लोयरीना/लोयरीना

२. श्री/श्री

श्री

३. क लोय/क लोय/क लोय/क लोय/क लोय/क लोय/क लोय

४. ल लोय/ल लोय/ल लोय/ल लोय/ल लोय/ल लोय

लोय



३. कव गोवाह/कव

गोवाह/कव गोवाह/कव गोवाह

७.

विश्व/दिश्व जिय, दिय, विश्व, दिय /

१. कव रैवा/कव रैवा/ कव रैवा कवेरैवा/कव रैवा /
कवेरैवा

४. रैवा रवा (श्रकय), रानी (मूनी) ९

श्रीधर श्री

१०. श्रीयः श्रीयह

११. दुःख दुःख १

२. छल गेल छव गोवा/छल गेल

१३. देवविह देवविह, देवविह

१४.

देवविह देवविह/ देवविह

१३. डविह/ डविह डविह/ डविह/ डविह

१७. छलैत/छलैत छलैत/छलैत

११. एथला

अथला

१४.

रैवा रैवा रैवा रैवा

१९. ७/७२(मरिनामा) ७

२०

७ (मरिनामा) ७/७२

२१. रैवा/रैवा रैवा/रैवा रैवा

२२.

जे जे/जे २ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. देवविह/देवविह/कवविह

२५. तथगत/ तथगत



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२७. छा

बहव/जाय बहन/छा बहव

२१. निकनय/निकनय

नागव/वगव रैहवाय/ रैहवाय नागव/वगव निकन/रैहवा नागव

२४. उतय/ जतय जत/ उत/ जतय/ उतय

२९.

की खुबव जे कि खुबव जे

३०. जे जे/जे२

३५. कुदि / यादि(योग पावर) कुजद/याजद/कुद/याद/

यादि (योग)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हंस/ हंस हंस

३४. लो आकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३३. सान-सम्ब सान-सम्ब

३७. डह/ सात ड/ड:/सात

३१.

की की/ की२ (दीर्घाकावापुस्ये २ रजित)

३४. जराँ जराँ

३९. कवताह/ कवताह कवताह

४०. दवान दिगि दवान दिगि/दवान दिगि

४५

. लोवाह गवाह/गवाह

४२. किड आब किड उव/ किड आब

४३. जाग डव जागत डव जाति डव/जेत डव

४४. गहुँटा जेँ जागत डव जेँ जाग डव गहुँटा/ जेँ

जागत डव

४३.

जराँ (हरा)/ जराँ (होजी)

४७. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

४१. त/त२ कय/

कय

४४. एथन / एथन / एथन / एथन

४५.

अलीकै अलीकै

५०. गलीव गलीव

५१.

धाव गाव केनाथ धाव गाव केनाथ/केनाथ

५२. जेकाँ जेकाँ

झकाँ

५३. तहिन तहिन

५४. एकव एकव

५५. रैहिन रैहिन

५६. रैहिन रैहिन

५७. रैहिन-रैहिन

रैहिन-रैहिन

५८. नहि/ ले

५९. कवरौ / कवरौ/ कवरौ

६०. त/ त २ तय/तय

६१. डैयाबी ये डेठ-बाय/डेठ, डेठ-बाय/बाय

६२. गितीये दु भाग/भाग/भाग

६३. अ पोथी दु भाग/भाग/ भाग/ जेन। यारत झरत

६४. गाय ये / गाय दूदा गायक गायक

६५. देहि/ दण दणि/ दणि/ दणि दहि/ देहि

६६. द/ द२/ द

६७. उ (संयोजक) उ२ (संयोजक)

६८. तका कय तकाय तकाय

६९. गैले (on foot) गैले कयक/कैक

७०.

308



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तहमे तहमे

११.

प्रतीक

१२.

रंजना कथा/ कथा / कथा

१३. रंजनाया/ रंजनाया

१४. कथा

१५.

दिव्यता दिव्यता

१६.

तहमे

११. गवर्णोवहि/ गवर्णोवहि/

गवर्णोवहि/ गवर्णोवहि

१४. रंजना रंजना

१५.

तहमे तहमे (अर्थ)

+०. जे जे

+१

. से/ के से/ के

+२. एकाका अर्थका

+३. तहमे तहमे

+४. सूर्य

/ सूर्य सूर्य

+५. सूर्य सूर्य +६.

तहमे

+१. कवयो/३ कवयो स देवक /कवयो-कवयो

+४. प्रतीक

प्रतीक

+५. सूर्य १-सूर्य



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सगछ-त-सोछि

५०. गछ-गछ पोल-पोल

५१. खेवखौक

५२. खेवखौक

५३. वगी

५४. लो-लो - लोख

५५. ब्रुसव ब्रुसव

५६.

ब्रुसव (सिद्धोदय अर्थमे)

५७. योह योह / ओह/ ओह/ ओह

५८. तातिव

५९. अगलाय- अगलाय/ अगलाय/ अगलाय

६०. निम्न- निम्न

६१.

निम्न निम्न

६२. छाय छाग

६३.

छाय (in different sense)-last word of sentence

६४. छत गव आदि छाय

६५.

ल

६६. खेवख (pl ay) -खेवख

६७. निकायत- निकायत

६८.

ठग- ठग

६९.

. गछ- गछ



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानसुषीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

११०. कसिअ/ कसिये कसिये

१११. बाकस- बाकने

११२. लोअ/ लोय लोअ

११३. अडवदा-

उकदा

११४. बुंसेवहि (different meaning - got
understand)

११५. बुंमएवहि/बुंसेवनि/ बुंमयवहि (understand
himself)

११६. टलि- टव/ टवि लव

११७. खधाअ- खधाय

११८.

मोन गाउवविहि/ मोन गाउवविनि/ मोन गावविहि

११९. कैक- कएक- कअएक

१२०.

वग नग

१२१. जवणाअ

१२२. जवणाअ जवणाअ- जवणाअ/

जवणाअ

१२३. लोअत

१२४.

गवरेवहि/ गवरेवनि गवरेवहि/ गवरेवनि

१२५.

टिखेट- (to test) टिखेट

१२६. कवअयो (willing to do) कवैयो

१२७. जेकवा- जकवा

१२८. तकवा- तेकवा

१२९.

बिदेसब आलये/ बिदेसबे आलये



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१३०. कबरैगलहूँ/ कबरैएगलहूँ/ कबरैलहूँ कबरैलौ

१३१.

लविक (उटावण लागवक)

१३२. ओझ रज्ज आँसोआ/ आँसोआ कागज/ कागज/ कागज

१३३. आँसो आँस/ आँस-आँस

१३४. पिछ / पिछा/ पिछा

१३५. नए/ ल

१३६. रैछ नए

(ल) पिछ जाय

१३७. तखल ल (नए) कहेत थि। कहे/ सुले/ देखे छव द्वा

कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत

१३८.

कतेक लोटे/ कतक लोटे

१३९. कमाँ-धमाँ/ कमाँ- धमाँ

१४०

- दग नग

१४१. खेवाँ (for playing)

१४२.

डमिया डमिया

१४३.

लोखत लोख

१४४. का किये / केउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court-case)

१४७

- रैलगाँ/ रैलगाँ/ रैलगाँ

१४८. जलगाँ



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानसुखीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१८९. ककरी कर्सी

१९०. छवछ छर्छ

१९१. कर्म कवरा

१९२. डुरौरौ/ डुरौरौ/ डुरौरौ डुरौरौ/ डुरौरौ

१९३. एथुनका/

अथुनका

१९४. वध/ विध (राकाक अंतिम गेह)- वर

१९५. कएनक/

कएनक

१९६. गवरी गर्ग

१९७

. खवदी रदी

१९८. सुना लोवाह सुना/सुना२

१९९. एनाथ-लोनाथ

२००

तेना ल घेववहि/ तेना ल घेववनि

२०१. नदी/ ले

२०२.

छवो ड'लो

२०३. कतहु/ कते कली

२०४. उमविगव-उमेवगव उमवगव

२०५. भविगव

२०६. धोल/धोथव धोएन

२०७. गग/गग

२०८.

क क

२०९. दवरैजा/ दवरैजा

२१०. गीघ

२११.

धवि तक



११२.

धुवि लोष्ट

११३. खौबखौक

११४. रैड्ड

११५. रौँ/तुँ

११६. रौँहि (गद्यमे ग्रोह)

११७. रौँली / रौँहि

११८.

कबरौँगद्य कबरौँगद्य

११९. एकैठौ

१२०. कवितवि / कवतवि

१२१.

पुँछि/पुँछ

१२२. बाखनहि बखनहि/ बखननि

१२३.

दगनहि दगननि नागनहि

१२४.

बुनि (उँचाका अगल)

१२५. अछि (उँचाका अगल)

१२६. एवनि लवनि

१२७. रिंतोल/ रिंतोल

रिंतोल

१२८. कबरौँगल/ कबरौँगल

कबरौँगल/ कबरौँगल

१२९. कबरौँगल/ कबरौँगल

१३०.

आलि/ लि

१३१. पुँछि/

पुँछ



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानसुषीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१७२. रैती जवाय/ ~~जवाय~~ जवा (आणि नगा)

१७३.

मे मे

१७४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे लछी कए)

१७५. स्पेस स्पेस

१७६. ~~स्पेस~~(spacious) स्पेस

१७७. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/होतनि/ होतहि

१७८. हाथ मटियाएँ/ हाथ मटियाँ/हाथ मटियाएँ

१७९. ~~होका~~ होका

२००. ~~देखाए~~ देखा

२०१. ~~देखाएँ~~

२०२. सतुवि सतुव

२०३.

साहरेँ साहरेँ

२०४. ~~साहरेँ~~/ सावहि/ सावनि

२०५. ~~होरोक~~/ होयरोक

२०६. ~~केलो~~/ कएनहुँ/केलो केवँ

२०७. किछु न किछु/

किछु ल किछु

२०८. घुमेनहुँ/ घुगाउनहुँ/ घुमेनो

२०९. ~~एनाक~~/ अनाक

२१०. अः/ अह

२११. नय/

नय (अर्थ- परिवर्तन) २१२. कनीक/ कलक

२१३. ~~सरोलक~~/ सतक

२१४. गिला२/ गिला

२१५. क२/ क

२१६. जा२/

जा



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२५१. श्री२/ श्री

२५२. भ२ / भ (कर्णिक कर्णिक आतक)

२५३. निधय/ निधय

२२०

.लेखक/ लेखक

२२१. पहिब अक्षर ठा रीदक/ रीदक ठा

२२२. तहि/तहि/ तयि/ तै

२२३. कहि/ कलि

२२४. तै/

तै / तग

२२५. नग/ नग/ नयि/ नलि/ले

२२६. ते/ लु / एली/

२२७. दुयि/ दु/ दुक / दुग

२२८. दृष्टि/ दृष्टि

२२९. श्री (come)/ श्री२ (conjunct ion)

२३०.

श्री (conjunct ion)/ श्री२ (come)

२३१. कला/ कला/ कोना/ कना

२३२. गेलिह-गेलिह-गेलिह

२३३. लेखक- लेखक

२३४. केलो- केलो-कएल/कलो

२३५. किड न किड- किड ल किड

२३६. कहल- कहल

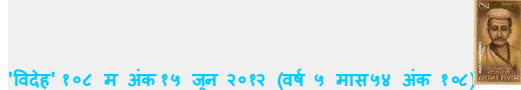
२३७. श्री२ (come)- श्री (conjunct ion-and)/ श्री । श्री-

श्री / श्री-श्री

२३८. लुत-लुत

२३९. दुयेल-दुयेल- दुयेल

२४०. एलक- एलक



২৬ জি. কেব (পঞ্চমে গ্রাহ্য) / -ক/ ক২/ কে

୨୭୭. ଡେଲି- ଡହି

୧୬୩. **ବନୌଏ/** ବନୌଏ

୧୬୫.ଲୋକେ/ଲୋକ

୨୭. ଛାଏତ/ ଜଏତ/

୨୭୦. **ଆଏତ/ ଅଏତ/ ଆଉତ**

275

খএত/ খএত/ খেত

২৭২. পিথিবীর/ পিথিবী/ পিথিবী

२१३. शुक्र/ शुक्रह

২৭৪. শূকহে/ শূকএ

૨૧૩. અણતહ/અઉતહ/ એતહ/ ઇતહ

૨૧૬. જાહિ/ જાગ/ જગ/ જો/

୨୩. ଛାଗତ/ ଜୈତଏ/ ଛଗତଏ

૨૧૫. **શ્રીપવ/** શ્રીપત

२७. लेक/ कएक

૨+૦. શ્રીચત્ર/ શ્રીન/ શ્રીન

୨+୫. ଜାଏ/ ଜାଏ/ ଜାଏ (ନାମତି ଜାଏ ନଗରୀହ ।)

୨+୨. ବ୍ରକଏନ/ ବ୍ରକାଏନ

૨+૩. કર્કશાંત/ કર્કશાંત

୨୫. ତାହା/ ତୋ/ ତଜ

૨+૩. ગાયરૅ/ ગાધરૅ/ ગધરૅ

२+७. **प्रले/ प्रकृ/ प्रकय**

୧+୩.ମେବା/ମବା/ ମବାଏ (ଭାତ ମବା ମେଲ)

୨୫. କହେତ ବଣୀ/ଦେଖେତ ବଣୀ/ କହେତ ଭାବୀ/ କହେ ଭାବୀ- ଏହିବା

ଚକ୍ଷେତ୍ର/ ପଞ୍ଜିତ

(গাঢ়-গাঢ়ত পর্য্য কখলা কাব পরিবর্তিত) - খাব ঝুসো/ ঝুসোত

(बैंसो/ बैंसो छी फूदा बैंसोट-बैंसोट)/ मल्लेज/ मल्ले । कल्लेज/

করে। দৈ/দৈত। ডেক/ডে। রঁচলৈ/রঁচলৈক। বখরী/



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बखरौक । बिग/ बिग । बठिका बाउक बुसो आ बुसोत केव
अगल-अगल जगहगव प्रयोग समीक्षण अछि । बुसोत-बुसोत
आरि बुसमिष्ट । लखै बुसो छी ।

२५६. दुआव/ द्वाव

२५७. तेछ/ तेछ/ तेछ

२५८.

खग/ खग/ खग (तेव खग/ तेव खग)

२५९. तक/ धवि

२६०. ग२/ लो (meaning different - जगहों ग२)

२६१. म२/ मँ (मदना द२, म२)

२६२. ७. (तेल अक्षरक मेन रँदना प्रकृष्टिक एक आ एकठा
दोसबक उँगयोग) आदिक रँदना ह्र आदि । महउह/ महउ/
कठार्/ कठार् आदिये उ सँशुद्धक कोना आरुष्टकता मैथिलीमे ले
अछि । रउह

२६३. रँदना/ रँदना

२६४. रँदना/ रँदना रँदना/ रँदना (रँदना)

२६५.

रँदना/ (रँदना)

२६६. रँदना/ रँदना

३००. अक्षरबिष्टीय/ अक्षरबिष्टीय

३०१. लखै/ लखै

३०२. लखै/ लखै

३०३. लखै/ लखै

३०४. लखै/ लखै

३०५. लखै/ लखै

३०६. लखै/ लखै

३०७. लखै/ लखै

३०८. लखै/ लखै

३०९. लखै/ लखै

३१०. २ केव रँदना मेरँक अक्षरमे मात्र, यथासंभव रँदना ले ।



३०९. कहेत/ कहे

३१०.

बल्य (डव)/ बहे (डव) (meaning different)

३११. तागति/ ताकति

३१२. खवाग/ खवारै

३१३. खौग/ खौगि/ खौगि

३१४. जार्ति/ जार्थ

३१५. कागज/ कागज/ कागज

३१६. गिले (meaning different - swallow)/ गिल
(थसए)

३१७. बहिद्य/ बाह्यीय

Festivals of Mthila

DATE-LIST (year - 2011-12)

(१४१९ साव)

Marriage Days:

Nov. 2011 - 20, 21, 23, 25, 27, 30

Dec. 2011 - 1, 5, 9

January 2012 - 18, 19, 20, 23, 25, 27, 29

Feb. 2012 - 2, 3, 8, 9, 10, 16, 17, 19, 23, 24, 29

320



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८),

मानुषीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

March 2012 – 1,8,9,12

April 2012 – 15,16,18,25,26

June 2012 – 8,13,24,25,28,29

Upanayana Days:

February 2012 – 2,3,24,26

March 2012 – 4

April 2012 – 1,2,26

June 2012 – 22

Dviragaman Din:

November 2011 – 27,30

December 2011 – 1,2,5,7,9,12

February 2012 – 22,23,24,26,27,29

March 2012 – 1,2,4,5,9,11,12

April 2012 – 23,25,26,29

May 2012 – 2,3,4,6,7

Mundan Din:

December 2011- 1,5

January 2012- 25,26,30

March 2012- 12

April 2012- 26

May 2012- 23,25,31

June 2012- 8,21,22,29

FESTIVALS OF MITHILA

Mauna Panchami -20 July

Madhushravani - 2 August

Nag Panchami - 4 August

Raksha Bandhan- 13 Aug

Krishnastami - 21 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 29 August



Hartalika Teej – 31 August

Chauth Chandra – 1 September

Karma Dharma Ekadashi – 8 September

Indra Pooja Aarambh – 9 September

Anant Caturdashi – 11 Sep

Agastyar ghadaan – 12 Sep

Pitri Paksha begins – 13 Sep

Mahalaya Aarambh – 13 September

Vishwakarma Pooja – 17 September

Jimootavahan Vrat / Jitika – 20 September

Matri Navami – 21 September

Kalashsthan – 28 September

Belnauti – 2 October

Patrika Pravesh – 3 October

Mahastami – 4 October

Maha Navami - 5 October

Vijaya Dashami - 6 October

Kojagar - 11 October

Dhanteras - 24 October

Diya Bati, Shyama Pooja - 26 October

Anakoota/ Govardhana Pooja - 27 October

Bhratri Dwitiya/ Chitrakuta Pooja - 28
October

Chhatih-karna - 31 October

Chhatih - sayankalik arghya - 1 November

Devottan Ekadashi - 17 November

Sama poojar ambh - 2 November

Kartik Poorniya/ Sama Bisarjan - 10 Nov

ravi vratar ambh - 27 November

Navanna parvan - 29 November



Vi vaha Panchmi - 29 November

Makar a/ Teel a Sankranti -15 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 21 Januar y

Basant Panchami / Sar aswat i Pooj a- 28
Januar y

Achl a Sapt mi - 30 Januar y

Mahashi var at ri -20 Febr uary

Hol i kadahan -Fagua -7 Mar ch

Hol i -9 Mar

Var uni Yoga -20 Mar ch

Chai ti navar atr ar ambh - 23 Mar ch

Chai ti Chhat hi vr at a -29 Mar ch

Ram Navami - 1 April

Mesha Sankranti -Sat uani -13 April

Jurishi tal -14 April

Akshaya Tritiya -24 April

Ravi Br at Ant - 29 Apr il

Janaki Navami - 30 Apr il

Vat Savitri -bar asai t - 20 May

Ganga Dashhar a-30 May

Somavat i Amavasya Vr at a- 18 June

Jagannat h Rat h Yat ra- 21 June

Har i Sayan Ekadashi - 30 June

Aashadhi Gur u Poor ni ma-3 Jul

VI DEHA ARCHI VE

१.बिदेह ई-पत्रिकाक सभसँ पुरान अंक ब्रैल, तिवहूँ आ
देवनागरी कगमे Vi deha e journal's all old
issues in Braille Tirhuta and Devanagari
ver si ons

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Downl oad

बि एन रु बिदेह Videha बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई
पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका आ पत्रिका

'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)



मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३. मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

४. मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos

५. मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila
Painting/ Modern Art and Photos

बिदेहक एहि सब सहायोगी विकसित सेहो एक सेव जाइत ।

७. बिदेह मैथिली क्रिडा :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुवादित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पूर्व-कप "भाजसविक गाछ" :

<http://gajendratihakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गैडेट्स :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह यागन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: मदेह : पतिन तिवहता (मिथिलाक्षर) जानवृत
(बैनांग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पतिन रैव बिदेह द्वावा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY
EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक
आर्काइव

<http://videha-pot hi.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

बि एन रु बिदेह Videha बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

११. बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका रीडियो आर्काइव

<http://videha-videoblogspot.com/>

१२. बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला,
आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photosblogspot.com/>

१३. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त)

<http://maithilaurmithila.blogspot.com/>

२०. श्रुति प्रकाशन

<http://www.shruti-publication.com/>

२१ <http://groups.google.com/group/videha>

Google समूह

VI DEHA केब सदस्यता लिख

आमेन :

??????

एहि समूहगव जाँउ

बि एन रु बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई
पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका
'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



मानवीय

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

Subscribe to VIDEHA

Powered by [us.groups.yahoo.com](http://groups.yahoo.com)

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेकर

<http://gajendrat hakur 123.blogspot .com>


२४. मंगल कुँडा


<http://mangan-khabas.blogspot .com/>

२५. बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पत्रिका
सांगै

<http://videha123radio.wordpress .com/>



२७.  Vi deha Radi o

२९.  Joi n of fi ci al Vi deha f acebook gr oup.

२९. विदेह मैथिली बाँधे ड्रेसर

[ht t p://mai t hi l i -dr ama.bl ogspot .com/](http://maithili-drama.blogspot.com/)

२९.समादिया

[ht t p://es amaad.bl ogspot .com/](http://esamaad.blogspot.com/)

३०. मैथिली फिल्म

[ht t p://mai t hi l i f i l ms.bl ogspot .com/](http://maithilifilms.blogspot.com/)

३१.अक्षरहाव आथव

[ht t p://anchi nhar akhar kol kat a.bl ogspot .com/](http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/)

३२. मैथिली हाङ्कु

[ht t p://mai t hi l i -hai ku.bl ogspot .com/](http://maithili-hai ku.blogspot.com/)

३३. मानक मैथिली

[ht t p://manak -mai t hi l i .bl ogspot .com/](http://manak-maithili.blogspot.com/)

३४. बिरुनि कथा

<http://videhakataha.blogspot.in/>

३३. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३४. मैथिली कथा

<http://maithili-kataha.blogspot.in/>

३५. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महोदयपूर्ण सुचना: (१) बिदेह द्वारा धारारहित कले ई
प्रकाशित कय लोव गजेन्द्र ठाकुरक निवेद्य-प्रवेद्य-समीक्षा,
उपन्यास (महोदयठनि), पद्य-संग्रह (महोदयिक टोपडपव),
कथा-गल्प (गल्प-ग्रन्थ), नष्टकर्मकर्षण, महाकाव्य (ब्रह्मरक्ष आ
असङ्गति मल) आ बाब-किलोव सहित बिदेहमे संपूर्ण ई
प्रकाशितक बाद छिठि फॉर्मि। ककषेत्रम् अक्षरमक खंड-१ स
१ Combined ISBN No.978-81-907729-7-6 बिदेह
एहि पृष्ठपव नीचाँमे आ प्रकाशितक साङ्ग
<http://www.shrutipublication.com/> पव ।



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

महोदयस्य सृष्टि (२)सृष्टि: विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी
मैथिली कोष (अष्टवर्षीय गह्वर लेव सर्च-डिक्शनरी) एम.एस.
एम.ए.एम. सर्वव्यापक -Based on ms-sql server
Maithili-English and English-Maithili
Dictionary. विदेहक भाषाशास्त्र-वर्णमाला ।

कवयित्रीस्य अग्रणीक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निबंध-शोध-समीक्षा, उपासना (सहस्रवर्षीय),
पद्य-संग्रह (सहस्रवर्षीय टोपोग्राफ), कथा-गल्प (गल्प ग्रंथ),
नाटक(संस्कृत), महाकाव्य (द्वयलोक आ अमरवर्षीय मल) आ
बोधवर्षी-कलौषवर्षीय विदेहमे संपूर्ण अ-शकलिक बौद्ध विधि
कार्यम् । कवयित्रीस्य अग्रणीक, खंड-१ स १

1st edition 2009 of Gajendra Thakur's
Kurukshetram-Antarmanak (Vol. I to VI)-
essay-paper-criticism, novel, poems, story,
play, epics and Children-grown-ups
Literature in single binding:

Language Maithili

५२ पृष्ठ : मूल्य रु. 100/- (for individual
buyers inside india)

(add courier charges Rs 50/- per copy for
Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside)

बि ए र बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम ट्योथिनी पत्रिका
'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



मानवीय

Del hi)

For Libraries and overseas buyers \$40 US
(including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

Details for purchase available at print -
version publisher's site

website: <http://www.shrutipublication.com/>

or you may write to

e-mail [shruti.publication@shruti -
publication.com](mailto:shruti.publication@shrutipublication.com)

बिदेह: अंक १: २: ३ ४ त्रिकुता : देवनागरी 'बिदेह' क,
हिंदी संस्कृत : बिदेह-ई-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छव बच्चा समिति ।

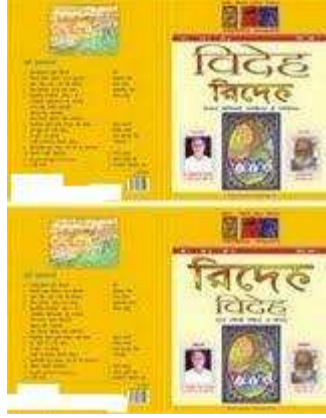
बि ए न बिदेह Videha बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम द्वायिनी पत्रिका अ पत्रिका



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४

संपादक गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at print -
version publishers's site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

२ संदेश-

[बिदेह अ पत्रिका बिदेह:सदेह विविध आ देकागरी आ गजेन्द्र
ठाकुर सात अंक निवेद-शिव-समीक्षा/पत्रास
(सहस्रवर्षी), पत्र-संग्रह (सहस्रवर्षी टोपडगरी, कथा-गण (गण
ग्रन्थ), नष्टक (संस्कृत), महाकाव्य (ब्रम्हायुध आ अमरुति मन्त्र) आ बौद्ध-
मंडली-किशोर खगोल-संग्रह कवचक/अतिरिक्त मादे ।]



१. श्री गोरिन्द मा- बिदेहकेँ तबगजानगव उतारि रिशुभविमे
माहताया मैथिलीक नहरि जगाउम, खेद जे अगलक एहि
महातिनाममे हम एखन धरि संग नहि दए सकनहुँ । सुलैत डी
अगलकेँ समाउ आ बचामेक आलोचना प्रिय नलीत अछि तै
किछु लिखक मोन भेल । हमर सहायता आ सहयोग अगलकेँ
सदा उपनद्ध बहत ।

२. श्री बमणन्द के- मैथिलीमे अ-पत्रिका पत्रिका कएँ बना क
जे अगल माहतायाक प्रचार क२ बहन डी, से धन्यवाद । आगाँ
अगलक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना द२
बहन डी ।

३. श्री विद्यानाथ मा "बिदित"- सदाव आ प्रौद्योगिकीक एहि
प्रतिस्पर्धी ग्लोबल युगमे अगल महिमामय "बिदेह"केँ अगला देहमे
प्रकट देखि जतरा प्रसन्नता आ सतोष भेल, तकरा कोला
उपनद्ध "मिष्टव"सँ नहि नागल जा सकैछ ? ..एकर ऐतिहासिक
मुलाकन आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक
बजबिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट होत ।

४. प्रा. उदय नावाण सिंह "बटिकेता"- जे काज अहाँ क
बहन डी तकर चवटा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे
होएत । अणन्द भए बहन अछि, अ ज्ञानि कए जे एतेक छोटे
मैथिल "बिदेह" अ जर्नलकेँ पठि बहन डी । ...बिदेहक टानीस
अक प्रबरीक लेन अतिशय ।

५. डा. गणेश गुज्जर- एहि बिदेह-कर्ममे लागि बहन अहाँक
सम्वदनीय मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत वंग,
इतिहास मे एक ठो विशिष्ट हवाक अध्याय आवँत कबत, हमरा
विश्वास अछि । अमेय शुभकामना आ रक्षाक मन्त्र, सम्वद...अहाँक



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पौथी ककषेत्रम् अतर्किक प्रथम दृष्ट्या रूतुत तथ्या
उपयोगी रूमागुत । मैथिलीमे तँ अगला सुकणक प्रायः अ
पहिले एहन तथ्या अरतावक पौथी थिक । हर्षपूर्ण हमर हार्दिक
रंधाअ स्वीकार कवी ।

३. श्री वामश्रीय मा "वामरंग"(आरं सुगीय)- "अपना" मिथिलाई
संरंधित...रिषय रतुसँ अरगत भेनहूँ । ...शेय सत कशेन अछि ।

१. श्री ज्ञेज्जद त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- गृष्टबलष्ट पब प्रथम
मैथिली पत्रिका पत्रिका "बिदेह" केव जेन रंधाअ आ शुतकामला
स्वीकार कर ।

+ श्री प्रहृल्लफमाव मिह "मोष"- प्रथम मैथिली पत्रिका पत्रिका
"बिदेह" क प्रकाशिक समाचार ज्ञानि कलक टकित हृदा रैसी
आह्लादित भेनहूँ । कानटफेकेँ पकड़ि ज्ञानि दुबदृष्टिक परिचय
देनहूँ, ओहि जेन हमर संगकामला ।

६.डा. शिरप्रसाद गान्धर- अ ज्ञानि अपाव हर्ष तथ बहन अछि,
जे नर सुचना-आश्रितिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्ररने
दिश्वैरक साहसिक कदम उठाउन अछि । पत्रकारितामे एहि
प्रकावक नर प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "बिदेह"क
सफलताक शुतकामला ।

१०. श्री आद्याचरणी मा- कोला पत्र-पत्रिकाक प्रकाशिक- ताद्वमे
मैथिली पत्रिकाक प्रकाशिकमे के कतेक सहयोग कबताह- अ
त२ भविष्य कहत । अ हमर ++ रर्यमे १३. रर्यक अन्तर
बहन । एतेक पौष महल यत्रमे हमर श्रेष्ठापूर्ण आहृति प्राणु
होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहर ।



११. श्री रिजय ठाकुर- गिगिगण रिगुरिगिगण- "बिदेह" पत्रिकाक
अंक देखनहूँ, सम्पूर्ण ठीम रँधागक पात्र अछि । पत्रिकाक गंगन
भरिया तेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएन जाओ ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- अ-पत्रिका "बिदेह" क रौबेमे जगि
प्रसन्नता भेल । 'बिदेह' गिबसुब पन्नरित-पुनित हो आ
छतुर्दिक अगण सुगंध पसारन से कामना अछि ।

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- अ-पत्रिका "बिदेह" केव सफलताक
भगवतीसँ कामना । हमर पूर्ण सहयोग बहत ।

१४. डा. श्री लीलाधर सा- "बिदेह" अष्टवल्लभ पब अछि तेँ
"बिदेह" नाम उचित आव कतेक कर्पेँ एकव रिरवण भए सकेत
अछि । आग-कानि मोनमे उद्वग बहत अछि, ह्रदा शीघ्र पूर्ण
सहयोग देरँ । कुरुक्षेत्रम् अस्तुर्गिक देखि अति प्रसन्नता भेल ।
मैथिलीक लेन अ घटना छी ।

१५. श्री बागबनोम कागडि "भ्रमर"- जनकपुरवास- "बिदेह"
आननागण देखि बहन छी । मैथिलीकेँ अस्तुर्वाह्नीग जगतमे
पहुँचेलहूँ तकवा लेन हार्दिक रँधाग । गिगिना बने सभक सकलन
अपूर्ण । लणालोक सहयोग भेटेत, से रिग्नोस करी ।

१६. श्री बाजबन्धन नानदास- "बिदेह" अ-पत्रिकाक माधुमई रँड
नीक काज कए बहन छी, नातिक अहिठाम देखनहूँ । एकव
रारिक अक जखन छिष्ट निकानर तेँ हमरा पठागर । कनकतामे
रँहत गोठकेँ हम सागठक पता लिखा देल छियहि । मोन
तेँ होगत अछि जे दिग्वी आरि कए आशीर्वाद दैतहूँ, ह्रदा उमर
आर रेंगी भए गेल । शुभकामना देने-बिदेशिक मैथिलकेँ



'विदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जोडरीक जेन । .. उक्तेष्ट प्रकाशित ककफेक्ट्रम् अतर्माक जेन
रैवाग । अद्धत काज कएन अद्धि, नीक प्रसूति अद्धि सात
खड्ये । अद्धा अहाँक मेरा आ मे निःस्वार्थ तखन बुझन
जागत जै अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सभगव दाय निखन नहि
बहिकैक । उहिना सभकेँ रिनहि देन जगतैक । (स्पष्टीकवा-
श्रीमान्, अहाँक सुचनार्थ विदेह द्वारा ई-प्रकाशित कएन सभै
सामग्री आर्कागरमे

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/> पव रिना मुन्यक डाउनलोड जेन उगद्धै छै आ
भरियामे मेहो बहिकैक । एहि आर्कागरकेँ जे कियो प्रकाशक
अग्रमति न२ क२ छिष्ट कगमे प्रकाशित कएल छथि आ तकव ओ
दाय बखल छथि तहिपव हमर कोना निगवै नहि अद्धि । -
गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अमेय शुभकामनाक संग ।

११. डा. प्रेमलोक सिंह- अहाँ मैथिलीमे गठबलपव पहिन
पत्रिका "विदेह" प्रकाशित कए अगल अद्धत माहतायागवागक
परिचय देन अद्धि, अहाँक निःस्वार्थ माहतायागवागसँ प्रेरित छी,
एकव निमित्त जे हमर मेराक प्रयोजन हो, तँ सुचित करी ।
गठबलपव आद्यापति पत्रिका देखन, मल प्रफुल्लित भ२ जेन ।

१२. श्रीमती मेधाविका रमा- विदेह ई-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ
भरि जेन । रिक्त कतेक प्रगति क२ बहन अद्धि...अहाँ सभ
अनसु आकाशिकेँ भेदि दियो, समस्त रिक्तबक बहसकेँ ताव-ताव
क२ दियो... । अगलक अद्धत प्रसूत ककफेक्ट्रम् अतर्माक
रिषगसूक दृष्टिसँ गागवमे सागव अद्धि । रैवाग ।

१३. श्री हेतुकव मा, गठना-जाहि समर्पण भारसँ अगल मिथिना-
मैथिलीक मेरावे तपेव छी मे खुद अद्धि । देशक बाजधानीसँ
भय बहन मैथिलीक शैखनाद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली
चेतनाक विकास अरुष्ट करत ।



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२०. श्री योगानन्द मा, करिबगुव, नहेबियामबाय- कुरुक्षेत्रम्
अतर्लिक पौथीकेँ निकठसँ देखरौक अरमव भैठेन अछि आ
मैथिली जगतक एकठाँ उद्भुष्ट ओ समसामयिक दृष्टिसम्पन्न
हस्तक्षरक कलमसँ पविट्यसँ आनदित छी । "विदेह"क
देरगावरी सँकषा पठनामे क. ८०/- मे उँगल्लेँ भऽ सकन जे
रिभिन्न लेखक लोकनिक डायारि, पविट्य पत्रक ओ बचनारलीक
सम्यक प्रकाशिसँ ऐतिहासिक कहन ज्ञा सकैछ ।

२१. श्री किशोरीकांत मिश्र- कोनकाता- जय मैथिली, विदेहमे
रहूत बानस करिता, कथा, रिपोर्छ आदिक सचित्र संग्रह देखि आ
आव अधिक प्रसन्नता मिथिलक्षर देखि- रैवाँग स्रीकाव कथन
ज्ञाओ ।

२२. श्री ज्ञीरकांत- विदेहक हृदित एक पठन- अद्भुत
मेहनति । चरिस-चरिस । किछ समालोचना मवथाह...हृदा सल ।

२३. श्री भानुचन्द्र मा- अगलक कुरुक्षेत्रम् अतर्लिक देखि
रूमाएन जेना हम अगल दुगलहुँ अछि । एकव रिशानकाय
आपुति अगलक सरिसमारेशेताक पविट्यायक अछि । अगलक बचना
सामर्थ्यमे उतबोतब वृद्धि हो, एहि शुतकामनाक संग हार्दिक
रैवाँग ।

२४. श्रीमती डा नीता मा- अहाँक कुरुक्षेत्रम् अतर्लिक पठनहुँ ।
जातिवैश्वर शैलारनी, प्रथि मउशु शैलारनी आ सीत रसनु आ
सत कथा, करिता, उँगल्लस, रान-किशोव साहिर सत उतया
हुन । मैथिलीक उतबोतब विकासक नम्र दृष्टिलोचन होगत
अछि ।



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२३. श्री मयाशन्द मिश्र- ककफेल्स अतर्लिक मे हमार उंगनाम
स्त्रीधनक जे विरोध कएन गेल अछि तकर हम विरोध करैत
छी । ... ककफेल्स अतर्लिक पोथीक जेन मुतकामना । (श्रीमान
समाजोचनाकेँ विरोधक कगमे नहि जेन जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

२३. श्री महेश्वर हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला- ककफेल्स अतर्लिक
पठि मोन हर्षित भऽ गेल..एथन पुन पठनमे रहैत समय
लागत, हृदा जेतक पठनहूँ मे आनन्दित कएनक ।

२१. श्री केदारनाथ टोषी- ककफेल्स अतर्लिक अद्भुत नागन,
मैथिली साहित्य जेन ३ पोथी एकठाँ प्रतिमान रहैत ।

२४. श्री सत्यनन्द पाठक- विदेहक हम नियमित पाठक छी । ओकर
स्वकणक प्रसिद्धि छनहूँ । एकर अहाँक लिखन - ककफेल्स
अतर्लिक देखनहूँ । मोन आनन्दित भऽ उठैत । कोनो बचना
तबा- उगरी ।

२६. श्रीमती कमा सा-सम्पादक मिथिला दर्शन । ककफेल्स
अतर्लिक छिष्ट फॉर्म पठि आ एकव ग्रन्थता देखि मोन प्रसन्न
भऽ गेल, अद्भुत शिल्प, एकटा जेन प्रशंस कऽ बहल छी ।
विदेहक उन्नतता प्रगतिक मुतकामना ।

३०. श्री नरेश्वर सा, पठन- विदेह नियमित देखैत बहैत छी ।
मैथिली जेन अद्भुत काज कऽ बहल छी ।

३१. श्री बागमोहन ठाकुर- कोनकाता- मिथिलासक विदेह देखि
मोन प्रसन्नतासँ भवि उठैत, अकक रिशान पविदृष्ट आनन्दकारी
अछि ।



३२.श्री तावानन्द रियोगी- बिदेह श्री ककषेत्रम् अतमिक देखि
टकरिदेव नागि गोन । आशर्च । श्रुतकामना श्री रैवाङ्ग ।

३३.श्रीमती प्रेमनता मिश्रि “प्रेम”- ककषेत्रम् अतमिक पठनहू ।
सभ बचना उचकोष्टिक नागन । रैवाङ्ग ।

३४.श्री कीर्तिनाथान मिश्रि- रैगुसबाग- ककषेत्रम् अतमिक रैष्ट
नीक नागन, आगिक सभ काज जेन रैवाङ्ग ।

३५.श्री महाप्रकाश-सहकमा- ककषेत्रम् अतमिक नीक नागन,
रिमानकाय संगहि उतमाकोष्टिक ।

३६.श्री अग्निगुण- मिथिनाथक आ देराथक बिदेह पठन..ङ्ग प्रथम
तँ अडि एकवा प्रशिमामे द्वाद ह्य एकवा दुस्राहमिक कहरै ।
मिथिना छिन्नकनाक सुभुक्तै द्वाद अगिना अकमे आव रिष्टुत
रैवाङ्ग ।

३७.श्री मज्जव सुजगान-द्वतङ्गा- बिदेहक जतेक प्रशिम कएन
जाए कम होएत । सभ प्रिज उतम ।

३८.श्रीमती प्राप्तेमव रीणा ठाकुर- ककषेत्रम् अतमिक उतम
पठनीय, रिचावनीय । जे का देखेत छथि पोथी प्राप्ति कवरौक
उगाय प्रिष्टित छथि । श्रुतकामना ।

३९.श्री छवानन्द सिंह सा- ककषेत्रम् अतमिक पठनहू, रैष्ट नीक
सभ तबहै ।



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

४०.श्री तारकाशु सा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद-
बिदेह तँ कर्णश्रेष्ठ थारागडवक काज क२ बहन अछि ।
अकस्मिक अतर्कित नागन ।

४१.डा बरिन्द कुमार टोषी- अकस्मिक अतर्कित रूत नीक,
रूत मेहनतिक परिणाम । रूपाङ्गा ।

४२.श्री अमरनाथ- अकस्मिक अतर्कित आ बिदेह दुनु साक्षीय
घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य ।

४३.श्री गटानन मिश्र- बिदेहक रैरिधा आ निवसुवता प्रभावित
करैत अछि, शुभकामना ।

४४.श्री केदार काश- अकस्मिक अतर्कित नेन अलक धन्यवाद,
शुभकामना आ रूपाङ्गा स्वीकार कबी । आ बटिकेतक भुमिका
पठनहूँ । शुक्रमे तँ नागन जेना कोना उग्यान अहाँ द्वारा
सृजित नेन अछि अरुदा पोथी उगणैना पर तनात नेन जे
एहिमे तँ सब रिधा समाहित अछि ।

४५.श्री धनकव ठाकुर- अहाँ नीक काज क२ बहन डी । फोफे
छोटीमे छि एहि शिताईक जगतिथिक अस्माव बहेत त२
नीक ।

४६.श्री आशीष सा- अहाँक प्रत्येक संरक्षे एतरी लिखरी सँ
अगला कए बहि लोक सकनहूँ जे आ कितरै मात्र कितरै बहि
थीक, आ एकटा उन्मीद डी जे मैथिली अहाँ सन प्रत्येक सेरा सँ
निर्वतव समूह लोगत टिबजोरन कए प्राप्त कबत ।

४७.श्री शिखर कुमार सिंह- बिदेहक तपेवता आ फियामितता देखि
अस्मादित त२ बहन डी । निश्चितकषण कहन जा सकैत जे



समाकालीन मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे विदेहक नाम स्वर्णश्रवमे
लिखन जाएत । ओहि ऋक्छेदक घटना सत तँ अर्थावहे दिनमे
थतम भऽ गेल बहए दूदा अहाँक ऋक्छेदक तँ अमेव अछि ।

४५.डा. अजित मिश्र- अगलक प्रयासक कतरौ प्रशंसा कएन जाए
कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएन गेल काज
शग-शगाशुब धरि पूजनीय बहत ।

४६.श्री रीतेश मल्लिक- अहाँक ऋक्छेदक अन्तर्गत आ
विदेहःसदेह पठि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक श्वाश्रु ठीक बहए
आ उमोह रँगन बहए से कामना ।

४७.श्री कुमार बाधक- अहाँक दिशि-निर्देशमे विदेह पहिने
मैथिली अ-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल । हमर शुभकामना ।

४८.श्री सुनन्द मा प्रशंसा- विदेहःसदेह पठल बही दूदा
ऋक्छेदक अन्तर्गत देखि रीताङ्ग देरी लेन रीधा भऽ गेलहू ।
आरं रीशम भऽ गेल जे मैथिली नहि मवत । अमेव
शुभकामना ।

४९.श्री विभूति आश्रम- विदेहःसदेह देखि, ओकर रिश्राव देखि
अति प्रसन्नता भेल ।

५०.श्री मालेश्वर मल्लिक- ऋक्छेदक अन्तर्गत एकव भराता देखि
अति प्रसन्नता भेल, एतेक रिश्राव ग्रन्थ मैथिलीमे आग धरि नहि
देखल बही । एहिना भरियामे काज करैत बही, शुभकामना ।

५१.श्री रिश्राव मा- आग.आग.एम.कोनकाता- ऋक्छेदक
अन्तर्गत रिश्राव, दुगाङ्कक रंग श्वाश्रुता देखि अति प्रसन्नता



'बिदेह' १०८ स अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भेन । अहाँक अलक धन्यवाद, कतेक रँवथसँ हम लयावेत डनहूँ
जे सत पौष मेहवमे मैथिली नागब्रैवीक स्थापना होअ, अहाँ
उकवा रेखैपव क२ बहन डी, अलक धन्यवाद ।

३.३.श्री अवबिन्द ठाकुर-कुकुम्भेत्तम् अत्रुमिक मैथिली साहित्यमे
कएन गेन एहि तबहक पहिन प्रयोग अछि, शुभकामना ।

३.७.श्री रुमाव परल-कुकुम्भेत्तम् अत्रुमिक पठि बहन डी । किछ
नघुकथा पठन अछि, रँहूत मार्गिक डन ।

३.१. श्री प्रदीप बिहारी-कुकुम्भेत्तम् अत्रुमिक देखन, रँधाइ ।

३.४.डा मणिकान्त ठाकुर-कैमिलेफार्मिया- अणन रिनक्षण नियमित
मेरसँ हमरा लोकनिक हृदयमे बिदेह सदेह भ२ गेन अछि ।

३.६.श्री धीरेन्द्र धेयर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सवालनीय । दूध
होगत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि क२
परोत डी ।

३.०.श्री देवर्षिकव नरीन- बिदेहक निबन्धवता आ रिशोन स्वरुप-
रिशोन पाठक रखा, एकवा ऐतिहासिक रँनरैत अछि ।

३.५.श्री मोहन भावराज- अहाँक समस्त कार्य देखन, रँहूत नीक ।
एखन किछ परेशोनीमे डी, रुदा शीघ्र सहयोग देर ।

३.२.श्री हज्जुरव बहमान हामिरी-कुकुम्भेत्तम् अत्रुमिक मे एतेक
मेहनतक लेन अहाँ साधुरादक अधिकारी डी ।



७३.श्री लक्ष्मी मा "सागव"- मैथिलीमे चमकोविक कर्पे अर्हाँक
प्रवेशे आनन्दकारी अछि । ..अर्हाँकेँ एखन आव..दुव..रैहूत दुवधवि
जेरौक अछि । स्वस्थ आ प्रसन्न बनी ।

७४.श्री जगदीश प्रसाद मंडन- ककच्छेत्रम् अतर्म्भिक पठनहूँ ।
कथा सत आ उग्यास सहस्ररौठनि पूर्णकर्पे पठि गेल छी ।
गाम-घबक भौगोलिक विरक्ताक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्ररौठनिमे
अछि, से चकित कएनक, एहि संग्रहक कथा-उग्यास मैथिली
लेखनमे विविधता अर्भनक अछि । समालोचना शीघ्रमे अर्हाँक
दृष्टि रैगइक नहि रबन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से
प्रशंसनीय ।

७५.श्री अशोक मा-अध्यात्म विधिना विकास परिवर्तन- ककच्छेत्रम्
अतर्म्भिक जेन रैवाइ आ आर्गा जेन शुभकामना ।

७६.श्री ठाकुर प्रसाद झा- अद्भुत प्रयास । धन्यवादक संग
प्रार्थना जे अगल माष्टि-पानिकेँ ध्यानमे बाधि अर्कक समायोजन
कएन जाए । नर अर्क धवि प्रयास सवाहनीय । बिदेहकेँ रैहूत-
रैहूत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सप्ताह (आलेख) नगा बहन
छथि । सतर्पण ग्रहणीय- पठनीय ।

७७.रूचिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अर्हाँक सम्पादन मे प्रकाशित
'बिदेह'आ 'ककच्छेत्रम् अतर्म्भिक' विनम्रता पत्रिका आ विनम्रता
सोथी । की नहि अछि अर्हाँक सम्पादनमे ? एहि प्रसंगे सँ
मैथिली क विकास होयत,निर्मिदेह ।

७८.श्री रूचिनाथ मिश्र- गजेन्द्रजी, अगलक पुस्तक
ककच्छेत्रम् अतर्म्भिक पठि योष गदगद भय गेल , छदयसँ
अनुरूहित छी । हार्दिक शुभकामना ।



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

७९. श्री पवनेश्वर कागडि - श्री गजेन्द्र जी । ककफेवम्
अतिरिक्त पठि गदगद आ लललल लेनहू ।

१०. श्री वरीन्द्रनाथ ठाकुर- विदेह पठित बहेतु छी । धीरेन्द्र
प्रेमार्थिक मैथिली गजलपत्र आलेख पठनहू । मैथिली गजल कतु
मैं कतु चलि गेलक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन ज्ञान-
पहिचान लोकक चर्च कएल छथि । जेना मैथिलीमे मर्क
पवसा बहन अछि । (स्पष्टीकरण- श्रीमान् प्रेमार्थि जी ओहि
आलेखमे ओ स्पष्ट लिखल छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल
छहि तै से मात्र आलेखक लेखकक ज्ञानकारी नहि बहराक द्वारा,
एहिमे आन कोना काबा नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि
विषयपर विस्तृत आलेख सादर आमंत्रित अछि । -संपादक)

११. श्री मंत्रेश्वर सा- विदेह पठन आ संगहि अहाँक मैगलम ओगस
ककफेवम् अतिरिक्त सेहो, अति उत्तम । मैथिलीक लेन कएन
जा बहन अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि ।

१२. श्री हनुमन्त सा- ककफेवम् अतिरिक्त मैथिलीमे अपन
तबहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचन
कोशमे देखबाँमे आएन जे लेखकक हरीदेवर्कसँ जुडन बहराक
काबासँ अछि ।

१३. श्री सुकांत सोम- ककफेवम् अतिरिक्त मे समाजक
गतिहास आ वर्तमानसँ अहाँक जुड़ार रीति नीक लागल, अहाँ एहि
क्षेत्रमे आव आगाँ काज कवरै से आशी अछि ।

१४. श्री हनुमन्त सा- ककफेवम् अतिरिक्त मल कितारै
मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक रिशाल संग्रहपर शोध कएन जा
सकेत अछि । भविष्यक लेन शुभकामना ।



'विदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१३. श्रीहर्षम्भर कमल टोपरी- मैथिलीमे *कुकुक्षेत्रम्* अतिरिक्त सन
पौथी आरैए जे थुग आ कग दुनुमे निम्न होअए, से रैहूत
दिनसँ आकाशका डन, ओ आरै जा क२ पूर्ण भेल । पौथी एक
हाथसँ दोसर हाथ घुमि बहन अछि, एहिना आगाँ सेहो अहसँ
आशा अछि ।

१३. श्री उदय चन्द्र मा "रिलाद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज
कएनहुँ अछि से मैथिलीमे आग धरि कियो नहि कएल डन ।
शुभकामना । अहाँकेँ एखन रैहूत काज आव कबरीक अछि ।

११. श्री प्रफुल्ल कमार कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ भेटै एकठा
सबकीय सन रैनि गेल । अहाँ जतेक काज एहि रैअसमे क२
गेल छी तहिना हजार थुग आव रैनीक आशा अछि ।

१४. श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक्रम प्रशंसा गेल गेल,
नहि भेटैत अछि । अहाँक *कुकुक्षेत्रम्* अतिरिक्त सम्पूर्ण कर्ण
पठि गेलहुँ । ब्रह्मचर्य रैहूत नीक लागल ।

१५. श्री लीलेन्द्र कमार मा- विदेह ई-पत्रिकाक सभ अंक ई-
पत्रसँ भेटैत रहैत अछि । मैथिलीक ई-पत्रिका ठेक एहि
रातक गरि होगत अछि । अहाँ आ अहाँक सभ सहयोगीकेँ
हार्दिक शुभकामना ।

विदेह



'बिदेह' १०८ म अंक १५ जून २०१२ (वर्ष ५ मास ५४ अंक १०८)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c) २००४-१२, सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि
अछि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पत्रिका ई-
पत्रिका । ISSN 2229-547X VIDEHA संपादक: गजेन्द्र
ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: गिर
क्याब सा आ झुल्लाखी (महाजु क्याब कर्मी) । भाषा-संपादक:
नागेश्वर क्याब सा आ पञ्चमीकाब विद्यानन्द सा । कवि-संपादक:
रवीन्द्र क्याब सा आ बगि लेखी मिश्र । संपादक-शोध-अध्ययन: डा.
जया रम्या आ डा. बाबूजी क्याब रम्या । संपादक- वाचक-
वर्ग-चर्चा- लेख ठाकुर । संपादक- सूचना-संपर्क-समाद-
पुण्य मंडल आ धिया सा । संपादक- अग्रवाद विभाग- विनीत
उपेय ।

बचनाकाब अपन मौलिक आ अशुकाशित बचना (जकब
मौलिकताक संपूर्ण उतबदलिह लेखक गान मया छुहि)
ggajendra@videha.com केँ मेर अष्टैचमैष्टक कर्गमे
.doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छुहि ।
बचनाक संग बचनाकाब अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन ईम कएन
मेर हवाटे पठैतह, से आशि करैत छी । बचनाक अंतमे
छाँगा बहस, जे आ बचना मौलिक अछि, आ पहिने प्रकाशितक



हेतु बिदेह (पत्रिक) ई पत्रिकाले देन जा बहन अछि । मेन
प्राप्त होयबैक रौद यथार्थतर शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकव
प्रकाशक अंकक सूचना देन जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली
पत्रिक ई पत्रिका अछि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे
मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बन्धित बचना प्रकाशित कएन जागत
अछि । एहि ई पत्रिकाले शीघ्रति नक्की ठाँव द्वावा मासक ०९
आ १३ तिथिले ई प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) 2004-12 सम्पादक स्वस्मिन् । बिदेहमे प्रकाशित
सम्बन्धी बचना आ आर्काइवक सम्पादक बचनाक आ सम्बन्धित
नगमे छल । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किरा
आर्काइवक उपयोगक अधिकार किनबैक हेतु
ggajendra@videha.co.in पब सम्पर्क कर । एहि
मागेलैक शीघ्रि न्ना ठाँव, मधुनिका टोपरी आ बम्बि शिवा द्वावा
डिजाइन कएन गेल ।



सिंहबन्धु

